शमए मुनव्वर रहे नजात
13----------हिजरी----------65
शेरबेशए अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा
अबुलफतह मुहम्मद हशमत अली ख़ाँ क़ादिरी
लखनवी सुम्मा पीलीभीती (अलैहिर्रहमतु वर्रिज़्वान)
तेरे ग़ुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वह क्या बहक सके जो यह सुराग़ लेके चले
—: नाशिर :—
मुशाहिदे मिल्लत अकेडमी
आस्तानए आलिया हशमतिया व मुशाहिदिया हशमत नगर पीलीभीत शरीफ उ.प्र0
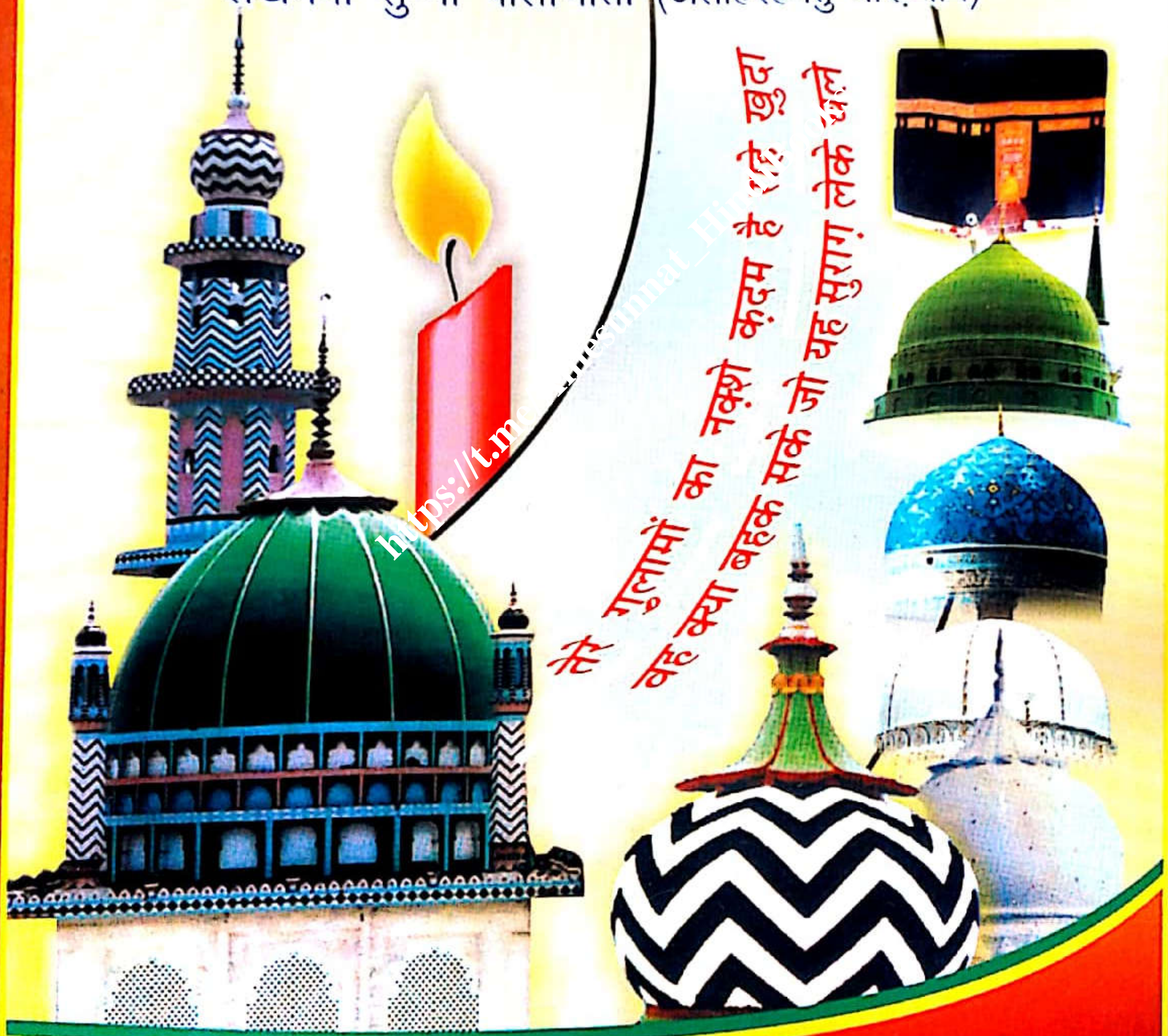
पहले इसे जरूर पड़े

21/04/2020 ये वो तारीख है जिस दिन सुबह 8:30 बजे हसनी हुसैनी फूल यानी शहजादए गरीब नवाज सरकार खलीफाए मुशाहीदे मिल्लत सय्यद फरीदुल हसन चिस्ती अलैहिर्रहमा (गद्दीनसीन अजमेर शरीफ) का इंतेक़ाल हुवा था
हज़रत सय्यद साहब अलैहिर्रहमा की जात ने मसलके आलाहज़रत के लिए किसी की परवाह ना कि बल्कि जो मसलके आलाहज़रत के खिलाफ गया उस का रद्द बिना डरे किया
आपकी जात मोहताजे तआरुफ़ नही और फ़क़ीर मुहम्मद शाहरुख रज़ा हशमती गदाए फरदुल हसन अलैहिर्रहमा ना कोई मुसन्निफ़
इसलिए हज़रत सय्यद साहब किब्ला अलैहिर्रहमा के इसाले सवाब के खातिर किताब शमए मुन्नवर रहे नजात को PDF फाइल में स्कैन कर तमाम सुन्नी भाइयो तक पहुचा रहा हु तमामी भाइयो से भी गुजारिस की 3 मर्तबा सूरः इखलास शरीफ और 1 मर्तबा सूरः फातिहा अव्वल आखिर दरूद शरीफ पढ़ के हज़रत के लिए इसाले सवाब करे

अल्लाह ताआला से दुआ है हबीब पाक सल्लल्लाहु अलैहे व सल्लम के सदके हज़रत सय्यद साहब किब्ला अलैहिर्रहमा को जन्नतुल फिरदौस में जगह अता फरमाये
आमीन

बफ़ैज़े सरकार हुजूर मुफ़्तीए आज़मे हिन्द अलैहिर्रहमतु वर्रिज़्वान

शमए मुनव्वर रहे नजात

13 ———हिजरी——— 65

मुलक़्क़ब बलक़बे तारीख़ी

शमए मुनव्वर राहे जन्नत

13 ———हिजरी——— 65

अज़

हुज़ूर मज़हरे आला हज़रत शेरबेशाए अहले सुन्नत मुनाज़िरे आज़म अबुलफ़तह उबैदुर्रज़ा अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद हशमत अली ख़ाँ साहिब क़िब्ला रज़वी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़्वान

नाशिर

मुशाहिदे मिल्लत अकेडमी

दारुल उलूम हशमतुर्रज़ा हशमत नगर

पीलीभीत शरीफ़ 262001

मोबाइलः— 9412513482 , 9997343852 , 9412554814

नाम किताब :— **शमए मुनव्वर रहे नजात**

लक़बे तारीखी:— **शमए मुनव्वर राहे जन्नत**

मुसन्निफ़ :— शेरबेशए अहलेसुन्नत हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती शाह अबुलफ़तह उबैदुर्रज़ा **मुहम्मद हशमत अली खाँ** साहिब क़ादिरी रज़वी (रदियल्लाहु तआला अन्हु)

नाशिर :— मुशाहिदे मिल्लत अकेडमी हशमत नगर पीलीभीत शरीफ़

हस्बे फ़र्माइश :— हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़रताब रज़ा ख़ाँ हशमती ख़लीफ़—ए हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द अलैहिर्रहमा व सज्जादा नशीन आस्तानए आलिया हशमतिया व मुशाहिदिया हशमत नगर पीलीभीत शरीफ़

तस्हीह :— नबीरए मज़हरे आलाहज़रत मौलाना क़ारी मुजाहिद रज़ा हशमती मुदर्रिस दारुलउलूम हशमतुर्रज़ा पीलीभीत शरीफ़

कम्पोज़िंग :— कमरुद्दीन मुशाहिदी दारुलउलूम हशमतुर्रज़ा पीलीभीत शरीफ़

तादादे इशाअत:— 1000 एक हज़ार

इशाअत बारे अव्वल 1431 हिजरी 2010ई० (सफ़रुल मुज़फ़्फ़र)

मिलने के पते :—

1. मुशाहिदे मिल्लत अकेडमी हशमत नगर पीलीभीत शरीफ़
2. बज़्मे रज़ाए ख़्वाजा कुर्ला बम्बई 400070 —
3. इमाम अहमद रज़ा लाइब्रेरी बरेली शरीफ़ उ0.प्र0।
4. कुतुबख़ाना हशमतिया क़स्बा इचोली बाराबंकी उ0.प्र0।
5. एहसान मुहम्मद नूरी सतना म0 प्र0।
6. बेगम ख़ैर गर्ल्स इण्टर कालेज बस्ती उ0.प्र0।
7. रज़वी किताब घर मटिया महल देहली।

कलिमाते दुआइया

सैय्यद सुल्तान मियां चिश्ती मुशाहिदी

खलीफा-ए-हुजूर मुशाहिदे मिल्लत (अलैहिर्रहमा)

गद्दी नशीन ख़्वाजा साहिब, अजमेर शरीफ़

हुजरा न० -30 खानकाहे हशमतिया मुशाहिदिया अजमेर शरीफ़

वह काम जो बरसों पहले से इस बात का मुतक़ाज़ी था कि उसको बरुए कार लाया जाए लेकिन लोगों की बे तवज्जुही व अद्मे इल्तिफ़ाती का शिकार रहा लेकिन बेफ़ज़्लिही तआला व बकरमे रसूलिहिल आला गिरामी क़द्र शहज़ादए हुजूर मुशाहिदे मिल्लत हज़रत अल्लामा मौलाना मुहम्मद बुरहान रज़ा ख़ाँ साहिब क़िब्ला ज़ीद फ़ज़्लुहू ने इसकी तरफ़ तवज्जो फ़र्मा कर मेरे दिल को खुश कर दिया कि उन्होंने अपनी बेपनाह कोशिशों से ज़ेरे नज़र किताब "शमए मुनव्वर रहे नजात" को उर्दू से हिन्दी ज़बान में ट्रान्सलेट करवाकर मुशाहिदे मिल्लत अकेडमी से शायेअ करने की सआदत हासिल कर रहे हैं।

बहर कैफ़ मौसूफ़ मुझ फक़ीर सरापा तक़सीर व जुम्ला क़ौम व मिल्लत की तरफ़ से यक्सां मुबारकबादी के मुस्तहिक़ हैं। अल्लाह सुब्हानहू व तआला की बारगाह में दुआ गो हूँ कि अपने हबीब व ग़ौस व ख़्वाजा व बुजुर्गाने दीन के सदक़े व तुफ़ैल इनको ज़्यादा से ज़्यादा दीन का काम करने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अता फ़र्माए और इनकी ग़ैब से मदद फ़र्माए और दारैन की सआदतों, फ़र्हतों, मसर्रतों से ख़ूब ख़ूब नवाज़े।

इज़हारे मसर्रत

मुहम्मद तस्लीम रज़ा ख़ाँ नूरी
(बानी इमाम अहमद रज़ा लाइब्रेरी)
आस्तानए रज़विया बरेली शरीफ़

अल्हमदु लिल्लाह शमए मुनव्वर रहे नजात हुज़ूर शेरबेशए अहले सुन्नत अल्मुफ़्ती अश्शाह मुहम्मद हशमत अली ख़ाँ अलैहिर्रहमतु वर्रिज़्वान का वह मुक़द्दस व अनोखा रिसाला है जिसको आपने वहाबियों देवबन्दियों नज्दियों फिरक़हाए बातिला आतिला की तरदीद में तहरीर फ़र्माया था। जिसकी इफ़ादियत को पढ़े लिखे उर्दू दां हज़रात तहे दिल से मुअतरिफ़ भी नज़र आते हैं।

बहरहाल इस रिसाले की इफ़ादियत मज़ीद बरां आम व ताम करने के लिए आपके नबीरे हज़रत मौलाना ज़रताब रज़ा ख़ाँ साहिब क़िब्ला सज्जादा नशीन आस्तानए आलिया हशमतिया व मुशाहिदिया व हज़रत अल्लामा मौलाना बुरहान रज़ा ख़ाँ साहिब तृव्वलल्लाहु उम्रहुमा हिन्दी में किताब का तर्जमा कराके शायेअ करने की सआदत हासिल कर रहे हैं अल्लाह तआला इनको और इनके हाशिया नशीनों को मज़ीद दीन की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अता फ़र्माए।

हदियए तबरीक

जा नशीने मजहरे आला हजरत सूफ़िए बासफ़ा

अहमद मशहूद रज़ा ख़ाँ साहिब क़िब्ला

ख़ानक़ाहे हशमतिया, हशमत नगर, पीलीभीत शरीफ़

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम अम्मा बाद

अज़ीज़ुल्क़द्र हज़रत मौलाना ज़रताब रज़ा ख़ाँ साहिब सज्जादा नशीन आस्तानए आलिया हशमतिया व मुशाहिदिया पीलीभीत शरीफ़ व हज़रत अल्लामा व मौलाना बुरहान रज़ा ख़ाँ साहिब क़िब्ला हशमती व मुशाहिदी की जोहदे मुसलसल और अमले पैहम के नेक इरादों की पुख़्तगी पर शाहिदे अद्ल हैं। मुख़्तसरन मगर तह में उतरती हुई आपकी दिलनशीं बातें अपने मन्सूबों को जल्द तर अमली जामा पहनाने के अज़्म बिज्जज़्म का पता देती हैं।

यही वज्हे ख़ास है कि आपके मुशाहिदे मिल्लत अकेडमी से मुतादि्दद किताबें ज़ेवरे तबा से आरास्ता होकर मन्ज़रे आम पर आ चुकी हैं इसकी एक कड़ी शमए मुनव्वर रहे नजात है जिसको हुजूर शेरबेशए अहले सुन्नत रदि्यल्मौला तआला अन्हु ने फ़िर्क़ए दा्ल्ला के रद में उर्दू ज़बान व बयान में तहरीर फ़र्माया था जो उर्दू दां त़बक़ा ही तक महदूदो मख़्सूस थी इसके अलावा हज़रात इससे महरुम थे। हज़रत मौसूफ़ ने इस बात को बख़ूबी समझा और इसकी हिन्दी कराके शायेअ फ़र्मा रहे हैं। ताकि इसका फ़ाइदा यकसां त़ौर पर दोनों को हासिल हो अल्लाह तआला इनको मज़ीद ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अत़ा फ़र्माए इनके हौसले को क़वीतर बनाये।

नज़रे अक़ीदत

सुल्तानुल्हिन्द अताए रसूल ख़्वाजए ख़्वाजगान सरवरे चिश्तियां, हुजूर सय्यिदुना ग़रीब नवाज़ मोईनुद्दीन हसन संजरी अजमेरी रदि़यल्लाहु तआला अन्हु ——अक़लीमे विलायत के ऐसे शहंशाह जो अताए रसूल बनकर सुल्तानुलहिन्द कहलाये —— अताए खुस्रुवाना ऐसी कि हर शाहो गदा ग़रीब नवाज़ का नारा लगाए। दीन के ऐसे मुईन कि जो पेशानी माबूदाने बातिल की तरफ़ झुकती थी वह माबूदे हक़ीक़ी की तरफ़ सज्दारेज़ हो गई ———

तुम्हीं हो बादशाहे हिन्द रहमत हो ग़रीबों पर ।
मेरे अजमेरी ख़्वाजा ऐ मोईनो रहनुमा उठिये ।।

गुलहाए अक़ीदत

वह आस्तानए अज़मत बाबरकत जो हशमतो बरकात का मम्बा है और रज़ाए अहमद का बहरे बेकरां है, ताजे नूरी का मख़्ज़न है, फ़ियूज़ो कमालात का ऐसा दरियाए विलायत जिसकी मौजे जलील क़ासिमे नेमत होने में वाहिद व यकता हैं ——वह मशाइख़ाने बरकातिया जिनके फ़ज़्लो कमाल की पुर नूर किरनों से जहाने सुन्नियत रोशन व मुनव्वर है ——अक़ीदतों के गुलदस्ते पेश हैं इन्हीं अकाबिरे ख़ानवादए बरकातिया मारहरा मुतह्हरा की चौखट पर और नोके क़लम भी आस्तां बोस है उसी दरे शहे वाला पर ———

तूने ही बख़्शी है यह फ़ितरते हस्सास मुझे
जो हैं इस दिल के सदफ़ में वह गोहर तेरे हैं

शरफ़े इन्तिसाब

आफ़ताबे इल्मो हिकमत, मज़हरे इमामे अबू हनीफ़ा, उलूमे ज़ाहिरो बातिन का संगम, रहरवाने शरीअत व तरीक़त के इमाम, परतवे ग़ौसे आज़म, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे आज़म, शेख़ुल इस्लाम वल्मुस्लिमीन , हुजूर सय्यिदुना आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ क़ादिरी बरकाती कुद्दिस सिर्रहुन्नूरानी ।

उबैदे ख़स्ता की फ़रियाद सुन लो क़ादिरी दूल्हा
ख़ुदा के वास्ते या मुर्शिदी अहमद रज़ा उठिए

अरमग़ाने अक़ीदत

हुज़ूर ताजुल अज़्किया रईसुलओलमा, शेख़ुल मुहद्दिसीन रासुल मुफ़स्सिरीन, ज़ीनते मस्नदे आलाहज़रत मौलाना अल्हाज अश्शाह मुहम्मद हामिद रज़ा ख़ाँ साहिब क़िब्ला जानशीने आलाहज़रत अ़म्म फैज़ानहू व नव्वरल्लाहु मरक़दहू जिनके कमालाते बातिनी और नूरे ईमान की ताबिन्दगी हुस्ने ज़ाहिर से इस त़रह हुवैदा कि जो देखता बे साख़्ता पुकार उठता هٰــــــذا حُـــــجَّةُ الإِسْلَام

यह इस्लाम की दलील हैं और हुज्जतुल इस्लाम अलैहिर्रहमतु वर्रिज़्वान मुसलमानाने अहले सुन्नत को हुज्जतो बुरहान अत़ा करते हुए फ़र्माते हैं "अल्लाह ने मुझे दो नेअमतें अत़ा की हैं एक मौलाना हश्मत अली ख़ाँ साहिब और एक मौलाना सरदार अहमद साहिब।

अक़ीदतों की डालियां निछावर हैं उसी जल्वए जमाल पर कि उनकी निगाहे कीमिया असर अगर काफ़िर पर पड़ती तो कुफ़्र कट जाता, मुर्तद पर पड़ती इर्तिदाद तहे तेग़ हो जाता, वहाबियत, नज्दियत, त़ागूतियत पर पड़ती तो शिर्क व बिदअ़त ख़ाक बदामां हो जाती और कुफ़्रो शिर्क व बिदअ़त से साफ़ व मुसफ़्फ़ा होकर दौलते ईमान से मालामाल हो जाते -

नज़र की एक जुम्बिश से जिन्होंने क़स्रे दिल तोड़ा।
हक़ीक़त में वही दुनियाए दिल के हुक्मरां निकले।।

अक़ीदतों की सौग़ात

अक़ीदतों की सौग़ात हाज़िर है इस बारगाहे अज़्मत में जो एक ऐसा महरे मुनीर कि गुरुब की स्याहियां उससे आँखें न मिला सकें ——हाँ हाँ तलअत व ज़ेबाई का एक ऐसा पैकर कि कोई धुन्धलका साया उसके साये को गहना न सका। इल्मो अमल की शमए फ़रोज़ां, शुऊरो आगही के मम्बओ मर्कज़ एक ऐसा रश्के गुलिस्तां कि जिसके दामने इरादतो–सोहबत से वाबस्ता होने वाले गुन्चए शिगुफ़्ता होकर महक रहे हैं।

वह बदरे फ़लके विलायत, फ़ख़्रे सबिस्ताने रज़वियत ताजदारे अहले सुन्नत, शहज़ादए आला हज़रत हुज़ूर मुफ़्तीए आज़मे हिन्द हज़रत अल्लामा अल्हाज अश्शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ क़िब्ला रज़वी नूरी बरकाती क़ादिरी क़ुद्दिदस सिर्रहुल्अज़ीज़ ——— जिनकी निगाहे करामत ने जादए मुस्तक़ीम से भटके हुए न जाने कितने क़दमों को राहे हक़ का रहरौ व रहबरे कामिल बना दिया।

जो अमीरो बादशाह हैं इसी दर के सब गदा हैं।
तुम्हीं शहरे यार आये तुम्हीं ताजदार आये ।।

ईसारे अक़ीदत

हुजूर सदरुश्शरीआ, बदरुत्तरीक़ा इमामुलहुकमा फक़ीहे आज़मे हिन्द, अल्लामा मुफ़्ती हकीम अबुलउला मुहम्मद अमजद अली क़ादिरी आज़मी रदियल्लाहु तआला अन्हु --- जो अपनी दर्सगाह में कभी गिज़ाली व राज़ी नज़र आते, कभी अरस्तू व बू अली सीना नज़र आते, मस्नदे इफ़्ता व क़ज़ा पर इमाम यूसुफ़ इमाम मुहम्मद (रदियल्लाहु तआला अन्हुमा) का जल्वा बिखेरते नज़र आते --- हुजूर आला हज़रत यह फ़र्मायें कि "तफ़क्क़ा जिसका नाम है वह मौलवी अम्जद अली साहिब में ज़्यादा पाइयेगा"-- जिनके फ़ैज़ाने इल्म से किश्वराने इल्म की अन्जुमन कहकशां का जमाल बनकर चमक रही है।

क़दम रखने की नौबत भी न आई थी सफ़ीने में।
मदीने का मुसाफ़िर हिन्द से पहुँचा मदीने में।।

तबर्रुकात हुजूर सय्यिदुल ओलमा

(अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान)

सज्जादा नशीन आस्तानए आलिया बरकातिया मारहरा मुत़ह्हरा मैंने हज़रत शेर बेशए सुन्नत रहमतुल्लाहि तआला अलैह को पहली मर्तबा इस उम्र में देखा कि उनकी उम्र उन्नीस साल की थी और मैं आठ साल का बच्चा था बरेली शरीफ़ से तशरीफ़ लाये थे। इसलिए आए थे कि मेरे ख़ाले मुहतरम ताजुल ओलमा सिराजुल ओरफ़ा हज़रत मौलाना मुफ़्ती हाफ़िज़ शाह सय्यिद औलादे रसूल मुहम्मद मियां साहिब क़िब्ला क़ादिरी ताजदारे मस्नदे बरकातिया मारहरा मुत़ह्हरा को एक तब्लीग़ी जलसा की दावत देने मगर इत्तिफ़ाक़ यह कि हज़रत ताजुल ओलमा रहमतुल्लाहि तआला अलैह फर्रुख़ाबाद के एक तब्लीग़ी जलसा में तशरीफ़ ले जा चुके थे और घर पर मेरे मुर्शिदे बरहक़ हज़रत कुदवतुलकुमला ज़ुब्दतुल अस्फ़िया, शाह सय्यिद अबुल क़ासिम इस्माईल हसन अलमुलक़्क़ब बलक़बे शाहजी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तशरीफ़ फ़र्मा थे। मेरे नाना जान ज़ईफ़ होकर ख़ानानशीन हो चुके थे। मुझसे इर्शाद फ़र्माया लाला मौलवी हशमत अली ख़ाँ साहिब आये हैं तुम्हारे मामूं के ले जाने के लिए मामूं तुम्हारे फर्रुख़ाबाद गये हैं जाओ और इन्हें हमारी हवेली में ठहराओ और इनके आराम का बन्दोबस्त करो। आज जब मैं बूढ़ा होने को आया तो पूरा नक़्शा मेरे सामने है कि मैं किस तरह से घर से खाना लेकर गया था। और मैंने किस तरह से खाना खिलाया था और किस तरह से मैंने कहा था कि भय्या फर्रुख़ाबाद गये हुये हैं। और मियां ये फ़र्माते हैं कि आप हमसे मिले बग़ैर मत जाइयेगा। ये मेरी पहली हाज़िरी और पहली मुलाक़ात थी इसके बाद तो कुछ ऐसे रब्त बढ़े कि हज़रत शेर बेशए सुन्नत अगर 15 दिन बरेली हैं 15 दिन लखनऊ

हैं तो दस दिन मारहरा शरीफ़ हैं। मुझे वह दिन भी अच्छी तरह याद हैं जब मेरे मुर्शिदे बरहक़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अपनी महफ़िले सरा में रू बक़िब्ला दो ज़ानू खुद बैठे और हज़रत शेर बेशए सुन्नत रहमतुल्लाहि तआला अलैह से कहा हमारे सामने दो ज़ानू बैठकर अपने दोनों घुटने हमारे दोनों ज़ानुओं से मिला दो और इस तरह से जब दोनों बैठ चुके तो इर्शाद फ़र्माया कि मैंने जुम्ला सिलसिला आलिया क़ादिरिया चिश्तिया सोहरवर्दिया नक़्शबन्दिया सारे आमाल व अश्ग़ाल व मुराक़िबात जो ख़ानवादए बरकातिया में मुझे अपने मुर्शिदों से मिले मैंने इन सबकी इजाज़त तुमको दी और मुझे याद है कि इसके साथ ही हज़रत शेर बेशए सुन्नत रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अपना सर उनकी गोद में डाल दिया और हज़रते वाला का सर उनके हाथों पर आ गया। शेर बेशए सुन्नत से मेरे घर के रब्त व ज़ब्त को तुममें से कोई नहीं जान सकता तुममें से कोई नहीं पहचान सकता तुम्हें नहीं मालूम हज़रत शेर बेशए सुन्नत से मेरे घर के ताल्लुक़ात को बम्बई में जानने वाले एक थे जो गुज़र गये मेरे बरादरे तरीक़त मुन्शी मुस्तफा खां साहिब मरहूम मग़फूर पान वाले एक हैं अल्लाह तबारक व तआला उन्हें ह़य्यि व क़ायिम रक्खे। हज़रत शेर बेशए सुन्नत के बरादरे अज़ीज़ी मुजाहिदे अहले सुन्नत हज़रत मौलाना मुफ़्ती महबूब अली खां साहिब दामत बरकातुहुम वह जानते हैं कि हज़रत के साथ मेरे घर के क्या रवाबित थे इसके साथ ही साथ मुझे ये कहने में बाक नहीं कि हज़रत शेर बेशए सुन्नत मेरे उस्ताद भी थे हज़रत शेर बेशए सुन्नत एक महीना के लिये ख़ानक़ाहे बरकातिया में तशरीफ लाये और मैंने तफ़्सीरे जलालैन नूरुल अनवार कुतुबी नहवमीर और शरह विक़ाया के 14 सबक़ मैंने हज़रत रहमतुल्लाहि तआला अलैह से पढ़े हैं तो वह पढ़ना है जो मैंने किताब खोलकर ज़ानू तह करके हज़रत से पढ़े और उसके बाद मेरी उम्र गुज़री है हज़रत के साथ रहने में और उनको देखने

और समझने और बूझने में मेरी तक़रीर की रंगत मेरी तक़रीर की सूझ बूझ और मेरी सोच और समझ का रंग ये हज़रत शेर बेशए सुन्नत का है। आज के चार साल पेशतर मैं अहमदाबाद के दारूल उलूम अहले सुन्नत शाहे आलम का मुम्तहिन होकर गया था वहां पर शेख़ुल हदीस अल्लामा अ़ब्दुल मुस्तफा आज़मी हैं शबे बरात क़रीब आ गयी तो उन्होंने जल्सए वाज़ रख दिया। मेरा बयान हुआ और वह मेरा बयान ग़ालिबन मेरी उम्र का सबसे तवील बयान था मैं पूरे नौ बजे बयान करने के लिये बैठा और साढ़े चार बजे सुबह सलाम के लिये उठा। अहमदाबाद का बच्चा बच्चा जानता है जब मेरा बयान हो चुका तो अजमलुल ओलमा हज़रत मौलाना अजमल शाह साहिब सम्भली दामत बरकातुहुम ने इर्शाद फ़र्माया कि मियां मौलाना हशमत अली खां साहिब याद आ गये। बस एक ही बात तो मैंने कहा सहीह बात है बाप का परतौ बेटे पर, उस्ताद का परतौ शार्गिद पर पड़ा ही करता है अगर आप को हज़रत शेर बेशए सुन्नत याद आ गये इसमें कोई बड़ी बात नहीं आज वह हम में नहीं हैं उनका जिस्म हम में नहीं है उस खाकी जिस्म की हक़ीक़त ही सिर्फ़ इतनी है कि पिंजरा है उसमें रूह का पंछी फंसा हुआ है लेकिन तुम बावर करो इस बात को कि उनकी रूहानियत हम में हमेशा रहेगी। आज उनकी रूह की बरकतें हमेशा अहले सुन्नत की मददगार रहेंगी। उन्होंने जो अपने फैज़ छोड़े हैं वह फैज़ जारी व सारी रहेंगे बड़ी खुशी की बात ये है बहुत कम ऐसा होता है कि कोई उठता है तो अपने बाद अपनी निशानी छोड़ जाता है उन्होंने अपनी जिस्मानी औलाद भी छोड़ी है। हम जैसे उनसे फ़ैज़ लेने वाले उनकी रूहानी औलाद हैं और मेरा अज़ीज़ बच्चा मौलाना मुशाहिद रज़ा खां साहिब उनके बड़े साहिबज़ादे अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन तीन साल हुए दारूल उलूम मिस्बाहुल उलूम अशरफ़िया मुबारकपुर से फ़ारिगुत्तहसील होकर दस्तार बन्द हो चुके हैं और इसके माना ये

हैं कि हज़रत शेर बेशए सुन्नत की मस्नदे इल्म व रशद उनके बाद ख़ाली नहीं रहेगी। दूसरी बात ये है कि मेरे पास आख़िरी वाला नामा अभी रमज़ानुल मुबारक में तशरीफ लाया था। वह भी एक मनी आर्डर की कूपन की हैसियत से दस रूपये हज़रत ने मुझे अतिया भेजे थे और उसमें लिखा था कि हज़रत आपको मालूम है कि मेरा सारा अजूक़ा ही यही तब्लीग़े सुन्नियत था और इसी में मेरा दीन भी था मेरी दुनिया भी थी लेकिन आज मैं अलील हूं लिहाज़ा वह सारे दरवाज़े बन्द हैं मगर आल इंडिया सुन्नी जमीअतुल ओलमा मेरी प्यारी जमीअत ने मुझे तह्रीर किया लिहाज़ा मैं अपने इम्दादी फ़न्ड में से यह दस रूपये उसकी नज़र के लिये दो महीना के भेज रहा हूँ उसके बाद ही मैने ख़ानवादए बरकातिया का एक नक़्श भेजा और उसमें मैंने लिखा कि इस पर आयतल कुर्सी शरीफ दम कराकर इसको अपने गले में पहनें। ख़त में लिखा कि ख़ुदा का फ़ज़्ल है कि मेरा वह बच्चा जिसे आपने अपना बेटा बनाया है आज तुम्हें खोल रहा हूँ शायद तुम्हें नहीं मालूम होगा उनका छोटा बच्चा हाफिज़ क़ारी अस्करी रज़ा खां सल्लमहू मेरा दूध का बेटा है और मेरे बच्चों की माँ ने उसे दूध पिलाया है और इसी तरह से मौलाना हशमत अली खाँ साहिब की अहलिया मोहतरमा मेरी उस्तानी ने मेरी एक बच्ची को दूध पिलाया तो ये दोनों आपस में दूध के भाई बहन हैं और हाफिज़ क़ारी अस्करी रज़ा खाँ अल्हम्दुलिल्लाह जय्यिद क़ारी है मुस्तनद क़ारी है। दारुलउलूम अशरफिया से वह सनदे क़राअत ले चुका है और वह वैसे भी मेरा बच्चा था लेकिन अब तो हक़ीक़त यह है कि वह मेरी औलाद में शुमार है क्योंकि मेरे बच्चों के साथ वह दूध पी चुका है। क्योंकि यह बात कहने में मेरे दिल को तसल्ली है इन्शाअल्लाहु तआला मस्नदे शेरबेशए अहले सुन्नत ख़ाली न रहेगी और जो काम उम्र भर हज़रत शेरबेशए अहले सुन्नत ने किया ख़ुदा ने चाहा और उसके चाहे से उसके रसूल ने चाहा जल्ला

जलालुहू व सल्लल्मौला तआला अलैहि व अला आलिही व सहबिही व बारिक वसल्लिम तो यह काम इन्शाअल्लाहु तआला उनके फर्ज़न्दाने ज़ाहिरी व मानवी करते ही रहेंगे। आमीन। अल्लाहुम्म आमीन। आप सब हज़रात को चाहिए कि अपनी नमाज़ों के बाद फ़ातिहा पढ़ पढ़ कर हज़रत शेरबेशए अहले सुन्नत रहमतुल्लाहि तआला अलैह के लिए ईसाले सवाब करते रहें।

कुछ ऐसा सदमा मेरे दिल पर बैठा मैं आ ही रहा था यहाँ आज मैं ने सोचा कि लम्बी महफिल है ज़रा जल्द ही पहुँच जाऊं फिर मेरी कुछ बहनें आ गईं कुछ बच्चियां मेरी ओर वह हमेशा आती हैं यहाँ पर मेरा आशूरा सुनने के लिए मैं ने कल बच्चों से कह दिया था कि उनका इन्तिज़ाम कर देना वह बच्चियां आई हुई थीं मैं तैयारी कर ही रहा था कि हमारी सुन्नी जमीअत के परोपिगन्डा सिक्रेट्री आसिम साहिब मेरे पास पहुँचे और उन्होंने एक अजीब अन्दाज़ से बात कही कि पहले चन्द मिनट मैं समझ ही न सका उन्होंने कहा हज़रत शेरबेशए अहले सुन्नत मुझे फ़ौरन ख़्याल आया कि आज हज़रत मुफ्तीए आज़म दामत बरकातुहुमुल कुद्सिया का लिफ़ाफ़ा मेरे पास आया था उसमें तहरीर था कि मौलाना हशमत अली खां साहिब बरेली आये थे और दो दिन मिशन अस्पताल बरेली में रह कर वापस गये हैं उन्होंने कहा है कि आप दूसरे अस्पताल में इलाज कराइये बस शेरबेशए अहले सुन्नत का लफ़्ज़ निकलना ही था कि मैंने अपना दिल पकड़ लिया। मैं क़ल्ब का कमज़ोर हूँ इख्तिलाजे क़ल्ब का मरीज़ हूँ कोई बहुत ज़्यादा खुशी की बात कोई बहुत ज़्यादा रन्ज की बात मैं एकदम यकलख़्त नहीं सुन सकता तो पन्द्रह मिनट तक मैं अपने होश ही में नहीं था। फिर इसके बाद मैंने انا لله وانا اليه راجعون पढ़ा अल्लाह हम सबको सब्र भी अता फ़र्माये और अहलेसुन्नत व जमाअत को नेअमल बदल भी अता फ़र्माये और उनकी बरकतों से हमें ता अबद माला माल रखे आमीन।

तक़दीम

वह तबस्सुम वह तकल्लुम और दिल आराइयां ।
ज़िन्दगी भर रहेंगे ये नुकूशे जावेदाँ दिल में ।।

इस ख़ानदाने गीती पर एक से बढ़कर एक साहिबाने इल्मो फ़ज़्ल व कमाल मगर ख़ित्ताए अवध में एक हस्ती ऐसी भी जल्वा गर हुई जो अपनी ज़ात में जामए सिफ़ात मम्बए फ़ुयूज़ो बरकात और फ़िक़्हो शहंशाही का संगम थी जो अपने ख़ासाहिल में शाहाना तमक्कुनत रखते थे। चेहरे से शाहाना रोब व जलाल अयां था फ़िक्रो फ़न में तजर्रे इल्मी व सियासी तदब्बुर की मौजे रवां पाई जाती थी। एक आरिफ़े बिल्लाह वलीए कामिल की तरह जमाले मारिफ़त की दमक पाई जाती थी। वह ज़ाते गिरामीं हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अश्शाह अबुल फतह उबैदुर्रज़ा मुहम्मद हशमत अली खाँ क़ादिरी बरकाती रज़वी लखनवी सुम्म पीलीभीती रदियल्लाहु तआला अन्हु व अरदाहु अन्ना हैं। और दुनिया उन्हें शेरबेशए अहले सुन्नत मज़हरे आला हज़रत साहिबे आयाते ज़ाहिरा व कमालाते बाहिरा, मुनाज़िरे आज़म, अमीरूल मुतकल्लिमीन, गैज़ुल मुनाफ़िक़ीन व मुर्तद्दीन जैसे ख़िताबात व अल्क़ाबात से याद करती है और अब तो उनकी याद मनाने का ये आलम है

नशीमन खाक हो जाये मताए ज़ीस्त मिट जाये।
मगर अहले वफ़ा की बज़्म में मातम नहीं होता।।

चूंकि आपका ताल्लुक़ भी ऐसे ख़ित्ताए अर्ज़ से था जहाँ ऐसे ऐसे मर्दाने दुरवैश और औलियाए बासफा थे जिनकी आग़ोशे तरबियत में शहंशाह पलते थे। जिनके जूदो सखा ने शहंशाही अता की जिनकी दर्सगाहे इल्म ने शहरे यारे इल्म का ताजवर बना दिया।

आपकी जाए विलादत सल्तनते अवध की राजधानी नवाबीने अवध की यादगार, मर्कज़े इल्माक अदब और शहरे

विलायत के ताजदार, सिलसिलए चिश्तिया के शेख़े वक़्त कुतुबुल अक़्ताब हज़रत सय्यिदुना मीना शाह रदियल्लाहु तआला अन्हु की नगरी शहरे लखनऊ है। जहाँ इस्लामी तहज़ीबो तमद्दुन की कहकशां रोशन है, उर्दू अदब की अन्जुमन जगमगा रही हैं।

ज़र्रो से यहां के है कहकशां में रोशनी
शम्सो क़मर हैं बाज गुज़ाराने लखनऊ

आप का आबाई वतन अवध ही का एक मरदुम खेज़ तारीख़ी क़स्बा अम्बेठी है। यह क़स्बा लखनऊ से जानिबे मश्रिक़ लखनऊ सुल्तानपुर शाह राह पर 27 किलो मीटर के फ़ासले पर वाक़ेअ है। जो "अम्बेठी बन्दगी मियां" से मशहूर है चूंकि यहाँ इस इलाक़े के बहुत मशहूर बुर्जुग कुदवतुस्सालिकीन हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया सानी उर्फ़ बन्दगी मियां रहमतुल्लाहि तआला अलैह का आस्तानए मुबारका है। हर साल ज़ीक़ादा के महीने में आलीशान पैमाने पर उर्स पाक होता है आलमगीर शोहरत भी इस क़स्बा को बई वजह हासिल है कि सल्तनते मुग़लिया के अज़ीम फ़रमारवा जिनका दौरे हुकूमत सुनहरा दौर कहलाता है और मुग़लिया सल्तनत को वसीअ़ फ़र्माने वाले शहंशाहे हिन्दुस्तान हज़रत ग़ाज़ी मुहय्युद्दीन औरंगज़ेब आलमगीर अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान के उस्तादे मुहतरम शेख़ुल मन्क़ूलात वल्माक़ूलात शम्सुल्आ़रिफ़ीन हज़रत मुल्ला अहमद जीवन रदियल्लाहु तआला अन्हु का मस्कन व मदफ़न है। आज भी आपका आस्तानए मुबारका मरजए ख़लाइक़ फ़ैज़ बख़्श आम है। खुसूसन त़ालिबाने उलूम मज़ारे पाक पर हाज़िर होकर फ़ियूज़ो बरकात से मालामाल हो रहे हैं। आपकी तसानीफ़ से उसूले फ़िक़्ह की मशहूर किताब "नूरुल अन्वार" मदारिसे अरबिया में दाख़िले दर्स है। तफ़सीरे क़ुर्आने पाक अरबी में तफ़सीराते अहमदिया" के नाम से मशहूर व मारुफ़ व मुस्तनद तस्नीफ़ है। हज़रत मुल्ला जीवन अलैहिर्रहमतुलमन्नान के आस्ताने से क़रीब ही हज़रत शेरबेशए अहले सुन्नत रदियलमौला तआला अन्हु के

अज्दादे किराम अपने ही ख़ित्तए आराज़ी में आसूदए ख़्वाब हैं।

सारे माहौल में खुश्बू है तेरी यादों की ।
हमने ग़म ख़ाने को फूलों से सजा रखा है।।

आपके अज्दादे किराम आफ़रीदियुन्नस्ल अफ़गानी पठान थे। दुर्रए ख़ैबर से हिन्दुस्तान आए। हुकूमते वक़्त ने आपको मूरिसे आला मुहम्मद ख़ाँ साहिब आफ़िन्दी आफ़रीदी को फ़ौजी अफ़्सर मुक़र्रर किया। कारहाए नुमायां अन्जाम देने के सिले में हुकूमत की जानिब से अमेठी में मुआफ़ियात मिलीं। लिहाज़ा आपने क़स्बा अमेठी को अपना मस्कन बनाया।

इसी अफ़्सरे शाही और जागीरदार ख़ानदान के चश्मो चिराग़ हज़रत शेरबेशए अहले सुन्नत अलैहिर्रहमा का जब इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत रदियल्लाहु तआला अनहु की निगाहे विलायत ने इन्तिख़ाब किया तो अपनी आग़ोशे इल्म में तरबियत फ़र्माकर अपना मज़हर बनाया और "अबुलफतह" वलदे मराफ़िक का तम्ग़ए फतह अता फ़र्मा कर दुनियाए सुन्नियत को ऐसी नेअ़मते अज़ीम की शक्ल में रहबरे कामिल अता किया कि अपने हर फ़न में और हर मैदान में शाने मज़हरियत दिखाई, उफ़ुके इस्लाम पर ऐसी ऐसी जल्वा नुमाई फ़र्माई कि –

किसको यारा है कि खुर्शीद के आगे चमके ।
शमअ गुल होती है सूरज की ज़िया से पहले।।

आप में اِتَّقُوْا بِفَرَاسَةِ الْمُؤْمِن का जल्वा नज़र आता था। और क्यों न हो कि आपके ज़बानो क़लम में इमामे शरीअत व त़रीक़त मुजद्दिदे आज़मे दीनो मिल्लत आला हज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु की जल्वा गरी थी। चौदहवीं सदी के मुहय्ये दीन नासिरो नाशिरे इस्लाम मज़हरे अबू हनीफा शेख़ुल इस्लाम वल्मुस्लिमीन इमाम अहमद रज़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु के फ़र्ज़न्दे रुहानी थे। यही वजह थी कि दुनियाए सुन्नियत ने आपको "मज़हरे आला हज़रत" कहा। बज़्मे अख़्यार हो या नरग़ए

अग़ियार या नापाक सियासत की यल्ग़ार, जब भी किसी ने ख़िलाफ़े शरीअते इस्लामिया ज़बान खोली या किसी के क़लम ने जुम्बिश की उसी वक़्त ऐसी ललकार दी कि गुस्ताख़े ज़बान पर ताला लग गया और क़लमे बद रक़म को तोड़ दिया ऐसी शेराना हिम्मत का लोगों ने मुशाहिदा किया कि–

दुश्मनों पे बनके चमका जुल्फ़िक़ारे हैदरी।
और जब अपनों में पहुँचा प्यार की शबनम हुआ।।

आप एक आन और यक निगाह किसी को ख़िलाफ़े शरअ बर्दाश्त न करते थे, आप सच्चे आशिक़े रसूल थे कि गुफ़्तार व क़िरदार, अक़्वाल व अफ़्आल, आदत व अतवार और ख़साइल व समाइल में नाइबे शेरे ख़ुदा दिलवरे ग़ौसुल वरा, आसमाने इत्तिक़ा के नय्यिरे आज़म थे। चुनांचे क़मरे मा़रहरा मुतह्हरा हज़रत शेरबेशए अहले सुन्नत अलैहिर्रहमतु वर्रिदवान की शान में फ़र्माते हैं।

खुदा रा वली बूद हशमत अली नबी रा रज़ी बूद हशमत अली।
ज़े फैज़ाने बूबक्र सिद्दीके अकबर नक़ी व स़फी बूद हशमतअली।
ज़े फारूको उस्मां ज़ियाए गिरिफ़्त बदीने अली बूद हशमत अली।
ज़े नूर कुदूमे शहे गौसे आज़म बही व सनी बूद हशमत अली।
ज़े फैज़े रज़ा और बरकाते क़ासिम रफीओ ज़की बूद हशमत अली।

आला हज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने फर्ज़न्दे रूहानी वलदे मराफ़िक़ को जैसे जैसे रूमूज़े शरीअत, अस्रारे त़रीक़त का शनासा बनाया और बहरे मारिफ़तो ह़क़ीक़त का शनावर बनाया और जामए इर्फ़ानी से सैराब किया कि इन नवाज़िशात व अता पर हज़रत शेरबेशए अहले सुन्नत ने अपने एक शेर में इस तरह इज़हार फर्माया।

रज़ा के हाथ से पी है वह मै यारो मैंने
कि जिसका रोज़ बढ़ेगा खुमार आँखों में

हज़रत की ज़ाते बा बरकात ऐसी हमा जिहात थी कि जिसने ज़िन्दगी के जिस रूख से देखा यगाना व यकता व हमता

पाया चुनांचे हज़रत बा बरकत शेखे़ तरीक़त अल्लामा मुफ़्ती सय्यिद मुहम्मद हुसैनी साहिब क़िब्ला दामत फ़ुयूज़हम सज्जादा नशीन आस्तानए शम्शिया रायचूर उर्से इश्मती 1417 हि० के मौक़े पर अपनी एक तक़रीर में इर्शाद फ़र्माते हैं।

मोहतरम सामईन: तक़रीबन पन्द्रह साल से इस आस्तानए मुबारका की हाज़िरी के लिये तड़पता रहा –लेकिन चन्द मजबूरियाँ कहिये या मेरी बद नसीबी कहिये कि मुझे हाज़िरी नसीब नहीं हुई आज मुझे वह दिन और वह सआदत नसीब हुई कि बारगाहे शेरबेशए अहले सुन्नत में हाज़िर हूँ –मोहतरम सामईन जो मेरा वुजूद है और मस्लके आलाहज़रत के मुताल्लिक़ जो मेरी तहरीरात हैं जो "सुन्नी आवाज़" के ज़रिए आप देख रहे हैं, मुल्क मुलाहज़ा कर रहा है वह मेरे शेरबेशए अहले सुन्नत की करामत है– मैं एक मुशाहिदा सुनाऊँ जो मुझ पर गुज़रा तो आप हैरत करेंगे–और वह तो मैं बाद में बताऊँगा जो मेरे वालिद माजिद और हमारे आक़ा शेरबेशए अहले सुन्नत के दर्मियान क्या ताल्लुक़ात थे–लेकिन मैं ये बताने जा रहा हूँ कि मेरे आक़ा की करामत मुझे देख लीजिये– अभी मैं छोटा था क़रीबुल बुलूग़ था नौ उमर समझ लिजिए' अभी मैंने दर्से निज़ामिया पढ़ना नहीं शुरू किया था – हमारे आक़ा की ख़्वाहिश थी कि हमारे ख़ानदान में कोई आलिम व फ़ाज़िल बन जाये–ग़ालिबन 1956 ई० में हमारे और आपके आक़ा शेरबेशए अहले सुन्नत मेरे वालिद माजिद की दावत पर रायचुर तशरीफ़ लाये जो मन्ज़र था तक़रीर का वहाँ वाले जानते हैं जो मोअम्मर हैं और मैंने भी देखा है कि मैं होश रखता था मैंने भी ये देखा है ऐसा महसूस होता था आसमान ही नही ज़मीन लरज़ रही है, आसमान कांप रहा था देवबन्दियत नज्दियत घबरा रही है–बहर सूरत हज़रत सय्यिदुना शेरबेशए अहले सुन्नत की तक़रीर हुई – तक़रीर के बाद मेरे वालिद माजिद ने मेरे जद्दे अमजद क़ुतुबे रायचुर हज़रत सय्यिदुना शम्स आलम रदि़यल्लाहु तआला अन्हु

की बारगाह में लेकर हाज़िर हुए अब इधर शेरबेशए अहले सुन्नत का मन्ज़र देखिये ख़्वाजा शरीफ़ में हज़रत शेरबेशए अहले सुन्नत हाज़िर हैं मज़ारे पाक पर हाज़िर हैं वालिद माजिद खड़े हैं और ये बता रहे हैं। कि हुजूरे वाला ये ख़ादिमीन के मज़ारात हैं। ये फुलां चीज़ है ये फुलां चीज़ है ये फुलां मक़ाम है। हज़रत शेरबेशए अहले सुन्नत खड़े हैं मज़ारात पर मैं बाजू में खड़ा हूँ। अचानक मुझे ख़िताब किया मेरे वालिद साहिब से फ़र्माया सय्यिद साहिब इन्हें आलिमे दीन बनाइये, इन्हें आलिमे दीन बनाइये और इसी पर बस नहीं किया मैं बच्चा था मज़ारे पाक के सामने मुझे समेटा और मुझे सीने से लगाया और क्या कहा मुझे याद नहीं – कुछ कहा और कुछ दुआयें दीं – वालिदे माजिद से फ़र्माया इसे आलिमे दीन बनाइये इससे दीन की बहुत बड़ी ख़िदमत लेनी है। उस वक्त मुल्क के हालात कुछ मुनासिब नहीं थे 'मुल्क के हालात कुछ बिगड़े हुये थे' मेरे वालिदे माजिद ने फ़र्माया कि हुजूर मुल्क के हालात ऐसे हैं। बच्चा छोटा है नादान है हज़रत शेरबेशए अहले सुन्नत फर्माते हैं आपके बुजुर्गाने दीन हम ख़ादिमों की हिफ़ाज़त फर्माते हैं' क्या अपने शहज़ादों की हिफ़ाजत न फ़र्मायेंगें। बहर सूरत इन्हें आलिमे दीन बनाइये इनसे दीन की बहुत बड़ी ख़िदमत लेनी है। सबसे पहले मुझे पढ़ने के लिये भेजा गया बड़ी तफ़्सील है बहर सूरत दर्से निज़ामिया से फ़ारिग़ हुआ। ओलमाए अहले सुन्नत की बारगाहों में हाज़िर हुआ। जो कुछ भी मुझसे बन पड़ा मस्लके आला हज़रत व उलूमे दीनिया की ख़िदमत करता रहा।

हुजूर शेरबेशए अहले सुन्नत ने मस्लके आलाहज़रत की तरवीजो इशाअत में जो ख़िदमाते दीने मतीन की हैं और अवामे अहलेसुन्नत पर जो फुयूज़ो बरकात हैं कि जिनकी निगाहे करामत ने जादए मुस्तक़ीम से भटके हुये न जाने कितने क़दमों को राहे हक़ का रहबर बना दिया और जिनकी एक एक तक़रीर से, एक एक ख़िताबे ज़रताब से करोड़हा सीधे सादे मुसलमानों के अक़ीदे

की हिफ़ाज़त फर्माई, जिसका तज़्किरा करते हुए अपने एक ख़िताब में हज़रत अल्लामा शेखुल माकूल व मन्कूल मुफ़्ती गुलाम मुहम्मद साहिब क़िब्ला ज़ीद मुजिदहू मुफ़्तीए महाराष्ट्र अल्जामिअतुल अम्जदिया नागपुर बमौक़ए उर्से हश्मती 1418 हिजरी फ़र्माते हैं।

हज़रत शेरबेशाए अहले सुन्नत (अलैहिर्रहमा)से इस्तिफ़ादा करने के सिलसिले में मेरी कोई नई बात नहीं, मैं समझता हूँ कि तक़रीबन 1360हि० से मैं हज़रत के साथ रहा और ताल्लुक़ात रहे, हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर भी होता रहा और साथ रहने का मौक़ा मिला और बार बार नागपुर बुलाकर यह इम्तियाज़ करवाता रहा कि सुन्नियत क्या है। और सुन्निय्यत के खिलाफ़ चीज़ें क्या हैं। अल्हम्दुलिल्लाह! कि नागपुर में दूध का दूध और पानी का पानी होकर रह गया। जहाँ इख़्तिलाफ़ था, ख़लत़ मलत़ था, मिली जुली सूरते हाल थी जिससे निकलना बड़ा मुश्किल था। हमने हज़रत शेरबेशाए अहले सुन्नत से फ़ाइदा हासिल किया इस्तिफ़ादा हज़रत ही से किया है। और आज अल्हम्दुलिल्लाह नागपुर में ग़लबा सुन्निय्यत ही का है ये सारे फ़ैज़ान हज़रत शेरबेशाए अहले सुन्नत (रदियल्लाहु तआला अन्हु) के ही हैं। और आपने वही मस्लक दिखाया है जो सय्यिदुना आला हज़रत (रदियल्लाहु तआला अन्हु) का मस्लक है। हम आपसे ये अर्ज़ करेंगे कि याद रखिये अगर नजात है तो मस्लके आला हज़रत में ही है। और बाक़ी जो रास्ते रहते हैं या तो वह इर्तिदाद के हैं, कुफ़्रो शिर्क के हैं या गुमराही के हैं, ज़लाल व इज़्लाल के हैं। हम आपसे अर्ज़ करेंगे कि आप ज़्यादा से ज़्यादा इस मस्लक को फैलायें और इसके लिये बेहतर तरीक़ा यही है जो हज़रत शेरबेशाए अहले सुन्नत ने इख़्तियार किया था कि बेख़ौफी के साथ मस्लके आलाहज़रत की इशाअत की जाए और न किसी से डरा जाये न दबा जाये"।

मस्नदे इर्शाद पर भी एक रफ़ीउश्शान मुर्शिदे गिरामी नज़र आते हैं। सालिकाने तरीक़त और गिरोहे सूफ़िया में भी आप

मुम्ताज़ हैसियत रखते हैं। फ़नाफ़िश्शैख़ ऐसे कि अपने दौर में बेमिस्ल दिखाई देते हैं। आशिक़े रसूल ऐसे कि–

الحب لله والبغض لله

का मज़हर है और अह़कामे शरीअत पर ऐसे आमिल की क़ुर्आने अज़ीम की आयते मुक़द्दसा

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا (پارہ ۲۸۔آیت ۶ سورہ تحریم)

की अमली तफ़्सीर नज़र आते हैं। उन खूबियों तज़्किरा करते हुये उर्से हश्मती 1418 हि० के मौक़े पर हज़रत अल्लामा मौलाना मुजीब अशरफ साहिब क़िब्ला दाम ज़िल्लहुन्नूरानी (नागपुर) अपनी तक़रीरे पुर तनवीर में इर्शाद फ़र्माते हैं।

मेरे दीनी इस्लामी भाइयो! हुज़ूर सय्यिदुना शेरे रज़ा हज़रत शेरबेशए अहले सुन्नत (रदियल्लाहु तआला अन्हु) की हम रिकाबी में मैंने भी बहुत से सफ़र किये और आपके जलसों मे शिर्कत का नियाज़ मन्दाना शरफ़ ह़ासिल हुआ–फ़नाफ़िर्रज़ा अगर किसी को मैंने देखा तो वह हुज़ूर सय्यिदुना शेरबेशए अहले सुन्नत की ज़ाते गिरामी है। और मुख़्तसर लफ्ज़ों में मुझे ये कहना है कि आपने अपने परिवार को और अपने अहल को अपने नफ़्स को जहन्नम से बचाया। और यही एक सच्चे और अच्छे आलिम की ज़िम्मेदारी है कि जो क़ुर्आन ने मुसलमान के सर पर रखी है अल्लाह तआला फ़र्माता है–

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا (پارہ ۲۸۔آیت ۶ سورہ تحریم)

ईमान वालो अपने को और अपने बाल बच्चों को अहल को जहन्नम की आगसे बचाओ– दो ज़िम्मेदारी है खुद भी बचो और अपने फरेन्ड सक्रिल को अपने मुरीदों को और जो जितना बड़ा होगा उसके परिवार का हल्का उतना ही वसीअ होगा। आप अपने घर के ज़िम्मेदार हैं और आलिमे दीन अपने शहर का ज़िम्मेदार है और एक मुजद्दिदे वक़्त अपने पूरे इलाक़े का ज़िम्मेदार है। पूरी मिल्लते इस्लामिया का ज़िम्मेदार है। उनके ख़ोलफ़ा अपने

तमामतर वसीअतर मुरीदों के ज़िम्मेदार और मुरब्बी और बाप हैं।

सबको यह हुक्म है –

قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا ۝ (پارہ۲۸۔آیت۶،سورہ تحریم)

अपने को भी बचाओ और अपने अहलो अयाल को भी जहन्नम से बचाओ हुज़ूर शेरबेशए अहले सुन्नत की ज़िन्दगी देखनी है तो उनको आप ऐसी नज़र से इस नुक़्तए निगाह से देखें कि खुद भी जहन्नम से बचे और अपने उन तमाम मस्लके आला हज़रत के जो मानने वाले थे सब अहमद रज़ा के अहल थे, सब मौलाना हश्मत अली हज़रत शेरबेशए अहले सुन्नत के परिवार थे। उन्होंने अपनी इस क़ुर्आनी ज़िम्मेदारी को पूरा करके और पूरी दयानतदारी ज़िम्मेदारी, शराफत, बहादुरी के साथ इस तरह से बचाया, जिसकी मिसाल हम हिन्दुस्तान और एशिया में नहीं पा सकते। ये था उनका कारनामा। तक़रीरें अपनी जगह पर हैं, दिलों को बदल देना अपनी जगह पर है। नारए तक्बीर लगवा लेना और है। अपने अपने हुस्ने कलाम पर दाद देना और है, और इलाक़े को वहाबियत से बचा लेना और है। ये हैं इमाम, हम शेरबेशए अहले सुन्नत को ख़तीब की नज़र से नहीं देख रहे हैं। बल्कि त़बीब की नज़र से देख रहे हैं। वह ख़तीब ही नहीं थे बल्कि वह दिलों के और रूह के तबीब थे। और

قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا ۝

की जलवा फ़र्माइयाँ उनके दामने करम से वाबस्ता थीं"।

शेरबेशए अहले सुन्नत (रदि़यल्लाहु तआला अन्हु) ने अपनी तमामतर खुसूसि़यात के बावुजूद अपनी पूरी ज़िन्दगी फिरक़ए बाति़ला और मज़ाहिबे बाति़ला से मुनाज़रा करने में, इह़क़ाक़े हक़ इबताले बाति़ल में गुज़ार दी ज़िन्दगी का हर लम्हा दुश्मनाने रसूल व गुस्ताख़ाने बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की सरकूबी के लिये वक़्फ था। चूंकि इसी दौर का सबसे बड़ा फ़ित्ना वहाबियत नज्दियत है– और उसके अलावा

दीगर फिरक़ए बातिला क़ादियानियत, नैचरियत, चकड़ालवियत, ख़ाकसारियत, बहाइयत, और आरियाई शुद्धी तहरीक सबके बुत़लान पर मुनाज़रा फर्माया, हर मक़ाम पर उनको शिकस्त व हज़ीमत दी।

हज़रत की खुसूसियात मे मुनाज़रे का बल्कि वह मुम्ताज़ सिफ़त जिसमें कोई उनका शरीक व सहीम नहीं ग़ालिबन साठ मुनाज़रों की रूदादें मारिज़े तहरीर में आ चुकी हैं। और बहुतेरे मुनाज़रे में जिनकी रूदादें मारिज़े तहरीर में तो न आ सकीं लेकिन लोगों की ज़बान पर अब भी बयानन जारी हैं।

ये किताब जो आपके हाथों में है ये भी भदरसा ज़िला फ़ैज़ाबाद के एक मशहूर मुनाज़रे की बहुत ही दिलचस्त ईमान अफरोज़ वहाबियत सोज़ रूदाद है– जैसे जैसे आप पढ़ते जायेंगे, वैसे वैसे वहाबियत नज्दियत के काले करतूत और उनकी अय्यारी व फ़रेब की नक़ाब कुशाई होती जायेगी। हज़रत शेरबेशए अहले सुन्नत की वह तहरीरी तक़रीर जो फ़ैज़ाबाद कचहरी में मुक़दमा की शक्ल में शामिल है जिसको पढ़ने से ईमान में ताज़गी, रूह में बालीदगी पैदा होगी और इश्क़े रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अ़ला आलिही वसल्लम और अहले बैते अत़हार, सहाबए किराम व औलियाए इज़ाम रिद्वानुल्लाहि तआ़ला अ़न्हुम अजमईन की शमअ दिल में रौशन होगी। और बे साख़्ता ज़बान पर ये जारी होगा–

दुश्मने अहमद पे शिद्दत कीजिए मुल्हिदों से क्या मुरव्वत कीजिए
शिर्क ठहरे जिसमें ताज़ीमे रसूल उस बुरे मज़्हब पे लानत कीजिए
कीजिए नारा रसूलुल्लाह का मुफ़्लिसो सामाने दौलत कीजिए
ग़ैज़ में जल जाएं बेदीनों के दिल या रसूलल्ला की कसरत कीजिए

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

तज़्किरा अहले मुहब्बत का

अल्हम्दुलिल्लाह यह किताब मुशाहिदे मिल्लत अकेडमी की हिन्दी की पहली इशाअत है। लाइक़े मुबारकबाद हैं मुहिब्बे आस्ताना मुजाहिदे सुन्नियत आली विक़ार जनाब **एहसान भाई नूरी** तव्वलल्लाहु उम्रहू व मास्टर **इख़्लास अहमद** साहिब क़ादिरी अज़्हरी ज़ीदत इनायतुहू.........जिनके तआवुन से यह किताब आपके हाथों तक पहुँचाई गई .....इन हज़रात का जज़्बए रुहानी हुज़ूर मज़हरे आलाहज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में नज़रानए अक़ीदत पेश फ़र्माकर मस्लके आलाहज़रत की तरवीजो इशाअत में कारवाने अकेडमी के इशाअती हमसफ़र होकर नेमते दारैन से सरफ़राज़ हुए।

खुदाए जुल्जलालि वल्इकराम जल्ला शानहू हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के सदक़े व तुफ़ैल इन हज़रात ख़्वाजा ताशाने हशमतियत को दारैन की बेशुमार नेमतों सआदतों फ़र्हतों मसर्रतों से मालामाल फ़र्माए। तिजारत में रोज़ अफ़्ज़ूं तरक़्क़ी अता फ़र्माए। हुज़ूर आला हज़रत व मज़हरे आला हज़रत व औलियाए तरीक़त रिज़्वानुल्लाहि तआला अलैहिम के फ़ियूज़ो बरकात से मुशर्रफ़ फ़र्माए। तमाम कुल्फ़तों, सऊबतों और अर्ज़ी व समावी बलाओं से और आदाए दीन व मुर्तद्दीन, मुश्रिकीन, हासिदीन मुफ़्सिदीन, वहाबियों, देवबन्दियों के मक्रो शर व कैद से हमेशा महफ़ूज़ फ़र्माए। आमीन सुम्म आमीन बिजाहि हबीबिहिल करीम अलैहि व अला आलिही व सहबिहिस्सलातु वत्तस्लीम –

नबीरए मज़हरे आलाहज़रत

मौलाना मुहम्मद बुरहान रज़ा ख़ाँ हशमती

5 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1431 हिजरी मुताबिक़ 22 जनवरी 2010ई0 जुमा मुबारका

मुशाहिदे मिल्लत अकेडमी आस्तानए आलिया हशमतिया

हशमत नगर पीलीभीत शरीफ़ (उ.प्र0)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

اللّٰہُ رَبُّ مُحَمَّدٍ صَلّٰی عَلَیْہِ وَسَلَّماً ۔ نَحْنُ عِبَادُ مُحَمَّدٍ صَلّٰی عَلَیْہِ وَسَلَّماً
اَللّٰھُمَّ یَا حَیُّ یَا قَیُّومُ یَا فَرْدُ یَا حَکَمُ یَا عَدْلُ یَا قُدُّوسُ یَا وَدُوْدُ یَا ھَادِیُ لَکَ
الْحَمْدُ صَلِّ وَسَلِّمْ وَ بَارِکْ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا وَمَالِکِنَا وَحَافِظِنَا
وَنَاصِرِنَا وَشَافِعِنَا مُحَمَّدٍ نَبِیِّکَ الْمُجْتَبٰی وَ رَسُوْلِکَ الْمُرْتَضٰی وَحَبِیْبِکَ الْمُصْطَفٰی
وَاٰلِہٖ ذَوِی الصِّدْقِ وَالصَّفَا :: وَصَحْبِہٖ اُولِی الْحُبِّ وَالْوَفَا :: وَخُلَفَائِہٖ سَادَاتِنَا اَبِی
بَکْرِ نِ الصِّدِّیْقِ الْاَکْبَرِ وَعُمَرَ الْفَارُوْقِ الْاَعْظَمِ وَعُثْمَانَ الْغَنِیِّ ذِی النُّوْرَیْنِ وَ
اَسَدِ اللّٰہِ عَلِی نِ الْمُرْتَضٰی :: وَوَلَدِہِ الْاِمَامِ حَسَنِ نِ الْمُجْتَبٰی :: وَسِبْطِہِ الْاِمَامِ
حُسَیْنِ نِ الدَّافِعِ لِلْکَرْبِ وَالْبَلَاءِ :: وَفِلْذَۃِ کَبِدِہِ الْبَتُوْلِ الزَّھْرَاءِ سَیِّدَۃِ النِّسَاءِ وَقُرَّۃِ
عَیْنِ سَیِّدِ الْاَنْبِیَاءِ :: وَابْنِہٖ سَیِّدِنَا عَبْدِ الْقَادِرِ غَوْثِ الْوَرٰی :: وَسِرَاجِ اُمَّتِہٖ سَیِّدِنَا
اَبِی حَنِیْفَۃَ اِمَامِ اَئِمَّۃِ الْھُدٰی وَاِمَامِ اَھْلِ سُنَّتِہٖ وَالْمُجَدِّدِ الْاَعْظَمِ لِدِیْنِہٖ وَ مِلَّتِہٖ
مُرْشِدِنَا اَحْمَدَ رَضَا :: وَعَلَیْنَا وَعَلٰی جَمِیْعِ اَھْلِ سُنَّتِہٖ وَجَمَاعَتِہٖ دَائِماً اَبَداً ::
اٰمِیْنَ بِھِمْ وَلَھُمْ وَفِیْھِمْ وَمَعَھُمْ یَا رَبَّنَا رَبَّنَا رَبَّنَا رَبَّنَا رَبَّنَا :: اٰمِیْنَ بِرَحْمَتِکَ یَا اَرْحَمَ
الرَّاحِمِیْنَ وَیَا اَکْرَمَ الْاَکْرَمِیْنَ ::

अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़र्माता है!

اَلَآ اِنَّ اَوْلِیَاءَ اللّٰہِ لَا خَوْفٌ عَلَیْھِمْ وَ لَا ھُمْ یَحْزَنُوْنَ ہ اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْ وَکَانُوْ یَتَّقُوْنَ

यानी आगाह हो जाओ बेशक जो लोग अल्लाह के औलिया और उसके दोस्त हैं उन पर न किसी क़िस्म का ख़ौफ़ है और न वह ग़मगीन होंगे। वह लोग जो ईमान लाये और वह तक़्वा व परहेज़गारी करते थे। इस आयते करीमा में अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला अपने महबूब सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के ग़ुलामाने ख़ास व मुक़र्रबाने बा इख़्तिसास हज़राते औलियाए किराम रदियल्लाहु तआला अन्हुम की मद्हो सना फ़र्माता है और ईमान वालों को उनके मरातिबे आलिया की त़रफ़ तवज्जो दिलाता है। चूंकि हज़रात औलिया रदियल्लाहु तआला अन्हुम ज़ाहिर में इन्सान ही होते हैं मगर बात़िन में वह हर वक़्त अल्लाह तआला के साथ होते

हैं उनके कुलूब मुस्तफ़ा प्यारे सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के जल्वों से मामूर होते हैं। तो ऐसा न हो कि लोग औलियाए इलाही की ज़ाहिरी शक्लो सूरत देखकर उनको अपनी तरह खाता पीता देखकर उनको अपना ही सा इन्सान समझ कर उनकी तरफ़ से बे परवाह होकर उनके फ़ियूज़ो बरकात से महरुम हो जायें इस वास्ते रब अज़्ज़ा व जल्ला लफ़्ज़े "अला" फ़र्मा कर मुसलमानों को मुतनब्बेह फ़र्माता है कि ग़फ़्लत से दूर होकर होशियार होकर औलियाए किराम की शानें सुनो और उनके फ़ियूज़ो बरकात हासिल करो।

कलामे अरब में लफ़्ज़े"इन्न" के साथ मुअक्कद जुम्ला मुन्किर के ख़िताब में स्तेमाल किया जाता है। कुर्आने अज़ीम जिन सहाबए किराम (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम) के सामने नाज़िल हुआ उनमें से तो कोई ऐसा मुतसव्वर नहीं हो सकता जो औलियाए किराम (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम) के मरातिबे जलीला से मुन्किर हो। रह गये कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन तो जब वह शाने रिसालत ही के मुन्किर थे तो उनसे यह कहने के क्या माना कि शाने विलायत को मानो। फिर आख़िर यह लफ़्ज़े इन्न के साथ मुअक्क़द जुम्ला किन लोगों को ख़िताब करके फ़र्माया जा रहा है। तो अस्ल बात यह है कि कुर्आने पाक "अबदल्आबाद"तक के लिए नाज़िल हुआ है। किसी एक ज़माने के साथ मख़्सूस नहीं। और अल्लाह तआला अपने इल्मे क़दीम से जानता था कि आइन्दा ज़माने में ऐसे बदनसीब लोग भी पैदा होंगे जो शाने रिसालते अम्बिया पर ईमान रखने के मुददई होंगे मगर शाने विलायते औलिया के मुन्किर होंगे तो इस आयते करीमा में दर हक़ीक़त उन्हीं मुन्किरीने औलिया मुसलमान कहलाने वालों को मुख़ातिब करके लफ़्ज़े "इन्न"के साथ मुअक्क़द जुम्ला इर्शाद फ़र्माया जा रहा है कि ऐ विलायते औलिया से इन्कार करने वालो इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह के वलियों पर किसी क़िस्म का ख़ौफ़ नहीं न उनको किसी तरह का कोई

ग़म होगा। जब तुम मेरे महबूब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की शाने रिसालत पर ईमान रखने के मुद्दई हो तो मेरे महबूब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के बन्दगाने ख़ास औलियाए किराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) की शाने विलायत पर भी ईमान लाओ। फिर औलिया की तारीफ़ क्या है वली कहते किसे हैं। क्या जो शख़्स हवा पर उड़ता हो वह वली है, क्या जो शख़्स आग में रहता हो उसे वली समझें, क्या जो शख़्स दरिया पर चलता हो उसे वली जानें, तो कुर्आने अज़ीम फ़र्माता है और वली की जामेअ मानेअ तारीफ़ बताता है कि।

اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا یَتَّقُوْنَ

कि जो शख़्स मोमिने कामिल और मुत्तक़ीए कामिल हो बस वही वली है तो कुर्आने पाक ने फ़र्मा दिया कि जिसका ईमान कामिल और तक़्वा कामिल हो उसी को वली मानो अगर्चे कोई बात ख़िलाफ़े आदत उससे ज़ाहिर होते न देखो। ईमान किसे कहते हैं कुर्आने अज़ीम की मुतादि्दद आयतों और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की बकसरत हदीसों ने इर्शाद फ़र्मा दिया कि अपने माँ बाप भाई बन्द बेटे पोते नवासे बीवी बच्चे कुम्बे क़बीले माल व जान व आबरु ग़रज़ दुनिया की हर एक महबूब चीज़ से ज़्यादा अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम से महब्बत रखना और आलम के हर एक मुअज़्ज़म से बढ़कर अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की तौक़ीरो ताज़ीम करना अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के दोस्तों से दोस्ती अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के दुश्मनों से दुश्मनी रखना इसी का नाम ईमान है। इन चार बातों में से कोई

बात भी जिसमें कम हो वह ईमान ही नहीं रखता। अगर्चे वह कैसे ही ज़बरदस्त ईमान का दावा रखता हो। ज़ाहिर है कि इन्सान के दिल में जिसकी महब्बतो अज़मत जा गुज़ीं होती है उसकी हर बात को बे चूनो चेरा तस्लीम किया करता है। जब ईमान इसी का नाम हुआ कि दुनिया की हर एक महबूब चीज़ से ज़्यादा अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के साथ महब्बत की जाए जहान के हर एक मुअज़्ज़म से बढ़कर अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के साथ मुहब्बत की जाए, जहान के हर एक मुअज़्ज़म से बढ़ कर अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की ताज़ीम की जाए तो जिस क़दर बातें अल्लाह तबारक व तआला के भेजे हुए उसके प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लाए हुए दीने इस्लाम में ज़रुरतन व बदाहतन साबित हैं इस तरह कि तमाम ओलमाए इस्लाम और उनके पास नशिस्त व बरख़ास्त रखने वाले अवाम मुस्लिमीन भी उनको दीन की बातें जानते और मानते हों। उन तमाम ज़रुरी दीनी बातों का मानना भी ज़रुरी हुआ। इसी लिए कुतुबे फ़िक़हिया व कुतुबे कलामिया में लिखा है कि तमाम ज़रुरियाते दीन को सच्चा मानना ईमान है। और किसी एक मस्लए ज़रुरिया दीनिया का इन्कार कुफ़्र है। तो मुसलमान तो वही है जो तमाम ज़रुरियाते दीन पर ईमान रखता हो। और जो किसी एक ज़रुरी दीनी बात का इन्कार करे वह काफ़िर है। जो शख़्स तमाम मसाइले ज़रुरिया दीनिया का इन्कार करे वह भी काफ़िर है और जो शख़्स सिर्फ़ एक ज़रुरी दीनी मस्अले का मुन्किर हो वह भी काफ़िर है। काफ़िर होने में दोनों बराबर हैं। यहाँ से साबित हो गया कि जो शख़्स लोगों में वली कहलाता हो कश्फ़ो करामात दिखाता हो लेकिन किसी मस्लए ज़रुरिया दीनिया

का मुन्किर या अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के दोस्तों का दुशमन या अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के दुश्मनों का दोस्त हो वह बहुक्मे कुर्आने अज़ीम व हदीसे करीम व फ़िक़्हे क़वीम मोमिन ही नहीं और जब मोमिन नहीं तो वलीअल्लाह भी हर्गिज़ नहीं क्योंकि कुर्आने पाक में वली अल्लाह होने के लिए सबसे पहली, सबसे ज़्यादा ज़रुरी चीज़ ईमाने कामिल को बताया। अब तक़वा किसे कहते हैं तो कुर्आने अज़ीम ने बता दिया।

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ (پارہ۔۵،آیت۔۸۰)

यानी और जो शख़्स रसूल की इताअत करेगा तो बेशक उसने अल्लाह की इताअत की। और फ़र्मा दिया

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ (پارہ۔۳،آیت۔۳۱)

यानि ऐ महबूब तुम फ़र्मा दो कि लोगो अगर तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरा इत्तिबा करो अल्लाह तुमको महबूब बना लेगा। इन दोनों मुबारक आयतों और उनके मिस्ल दूसरी बकसरत आयाते इलाहिया ने निहायत रोशन तौर पर फ़र्मा दिया कि हुज़ूरे अक़दस पैग़म्बरे इस्लाम सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के अहकाम व फ़रामीन पर अमल करने उन्हीं के इत्तिबा का पाबन्द होने का नाम तक़वा है। जो मुसलमान जिस क़दर ज़्यादा हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की फ़र्मा बरदारी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के अहकाम की बजा आवरी करेगा। वह उसी क़दर ज़्यादा मुत्तक़ी होगा। आयते करीमा ने फ़र्मा दिया कि जो शख़्स हुज़ूरे अकरम पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की इत्तिबा करेगा उसको अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला महबूब बना लेगा तो वह ख़ुदा का महबूब और ख़ुदा उसका मुहिब्ब

होगा। और कोई मुहिब्ब हर्गिज़ यह नहीं चाहता है कि मेरा महबूब ज़लील व ख़्वार व मक़हूर हो तो ख़ुदा क्योंकर पसन्द फ़र्मायेगा कि जिन बन्दों को उनके इत्तिबाए रसूल के सबब महज़ अपने करम से उसने अपना महबूब बना लिया है वह रुस्वा व ज़लील व मग़लूब हों। एक और आयते करीमा में रब तबारक व तआला फ़र्माता है

وَمَنْ يُطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ٥ (پارہ۱۸،آیت۵۲)

यानि और जो अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा और अल्लाह से डरेगा और तक़्वा इख़्तियार करेगा तो यही लोग हैं कामयाब होने वाले। तो इर्शादाते क़ुर्आनिया से "कश्शम्सि फ़ीनिस्फ़िन्नहारि" रोशन व आशकार कि फ़ौजे दुनिया व फ़लाहे आख़िरत कामरानिए दुनिया व कामयाबिए आख़िरत व तरक़्क़ी व आज़ादी व इज़्ज़त व शौकत हासिल करने का सच्चा इस्लामी क़ुर्आनी रास्ता यही है और सिर्फ़ यही है। कि मुसलमान सच्चे मुसलमान कामिलुल ईमान बनें। अपने अक़्वाल व अफ़्आल व अहवाल में हुज़ूरे अक़दस शहंशाहे दो आलम सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का इत्तिबा करें। फिर दुनिया की सल्तनत का तख़्त व ताज उनकी ठोकरों में होगा और आख़िरत की सल्तनत का ताज उनके सरों पर रखा जायेगा। मुसलमानो चाहो तो तुम मुस्लिम लीग में शामिल हो या कांग्रेस के मेंम्बर बनो चाहो नमाज़ी फ़ौज बनाओ या नमाज़ी फ़ौज सजाओ। कितनी ही कानफ़्रेंसें कमेटियां गढ़ो।कैसी ही ज़बरदस्त धुआंधार रेज़ुलियुशन पास करो।याद रखो तुमको सच्ची हक़ीक़ी इस्लामी कामयाबी व तरक़्क़ी व आज़ादी हर्गिज़ नहीं हासिल हो सकती जब तक तुम क़ुर्आने पाक के इर्शाद पर सच्चे दिल से अमल पैरा न होगे। आज मुसलमान कहलाने वालों का यह हाल है कि साढ़े तेरह सौ बरस वाले पुराने सच्चे दीने इस्लाम व मज़्हबे अहलेसुन्नत के खिलाफ़ नये नये फ़िरक़े

निकल रहे हैं। एक तरफ़ फ़िरक़ए वहाबिया देवबन्दिया निकलता है जिसका एक अक़ीदा ये है कि खुदा चोरी कर सकता है, शराब पी सकता है, जाहिल हो सकता है, झूट बोल सकता है, जितने बुरे और गन्दे घिनौने काम बन्दा कर सकता है, वह सब काम खुदा भी कर सकता है (देखो वहाबियों देवबन्दियों के मुक़्तदा व पेशवा मोलवी ख़लील अहमद अम्बेठी की इबारत सफ़हा 86 पर)।

हुजूर शेरबेशहे अहले सुन्नत अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने एक मर्तबा नसीहत फ़र्माते हुए इर्शाद फ़र्माया अपनी किसी ग़लत़ बात को सहीह साबित करने और उसकी ग़लत तावील करने की हर्गिज़ हर्गिज़ हर्गिज कभी कोशिश न करना ग़ल्ती को ग़ल्ती मानना उससे बउज्लत रुजूअ करना हक़ पसन्दी है और ग़ल्ती को सहीह बनाने की कोशिश करना हट धरमी ओर गुमराही की जड़ है।

किताब तज़्किरतुल्ख़लील

मुसन्निफ़ : मोलवी आशिक इलाही मेरठी

(चुनांचे अस्ल इबारत इस किताब की यह है)

चोरी व शराब खोरी व जहल व ज़ुल्म से मुआरिज़ा भी कम फहमी से नाशी है। क्योंकि मालूम होता है कि गुलाम दस्तगीर के नज़्दीक ख़ुदा की क़ुदरत का बन्दे की क़ुदरत से जायद होना और ख़ुदा के मक़्दूरात का बन्दे के मक़्दूरात से ज़ायद होना ज़रूरी नहीं। हालांकि यह कुल्लिया मुसल्लम अहले कलाम है जो मक़्दूरुल अब्द है वह बिमक़्दूरिल्लाह है।

अस्ल वाक़िआ यह है कि वहाबियों के इमाम मोलवी इस्माईल देहलवी ने अपने रिसालए 'यकरोज़ी' में लिखा था कि मआज़ल्लाह खुदा झूट बोल सकता है और इस झूटे दावे पर यह झूटी दलील पेश की थी कि आइन्दा झूट बोल सकता है, अगर ख़ुदा झूट बोल सकने से भी पाक हो तो बन्दे की कुदरत बढ़ जायेगी खुदा की कुदरत घट जायेगी 'मुनाज़रए भागलपुर में सुन्नियों के आलिम मौलाना गुलाम दस्तगीर साहिब क़सूरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने इस दलील पर यह ऐतराज़ किया कि बन्दा तो चोरी भी कर सकता है, शराब भी पी सकता है ,ज़ालिम भी हो सकता है, जाहिल भी हो सकता है ,तो क्या खुदा भी यह सब काम कर सकता है उस पर मोलवी अम्बेठी साहब ने यह जवाब दिया जो अभी मैंने तज़्किरतुल ख़लील सफ़हा 86 से आपको सुनाया इस इबारत में उन्होंने साफ बता दिया कि मौलवी गुलाम दस्तगीर साहब का यह ऐतराज़ कम समझने से पैदा हुआ है क्योंकि जो शख़्स यह कहता है कि खुदा चोरी नहीं कर सकता, शराब नहीं पी सकता, ज़ालिम और जाहिल नही हो सकता, वह ख़ुदा की कुदरत को बन्दे की कुदरत से ज़ायद नहीं मानता लिहाज़ा ज़रूरी है कि खुदा चोरी भी कर सकता है, शराब भी पी सकता है

जाहिल व ज़ालिम भी बन सकता है, जितने और जो कुछ अच्छे बुरे काम बन्दे कर सकते हैं वह सब अच्छे बुरे काम खुदा भी कर सकता है और अपने इस कुफ़्री अक़ीदे पर यह दलील पेश कर दी कि अहले कलाम का तस्लीम किया हुआ अक़ीदए कुल्लिया है कि "कुल्लु मक़्दूरिल अब्दि मक़्दूरुल्लाह" यानी हर वह चीज़ जिस पर बन्दा कुदरत रखता है उस पर खुदा भी कुदरत रखता है। हालांकि हर सुन्नी मुसलमान के नज़्दीक इसके सिर्फ़ यही माना हैं कि हर वह चीज़ जिसके करने पर बन्दा क़ादिर है उसके पैदा करने पर ख़ुदा ही कुदरत रखता है। क्योंकि अहलेसुन्नत व जमाअत का अक़ीदए हक़्क़ा यह है कि बन्दे का और बन्दे के हर हर काम का पैदा फ़र्माने वाला सिर्फ़ अल्लाह तबारक व तआला ही है। लेकिन मोलवी अम्बेठी साहब ने इस कुल्लिया अहले कलाम के माना यह गढ़ दिये कि हर वह काम जो बन्दा ख़ुद कर सकता है वह ख़ुद ख़ुदा भी कर सकता है।

प्यारे सुन्नी भाइयो! सोचो और इन्साफ़ करो बन्दे कौन कौन से कैसे कैसे काम कर सकते हैं।निकाह कर सकते हैं, अपनी बीवी का हक़्क़े ज़ौजियत अदा कर सकते हैं, जुआ खेल सकते हैं, ज़िना कर सकते हैं ,इस इबारत में मोलवी अम्बेठी साहब ने साफ़ साफ़ कह दिया कि वह सब काम खुदा भी कर सकता है।

प्यारे भाइयो! बताओ यह अल्लाह तबारक व तआला की कैसी ज़बरदस्त तौहीन है मैं तो ख़्याल करता हूँ कि कोई इसाई, यहूदी, पारसी, हिन्दू, आर्या बल्कि कोई चमार भंगी भी तुमको ऐसा नही मिलेगा कि जिसको वह गाड या खुदा या यज़दां या परमेश्वर मानता हो फिर उसी को यूँ भी कहता हो कि वह झूट बोल सकता है, चोरी कर सकता है, शराब पी सकता है, जाहिल व ज़ालिम बन सकता है, फिर क्या देवबन्दी वहाबियों का यह अक़ीदा इस्लामी हो सकता है क्या अल्लाह तबारक व तआला को ऐसा कहने वाला मुसलमान रह सकता है।"वला हौल वला कुव्वत इल्ला

बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम"।

इन्हीं वहाबियों देवबन्दियों का दूसरा अक़ीदा यह है कि अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को कुल ग़ैबों का इल्म तो नहीं दिया अलबत्ता उन्हें बाज़ ग़ैबों का इल्म ज़रूर दिया है मगर इस इल्मे ग़ैब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की कुछ खुसूसियत नहीं ऐसा इल्मे ग़ैब तो हर बच्चे हर पागल हर जानवर हर चारपाये को भी हासिल है। (देखो वहाबियों देवबन्दियों के मोलवी व पेशवा अशरफ अली थानवी की किताब हिफ़्ज़ुल ईमान सफ़हा 8)

हजरत शेरबेशहे अहले सुन्न्त मज़हरे आलाहज़रत हमेशा अपने मुरीदीन व मुख़्लिसीन व मुअतक़ीदीन को यह दरसे अमल देते कि दुश्मनाने ख़ुदा व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम से क़तअन दूर रहना।

किताब हिफ़्ज़ुल ईमान

(मोलवी अशरफ अली थानवी)

(सफहा 8) चुनांचे अस्ल इबारत इस किताब की यह है कि आपकी ज़ाते मुकद्दसा पर इल्मे गैब का हुक्म किया जाना अगर बकौले ज़ैद सही हो तो दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि इस गैब से मुराद बाज़ गैब हैं या कुल गैब अगर बाज़ उलूमे गैबिया मुराद हैं तो इसमें हुज़ूर की क्या तख़्सीस है ऐसा इल्मे गैब तो ज़ैद व अम्र बल्कि हर सबी व मजनून बल्कि जमीअ हैवानात व बहाइम के लिये भी हासिल है। फ़िर आगे चलकर लिखते हैं "और अगर तमाम उलूमे गैबिया मुराद हैं इस तरह कि उसकी एक फर्द भी खारिज न रहे तो उसका बुतलान दलीले नक्ली व अक्ली से साबित है"।

इस इबारत में मोलवी थानवी साहब ने इल्मे ग़ैब की सिर्फ़ दो ही क़िस्में कीं एक कुल इल्मे ग़ैब जिससे ग़ैब का एक फ़र्द भी ख़ारिज न रहे और उसको अक़्ली व नक़्ली दोनों क़िस्म की दलीलों से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिये बातिल बताया अब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिये न रहा मगर बाज़ इल्मे ग़ैब यानी इस क़दर इल्मे ग़ैब जो कुल न हो ख़्वाह कितना ही कम या कितना ही ज़्यादा हो इसको हुज़ूर अलैहि व अला आलिहिस्सलातु वस्सलाम के लिये बातिल नहीं बताया बल्कि यूं कहा कि इस बाज़ इल्मे ग़ैब में हुज़ूर की कुछ खुसूसियत नहीं

ऐसा इल्मे ग़ैब तो ज़ैद व अम्र यानी हर खासो आम शख़्स को बल्कि हर सबी व मजनून यानी हरएक बच्चे हरएक पागल को बल्कि जमीअ हैवानात व बहाइम यानी सब जानवरों और चारपायों के लिये भी हासिल है।

प्यारे सुन्नी भाइयो! इन्साफ़ से कहो क्या कोई इसाई अगर हज़रते ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मुताल्लिक़ या कोई यहूदी हज़रते मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मुताल्लिक़ या कोई पारसी अपने मज़हबी पेशवा ज़रदुश्त के मुताल्लिक़ या कोई हिन्दू अपने किसी औतार के मुताल्लिक़ ऐसा कह सकता है कि उनको खुदा के बराबर कुल इल्म तो नहीं था। हां खुदा के इल्म से कम यानी बाज़ उलूम उनको थे लेकिन इसमें उनकी कुछ खुसूसियत नहीं। ऐसा इल्म तो हर चमार, हर भंगी, हर बच्चे, हर पागल, हर जानवर, हर चारपाये, को भी हासिल है। क्या किसी इसाई या यहूदी या पारसी या हिन्दू के मज़हबी पेशवा या औतार के मुताल्लिक़ ऐसा कहा जाये तो वह इस कलाम को अपने मज़हबी पेशवा या औतार की सख़्त शदीद तौहीन नहीं समझेगा ? इसाई यहूदी, पारसी ,हिन्दू हमारे आक़ा व मौला हुज़ूर सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम पर ईमान नहीं लाते लेकिन बावजूद ईमान न लाने के आज तक किसी इसाई, यहूदी, पारसी, हिन्दू ने भी हर्गिज़ ऐसा नहीं कहा कि पैग़म्बरे इस्लाम व अला आलिहिस्सलातु वस्सलाम को मआज़ल्लाह ग़ैब की बातों का जैसा इल्म है ऐसा तो हर बच्चे, हर पागल, हर जानवर, हर चारपाये को भी है आह! आह! मुसलमानों का मौलवी कहलाते हुये हुज़ूर पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की ऐसी

शदीद तौहीन और सख़्त गुस्ताख़ी की जा रही है और फिर न सिर्फ़ मुसलमान होने का बल्कि मुसलमानों के मौलवी होने का दावा बाक़ी है। प्यारे सुन्नी भाइयो तुम अगर किसी वहाबी देवबन्दी से यूं कह दो कि तुम्हारे मोलवी अशरफ़ अली थानवी, रशीद अहमद गंगोही, ख़लील अहमद अम्बेठी, क़ासिम नानोतवी, अब्दुश्शकूर काकोरवी, को ख़ुदा के बराबर तो इल्म हर्गिज़ न था हाँ खुदा से कम यानी बाज़ बातों का इल्म था तो इन बाज़ बातों में थानवी, गंगोही, अम्बेठी, काकोरवी, नानोतवी, साहिबों की कुछ खुसूसियत नहीं ऐसा इल्म तो हर कुत्ते, हर सूअर, हर बैल, हर गधे, को भी हासिल है तो फौरन वह वहाबी देवबन्दी ऐसा सुनकर बिगड़ जायेगा, बिखर जायेगा, लड़ने और मरने मारने पर तैयार हो जायेगा, और शोर मचाने लगेगा कि तुमने हमारे मोलवियों की तौहीन की है। आह! आह! अफ़्सोस अफ़्सोस जैसी इबारत में थानवी, अम्बेठी, गंगोही, नानोतवी, काकोरवी, साहेबान की तौहीन है क्या वैसी इबारत में हमारे प्यारे आक़ा सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की तौहीन न होगी। इससे ज़्यादा रौशन तरीक़े पर फ़ैसले की आसान सूरत यह है कि अगर इस इबारत में कुछ तौहीन नहीं है तो वहाबियों देवबन्दियों के मोलवी व पेशवा मोलवी अब्दुश्शकूर साहब काकोरवी जो अभी ज़िन्दा मौजूद हैं कम अज़ कम इस ज़िला फैज़ाबाद के कलेक्टर साहब बहादुर के लिये यह मज़मून लिखकर छाप दें कि कलेक्टर साहब बहादुर ज़िला फैज़ाबाद को सारी ज़मीन पर तो हुकूमत हर्गिज़ हासिल नहीं हाँ ज़मीन के बाज़ हिस्से पर उनको हुकूमत हासिल है तो इस हुकूमत में कलेक्टर साहब ज़िला फैज़ाबाद की क्या तख़्सीस है

ऐसी हुकूमत तो हर चमार को अपने घर पर, हर भंगी को अपने मकान पर, हर उल्लू को अपने ठूंठ पर भी हासिल है। मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि अगर कलेक्टर साहब बहादुर ज़िला फ़ैज़ाबाद को काकोरवी साहब की इस इबारत पर इत्तिला हो गयी तो पहले तो काकोरवी साहब के दिमाग का डाक्टरी मुआइना होगा अगर डाक्टर ने पास कर दिया तो काकोरवी साहब को पागल ख़ाने की वरना जेल ख़ाने की सैर फ़र्मानी होगी। अल्लाहु अकबर जैसी इबारत में एक ज़िले के कलेक्टर की तौहीन है क्या वैसी ही इबारत में हुजूर पुर नूर सुल्ताने दारैन शहंशाहे कौनेन मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की सख़्त शदीद तौहीन न होगी "वल्अयाजु बिल्लाहि तआला" वहाबियों देवबन्दियों का तीसरा अक़ीदा यह है कि शैतान के इल्म का ज़्यादा और वसीअ होना तो आयत व ह़दीस से साबित है मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के इल्म का वसीअ और ज़ायद होना किसी आयत व ह़दीस से साबित नहीं। शैतान को तो ऐसा इल्म हासिल है जो तमाम ज़मीन के एकएक ज़र्रे को मुहीत है मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं। शैतान के इल्म को वसीअ और ज़ायद मानने वाला तो मुसलमान है मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के इल्म को ज़ायद और वसीअ मानने वाला ऐसा काफ़िर व मुश्रिक है जिसमें ईमान का कुछ भी हिस्सा नहीं। (देखो वहाबियों देवबन्दियों के मोलवियों पेशवाओं रशीद अहमद गंगोही की मुक़र्रज़, ख़लील अहमद अम्बेठी की मुसन्नफ़ा किताब बराहिने क़ातिआ़ सफ़हा 51)

किताब बराहीने क़ातिआ

मुसन्निफ : ख़लील अहमद अम्बेठी

मोलवी रशीद अहमद गंगोही की मुक़र्रज़

चुनांचे इस किताब की अस्ल इबारत यह है जो मैं आप हज़रात को पढ़ कर सुनाता हूँ।

शैतान व मलकुलमौत का हाल देखकर इल्मे मुहीत ज़मीन का फख्रे आलम को ख़िलाफ़े नुसूसे कतइय्या के बिला दलील महज़ क़यासे फ़ासिदा से साबित करना शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का हिस्सा है शैतान व मलकुल मौत को यह वुस्अत नस से साबित हुई फख्रे आलम की वुस्अत इल्म की कौन सी नस्से कतई है कि जिससे तमाम नुसूस को रद करके एक शिर्क साबित करता है।

"इल्मे मुहीत के माना घेर लेने वाला इल्म"। 'नस' के माना कुर्आन शरीफ़ की आयत या रसूले पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की हदीस। 'क़तई' के माना यक़ीनी जिसमें शक व शुब्हा न हो। 'क़यास' अक़्ली दलील ख़्वाह शरई बातों से मुरक्कब हो या महज़ अक़्ली बातों पर मब्नी हो 'फ़ासिद' के माना बिगड़ा हुआ यानी ग़लत। वुस्अत के माना वसीअ यानी ज़ायद होना। वुस्अते इल्म के माना इल्म का ज़्यादा होना। नस की जमा नुसूस। नस्से क़तई की जमा नुसूसे क़तइय्या। शिर्क के माना अल्लाह तआला की किसी सिफ़त या उसकी ज़ात में किसी दूसरे को शरीक और साझी बनाना। अब इस इबारत के अरबी अल्फ़ाज़ की जगह अगर आम फ़हम कलिमात रख दिये जायें तो इबारत यूँ हो जायेगी। शैतान व मलकुलमौत का हाल देखकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिये सारी ज़मीन का ऐसा

इल्म साबित करना जो सारी ज़मीन को घेर ले बे दलील है ग़लत क़यास पर मब्नी है। कुर्आन व ह़दीस के यक़ीनी इर्शादात के ख़िलाफ़ है। इसमें ईमान का कोई हिस्सा नहीं। शैतान और मलकुलमौत के लिये इल्म का यह वसीअ और ज़ायद होना तो कुर्आन व हदीस से साबित है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के इल्म का वसीअ और ज़ायद होना किसी आयत किसी ह़दीस से साबित नहीं। शैतान व मलकुलमौत के इल्म को वसीअ व ज़ायद कहने वाला तो कुर्आन व हदीस के मुताबिक़ कहता है यानी वह मुसलमान है लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के इल्म को वसीअ व ज़ायद मानने वाला मुश्रिक व बे ईमान है क्योंकि वह अल्लाह तआला के इल्म में रसूले पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को अल्लाह तआला का शरीक और साझी बना रहा है।

प्यारे सुन्नी भाइयो! तुम सब जानते हो कि मलकुलमौत हज़रते इज़्राईल अलैहिस्सलातु वस्सलातम का लक़ब है यानी मौत का फ़िरिश्ता। क्योंकि अल्लाह तआला ने तमाम रुहों के क़ब्ज़ करने पर उन्हीं को मुक़र्रर फ़र्माया है। शैतान को हर मज़हब व मिल्लत वाला इन्सान जानता है कि अल्लाह तआला की मख़्लूक़ात में सबसे बदतर व गुमराहतर सबसे अक्फ़र शैतान ही की हस्ती है।अल्लाहु अकबर यूँ कहना कि हज़रते मलकुलमौत अलैहिस्सलातु वस्सलाम और शैताने मलऊन के इल्म का वसीअ और ज़ायद होना तो कुर्आन व हदीस से साबित है लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के इल्म का वसीअ और ज़्यादा न होना कुर्आन व हदीस से साबित है। हज़रते मलकुलमौत अलैहिस्सलातु वस्सलाम और शैताने मलऊन के इल्म को वसीअ और ज़ायद मानने वाला तो मोमिन मुसलमान है लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम

के इल्म को वसीअ व ज़ायद मानने वाला मुश्रिक बे ईमान है यह हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की जनाबे पाक में कैसी ज़बरदस्त व शदीद गुस्ताख़ी है फिर मोलवी अम्बेठी ने ऐसे इल्म को जो सारी ज़मीन को घेर ले अल्लाह तबारक व तआला की ख़ास सिफ़त बताया इसी लिये जो शख़्स सारी ज़मीन को घेर लेने वाला इल्म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिये माने उसे मुश्रिक बताया और इसी इबारत में सारी ज़मीन के घेर लेने वाले इसी इल्म को मलकुलमौत अलैहिस्सलातु वस्सलाम और शैताने मलऊन के लिये कुर्आन व हदीस से साबित मान लिया तो हज़रत मलकुलमौत अलैहिस्सलातु वस्सलाम और शैताने मलऊन को इसी इल्मे मुहीत ज़मीन में अल्लाह तबारक व तआला का शरीक और साझी बना दिया। तो इस इबारत में मोलवी अम्बेठी साहब ने अल्लाह तबारक व तआला की भी शदीद तौहीन की और उसके प्यारे महबूब सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की सरकार में भी ज़बरदस्त गुस्ताख़ी की।

प्यारे सुन्नी भाइयो ! किसी मज़्हब व मिल्लत वाला इन्सान अपने मज़्हबी पेशवा या अपने बानिये मज़्हब या अपने औतार को शैतान के बराबर इल्म रखने वाला कहना भी अपने मज़्हबी पेशवा अपने बानिये मज़्हब, अपने औतार की सख़्त तौहीन समझेगा फिर हमारे और तुम्हारे आक़ा व मौला सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के इल्मे मुबारक को शैतान के बराबर नहीं बल्कि शैतान से भी कम बताना किस क़दर ज़बरदस्त इहानत और बे अदबी होगा।

क्या कोई वहाबी देवबन्दी यूँ कहना पसन्द करेगा कि थानवी, गंगोही, अम्बेठी, नानोतवी, काकोरवी, साहिबान इल्म में शैतान के बराबर शैतान के हमसर हैं नहीं नहीं हर्गिज़ नहीं बल्कि

ऐसा कहने पर लड़ने मरने मारने के लिये फ़ौरन आमादा हो जायेगा फिर जब वहाबियों देवबन्दियों के मोलवी साहेबान के इल्म को शैतान के इल्म के बराबर बताना इन मोलवी साहिबान की तौहीन है तो क्या हुजूर आलमुल्ख़ल्क़ सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के इल्मे अक़्दस को शैतान के इल्म से भी कम बताना हुजूर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की ज़बरदस्त तौहीने शदीद न होगी कोई वहाबी देवबन्दी किसी ज़िला के कलेक्टर साहब बहादुर को यह देखकर कि आपका इल्म शैतान के बराबर है छाप दे तो फिर भी क्या वह जेलख़ाने या पागलख़ाने दोनों की सैर व तफ़रीह करने से क़ानूनन महरुम रह सकता है ? अल्अज़्मतुलिल्लाह।

वहाबी देवबन्दी साहिबों के नज़्दीक किसी ज़िला के कलेक्टर साहब बहादुर की इहानत जैसी इबारत में हो जाती है वैसी ही बल्कि उससे ज़्यादा सख़्त इबारत में भी हुजूर सुल्ताने आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की तौहीन नहीं होती ?

ऐ वहाबियो' देवबन्दियो! अपनी हालत पर रहम करो अपनी हड्डियों' बोटियों को जहन्नम के भड़कते हुये अंगारों से बचाओ हुजूर सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के उम्मती कहलाते हो आक़ा व मौला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का कलिमा पढ़ते हो खुदा के वास्ते इस प्यारे कलिमे की लाज तो रक्खो। हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की इज़्ज़त व अज़मत को अपने मौलवियों या अपने ज़िला के कलेक्टर साहब बाहदुर की इज़्ज़त व आबरु से तो कम न समझो क़यामत आने से पहले, नहीं नहीं बल्कि तौबा का दरवाज़ा बन्द होने से पहले, नहीं नहीं बल्कि ज़बान बन्द होने से

पहले, इस वहाबी देवबन्दी फ़िरक़े के ऐसे कुफ़्री अक़ीदों से तौबा करके अज़ सरे नौ कलिमए तय्यिबा पढ़कर इस्लाम लाकर हमारे दीनी, मज़्हबी, ईमानी, इस्लामी भाई बन जाओ मेरे इस बयान से नाराज़ न हो। वहाबी देवबन्दी फ़िरक़े की किताबों की कुफ़्री इबारतें सुनाने पर बुरा न मानो ख़ूब समझ लो मेरा मक़सूद तुम्हारी तौहीन करना या तुम्हारा दिल दुखाना या तुमको ज़लील करना हर्गिज़ नहीं बल्कि मेरा मक़सद सिर्फ़ इसी क़दर है कि मैं आप हज़रात को आपके अक़ीदों की किताबें दिखाकर उनकी इबारतें सुनाकर आप साहिबान को समझाऊँ अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की तक्ज़ीब व तौहीन से बचाऊं जन्नत का और अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की ख़ुशी व रज़ा का सच्चा रास्ता बताऊं और अगर आप लोग मेरी इस नसीहत को न मानें तो आप साहिबों की सोहबत से दूर रहने के कुर्आनी शरई अहकाम अपने भोले भाले सीधे सादे सुन्नी मुसलमान भाइयों को सुनाऊँ कि कहीं ऐसा न हो कि मआज़ल्लाहि तआला ऐसे अक़ीदे वालों की सोहबत से मुतास्सिर होकर कोई सुन्नी मुसलमान भी ऐसे कुफ़्री अक़ीदे इख़्तियार करके दीन व मज़्हब से हाथ धो बैठे मैं अपने इस मक़सद पर अल्लाह तबारक व तआला को शहीद व बसीर और उसके हुक्म से उसके प्यारे मुहम्मदुर्ररसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को हाज़िर व नाज़िर मानते हुए उन्हीं को गवाह व शाहिद बनाता हूँ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

किताब तह्ज़ीरुन्नास

मोलवी क़ासिम नानोतवी

इन्हीं वहाबियों देवबन्दियों के एक और मुक़्तदा व पेशवा मोलवी क़ासिम साहब नानोतवी अपनी किताब तह्ज़ीरुन्नास सफ़ा 3 पर फ़र्माते हैं।

अवाम के ख़्याल में तो रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का ख़ातिम होना बईं माना है कि आपका ज़माना अम्बियाए साबिक़ के ज़माने के बाद और आप सब में आख़िरी नबी हैं मगर अहले फ़हम पर रोशन होगा कि तक़द्दुम या तअख़्ख़ुरे ज़मानी में बिज़्ज़ात कुछ फ़ज़ीलत नहीं फिर मक़ामे मदह में "वलाकिर्रसूलल्लाहि व ख़ातमन्नबिय्यीन" फ़र्माना इस सूरत में क्योंकर सहीह हो सकता है।

इस इबारत में अहले फ़हम के मुक़ाबले में अवाम का लफ़्ज़ बोला गया और अहले फ़हम के माना हैं समझदार लोग तो अवाम से मुराद नासमझ लोग हुए तो मोलवी नानोतवी साहब की इस इबारत का साफ़ मतलब यही हुआ कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को आयते करीमा में जो ख़ातमन्नबिय्यीन फ़र्माया गया है उसके माना नासमझ लोगों के ख़्याल में तो यह हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम सबसे पिछले नबी हैं लेकिन समझदार लोगों के नज़्दीक सबसे पिछला नबी होना अपनी ज़ात के अन्दर कोई फ़ज़ीलत और ख़ूबी की बात नहीं और आयते करीमा वलाकिर्रसूलल्लाहि व ख़ातमन्नबिय्यीन हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की मदह व सना के मक़ाम में फ़र्माई गई है। लिहाज़ा अगर इस लफ़्ज़े ख़ातमन्नबिय्यीन के माना सबसे पिछला नबी होंगे तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला

आलिही वसल्लम की मदह व सना के मक़ाम में अल्लाह तआला का हुज़ूर को ख़ातमन्नबिय्यीन फ़र्माना ग़लत हो जायेगा।

फिर कई सत्रों में ख़ातमन्नबिय्यीन से आयते करीमा में सबसे पिछला नबी मुराद होने को ग़लत व बातिल बताते हुए सफ़ा 4 पर लिखते हैं सो इसी तौर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की ख़ातमियत को तसव्वुर फ़र्माइये यानि आप मौसूफ़ बवस्फ़े नुबूव्वत बिज़्ज़ात हैं और सिवाए आपके और नबी मौसूफ़ बवस्फ़े नुबूव्वत बिल्अर्ज़ हैं औरों की नुबूव्वत आपका फ़ैज़ है। पर आपकी नुबुव्वत किसी और का फ़ैज़ नहीं आप पर सिलसिलए नुबुव्वत मुख़्ततम हो जाता है। ख़ातिमुन्नबिय्यीन के माना सबसे पिछला नबी मुराद होने को ग़लत और बातिल बताकर इस इबारत में मोलवी नानोतवी साहब ने ख़ातिमुन्नबिय्यीन के यह माना गढ़े कि तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की नुबुव्वत हुज़ूर का फ़ैज़ है और हुज़ूर की नुबुव्वत किसी और नबी का फ़ैज़ नहीं अपनी ज़ात से ख़ुद बख़ुद नबी हैं और हुज़ूर के सिवा दूसरे तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम हुज़ूर के वास्ते से नबी हैं फिर मुलाहज़ा फ़र्माइये इसी तहज़ीरुन्नास के सफ़ा 14 पर लिखते हैं अगर बिल्फ़र्ज़ आपके ज़माने में भी कहीं और कोई नबी हो जब भी आपका ख़ातिम होना बदस्तूर बाक़ी रहता है। इस इबारत में मोलवी नानोतवी ने साफ़ कह दिया कि जब ख़ातिमुन्नबिय्यीन के यह माना हों कि हुज़ूर सबसे पहले नबी हैं तो ज़रुर हुज़ूर के ज़माने में कहीं और किसी नबी का होना ग़लत व बातिल है। लेकिन जबकि यह माना ख़ुद ही ग़लत व बातिल हैं और ख़ातिमुन्नबिय्यीन के माना यह ठहरे कि हुज़ूर ख़ुद बख़ुद अपनी ज़ात से नबी हैं। और हुज़ूर के सिवा हर एक नबी हुज़ूर के वास्ते से नबी है तो अब हुज़ूर के ज़माने में भी कहीं और कोई नया नबी पैदा हो तब भी हुज़ूर उसी तरह ख़ातिमुन्नबिय्यीन बाक़ी रहेंगे।

क्योंकि हुज़ूर के ज़माने में पैदा होने वाला नबी भी हुज़ूर ही के वास्ते से नबी होगा। फिर मुलाहज़ा फ़र्माइये इसी तहज़ीरुन्नास के सफ़ा 28 पर लिखते हैं। बल्कि अगर बिल्फ़र्ज़ बादे ज़माना [illegible] कोई नबी पैदा हो तो फिर भी ख़ातमियते मुहम्मदी [illegible] फ़र्क़ न आएगा। इस इबारत में मोलवी नानोतवी साहब ने साफ़ बता दिया कि अगर ख़ातिमुन्नबिय्यीन के माना सबसे पिछला नबी हों तो ज़रुर हुज़ूर के बाद किसी और नबी के पैदा होने से हुज़ूर के ख़ातिमुन्नबिय्यीन होने में फ़र्क़ पड़ जाएगा। लेकिन जबकि यह माना ग़लत़ व बाति़ल हो चुके और ख़ातिमुन्नबिय्यीन के माना यह हो गये कि हुज़ूर अपनी ज़ात से खुद बखुद नबी हैं और हुज़ूर के सिवा हरएक नबी हुज़ूर के वास्ते से नबी है तो अब हुज़ूर के बाद भी अगर और नबी पैदा हो जायें तो फिर भी हुज़ूर के ख़ातिमुन्नबिय्यीन होने में कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। क्योंकि हुज़ूर अपनी ज़ात से खुद बखुद नबी रहेंगे और हुज़ूर के बाद पैदा होने वाले नबी सब हुज़ूर ही के वास्ते से नबी होंगे। हालांकि हर सुन्नी मुसलमान का इस पर ईमान व ऐतक़ाद है कि आयते करीमा में अल्लाह तबारक व तआला ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को जो ख़ातिमुन्नबिय्यीन फ़र्माया उसके सिर्फ़ यही माना हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम सबसे पिछले नबी हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के ज़माने में भी कोई और नबी शरअन हर्गिज़ पैदा नहीं हो सकता। इसी तरह बहुक्मे शरीअते मुतह्हरा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के बाद भी हर्गिज़ कोई नबी पैदा नहीं हो सकता। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के वस्फ़े करीम ख़त्मे नुबुव्वत के सिर्फ़ यही ज़ाहिरी माना मुराद होना जो लफ़्ज़े ख़ातिमुन्नबिय्यीन से समझ में आते हैं। ज़रुरियाते दीन में से है। बकसरत अहादीसे मुबारका में खुद हुज़ूर

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ने इसके सिर्फ़ यही माना बताये तमाम सहाबए किराम व ताबईने इज़्ज़ाम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) इसके सिर्फ़ यही माना मानते चले आये तमाम मुफ़स्सिरीने आलाम व मुतकल्लिमीने ज़विल्एहतिराम व फोक़हाए आली मक़ाम ने उसके सिर्फ़ यही माना इर्शाद फ़र्माए लोग़ाते कुर्आने अज़ीम व लोग़ाते हदीसे करीम की किताबों ने इसके सिर्फ़ यही माना सुनाए। इस लफ़्ज़ से इसके सिर्फ़ यही माना मुराद होने के रोशन सुबूत इज्माए उम्मत व तवातुर से आए मैं इस वक़्त आप हज़रात को सिर्फ़ दो हदीसें और एक इबारते अक़ाइद सुनाता हूं। इमाम अबू दाऊद व इमामे तिर्मिज़ी (रहिमहुमुल्लाहु तआला) हज़रत सय्यिदिना सौबान (रदियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत फ़र्माते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया।

لا تَقُوْمُ السَّاعَةُ حَتّٰى يُبْعَثَ دَجَّالُوْنَ كَذَّابُوْنَ

كُلُّهُمْ يَزْعُمُ اَنَّهُ نَبِيٌّ وَّ اَنَا خَاتَمُ النَّبِيّٖنَ لَا نَبِيَّ بَعْدِي ه

यानि क़यामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं हो सकती जब तक बहुत से दज्जाल व कज़्ज़ाब पैदा न किये जायें जिनमें से हरएक यह गुमान करेगा कि वह नबी है हालांकि मैं तो ख़ातिमुन्नबिय्यीन हूं। कि मेरे बाद कोई नबी नहीं। इमाम अहमद व इमाम तिबरानी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहिमा)हज़रत सय्यिदिना हुज़ैफ़ा (रदियल्लाहु तआला अन्हु) से रावी है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ने फ़र्माया।

وَّ اَنَا خَاتَمُ النَّبِيّٖنَ لَا نَبِيَّ بَعْدِي

यानि हालांकि मैं ख़ातिमुन्नबिय्यीन हूं कि मेरे बाद कोई नबी नहीं। (ख़तमुन्नुबुव्वत फ़िल्कुर्आन सफ़ा 60) दूसरी हदीस शरीफ़ जिसको इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम(रहिमहुमुल्लाहु तआला) ने भी सय्यिदिना अबूहुरैरा (रदियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत

फ़र्माया कि हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़र्माते हैं।

إِنَّ مَثَلِي وَ مَثَلَ الْأَنْبِيَاءِ مِنْ قَبْلِي كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنٰى بَيْتًا فَأَحْسَنَهُ وَأَجْمَلَهُ إِلَّا مَوْضِعَ لَبِنَةٍ مِّنْ زَاوِيَةٍ فَجَعَلَ النَّاسُ يَطُوفُونَ بِهِ وَيَعْجَبُونَ لَهُ وَيَقُولُونَ هَلَّا وُضِعَتْ هٰذِهِ اللَّبِنَةُ قَالَ فَأَنَا اللَّبِنَةُ وَ أَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّنَ ٥

यानी मेरी ओर मुझसे पहले के नबियों की मिसाल ऐसी है जैसे किसी शख़्स ने कोई घर बनाया और उसको आरास्ता व पैरास्ता किया मगर एक गोशे में एक ईंट की जगह छोड़ दी लोग उसके आस पास चक्कर लगाते हैं और उसको देखकर ख़ुश होते हैं और कहते हैं कि यह एक ईंट भी क्यों नहीं रख दी गई। हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ने फ़र्माया मैं वह आख़िरी ईंट हूँ और मैं ख़ातमुन्नबिय्यीन हूँ। (ख़तमुन्नुबुव्वत फिल्कुर्आन सफा 61)

इस मज़्मून की एक सौ से ज़्यादा मुबारक अहादीसे नबविय्या अला साहिबिहा व आलिहिस्सलातु वत्तहिय्या आप हजरात को हुजूर पुर नूर आला हज़रत मुर्शिदे बरहक़ इमामे अहलेसुन्नत मुजद्दिदे आज़मे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अब्दुल मुस्तफ़ा मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ान साहिब फाज़िले बरेलवी क़ादिरी बरकाती रदियल्लाहु तआला अन्हु की किताबे मुस्तताब मुसम्मा बनामे तारीख़ी

جزاءُ اللّٰهِ عَدُوَّهُ بِاَبَائِهِ خَتْمُ النُّبُوَّةُ ٥

में मिलेगी। खुद वहाबियों देवबन्दियों के मोअतमद अलैह व मुस्तनद एलैह मुफ़स्सिर महमूद आलूसी बग़दादी अपनी तफ़्सीर रुहुलमआनी जिल्द–7 पेज–60 पर लिखते हैं।

وَالْمُرَادُ بِكَوْنِهٖ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ خَاتَمَهُمْ انْقِطَاعُ حُدُوثِ وَصْفِ النُّبُوَّةِ فِي أَحَدٍ مِّنَ الثَّقَلَيْنِ بَعْدَ تَحَلِّيْهِ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ بِهَا فِي هٰذِهِ النَّشْأَةِ

यानी हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही

वसल्लम के ख़ातमुन्नबिय्यीन होने से यह मुराद है कि इस आलम में वस्फ़े नुबुव्वत के साथ हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के मुत्तसिफ़ होने के बाद जिन्न व इन्स में से किसी के लिए भी वस्फ़े नुबुव्वत का पैदा होना बिल्कुल मुन्क़तअ हो गया। (ख़त्मुन्नुबुव्वत फ़िल्क़ुर्आन,पेज–76)

अब मैं वह ज़बरदस्त शानदार इबारत सुनाता हूँ जिसका अभी वादा कर चुका हूँ।इमाम क़ाज़ी अयाज़ (रहमतुल्लाहि तआला अलैह) अपनी मुबारक किताब (अश्शिफ़ा बितारीफ़ी हुक़ूक़िल्मुस्तफ़ा) सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम में फ़र्माते हैं।

مَنِ ادَّعیٰ النُّبُوَّةَ لِنَفْسِهٖ اَوْ جَوَّزَ اِکْتِسَابَهَا وَالْبُلُوْغَ بِصَفَاءِ الْقَلْبِ اِلیٰ مَرْتَبَتِهَا کَالْفَلَاسِفَةِ وَ غُلَاةِ الْمُتَصَوِّفَةِ وَ کَذَالِکَ مَنِ ادَّعیٰ مِنْهُمْ اَنَّهٗ یُوْحیٰ اِلَیْهِ وَاِنْ لَّمْ یَدَّعِ النُّبُوَّةَ اَوْ اَنَّهٗ یَصْعَدُ اِلَی السَّمَاءِ وَ یَدْخُلُ الْجَنَّةَ وَیَاْکُلُ مِنْ ثِمَارِهَا وَیُعَانِقُ الْحُوْرَ الْعِیْنَ فَهٰؤُلَآءِ کُلُّهُمْ کُفَّارٌ مُکَذِّبُوْنَ لِلنَّبِیِّ صَلی اللّٰهُ تَعَالیٰ عَلَیْهِ وَعَلیٰ آلِهٖ وَسَلَّمَ لِاَنَّهٗ اَخْبَرَ اَنَّهٗ صَلی اللّٰهُ تَعَالیٰ عَلَیْهِ وَعَلیٰ آلِهٖ وَسَلَّمَ خَاتَمُ النَّبِیِّیْنَ وَلَا نَبِیَّ بَعْدَهٗ وَ اَخْبَرَ عَنِ اللّٰهِ تَعَالیٰ اَنَّهٗ خَاتَمُ النَّبِیِّیْنَ وَاَنَّهٗ اُرْسِلَ اِلیٰ کَافَّةِ النَّاسِ وَاَجْمَعَتِ الْاُمَّةُ عَلیٰ حَمْلِ هٰذَا الْکَلَامِ عَلیٰ ظَاهِرِهٖ وَاَنَّ مَفْهُوْمَهٗ الْمُرَادُ بِهٖ دُوْنَ تَاْوِیْلٍ وَّلَا تَخْصِیْصٍ فَلَا شَکَّ فِیْ کُفْرِ هٰؤُلَآءِ الطَّوَائِفِ کُلِّهَا قَطْعاً اِجْمَاعاً وَّ سَمْعاً۔

यानि जो शख़्स अपने लिए नुबुव्वत का दावा करे या सफ़ाए क़ल्ब के ज़रिए से नुबुव्वत के मर्तबे तक पहुँचने और उसके हासिल करने को जाइज़ समझे जैसे फ़लासिफ़ा और हुदूदे शरीअत से तजावुज़ कर जाने वाले मुद्दइयाने तसव्वुफ़ और ऐसे ही वह शख़्स जो यह दावा करे कि उसपर वही आती है अगर्चे नुबुव्वत का दावा न करे या यह कहे कि वह आसमान पर चढ़ता और जन्नत में दाख़िल होता और उसके मेवे खाता और हूरे ऐन से मुआनक़ा करता है तो यह सबके सब कुफ़्फ़ार हैं। नबी

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को झुटलाने वाले हैं क्योंकि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ने ख़बर दी है कि हुजूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन हैं और हुजूर के बाद कोई नबी नहीं। और अल्लाह तआला की त़रफ़ से यह ख़बर कि हुजूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन हैं और यह कि हुजूर तमाम आलम के इन्सानों की तरफ़ रसूल हैं और तमाम उम्मत ने इस बात पर इज्मा किया है कि इस कलाम को उसके ज़ाहिर ही पर हमल किया जाए। और इस बात पर कि जो माना इस आयत से समझ में आते हैं वही मुराद हैं बग़ैर किसी तावील व तख़्सीस के तो इन तमाम फिरकों के काफ़िर होने में कुछ शक नहीं बल्कि इन सबका काफ़िर होना क़तई यक़ीनी त़ौर पर बहुक्मे शरीअते मुतह्हरा इज्माअन साबित है। (ख़त्मुन्नुबुव्वत फ़िल्कुर्आन,पेज–79)

अरबी ज़बान की कुतुबे लोग़ात भी एक क़ाइदा बताती हैं कि लफ़्ज़े ख़ातम या लफ़्ज़े ख़ातिम की इज़ाफ़त जब क़ौम या जमाअ़त की त़रफ़ की जाती है तो उसके माना सिर्फ़ आख़िर और ख़त्म करने वाला होते हैं। और आयते मुबारका में भी ख़ातम की इज़ाफ़त जमाअते नबिय्यीन की तरफ़ है इसलिए उसके माना आख़िरुन्नबिय्यीन और नबियों के ख़त्म करने वाले के अलावा और कुछ नहीं हो सकते (ख़त्मुन्नुबुव्वत फ़िल्कुर्आन,पेज–48)

अज़रुए लोग़ते अरब आयते मज़्कूरा में ख़ातिमुन्नबिय्यीन के माना आख़िरुन्नबिय्यीन के सिवा कुछ और नहीं हो सकते और लफ़्ज़े ख़ातम के माना आख़िर और ख़त्म करने वाले के अलावा हर्गिज़ मुराद नहीं बन सकते ग़रज यह कि ख़ुद अल्लाह तबारक व तआला अपने कलाम ख़ातिमुन्नबिय्यीन के माना बकस्रत आयते करीमा में बता देता है कि इसके हक़ीक़ी माना सबसे पिछला नबी होना ही इससे मुराद है। फिर उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम जिन पर यह कलाम नाज़िल हुआ इसी माना की इन्तिहाई तौज़ीह फ़र्मा देते हैं। फिर उस रसूले

करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अ़ला आलिही वसल्लम के शार्गिदाने इज़्ज़ाम सहाबाए किराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) और फिर तमाम ओलमाए सल्फ़ (रहिमहुमुल्लाहु तआला) इसी माना को बयान फ़र्माते हैं। रोशन तस्रीहें फ़र्माते हैं कि यह कलाम अपने ज़ाहिरी और हक़ीक़ी माना ही पर महमूल है न इसमें कोई मजाज़ या मुबालग़ा है और न तावील व तख़्सीस। (ख़त्मुन्नुबुव्वत फ़िल्आसार पेज–60)

लफ़्ज़ जिस माना के बताने के लिए बनाया गया हो वह उस लफ़्ज़ के हक़ीक़ी माना कहलाते हैं लफ़्ज़ से उसके हक़ीक़ी माना को छोड़कर उसके अलावा कोई और माना मुराद लिए जाएं तो उस माना को उस लफ़्ज़ के मजाज़ी माना कहा जाता है। सब या तमाम या कुल वग़ैरह के अल्फ़ाज़ जो सब और सारे के माना बताते हैं बोलकर सब मुराद न लिए जाएं बल्कि बहुत और कसीर मुराद हों तो उसको मुबालग़ा कहते हैं किसी लफ़्ज के ज़ाहिरी माना छोड़कर उससे कोई पोशीदा माना मुराद लेना तावील है किसी क़िस्म की सब चीज़ों के लिए कोई बात साबित करके कहा जाए कि उनमें से मख़्सूस तौर पर फलां चीज़ के लिए वह बात साबित नहीं उसको तख़्सीस कहते हैं आयते करीमा–

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمًا

का तर्जुमा यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं लेकिन अल्लाह के रसूल और सब नबियों से पिछले नबी हैं और अल्लाह हर शै का जानने वाला है। इस आयते करीमा में लफ़्ज़े ख़ातिमुन्नबिय्यीन के माना बताने के लिए यह सब इबारतें मैंने आपको देवबन्द के मुफ़्ती मोलवी मुहम्मद शफ़ी साहब की किताब ख़त्मे नुबुव्वत फ़िल्क़ुर्आन और उन्हीं की किताब ख़त्मे नुबुव्वत

फिल्आसार ही से इस वक़्त सुनाइ हैं लेकिन आप सुन चुके कि आयते करीमा में ख़त्मे नुबुव्वत के वह माना जो ज़रुरी दीनी हैं जिन पर तवातुर है जिन पर इज्माए उम्मत है तो माना बक़ौल मुफ़्तीए देवबन्द के खुद अल्लाह तबारक व ताआला ही ने बताए जो माना खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ने इर्शाद फर्माए जो माना सहाबाए किराम रदियल्लाहु तआला अन्हुम व ताबिईन रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम व तबए ताबिईन रहिमहुमुल्लाहु तआला और तमाम ओलमाए सलफ़ हज़रात मुहद्दिसीन व फ़ोक़हा व मुफस्सिरीन व मुतकल्लिमीन व सूफ़ियाए आरिफ़ीन रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अज्मईन ने हर हर ज़माने हर हर तबक़े में उम्मत तक पहुंचाये जिस माना को आज तक जुम्ला अहले इस्लाम मानते चले आए वह सिर्फ़ यही हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम सबसे पिछले नबी हैं हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के मबऊस हो जाने के बाद बहुक्मे शरीअते मुतह्हरा किसी और को हर्गिज़ हर्गिज़ हर्गिज़ नुबुव्वत नहीं मिल सकती। यहाँ मजाज़ भी नहीं यानी इस आयते करीमा में लफ़्ज़े ख़ातिमुन्नबिय्यीन से उसके हक़ीक़ी माना सबसे पिछला नबी के सिवा उसके कोई और मजाज़ी माना हर्गिज़ मुराद नहीं। इसमें मुबालग़ा भी नहीं। यानी इस मुबारक लफ़्ज़ से सिर्फ़ यही मुराद है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम सब नबियों से पीछे दुनिया में मबऊस हुए लफ़्ज़े नबिय्यीन से तमाम अम्बिया जमीअ अम्बिया सब अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम मुराद हैं यह नहीं कि नबी की जमा "मुहल्ला बिल्लामिन्नबिय्यीन" फ़र्माकर सब नबी मुराद न लिए हों बल्कि मुबालग़ा के तौर पर बहुत से नबियों से पीछे तशरीफ़ लाने वाले को सब नबियों से पीछे तशरीफ लाने वाला फ़र्मा दिया गया हो इसमें तावील भी नहीं। यानी लफ़्ज़े ख़ातिमुन्नबिय्यीन से ज़ाहिरी

तौर पर जो उसके माना समझ में आते हैं सबसे पिछला नबी वही आयते करीमा में मुराद हैं इस लफ़्ज़े मुबारक के इस ज़ाहिरी माना के सिवा इसके कोई और पोशीदा माना हर्गिज़ मुराद नहीं इसमें तख़्सीस भी नहीं। यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को इस आयते मुबारका में जिन नबियों का ख़त्म करने वाला जिन नबियों के बाद तशरीफ़ लाने वाला फ़र्माया है उनमें अल्लाह तबारक व तआला का हरएक नबी दाख़िल है अल्लाह तबारक व तआला का भेजा हुआ कोई नबी इस हुक्म से हर्गिज़ ख़ारिज नहीं यह नहीं कि किसी दूसरी जगह अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के किसी नबी को मख़्सूस तौर पर इस हुक्म से अलाहिदा कर लिया गया हो। लेकिन अफ़्सोस और हज़ार अफ़्सोस कि मोलवी नानोतवी ने पेज–3 पर इस माना को अवाम का ख़्याल बताकर तमाम सूफ़िया ज़विल इहतिराम तमाम मुतकल्लिमीने आली मक़ाम तमाम मुहद्दिसीने किराम तमाम फ़ोक़हाए आलाम तमाम मुफ़स्सिरीने कलामे रब्बिलअनाम सलफ़ व ख़लफ़ के तमाम ओलमाए इज़्ज़ाम बल्कि जुम्ला अहले इस्लाम बल्कि जमीअ तबए ताबईन व सहाबए फ़िख़ाम (रदियअन्हुमुल्लाहुल अल्लाम) को बल्कि मआज़ल्लाह खुद हुज़ूर ख़ातिमुल्अम्बिया अलैहि व अला आलिहिस्सलातु वस्सलाम को बल्कि खुद हज़रत रब्बुल इज़्ज़त ज़ुल्जलालि वल्इक्राम को अयाज़न बिल्लाहि सुब्हानहू व तआला नासमझ बता दिया और इन सबके बताये हुए, सिखाए हुए, समझाए हुए, तवातुरन व इज्माअन नक़्ल फ़र्माए हुए, माना को समझदार लोगों के नज़्दीक ग़लत व बातिल ठहरा दिया। और पेज नं0–4 पर यह माना गढ़ दिए कि हुज़ूर अपनी ज़ात से खुद बखुद नबी हैं और हुज़ूर के सिवा हरएक नबी हुज़ूर के वास्ते से नबी है। हर नबी की नुबुव्वत हुज़ूर का फ़ैज़ है। लेकिन हुज़ूर की नुबुव्वत किसी और नबी का फ़ैज़ नहीं। फिर लफ़्ज़े ख़ातिमुन्नबिय्यीन से सबसे पिछला नबी मुराद होने को ग़लत व बातिल बताते हुए पेज

नं0–14 व पेज नं0–28 पर साफ़ कह दिया कि जो माना खुद मैंने पेज नं0–4 पर गढ़े हैं यही अगर मुराद लिये जायें तो हुजूर के ज़माने में बल्कि हुजूर के बाद भी अगर और नबी पैदा हो जायें तो फिर भी हुजूर के ख़ातिमुन्नबिय्यीन होने में कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। क्योंकि हुजूर के ज़माने में और हुजूर के बाद जिस क़दर भी नबी पैदा होंगे वह सब हुजूर ही के फ़ैज़ से नबी बनेंगे और खातिमुन्नबिय्यीन के माना पेज 4 पर यही गढ़े हैं कि जो शख़्स, अपनी ज़ात से खुद बखुद नबी हो और दूसरों को अपने फ़ैज़ से नबी बनाने वाला हो।

अब मैं आपको यह भी सुनाए देता हूं कि पहले मोलवी नानौतवी ने यह कुफ़्री सबक़ पढ़ाया और फिर बाद को मोलवी नानौतवी से मिर्ज़ा क़ादियानी ने यही कुफ़्री सबक सीखा। चुनांचे मोलवी नानोतवी के तहजीरुन्नास लिख देने के बाद मिर्ज़ा क़ादियानी ने इलाहबख्श प्रेस क़ादियान भी एक रिसाला छपवा कर शायेअ किया पहले पहल उसी में नबी व रसूल होने का दावा किया उसका नाम "एक ग़लती का इज़ाला" रखा उसके पेज 3 व 4 पर लिखता है यह आयत कि।

مَاكَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ۝

इसका माना यह है।

لَيْسَ مُحَمَّدٌ اَبَا اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِ الدُّنْيَا وَلٰكِنْ هُوَ اَبٌ لِرِّجَالِ الْاٰخِرَةِ لِاَنَّهٗ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ وَلَا سَبِيْلَ اِلٰى فُيُوْضِ اللّٰهِ مِنْ غَيْرِ تَوَسُّطِه

यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम दुनिया के मर्दों में से किसी के बाप नहीं। लेकिन वह आख़िरत के मर्दों के बाप हैं। इसलिए कि वह ख़ातिमुन्नबिय्यीन हैं। और बग़ैर उनके वास्ते के अल्लाह तआला के फ़ियूज़े नुबुव्वत तक पहुँचने का कोई रास्ता नहीं देखिए मिर्ज़ा क़ादियानी भी यही कह रहा है कि वह हुजूर के वास्ते ही से नबी व रसूल बन गया है।

वह भी ख़ातिमुन्नबिय्यीन के माना यही बता रहा है कि हुज़ूर के फ़ैज़ से दूसरे नबी बनते हैं। ख़ातिमुन्नबिय्यीन के माना सबसे आख़िरी नबी होने का जिस तरह मिर्ज़ा क़ादियानी ने इन्कार किया उसी तरह मोलवी नानोतवी ने भी इन्कार किया। ख़ातिमुन्नबिय्यीन की जो तावील मिर्ज़ा क़ादियानी ने गढ़ी बिल्कुल बेऐनिही वही तावील मोलवी नानोतवी ने भी गढ़ी। तो बहुक्मे शरीअते मुतह्हरा दोनों के काफ़िर मुर्तद् बे दीन होने में हर्गिज़ कुछ फ़र्क़ नहीं। फ़र्क़ जो कुछ है वह सिर्फ़ यही है कि मोलवी नानोतवी कुफ़्र सिखाने वाले उस्ताद हैं और मिर्ज़ा क़ादियानी कुफ़्र सीखने वाला शार्गिद है। दूसरा फ़र्क़ यह है कि मोलवी नानोतवी साहब ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के आख़िरुल्अम्बिया होने का इन्कार किया मगर खुद नबी व रसूल होने का दावा नहीं किया और मिर्ज़ा क़ादियानी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के आख़िरुल अम्बिया होने का इन्कार भी किया और मोलवी नानोतवी की तावील से फ़ाइदा उठाकर हुज़ूर के फ़ैज़ से खुद नबी व रसूल बन जाने का दावा भी कर लिया "व लाहौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलीय्यिल अज़ीम"।

नानोतवी साहब की इन इबाराते तहज़ीरुन्नास की बहुत कुछ तावीलें देवबन्दी वहाबी मोलवी साहिबान गढ़ा करते हैं लेकिन आप हज़रात यह बात यक़ीनन जानते हैं कि किसी क़ौल का यह मत़लब हर्गिज़ नहीं हो सकता जो खुद उस क़ौल के क़ाइल के बताए हुए मतलब के ख़िलाफ़ हो। बशर्ते कि उस क़ौल के वह माना बन सकते हों। मोलवी थानवी की इबारत हिफ़्ज़ुल ईमान की तो जिस क़दर तावीलें खुद उन्होंने गढ़ी हैं या उनके मानने वाले मोलवियों ने गढ़ीं उनकी तो इस इबारत में कुछ गुन्जाइश ही नहीं और जो कोई तावील भी तस्लीम कर लीजाए हर तावील पर इबारत हिफ़्ज़ुल ईमान का कुफ़्र ही वाज़ेह होता है। इस मज़मून

को आप हज़रात के सामने किसी और महफ़िल में बयान कर चुका हूँ। इबाराते बराहीने क़ातिआ में मोलवी अम्बेठी ने यह तावील गढ़ी कि वुस्अते इल्म से इल्मे ज़ाती मुराद है यानी मोलवी अम्बेठी ने शैतान व मलकुलमौत के लिए तो अताई वुस्अते इल्म का इक़रार किया है। लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए ज़ाती वुस्अते इल्म का इन्कार किया है। हालांकि यह तावील उस इबारत में क़तअन नहीं चल सकती। वहाबियों देवबन्दियों के मोलवी अब्दुलजब्बार उमरपुरी ने अताई वुस्अते इल्म ही का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए इन्कार किया है। साफ़ कहते हैं।

हजरत की निस्बत यह ऐतिक़ाद रखना कि जहाँ मौलूद पढ़ा जाता है वहाँ तशरीफ लाते हैं यह शिर्क है। हर जगह मौजूद ख़ुदा तआला है। अल्लाह ने अपनी सिफ़त दूसरे को इनायत नहीं फ़र्माई।

देखिए इनायत फ़र्माने ही का इन्कार कर रहे हैं यानी हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए अताई वुस्अते इल्म का ही इन्कार किया सुन्नी मुसलमानों के आलिम मौलवी अब्दुस्समी साहेब रामपुरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह जवाब मे फ़र्माते हैं।

अल्लाह ताआला ने शैतान को इस बात की क़ुदरत दे दी जिस तरह मलकुलमौत को सब जगह मौजूद होने पर क़ादिर कर दिया है। पौने तीन सतर बाद फ़र्माते हैं।

पस इसी तरह समझो कि जब सूरज सब जगह मौजूद होकर वह चौथेआसमान पर है रुहे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम जो सातवें आसमान पर इल्लीयीन में मौजूद है अगर वहां से आपकी नज़रे मुबारक कुल ज़मीन या ज़मीन के चन्द मवाज़ेअ व मक़ामात पर पड़ जाए तरश्शहे अनवारे फ़ैज़ाने मुहम्मदी से कुल मजालिसे मुतहहरा

को हर तरफ़ से मिस्ले शुआए शम्स मुहीत हो जाए किया मोहाल और किया बईद है।

देखिए मलकुलमौत अलैहिस्सलातु वस्सलाम और शैतान के लिए तमाम रुए ज़मीन का इल्मे मुहीत बअ़ताए इलाही साबित करके पस इसी तरह कहकर उसे बअताए इलाही इल्मे मुहीत ज़मीन ही को हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के मानने का शिर्क न होना साबित कर रहे हैं फिर मोलवी अम्बेठी जवाब देते हैं कि शैतान व मलकुलमौत के लिए इल्म की वुस्अत व ज़्यादत तो कुर्आन व हदीस से साबित है मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए इल्म की वुस्अत व ज़्यादत आयत व हदीस से साबित नहीं तो जिस अ़ताई वुस्अते इल्म को शैतान व मलकुलमौत के लिए साबित किया क़तअन उसी अ़ताई वुस्अते इल्म का हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए इन्कार किया। फिर सफा नं0–52 पर लिखते हैं।

इन औलिया को हक तआला ने कश्फ़ कर दिया कि उनको यह हुजूर व इल्म हासिल हो गया। अगर अपने फ़ख़्रे आलम अलैहिस्सलाम को भी लाख गुना इससे ज़्यादा अ़ता फ़र्मादे मुम्किन है मगर सुबूते फ़ेली इसका कि अ़ता किया है किस नस से है कि उसपर अक़ीदा किया जावे।

देखिए इस इबारत में साफ़ साफ़ मोलवी अम्बेठी ने कह दिया कि मुम्किन तो ज़रुर है कि औलिया से भी लाख गुना ज़्यादा हुजूर व इल्म अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को अल्लाह तआला अ़ता फ़र्मादे मगर इस अम्र का सुबूत किसी आयत या किसी हदीस से नहीं कि उन औलिया के बराबर भी हुजूर व इल्म उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को अ़ता फ़र्मा दिया है। लिहाज़ा यह अक़ीदा नहीं रख सकते कि हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को उन औलिया के बराबर भी इल्म व हुजूर हासिल है। दो कुफ़्र तो मोलवी अम्बेठी के उनकी पेज नं0–51 वाली इबारत में थे कि मलकुलमौत अलैहिस्सलातु वस्सलाम और शैतान का इल्म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम से ज़्यादा है।

तीसरा कुफ़्र पेज नं0–52 वाली इस इबारत में उन्होंने और बक दिया कि औलिया के इल्म व हुजूर से लाख गुना इल्म व हुजूर अगर्चे हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को अल्लाह तआला की बारगाह से अता होना मुम्किन है लेकिन औलिया के हुजूर व इल्म के बराबर भी हुजूर व इल्म अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को अता नहीं फ़र्माया है तो इस इबारत में औलिया के हुजूर व इल्म को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के हुजूर व इल्म से ज़ायद कह दिया हालांकि अल्लामा ख़फ़्फ़ाजी (रहमतुल्लाहि तआला अलैह) अपनी मुबारक किताब "नसीमुर्रियाज़" "शरहे शिफ़ाए क़ाज़ी अयाज़ में फ़र्माते हैं।

مَنْ قَالَ فُلَانٌ اَعْلَمُ مِنْهُ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلَّمَ فَقَدْ عَابَهٗ وَنَقَّصَهٗ فَهُوَ سَابٌّ وَالْحُكْمُ فِيْهِ حُكْمُ السَّابِّ مِنْ غَيْرِ فَرْقٍ لَا نَسْتَثْنِيْ مِنْهُ صُوْرَةً وَ هٰذَا كُلُّهٗ اِجْمَاعٌ مِّنْ لَّدُنِ الصَّحَابَةِ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ ط

यानी जो शख़्स किसी मख़्लूक़ के इल्म को हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के इल्म से ज़्यादा बताए उसने हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को ऐब लगाया और हुजूर की शान घटाई तो वह गाली देने वाला है और उसका हुक्म वही है जो गाली देने वाले का है। असलन फ़र्क़ नहीं इसमें से हम किसी सूरत का इस्तिस्ना नहीं करते। और उन तमाम अहकाम पर सहाबा

(रदियल्लाहु तआला अन्हुम) के ज़माने से अब तक बराबर इज्माअ चला आया है।

नसीमुर्रियाज़ शरीफ़ इस जलसे में मेरे पास नहीं है 'इस किताब की यह इबारत मैंने आप हज़रात को किताबे मुस्तताब हुसामुल हरमैन शरीफ़ से पढ़ कर सुनाई है लेकिन इस मज़मून का इक़रार खुद मोलवी अम्बेठी साहब ने अपनी किताब अल्मुहन्नद में किया है। अल्मुहन्नद यहाँ इस वक़्त मेरे पास मौजूद है। अगर किसी वहाबी, देवबन्दी को इस इबारत में कुछ भी शक, ज़रासा भी शुब्हा, हो तो फ़ौरन फ़र्मा दें। मैं वही मज़्मून अल्मुहन्नद से पढ़ कर सुना दूँ।

ख़ैर कहना यह है कि मोलवी अम्बेठी ने भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए उसी अताई वुस्अते इल्म ही का इन्कार किया है। ज़ाती वुस्अते इल्म जो खुद बख़ुद बग़ैर अताए खुदा वन्दी के हो उससे इस इबारत में हर्गिज़ बहस नहीं तो मोलवी अम्बेठी साहब की इस इबारत में यह तावील क़तअन नहीं चल सकती कि उन्होंने मलकुलमौत अलैहिस्सलातु वस्सलाम और शैतान के लिए अताई वुस्अते इल्म का इक़रार किया है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए सिर्फ़ ज़ाती वुस्अते इल्म का इन्कार किया है। उनकी इबारत में इस धींगा मश्ती की तावील हर्गिज़ हर्गिज़ चल नहीं सकती। इसी तरह मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी ने उस इबारत बराहीने क़ातिआ की एक यह तावील गढ़ी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए सिर्फ़ शैतानी उलूम का इन्कार किया है। हालांकि यह तावील भी उसमें हर्गिज़ नहीं चल सकती। क्योंकि न मोलवी अब्दुलजब्बार उमरपुरी वहाबी मोलवी की इबारत में शैतानी उलूम की बहस है न मौलवी अब्दुस्समीअ साहिब रामपुरी सुन्नी आलिम (रहमतुल्लाहि तआला अलैह) की अन्वारे सातिआ में शैतानी

उलूम की बहस है, न मोलवी अम्बेठी साहब ने बराहीने क़ातिआ में शैतानी उलूम से कुछ बहस की है बल्कि मोलवी अब्दुलजब्बार साहिब ने सिर्फ़ इसी ऐतक़ाद को शिर्क लिखा कि जहाँ मज्लिसे मीलाद शरीफ़ होती है वहाँ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम तशरीफ़ लाते हैं। मोलाना अब्दुस्समीअ साहिब ने इसी ऐतक़ाद का शिर्क न होना इस दलील से साबित किया कि अल्लाह तआला की किसी सिफ़त में कोई दूसरा हर्गिज़ शरीक नहीं हो सकता।

अगर हर जगह मौजूद होना अल्लाह तआला की ख़ास सिफ़त होती तो कोई और हर जगह मौजूद नहीं हो सकता हालांकि मलकुलमौत अलैहिस्सलातु वस्सलाम और शैतान दोनों को अल्लाह तआला ने हर जगह मौजूद होने की कुदरत देदी है। जब अल्लाह तआला की दी हुई कुदरत से मलकुलमौत अलैहिस्सलातु वस्सलाम और शैतान को हर जगह मौजूद मानने वाला मुश्रिक काफ़िर नहीं बल्कि ख़ासा मुसलमान है तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को अल्लाह तआला की कुदरत से हर जगह मौजूद मानने वाला क्योंकर मुश्रिक काफ़िर हो सकता है। इसी के जवाब में मोलवी अम्बेठी ने लिखा है कि शैतान और मलकुलमौत के इल्म का ज़्यादा होना तो नस यानी आयत व हदीस से साबित है लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए इल्म का ज़्यादा होना किसी आयत या हदीस से साबित नहीं बल्कि आयत व हदीस से हुज़ूर अलैहि व अला आलिहिस्सलातु वस्सलाम के इल्म का ज़्यादा न होना साबित है तो इन सब मज़ामीन में किसी जगह शैतानी उलूम का हर्गिज़ क़तअन कुछ भी तज़्किरा नहीं तो इस इबारत में शैतानी उलूम मुराद लेने की हर्गिज़ गुन्जाइश नहीं। दूसरी बात यह है कि सफ़ा नं0–51 व सफ़ा नं0–52 की इन इबारतों में सिर्फ़ शैतान ही के इल्म को इल्म

नबवी से ज़ायद नहीं कहा गया है बल्कि औलिया के लिए भी हुज़ूर व इल्म साबित करके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए हुज़ूर व इल्म अता होने का साफ़ इन्कार किया है।

क्या कोई वहाबी देवबन्दी यह कहने के लिए तैयार है कि औलिया को भी अल्लाह तआला मआज़ल्लाह उलूमे शैतानी अता फ़र्माता है। तीसरी बात यह है कि उसी सफ़ा 51 वाली इबारत में शैतान के साथ हज़रत मलकुलमौत अलैहिस्सलातु वस्सलाम के लिए भी वुस्अते इल्म साबित करके हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए वुस्अते इल्म का इन्कार किया है। हज़रत मलकुलमौत अलैहिस्सलातु वस्सलाम मलाइकए मुक़र्रबीन में से हैं और उरुसुल मलाइका में से हैं। अगर इस इबारत में वुस्अते इल्म से शैतानी उलूम मुराद लिए जाएं तो मआज़ल्लाह हज़रते सय्यिदिना इज़राईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम के उलूम को भी शैतानी उलूम मानना पड़ेगा। काकोरवी साहब की नुस्रते आसमानी सफ़ा–47,48 वाली इस तावील की बिना पर यह साबित होगा कि मोलवी अम्बेठी ने हज़रत सय्यिदिना मलकुलमौत अलैहिस्सलातु वस्सलाम के इल्म को भी शैतानी इल्म बताया है। यह मोलवी अम्बेठी का एक और नया कुफ़्र होगा।

क्या कोई वहाबी, देवबन्दी कह सकता है कि अल्लाह तबारक व तआला के किसी प्यारे रसूल के उलूम को शैतानी उलूम कहने वाला काफ़िर मुर्तद बेदीन नहीं है। बहरहाल मेरे इस बयान से आप साहिबान बख़ूबी समझ लिए होंगे कि मोलवी थानवी, मोलवी अम्बेठी साहिबान दोनों की इबारतों में न ख़ुद उनकी गढ़ी हुई किसी तावील की गुन्जाइश हो सकती है न किसी और वहाबी, देवबन्दी मोलवी की ढाली हुई कोई तावील चल सकती है। लेकिन अगर बफ़र्ज़े ग़लत उन इबारतों में तावीलात की गुन्जाइश होती तो मोलवी थानवी की बताई हुई तावील के

मुक़ाबिल किसी और की कोई और तावील और मोलवी अम्बेठी की इबारत बराहीने क़ातिआ में खुद उन्हीं अम्बेठी साहब की बताई हुई तावील को छोड़कर किसी दूसरे की कोई दूसरी तावील हर्गिज़ नहीं मानी जा सकती थी क्योंकि किसी क़ौल के सिर्फ़ वही माना मुराद हो सकते हैं जो खुद उसके क़ाइल ने बयान किए हों बशर्ते कि उस क़ौल में उस माना की गुन्जाइश हो।

हुज़ूर शेरबेशहे अहले सुन्नत रदियल्लाहु तआला अन्हु फ़र्माते हैं।

हुज़ूर मुर्शिदि बरहक़ इमामे अहले सुन्नत सय्यिदिना आला हज़रत क़िब्ला रदियलमौला तआला अन्हु की जूतियों के सदक़े में बिहम्दिही तआला दिल में यह जज़्बा है कि मां बाप बीवी बच्चे सब की मुहब्बत व आबरु मज़्हबे अहले सुन्नत की इज़्ज़त व अज़मत पर क़ुर्बान हो जाए दीन की ख़िदमत से जो कोई मुझे रोकता है उसकी तरफ़ से मेरे दिल को सख़्त तकलीफ़ होती है और मेरी दुआ है कि खुदा व रसूल जल्ल व अला सल्लल्मौला तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम मेरी बीवी मेरे बच्चों का और खुद मेरा ईमान इस क़दर मज़बूत फ़र्मा दें कि हम सब अपनी जान व माल व इज़्ज़त व आबरु बीवी बच्चे शौहर मां बाप सबको खुदा व रसूल जल्ल जलालहु व सल्लल्मौला तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की इज़्ज़त व अज़मत पर क़ुर्बान करते हैं। आमीन।

किताब तस्फ़ियतुल्अक़ाइद

मतबूअ ख़्वाजा बरक़ी प्रेस देहली

मुसन्निफ़ः—मोलवी क़ासिम नानोतवी

शायेअ करदा : कुतुबख़ाना इम्दादुलग़ोरबा

अब सुनिए और वह बात सुनिए जो आज तक कभी आप हज़रात ने न सुनी होगी। इस वक़्त मेरे हाथ में मोलवी क़ासिम नानोतवी की यह किताब "तस्फ़ियतुलअक़ाइद" मतबूअ ख़्वाजा बरक़ी प्रेस देहली शायेअ करदा कुतुबख़ाना इम्दादुलग़ोरबा सहारनपुर है। यह इसका सफ़ा—30 व सफ़ा—31 है।

सुनिए मोलवी नानोतवी साहेब फ़र्माते हैं : मल्हूज़ रहे कि लफ़्ज़े ख़ातिमुन्नबिय्यीन से यह बात बिलयक़ीन समझनी ज़रूर है कि आलम मे इस ज़मीन मे कोई नबी हो या किसी और ज़मीन में सब आफ़ताबे ज़ाते मुहम्मदी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम से इस तरह मुस्तफ़ीज़ हैं जैसे आफ़ताब से आइनए मुस्तनीर या क़मरे मुनीर या नय्यिराते अफ़लाक या ज़र्राते ख़ाक यानी जैसे दरो दीवार मुक़ाबिल आइनए मुस्तनीरा के नूरे मआदिन को इनइकास करते हैं तो फ़र्ज़ करो कि आइने पर नज़र पडती है और उसके नूर के बाद मआदिन को ढूढती है तो आफ़ताब तक पहुँचते हैं और फिर आफ़ताब पर सैर ख़त्म हो जाती है यह नहीं कह सकते कि आफ़ताब का नूर कहीं और से इसी तरह आया है ऐसे ही और अम्बिया की नुबुव्वत तो आपकी नुबुव्वत का करती है पर आपकी नबुव्वत पर क़िस्सा ख़त्म हो जाता है और इसी बात को आपके दीन का नासिखुलअदियान होना इसी तरह लाज़िम है जैसे आफ़ताब नूर का। और अनवार को महव कर देना या खेती मे बाल का सब में पीछे ज़ाहिर होना। इस बात की तहक़ीक़ ज़्यादा मतलूब हो तो रिसाला तहज़ीरुन्नास मुअल्लिफ़ा अहक़र मतबअ सिद्दीक़ी बरेली से मंगाकर देखिए

इस वक़्त और नबियों में जो अम्बिया आपके मुशाबे होंगे उनकी मुशाबहत ऐसी होगी जैसे अक्से आफ़ताब जो आइने में होता है हूबहू आफताब के मुशाबे होता है और फिर सब जानते है कि आफ़ताब अस्ल है और अक्से आफताब उसी का परतव।

इस इबारत मे मोलवी नानौतवी ने उसी मज़मून को मुख़्तसर तरीक़े से बयान कर दिया है जिसको तहज़ीरुन्नास में बीघों के अन्दर फैला कर बयान किया है कि जिस तरह दरो दीवार पर रोशनी पड़ती हुई देखकर ढूढ़ते हैं कि यह रोशनी किस चीज़ से आई तो पता चलता है कि आइना रोशन है उसी आइने का परतव दरो दीवार पर पड़ रहा है फिर तलाश करते हैं कि आइने में यह रोशनी किस चीज़ से आई तो मालूम होता है कि आइने के मुक़ाबिल चाँद रोशन है उसी चाँद का परतव आइने पर पड़ रहा है फिर तजस्सुस करते हैं कि चाँद में यह रोशनी किस चीज़ से आई तो साबित होता है कि चाँद के मुक़ाबिल आफ़ताब रौशन है उसी आफ़ताब का नूर चाँद को रोशन कर रहा है और फिर मालूम होता है कि आफ़ताब ख़ुद बख़ुद अपनी ज़ात से रोशन है आफ़ताब की रोशनी किसी और चीज़ से नहीं आई लफ़्ज़े खातिमुन्नबिय्यीन के भी इसी तरह यही माना हैं कि और नबियों की नुबुव्वत को देखकर जब हम तलाश करते हैं कि उनकी नुबुव्वत कहां से आई तो पता चलता है कि उनकी नुबुव्वत ऊलुलअज़्म रसूलों में से किसी रसूल की नुबुव्वत का परतव हैं ऊलुलअज़्म रसूलों की नुबुव्वत व रिसालत को देखकर हम ढूढ़ते हैं कि उनकी नुबुव्वत व रिसालत उनमें किससे आई तो साबित होता है कि तमाम ऊलुलअज़्म रसूलों की नुबुव्वत व रिसालत हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की नुबुव्वत व रिसालत का परतव और उसीका अक्स है जिस तरह आफ़ताब पर तफ़हहुस और तजस्सुस का सिलसिला ख़त्म हो जाता है क्योंकि आफ़ताब बग़ैर किसी और चीज़ के वास्ते के अपनी ज़ात

से ख़ुद बख़ुद रोशन है। इसी तरह हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम तक पहुँच कर भी इस जुस्तजू और तलाश का सिलसिला ख़त्म हो जाता है। क्योंकि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम भी बग़ैर किसी और नबी के वास्ते के अपनी ज़ात के खुद बखुद नबी व रसूल हैं।

तहज़ीरुन्नास की इबारत सफ़ा 4 के इस फ़िक़रे का कि आप पर सिलसिलए नुबुव्वत मुख़्ततम हो जाता है। सिर्फ़ यही मतलब है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम तक पहुँच कर इस जुस्तजू और तजस्सुस का क़िस्सा ख़त्म हो जाता है। जैसे आफ़ताब जो बिज़्ज़ात रोशन है उसके तुलूअ होने पर सितारों और चाँद की रोशनियां मिट जाती हैं इसी तरह हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम भी चूंकि बिज़्ज़ात नबी व रसूल हैं इसलिए हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के मबऊस हो जाने के बाद भी दूसरे तमाम नबियों और रसूलों की लाई हुई शरीअतें मन्सूख़ हो गयीं जिस तरह खेती में दरख़्त के हर जुज़ के पैदा होने के बाद बाल सबसे पीछे पैदा होती है। और फिर उसी बाल के दानों से आइन्दा ख़ेती पैदा होती है। इसी तरह दरख़्ते नुबुव्वत के हर जुज़ यानी हर नबी के पैदा होने के बाद हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम जो दरख़्ते नुबुव्वत के बाल की तरह सबसे पीछे पैदा हुए और अब फिर हुजूर ही के वास्ते और फ़ैज़ से आइन्दा नबी बनेंगे।

इस वक़्त और इस ज़माने में जो और नबी पैदा होंगे उनमें जो हज़रत सय्यिदिना नूह, या हज़रत सय्यिदिना इब्राहीम, हज़रत सय्यिदिना मूसा, हज़रत सय्यिदिना ईसा अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के मुशाबा होंगे। वह तो उन्हीं का परतव व अक्स होंगे लेकिन उनमें जो नबी हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के मुशाबे होंगे वह सब हुजूर ही के परतव और अक्स

होंगे। जैसे आफ़ताब का अक्स और परतव जो आइने पर पड़ता है बिल्कुल बेऐनिही आफ़ताब ही के मिस्ल होता है। फिर भी वह आफ़ताब ही का परतव व अक्स होता है और उसकी अस्ल वही आफ़ताब होता है। इसी तरह इस वक़्त इस ज़माने में जो अम्बिया हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के परतव व अक्स होंगे वह सब बिल्कुल बेऐनिही हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ही के मिस्ल होंगे। फिर भी उनकी नुबुव्वतें हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ही की नुबुव्वत का परतव व अक्स होंगी और उन सबकी नुबुव्वतों की अस्ल हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ही की नुबुव्वत होगी।

और फिर मोलवी नानोतवी ने बकमाले मेहरबानी यह भी साफ़ फ़र्मा दिया कि यह वही बात है जिसकी मुफ़स्सल तहक़ीक़ वह अपने रिसाले तहज़ीरुन्नास में लिख चुके हैं ज़ाहिर है कि आइने में आफ़ताब का जो अक्स और परतव नज़र आता है उसको भी मजाज़न आफ़ताब कह सकते हैं आम तौर पर बोलते हैं कि आइने में आफ़ताब दिखाई दे रहा है हालांकि हर समझदार यक़ीनन जानता है कि अस्ल आफ़ताब आसमान पर है। आइने में हर्गिज़ नहीं। इसी तरह बुरुज़ के माना ज़ुहूर हैं और इसके मुक़ाबिल इस्तितार के माना ख़िफ़ा यानी पोशीदगी है। आफ़ताब का बुरुज़ ज़ुहूर दरो दीवार व ज़मीन में हर्गिज़ ऐसा नहीं होता जैसा कि आइने में होता है। तो आइने वाला परतवे आफ़ताब 'बुरुज़ी आफ़ताब भी कहा जा सकता है। इसी तरह आइने में आफ़ताब का वह अक्स और परतव उसी आफ़ताब ही के तुफ़ैल में नज़र आता है तो उसको तुफ़ैली आफ़ताब भी कह सकते हैं। यूंही परतव और अक्स को ज़िल भी कहा जाता है। तो आइने वाले उस परतवे आफ़ताब को ज़िल्ली आफ़ताब कहना भी सहीह है। तो बक़ौले नानोतवी के इस वक़्त इस ज़माने में जो अम्बिया हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के मुशाबा

होंगे वह सब मोलवी नानोतवी के नज़्दीक मजाज़ी नबी, बुरुज़ी नबी, ज़िल्ली नबी, तुफ़ैली नबी होंगे।

मिर्ज़ा क़ादियानी ने सिर्फ़ तन्हा अपने ही आपको मजाज़ी नबी, बुरुज़ी नबी, ज़िल्ली नबी, तुफ़ैली नबी कहा था। उस पर तमाम छोटे बड़े वहाबी ग़ैर मुक़ल्लिद देवबन्दी मोलवियों ने फ़तवे देकर छाप दिए कि मिर्ज़ा क़ादियानी काफ़िर मुर्तद बेदीन है। और जो शख़्स उसके इस क़ौल पर मुत्तला होने के बाद भी उसको काफ़िर मुर्तद बेदीन न कहे या उसके काफ़िर मुर्तद बेदीन होने में शक रखे वह भी काफ़िर मुर्तद बेदीन है। और बेशक बिला शुब्हा हमारे तमाम ओलमाए अहले सुन्नत अरब व अजम का भी मिर्ज़ा क़ादियानी और उसके मुत्तबिईन पर यही फ़तवा शरइया है। आप हज़रात इन फ़तवों को किताबे मुस्ततआब हुसामुलहरमैन शरीफ़ व किताबे लाजवाब अस्सवारिमुल्हिन्दिया में मुलाहज़ा फ़र्मा सकते हैं। यह दोनों किताबें इस वक़्त इस जलसे में मेरे पास मौजूद हैं। तो मोलवी नानोतवी ने जो तहज़ीरुन्नास और तस्फ़ियतुल अक़ाइद में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के बाद बेगिन्ती, बेशुमार, लातादाद, मजाज़ी नबी, बुरुज़ी नबी, ज़िल्ली नबी, तुफ़ैली नबी मान लिए अब वहाबी, देवबन्दी हज़रात इन्साफ़ फ़र्माएं कि मोलवी नानोतवी साहब भी अपने इस क़ौल की बिना पर बहुक्मे शरीअते मुतह्हरा काफ़िर मुर्तद, बेदीन हुए या नहीं। हज़रात गुस्सा फ़र्माने की ज़रुरत नहीं, बुरा मानने की बात नहीं। लिल्लाह अपना दीन व ईमान सम्भालिए अपने दिलों से खुदा व रसूल जल्ला जलालुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का प्यारा कलाम झुटलाने वालों की दीनी मुहब्बत मज़हबी अज़मत निकालिए वरन् ख़ूब याद रखिए कि अल्लाहं वाहिदे क़ह्हार हसीब है और क़यामत क़रीब है और अज़ाबे जहन्नम सख़्त व अ़सीब है और तौफ़ीक़ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ही के हाथ है।

अख़्बार अन्नजम

मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी

इसी तरह वहाबियों, देवबन्दियों के एक मुक़्तदा व पेशवा मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी जो अभी ज़िन्दा मौजूद हैं। अपने अख़्बारुन्नज्म जिल्द 13 नम्बर 11, तारीख़ 22 रबीउल अव्वल, सन 1352 हिजरी मुताबिक़ 6 जुलाई सन 1934 ई0 के सफ़ा 6 कालम 2 सत्र 44 से सत्र 47 तक लिखते हैं।

तारीफ़ के तमाम अफराद अल्लाह के लिए साबित है किसी तरह की तारीफ़ किसी दूसरे के लिए जाइज नहीं। अल्लाह तआला की जात के सिवा किसी की तारीफ़ करना हराम है जितनी तारीफ़ें हैं सब अल्लाह तआला के लिए मख़्सूस है।

फिर उसी कालम की सत्र 54 से 57 तक लिखते हैं।

अगर कोई दूसरा हमारा नाखून ही बना देता तो हम कहते कि भाई उसकी भी तारीफ करना चाहिए थी। उसी ने हमारा नाखून बनाया, उसीने आँखे दीं ,उसीने जबान दी, सब चीजें उसीने दी हैं फिर दूसरे की तारीफ का हक ही क्या है।

इन दोनों इबारतों में मोलवी काकोरवी साहब ने साफ़ कह दिया कि तारीफ़ व मदह व सना करना सिर्फ़ उसी का हक़ है जिसने हमारे नाख़ून, हमारी आँखें, हमारी ज़बान और हमारी सब चीज़ें बनाई हैं। सब चीज़ों के बनाने वाले उस रब जल्ला जलालुहु के सिवा किसी दूसरे की किसी तरह की भी तारीफ़ करना

नाजाइज़ है, हराम है, नाहक़ यानी जुल्म है। हर अदना समझ वाला मुसलमान जानता है मानता है कि ओलमा औलिया ने सूफ़िया व अइम्मा ने सहाबा व अहले बयत ने (रदियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन) अम्बिया व मुर्सलीन ने मलाइकए मुक़र्रबीन ने (अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम) बल्कि खुद हुजूर सय्यिदुल मुर्सलीन ने (सलवातुल्लाहि तआला व सलामुहू अलैहि व अलैहिम व अला आलिही अजमईन) हर्गिज़, हर्गिज़, हर्गिज़ न किसी की ज़बान बनाई, न किसी का नाख़ून बनाया, न किसी की आँख बनाई, न किसी की कोई और चीज़ पैदा फ़र्माई। तो मोलवी काकोरवी ने इस इबारत में तमाम औलियाए किराम व अइम्मए अहले इस्लाम जुम्ला ओलमाए इज़्ज़ाम व सूफ़ियाए आली मक़ाम रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम की बल्कि तमाम सहाबए वाजिबुलइकराम व अहले बयते लाज़िमुल एहतिराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन) की बल्कि तमाम अम्बिया व मुर्सलीन व मलाइकए मुक़र्रबीन (अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम) की बल्कि खुद हुजूर सय्यिदुलआलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की मदह व तारीफ़ और सना व तौसीफ़ को साफ़ साफ़ नाहक़ और नाजाइज़ और हराम बता दिया व लाहौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलीय्यिल अज़ीम।

इन्हीं वहाबियों देवबन्दियों के वही मुक़्तदा पेशवा मोलवी अशरफ अली थानवी अपनी इस किताब आमाले कुर्आनी हिस्सा सोम मतबूअ मतबअ रज़्ज़ाक़ी कानपुर के पेज 9 पर लिखते हैं।

दीगर :—बराए इम्साक :— अंगूर के पत्ते पर लिखकर

बाएं रान मे बाँध दे।

أَبْجَدْ هَوَّزْ حُطِّي كَلِمَنْ سَعفَصْ قَرِشَتْ ثَخَذْ ضَظَغْ ۔وَقِيْلَ يٰاَرْضُ ابْلَعِي مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ۚ كُلَّمَآاَوْقَدُوْانَارًالِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَااللّٰهُ ه

اَمْسِكْ اَيُّهَاالْمَآءُ النَّازِلُ مِنْ صلْبِ فُلَانِ بن فُلَانة بلاحول ولاقوة الابالله العلى العظيم۔

मोलवी थानवी साहब ने इम्साक का जो तावीज़ बताया इसमें अव्वल तो हुरुफ़े तहज्जी हैं फिर एक आयत सूरए हूद अलैहिस्सलातु वस्सलाम की है फिर एक आयत सूरए माइदा शरीफ़ की है फिर थानवी साहब की इज़ाफ़ा की हुई एक अरबी इबारत है जिसका तर्जमा यह है कि ऐ फ़लानी औरत के बेटे फलां की पीठ से उतरने वाले पानी ठहर जा अल्लाहु अकबर अल्लाह तबारक व ताआला का मुक़द्दस व मुत़ह्हर कलाम अगूंर के पत्ते पर लिखा जाए और बाएं रान पर बाँधा जाए और फिर अपना फेअले मख़्सूस शुरु किया जाए तो ज़्यादा देर तक ठहरे।

मेरी सुन्नी मुसलमान बहनें भी इस वक़्त मेरा बयान सुन रही हैं इस लिए लफ़्ज़े इम्साक की साफ तश्रीह करना हया व शर्म के ख़िलाफ़ समझते छोड़े देता हूँ अल्अज़्मतु लिल्लाह। इस इबारत में कुर्आने अज़ीम की आयते मुक़द्दसा की ऐसी ज़बरदस्त तौहीन अपने मुरिदीन व मुअतक़िदीन से मोलवी थानवी साहब करा रहें हैं।

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآاِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

किताब फ़तावा रशीदिया हिस्सा सोम

मोलवी रशीद अहमद गंगोही

वहाबियों, देवबन्दियों का एक अक़ीदा यह है कि अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम ने जो मोअजज़े दिखाए उनसे कमाल व कुव्वत में बढ़े हुए जादू और तमाशे जादूगर और मानमती भी दिखा सकते हैं "देखो वहाबियों देवबन्दियों के मुक़्तदा व पेशवा रशीद अहमद गंगोही की किताब फ़तावा रशीदिया हिस्सा सोम सफ़ा 20" चुनांचे मुलाहज़ा फ़र्माइये उनकी अस्ल इबारत यह है।

اما خرق عادت پس بیانش آنکہ حق جل وعلا بقدرت کاملہ خود برائے تصدیق انبیاء علیہم السلام چیزے اظہار میفرماید کہ صدور آں چیز بہ نسبت ایشاں ممتنع می نماید

यानी ख़िरक़े आदत का बयान यह है कि अल्लाह तआला अपनी क़ुदरते कामिला से अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की सच्चाई ज़ाहिर फ़र्माने के लिए ऐसी चीज़ ज़ाहिर फ़र्मा देता है जिसका उनसे ज़ाहिर होना नामुम्किन नज़र आता है। इस इबारत में ख़िरक़े आदत की वही तारीफ़ की जो मोअजज़े की है। इससे मालूम हो गया कि इस बयान में मोअजज़े का नाम ख़िरक़े आदत रखा है।

अब सुनिए सात सतर के बाद इसी सफ़ा 20पर लिखते हैं।

बिसियार चीजस्त कि जुहूरे आं अज मकबूलीने हक़ अज क़बीले ख़िरक़े आदत शुमुर्दा मी शवद। हालाकि इमसाल हमा अफ़आल बल्कि अक़्वा अक्मल अजां अज अरबाबे सहर व असहाबे तिलिस्म मुम्किनुल वुकूअ बाशद।

यानी बहुत सी ऐसी चीज़ें हैं जिनका ज़ाहिर होना अल्लाह ताआला के मक़बूल बन्दों के मोअजिज़ों में से गिना जाता है हालांकि वैसे ही बल्कि कुव्वत व कमाल में उन मोअजिज़ों से बढ़े हुए काम तो जादूगरों और भानमतियों से भी हो सकते हैं

अलअयाजु बिल्लाहि तआला। हर सुन्नी मुसलमान जानता है कि अम्बिया व मुर्सलीन अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के माओजिजों को जादू बताना सिर्फ़ काफ़िरों मुश्रिकों ही का काम है अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ

यानी जब उनके पास अल्लाह का रसूल रौशन मोअजिज़े लाया तो काफ़िरों ने कहा यह खुला हुआ जादू है मस्नवी शरीफ़ में हज़रत मौलाना जलालुद्दीन आरिफ़े रुमी रहमतुल्लाहि तआला अलैह एक वाक़िआ बयान फ़र्माते हैं।

संगहा अन्दर कफ़े बूजहल बूद–गुफ़्त ऐ अहमद बोगो ई चिस्त जूद
गर रसूली चिस्त दर दस्तम निहां–चूं ख़बर दारी ज़े राज़े आसमाँ।

अबूजहल मलऊन पत्थर के कुछ टुकड़े अपने मुट्ठी मे छुपाए हुए लाता है अर्ज़ करता है कि अगर आप सच्चे रसूल और आसमान के राज़ों से ख़बरदार हैं तो ज़मीन का यह ग़ैब भी बता दीजिए कि मेरे हाथ मे क्या चीज़ छुपी हुई है इससे साबित हुआ कि अबूजहल अगर्चे काफ़िर व मुश्रिक था अगर्चे हुज़ूर अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के रसूल होने पर ईमान नहीं रखता था लेकिन इतना वह भी जानता था कि जो ख़ुदा का सच्चा रसूल होता है उसको इल्मे ग़ैब ज़रुर होता है और अल्लाह तआला से ग़ैब का इल्म हासिल होना अल्लाह तआला के सच्चे रसूल की निशानी है हुज़ूर अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम जवाब में यह नहीं फ़र्माते कि ग़ैब की बात आल्लाह ही जानता है रसूल को क्या ख़बर।

बल्कि गुफ़्त अहमद मन बोगोयम कां चे अस्त
या बोगोयन्द आंकि मा हक़ यम दरस्त

हुज़ूर आक़ाए दोआलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम फ़र्माते हैं कि मैं बता दूं कि तेरी मुट्ठी मे क्या है या जो चीज़ तेरी मुट्ठी में है वह बता दे कि हम अल्लाह तआला

के सच्चे रसूले बरहक़ हैं यानी अल्लाह तआला की बारगाह से इल्मे ग़ैब अता होना तो हर नबी व रसूल की शान है लेकिन हम तो इमामुलअम्बिया सय्यिदुल मुर्सलीन यानी तमाम नबियों के पेशवा सब रसूलों के सरदार भी हैं हमको हमारे रब्बे करीम जल्ला जलालुहु ने यह कुदरत भी अता फ़र्मा दी है कि अगर चाहें तो उसी के हुक्म से पत्थरों में जान डाल कर उनको ज़िन्दा और बोलने वाला भी फ़र्मा दें।

गुफ़्त बू जहल ई दोवम नादिर तरस्त।
गुफ़्त आरे हक़ अज़ां क़ादिर तरस्त।।

अबूजहल कहता है कि यह दूसरी बात कि जो चीज़ मेरी मुट्ठी में है वह हुजूर की सच्चाई और हक़्क़ानियत की गवाही देने लगे यह तो बहुत ही अजीब व ग़रीब है। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम फ़र्माते हैं हां अल्लाह तआला इससे भी ज़्यादा कुदरत वाला है यानी पत्थरों का ज़िन्दा कर देने की कुदरत तो अल्लाह तआला ने मुझको अता फ़र्मा दी है और अल्लाह तबारक व तआला की जो ज़ाती कुदरत है वह तो उससे भी बदरजहा ज़्यादा बल्कि बेशुमार दर्जो ज़्यादा बढ़ी हुई है। कि तेरी और तमाम आलम की अक़्ल और समझ से भी बुलन्द व बाला है।

गुफ़्त शशपारा हजर दर दस्ते तुस्त
बोशोनो अज़ हर यक तू तस्बीहे दुरुस्त

सुल्ताने दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम फ़र्माते हैं तेरे हाथ में पत्थर के छः टुकड़े हैं यानी नबी का निशान अल्लाह तआला की सरकार से इल्मे ग़ैब अता होना है वह तो मैंने दिखा दिया अब मेरे इमामुल अम्बिया सय्यिदुल मुर्सलीन होने का निशान भी देख कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने मुझको अपने करम से ऐसी कामिल और ज़बरदस्त कुदरत अता फ़र्माई है और पत्थर के हरएक टुकड़े से अल्लाह

तबारक व तआला की तस्बीह सुन।

ला इलाह गुफ़्त व इल्लल्लाह गुफ़्त . गौहरे अहमद रसूलुल्लाह सुफ़्त।

यानी वह पत्थर के छःओं टुकड़े अबूजहल की मुट्ठी के अन्दर से ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़ने लगे। अबूजहल तैश व ग़ज़ब में आकर उन पत्थरों को फेंक देता है। मौलाना रुमी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़र्माते हैं।

गुफ़्त नबुवद मिस्ले तू साहिर दिगर
साहिरां रा सर तूई व ताजे सर।

यानी अबूजहल गुस्से में मबहूत होकर कहता है कि आपके मिस्ल कोई दूसरा जादूगर भी न होगा। आप तो तमाम जादूगरों के भी सरदार व सरताज हैं। आह! आह! अबूजहल जैसा मलऊन काफ़िर अक्फ़र भी अगर्चे सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम पर ईमान नहीं लाता है लेकिन हुजूर का मोअजिज़ाए क़ाहिरा देखकर हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को मआज़ल्लाह तमाम जादूगरों का सरदार व सरताज कह देता है लेकिन अफ़्सोस और सद हज़ार अफ़्सोस कि आज मुसलमानों के मौलवी और पेशवा कहलाने वाले यूं कहें कि कमाल व कुव्वत में अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के मोअजज़ों से भी बढ़े हुए जादू और तमाशे जादूगर और भानमती भी दिखा सकते हैं।

नोट—सुन्नी मुसलमान भाइयो इन्साफ करो यह हमारे और तुम्हारे मालिक व आका अलैहिस्सलातु वस्सलाम की कैसी जबरदस्त तौहीन व तन्कीस है। मआजल्लाह तआला।

किताब तक़्वियतुल ईमान

मोलवी इस्माईल देहलवी (मतबूअ मतबअ मजीदी कानपुर)

वहाबियों, देवबन्दियों का एक अक़ीदा यह है कि हर मख़्लूक़ बड़ा हो या छोटा वह अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़्यादा ज़लील है।

देखो वहाबियों, देवबन्दियों के पेशवा इस्माईल देहलवी की किताब तक़्वियतुल ईमान (मतबूअ मत़बअ मज़ीदी कानपुर सफ़ा 13) मुसलमानों क़ा ईमान है कि सारी मख़्लूक़ात में अल्लाह तबारक व तआला सबसे बड़ा अपने नबियों और रसूलों को बनाया (अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम) और फिर उन सब नबियों और रसूलों में अपने प्यारे महबूब सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को सबसे बड़ा नबी व रसूल बनाया।

अब मोलवी इस्माईल देहलवी कहते हैं कि अल्लाह की मख़्लूक़ात में जो सबसे बड़े मख़्लूक़ हैं यानी सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम वह भी अल्लाह की शान के आगे चमार से ज़्यादा ज़लील हैं। चमार की जितनी इज़्ज़त अल्लाह के सामने हैं सबसे बड़े मख़्लूक़ मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की खुदा के सामने उतनी इज़्ज़त भी नहीं।

अल्लाह तबारक व तआला तो फ़र्माता है कि–

وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ (پارہ۔۲۸، آیت۔۸، رکوع۔۱۳)

यानी और अल्लाह ही के लिए इज़्ज़त है और उसके रसूल के लिए इज़्ज़त है और ईमान वालों के लिए इज़्ज़त है लेकिन

मुनाफ़िक़ लोग नहीं जानते मगर इमामुलवहाबिया मोलवी इस्माईल देहलवी इस फ़र्माने इलाही को झुटला कर अल्लाह तआला के हर बड़े और छोटे बन्दे को अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़्यादा ज़लील बता रहे हैं।

प्यारे सुन्नी मुसलमान भाइयो ! इन्साफ़ से कहो इमामुल वहाबिया मोलवी इस्माईल देहलवी ने इस इबारत में कलामे इलाही को भी झुटलाया या नहीं अल्लाह तबारक व तआला के तमाम प्यारे और मुअज़्ज़ज़ नबियों और उसके सब महबूब व मुअज़्ज़म रसूलों की भी इहानत की या नहीं और इमामुल वहाबिया के यह दो खुले हुए कुफ़्र हुए या नहीं ?

किताब सिराते मुस्तक़ीम

मुसन्निफ़ मोलवी इस्माईल देहलवी (मतबअ क़य्यूमी कानपुर)

यही इमामुलवहाबिया मोलवी इस्माईल देहलवी अपनी किताब सिराते मुस्तक़ीम मतबूअ मतबअ क़य्यूमी कानपुर सफ़ा 78 व 79 पर लिखते हैं।

बमुक्तजाए जुलुमातु बादेहा फौक बाद। अज़ वस्वसा ज़िना ख्याले मुजाम्अित जोजए खुद बेहलरस्त व सरफ़े हिम्मत बसूए शैख़ व अम्साले आं अज़ मुअज़्ज़िमीन गो जनाब रिसालत मआब बाशद। बचन्दी मर्तबा बदतर अज इस्तिग़राक़ दर सूरते गाव व खरे खुदस्त। कि ख्याले आं बताज़ीम व इजलाल बसुवैदाए दिले इन्सान मी चस्पद बखिलाफ़े ख्याले गाव व खर कि न आं क़दर चस्पीदगी मी बुवद व न ताज़ीम बल्कि मोहान व मोहक्कर मी बुवद। व ईं ताज़ीम व इजलाले ग़ैर कि दर नमाज़ मल्हूज़ व मक्सूद मी शवद बशिर्क मी कशद।

यानी तारीकियां तो बहुत हैं लेकिन सब बराबर नहीं बल्कि एक अन्धेरी दूसरी अन्धेरी से बढ़ कर है। इसी बिना पर नमाज़ में ज़िना के ख़्याल से अपनी बीवी के साथ जिमाअ करने का ख़्याल बेहतर है। और अपने पीर या किसी और बुर्जुग की तरफ़ ख़्वाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की तरफ़ ख़्याल ले जाना अपने बैल और गदहे के ख़्याल में क़सदन डूब जाने से बदरजहा ज़्यादा बुरा है। क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का ख़्याल

ताज़ीम व तौक़ीर के साथ इन्सान के दिल के अन्दर जम जायेगा और गदहे बैल का ख़्याल इसके ख़िलाफ़ है कि न इस क़दर दिलचस्पी होगी और न ताज़ीम होगी। बल्कि तौहीन व तहक़ीर के साथ होगा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की या अपने पीर की यह ताज़ीम व तौक़ीर जो नमाज़ में मल्हूज़ व मक़्सूद होगी शिर्क तक खींच ले जायेगी।

आह! सद आह! कि इमामुलवहाबिया मोलवी इस्माईल देहलवी ने इस इबारत में साफ़ कह दिया कि नमाज़ के अन्दर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का ख़्याल लाना अपनी बीवी के साथ जिमाअ करने के ख़्याल से बल्कि रन्डी के साथ ज़िना करने के तसव्वुर से बल्कि अपने बैल ओर गदहे के ख़्याल में क़सदन डूब जाने से भी बदरजहा ज़्यादा बदतर है। और इसकी वजह यह गढ़ी कि अपनी बीवी के साथ जिमाअ करने का ख़्याल या रन्डी के साथ ज़िना करने का तसव्वुर या बैल और गदहे का ख़्याल जो नमाज़ में आयेगा वह ताज़ीम व तौक़ीर के साथ न होगा बल्कि तौहीन व तहक़ीर के साथ होगा लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का ख़्याल जो नमाज़ में आयेगा वह ताज़ीम व तौक़ीर के साथ होगा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की यह ताज़ीम व तौक़ीर जो नमाज़ पढ़ने वाला अपने दिल में करेगा यह उसको मुश्रिक व काफ़िर बना देगी।

प्यारे सुन्नी मुसलमान भाइयो! हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के ख़्याले मुबारक को जो नमाज़ में लाया जाए उसको रन्डी के साथ ज़िना करने के तसव्वुर से और बैल और गदहे के ख़्याल में क़सदन डूब जाने से भी बदरजहा ज़्यादा बदतर बताना हुज़ूर सरकारे दो आलम

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की कैसी गन्दी घिनौनी तौहीन है। और जब मुश्रिक हो जाने की इल्लत यही बताई कि नमाज़ के अन्दर अल्लाह तआला के सिवा किसी और की ताज़ीम व तौक़ीर दिल में किए जाने ही से नमाज़ी फ़ौरन मुश्रिक व काफ़िर हो जाता है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का ख़्याले मुबारक बग़ैर उसके कि नमाज़ी उसका इरादा करे खुद बखुद ही आ जाना और नमाज़ी का उस प्यारे प्यारे ख़्याले मुक़द्दस को खुद क़स्द व इरादा करके अपने दिल में लाना दोनों बराबर हैं। क्योंकि दोनों सूरतों में अगर इस ख़्याले मुबारक की ताज़ीम व तौक़ीर की जायेगी तो नमाज़ में उस ख़्याले मुबारक की ताज़ीम व तौक़ीर करने वाला मुश्रिक व काफ़िर हो जायेगा और वह ख़्याले मुबारक मआज़ल्लाह रन्डी के साथ ज़िना करने के तसव्वुर से और बैल गद्हे के ख़्याल में क़सदन डूब जाने से बदरजहा ज़्यादा बदतर हो जायेगा और हर मुसलमान जब नमाज़ में التَّحِيَّات पढ़ेगा तो–

السَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ

ज़रूर ही पढ़ेगा जिसके माना यह हैं:–ऐ नबी हुज़ूर पर सलाम और अल्लाह तआला की रहमतें और बरकतें। तो इस मुबारक जुम्ले के पढ़ते वक़्त लामुहाला उसके दिल में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का मुबारक ख़्याल आयेगा। नमाज़ में जब कुर्आने अज़ीम पढ़ेगा तो क़तअन उसके दिल में यह ख़्याल अयेगा कि यह कुर्आने पाक अल्लाह तबारक व तआला ने हमारे आक़ा व मौला मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ही पर नाज़िल फ़र्माया। जब नमाज़ शुरु करने से पहले नियत करेगा कि यही काबए मुअज़्ज़मा है जिसमें मुश्रिकों ने तीन सौ साठ बुत रख

लिए थे यह मेरे आक़ा व मौला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ही का सदक़ा है कि काबए मुक़द्दसा बुतों से पाक होकर अल्लाह तआला की अफ़्ज़ल तरीन इबादत नमाज़ का क़िब्ला बन गया। बल्कि बिल्कुल इब्तिदा ही में जब नमाज़ की नीयत करेगा तो बिला शुब्हा उसके दिल में यह ख़्याल आयेगा कि यह नमाज़ की बेहतरीन नेमत हमारे आक़ा व मौला मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम अपने रब जल्ला जलालुहू के हुज़ूर से शबे मेअराज में अपने गुलामों के वास्ते लाए ग़रज़ यह है कि नमाज़ शुरू से आख़िर तक हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के प्यारे प्यारे ख़्याल से घिरी हुई है और नमाज़ पढ़ने वाला जब मुसलमान है तो क़तअन यक़ीनन ख़्याल ताज़ीम व तौक़ीर ही के साथ आएगा और ऐने नमाज़ के अन्दर उसका दिल जो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की ताज़ीम व तौक़ीर करेगा तो इमामुल वहाबिया मोलवी इस्माईल देहलवी साहेब के फ़तवे से उसके दिल का हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की यह ताज़ीम व तौक़ीर करना ही मआज़ल्लाह उसको मुश्रिक बना देगा तो हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के ज़मानए मुबारक से लेकर अब तक के सब नमाज़ी मुसलमान जिनके दिलों मे बराबर अपने आक़ा व मौला मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का ख़्याले मुबारक ऐन नमाज़ के अन्दर ताज़ीम व तौक़ीर के साथ आता रहा और उस वक़्त से लेकर क़यामत तक तमाम ईमानदार नमाज़ पढ़ने वाले जिनके दिलों में उनके आक़ा व मौला मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही

वसल्लम का ख़्याले मुबारक ताज़ीम व तौक़ीर के साथ ऐन नमाज़ के अन्दर आएगा। उन सबको इमामुल वहाबिया मोलवी इस्माईल देहलवी ने इस इबारत मे मुश्रिक व काफ़िर बना डाला और शिफ़ा शरीफ़ में हज़रत इमाम क़ाज़ी अयाज़ रदि़यल्लाहु तआला अन्हु फ़र्माते हैं।

وَكَذَالِكَ نَقْطَعُ بِتَكْفِيْرِ كُلِّ قَائِلٍ قَالَ قَوْلًا يُتَوَصَّلُ بِهٖ اِلٰى تَضْلِيْلِ الْاُمَّةِ وَتَكْفِيْرِ جَمِيْعِ الصَّحَابَةِ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ ۔

यानी और इसी तरह हम उसको भी क़तई तौर पर काफ़िर कहते हैं जो ऐसी बात कहे जिससे तमाम उम्मत को गुमराह बताने या तमाम सहाबा रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम को काफ़िर कहने की तरफ़ राह निकले (शिफ़ा शरीफ़ मत़बूअ दारूल कुतुबुल अर्बियतुलकुब्रा मिस्र सफ़ा 247—

प्यारे सुन्नी भाइयो! अपने प्यारे आक़ा अपने प्यारे मौला सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की प्यारी इज़्ज़त सच्ची अज़मत मुक़द्दस वजाहत के हुज़ूर अपने सरों को झुकाकर अपने मालिक अपने दाता सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की सच्ची मुहब्बत सच्ची उल्फ़त अपने दिलों मे जमाकर सोचो और ग़ौर करो कि नमाज़ के अन्दर हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के ख़्याले मुबारक की दिल में ताज़ीम व तौक़ीर करने को रन्डी के साथ ज़िना करने के तसव्वुर से और अपने बैल और गदहे के ख़्याल में क़सदन डूब जाने से भी बदरजहां ज़्यादा बदतर बताने वाला क्या मुसलमान रह सकता है वल्अयाज़ु बिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

प्यारे सुन्नी मुसलमान भाइयो! एक ज़रूरी बात और भी सुना दूं आप हज़रात बख़ूबी जानते हैं कि हिन्दू अपने आपको हिन्दू ,पारसी अपने आपको पारसी, इसाई अपने आपको इसाई,

यहूदी अपने आपको यहूदी, शीआ अपने आपको शीआ कहते हैं हिन्दू को हिन्दू ,पारसी को पारसी, इसाई को इसाई यहूदी को यहूदी, शीआ को शीआ, कहने से कोई हिन्दू, कोई पारसी, कोई इसाई, कोई यहूदी, कोई शीआ, हर्गिज़ नहीं चिढ़ता लेकिन देवबन्दी वहाबी साहेबान अपने आपको वहाबी नहीं कहते बल्कि जो शख़्स किसी नावाक़िफ़ को बताए कि यह देवबन्दी साहेबान वहाबी हैं तो नाराज़ हो जाते हैं और अपने आपको सुन्नी, हनफ़ी, चिश्ती, नक़्शबन्दी, मुजद्दिदी, साबिरी बतातें हैं हालांकि यह देवबन्दी लोग क़तअन यक़ीनन अक़ीदे की रू से वहाबी हैं इनका अपने आपको सुन्नी हनफ़ी, चिश्ती, साबिरी, नक़्शबन्दी, मुजद्दिदी बताना अपने वहाबी होने से इन्कार करना अपने आपको वहाबी कहे जाने से चिढ़ना महज़ फ़रेब व तक़िय्या है। क्योंकि अगर कोई पीर या मौलवी अपने आपको खुल्लम खुल्ला वहाबी कहता हुआ सुन्नी मुसलमानों की किसी बस्ती मे पहुंच जाए तो किसी गांव का जाहिल सा जाहिल सुन्नी मुसलमान भी हर्गिज़ न उसका मुरीद बनेगा न उसका वाज़ सुनेगा बल्कि अपनी बस्ती में किसी वहाबी पीर या वहाबी मौलवी का ठहरना भी हर्गिज़ गवारा न करेगा। इसीलिए यह देवबन्दी साहेबान अपने आपको हर्गिज़ वहाबी नहीं कहते बल्कि सुन्नी हनफ़ी होने का झूठा दावा करते हैं ताकि बेपढ़े जाहिल सीधे सादे भोले भाले सुन्नी मुसलमानों को आहिस्ता आहिस्ता वहाबी बनाया जा सके हत्ता कि मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी जिनसे बढ़कर वहाबियत का मुबल्लिग़ शायद कोई और न होगा लेकिन वह भी अहले सुन्नत व जमाअत होने का दावा करते हैं बल्कि अपने आपको इमामे अहले सुन्नत भी लिखवाते छपवाते कहलवाते हैं।

किताब फ़तावा रशीदिया

हिस्सा अव्वल (मुसन्निफ़: मोलवी रशीद अहमद गंगोही)

हालांकि वहाबियों, देवबन्दियों के पेशवा मोलवी रशीद अहमद गंगोही अपने फ़तावा रशीदिया हिस्सा अव्वल सफ़ा 119 पर लिखते हैं।

मुहम्मद बिन अब्दुलवहाब के मुक़्तदियों को वहाबी कहते हैं उनके अक़ाइद उम्दा थे और मजहब उनका हम्बली था। अलबत्ता उनके मिजाज़ में शिद्दत थी मगर वह और उनके मुक़्तदी अच्छे है मगर हां जो हद से बढ़ गये हैं उनमें फ़साद आ गया है और अक़ाइद सबके मुत्तहिद हैं आमाल में फ़र्क़ हनफ़ी शाफ़ई, मालिकी, हम्बली का है। रशीद अहमद गंगोही अफ़ी अन्हु।

इस इबारत में मोलवी गंगोही ने साफ़ साफ़ कह दिया कि वहाबियों के अक़ाइद अच्छे और उम्दा हैं बावजूद इसके कि उनके मिजाज़ में सख़्ती थी फिर भी वहाबी लोग अच्छे हैं अगर्चे जो वहाबी हद से बढ़ गए हैं अव्वल में ख़राबी आगई है लेकिन अक़ीदों में वहाबी और देवबन्दी दोनों मुत्तहिद दोनों एक हैं देवबन्दी और वहाबी दोनों में सिर्फ़ आमाल ही का फ़र्क़ है। देवबन्दियों और वहाबियों के अक़ीदों में कुछ फ़र्क़ नहीं।

मोलवी गंगोही ने इस इबारत में अक़ीदतन अपना वहाबी होना और तमाम अक़ाइद में वहाबियों के साथ बिल्कुल मुत्तहिद होना खुल्लमखुल्ला बयान फ़र्मा दिया तो इसी इबारत से यह भी साबित हो गया कि मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी, मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी, मन्ज़ूर सम्भली, व मोलवी हबीबुर्रहमान मउवी वग़ैरहुम तमाम वह देवबन्दी ओलमा व जोहला जो अक़ाइद में मोलवी गंगोही के साथ मुत्तहिद हैं वह सारे के सारे देवबन्दिया भी अक़ाइद में वहाबियों के साथ मुत्तहिद और सबके सब

अक़ीदतन वहाबी हैं। खुद मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी जिनको मोलवी अशरफ अली थानवी ने लाहौर के तारीख़ी मुनाज़रे में अपनी कुफ़्री इबारत हिफ़्जुल ईमान की तफ़्हीम के लिए अपना वकील बना कर भेजा था और उन्हीं के साथ मोलवी मन्जूर सम्भली व मोलवी इस्माईल देहलवी व मोलवी हुसैन अहमद टांडवी सदरे देवबन्द को भी वकीले मुनाज़रा नहीं बल्कि महज़ वकीले तफ़्हीम बना दिया था और इस बिना पर कि मोलवी अशरफ़ अली थानवी को न तो खुद मैदाने मुनाज़रा में आने की हिम्मत हो सकी न किसी को कुफ़्रियाते वहाबिया देवबन्दिया पर मुनाज़रा के लिए वकीले मुत़लक़ बनाकर भेजने की उनको जुर्अत हो सकी। बेऔनिही तआला व बेऔनिही हबीबिही सल्लल्मौला तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम मेरे मुकाबले में जुम्ला अकाबिर व असाग़िरे देवबन्दिया को फ़ज़ीहत अंगेज़ शिकिस्ते मोबीन और रुस्वाकुन हज़ीमते मुहीन हासिल हो चुकी है।

किताब फ़तवा बरातुल अबरार अन मक़ाइदुलअश्रार

मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी

वही मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी अपने फ़तवे में जो अब्दुर्रऊफ़ टीचर जगनपुरी की छपवाई हुई किताब बरातुल अबरार अन मक़ाइदुलअशरार के सफ़ा 300 से सफ़ा 310 तक 11 सफ़ों पर शायेअ हुआ है। सफ़ा 301 पर लिखते हैं कि।

वहाबी दरअस्ल वह लोग हैं जो अपने आपको मुहम्मद बिन अब्दुलवहाब नज्दी की जानिब मन्सूब करते हैं जो तेरहवीं सदी की इब्तिदा में नज्द (अरब) से ज़ाहिर हुआ था जो अहले सुन्नत व जमाअत का सख़्त दुश्मन था जिसने अहले सुन्नत बल्कि अहले हरमैन तक का क़त्ल व क़िताल किया और सख़्त से सख़्त उन्हें ईज़ाएं पहुंचाईं जो अक़ाइदे बातिला फ़ासिदा का अलमबरदार था।

किताब बरातुल अबरार मेरे हाथ में मौजूद है जिस किसी सुन्नी मुसलमान का जी चाहे किताब अपने हाथों में लेकर अपनी आँखों से खुद यह इबारत देखे अपनी ज़बान से खुद पढ़े अब यह इन्साफ़ आप हज़रात के हाथ में है कि मुक़्तदा मोलवी गंगोही तो वहाबियों के अक़ाइद को उम्दा और वहाबियों को अच्छा बता रहे हैं और मोलवी गंगोही के मुक़्तदी मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी वहाबियों की बुराइयां और मज़म्मतें बयान फ़र्मा रहे हैं वहाबियों के अक़ाइद को बातिल और फ़ासिद ठहरा रहे हैं तो इन दोनों में से कौन सच्चा और कौन झूटा है और हक़ीक़त यह है कि गंगोही मुक़्तदा ने तो अपना इन्दीयह और माफ़िज़्ज़मीर साफ़ साफ़ ज़ाहिर फ़र्मा दिया लेकिन उनके शाहजहाँपुरी मुक़्तदी साहब ने वहाबियों के साथ अपनी नियाज़मन्दी व अक़ीदत केशी को सुन्नी मुसलमानों

के डर से तक़िय्ये के पर्दे में छुपा दिया फिर यह इन्साफ़ भी आप ही हज़रात फ़र्मायें कि मोलवी गंगोही के फ़तवे से तमाम देवबन्दियों का अक़ीदतन वहाबी होना और जुम्ला अक़ाइद में वहाबियों के साथ बिल्कुल मुत्तहिद होना साबित व बाहिर हुआ और मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी के फ़तवे से वहाबियों के अक़ाइद का बातिल व फ़ासिद होना वाज़ेह व ज़ाहिर हुआ तो दोनों इबारतों के मिलाने से खुद देवबन्दियों के अक़ाइद का भी बातिल व फ़ासिद होना साबित हुआ या नहीं ?

क्या लुत्फ़ जो ग़ैर पर्दा खोले। जादू वह जो सर चढ़ के बोले।

इसी फ़तवे में मोलवी अबुल वफ़ा शाहजहाँपुरी ने वहाबियों के सात मख़्सूस अक़ीदे लिखे हैं–

(1) अपने फ़िर्क़े के सिवा तमाम अहले इस्लाम को काफ़िर समझता था सफ़ा 301

(2) हयाते दीनिया बादे विसाल हयाते नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम रुही व क़ल्बी फ़िदाह का इन्कार सफ़ा 302 ।

(3) ज़ियारते अफ़्ज़लुल बुक़ा गुम्बदे ख़ज़रा नफ़्से ज़ियारते क़ब्र शरीफ़ के वास्ते सफ़र करना।

(4) उम्मीदे शफ़ाअत वग़ैरहा बिदअत व हराम व महजूर व ममनूअ क़रार देता था सफ़ा 302 ।

(5) हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी अपने को अयाज़न बिल्लाहि तआला हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के हम पल्ला समझना सफ़ा 302 ।

(6) तक़लीदे शख़्सी को शिर्क जानता था सफ़ा 303 ।

(7) बयअते सूफ़ियाए किराम उनके अश्ग़ाल व अज़्कार वग़ैरह को हराम व बिदअत व महजूर वग़ैरह समझना सफ़ा 303 ।

किताब फ़तावा रशीदिया हिस्सा अव्वल

मोलवी रशीद अहमद गंगोही

अब सुनिए देवबन्दियों के वही मोलवी रशीद अहमद गंगोही फ़तावा रशीदिया के हिस्सा अव्वल सफ़ा 21 पर लिखते हैं।

किताब तकवियतुलईमान निहायत उम्दा किताब है। रद्दे शिर्क व बिदअत में लाजवाब है। इस्तिदलाल उसके बिल्कुल किताबुल्लाह और अहादीस से है उसका रखना और पढ़ना और अमल करना ऐने इस्लाम है और मोजिब अज्र का है।

ऐने इस्लाम उस चीज़ को कहते हैं कि अगर वह चीज़ मौजूद है तो इस्लाम भी मौजूद है और अगर वह चीज़ मौजूद नहीं तो इस्लाम मौजूद नहीं दर हक़ीक़त उसी चीज़ का नाम इस्लाम हो उसके सिवा किसी और चीज़ का नाम इस्लाम न हो मुसलमानाने अहले सुन्नत के दीन व मज़हब मे कुर्आने पाक पर तमाम व कमाल ईमान लाना ज़रूर ऐने इस्लाम है कि जो शख्स पूरे कुर्आने अज़ीम पर कामिल ईमान रखता है उसके पास ऐने इस्लाम है यानी वह मोमिन मुसलमान है और जो शख्स कुर्आने हकीम के किसी एक इर्शाद का भी मुन्किर है वह ऐने इस्लाम से महरूम है यानी वह इस्लाम नहीं इसी तरह कुर्आन के फरामीन व अहकाम पर अमल करना लाज़िम व ज़रूरी तो है लेकिन ऐने इस्लाम हर्गिज़ नहीं कुर्आने अज़ीम को पढ़ना ज़रूर अफ्ज़ल व

आला इबादतों में से है लेकिन ऐने इस्लाम हर्गिज़ नहीं यानी जो मुसलमान कुर्आने अज़ीम की तिलावत न करे वह आला दर्जे की एक इबादत से ज़रूर महरूम है लेकिन ऐने इस्लाम से हर्गिज़ महरूम नहीं बल्कि बिला शक व शुब्हा मुसलमान है जो मुसलमान अपने घर में कुर्आने पाक नहीं रखता उसका घर अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला की एक नेअमते जलीला से ज़रूर ख़ाली है मगर वह ऐने इस्लाम से हर्गिज़ महरूम नहीं बल्कि यक़ीनन मुसलमान है यूंही जो मुसलमान कुर्आने पाक पर मुकम्मल ईमान तो रखता है लेकिन अहकामे कुर्आनिया पर अमल नहीं करता वह हस्बे मरातिब बेअमल गुनाहगार फ़ासिक़ फ़ाजिर ज़रूर है लेकिन ऐने इस्लाम से वह भी हर्गिज़ महरूम नहीं बल्कि क़तअन मुसलमान है मगर मोलवी गंगोही ने तक़्वियतुलईमान के रखने उसके पढ़ने उस पर अमल करने को भी ऐने इस्लाम बता दिया तो जो शख़्स तक़्वियतुलईमान न रखे या न पढ़े या उस पर अमल न करे तो मोलवी गंगोही के इस फ़तवे की बिना पर वह ऐने इस्लाम ही से महरूम है, काफ़िर बे ईमान है, ख़ुलासा यह हुआ कि देवबन्दियों में तक़्वियतुल ईमान का मर्तबा मआज़ल्लाह कुर्आने अज़ीम से भी बदरजहा ज़्यादा बढ़ा हुआ है वलअयाज़ु बिल्लाहि तआला।

प्यारे सुन्नी भाइयो! लिल्लाह इन्साफ़ क्या ऐसे अक़ीदों को मआज़ल्लाह एक सैकेन्ड के करोरवें हिस्से के लिए भी इस्लामी अक़ीदे कह सकते हो मोलवी गंगोही के इस फ़तवे से तो जो वहाबी देवबन्दी अपने पास तक़्वियतुल ईमान न रखता हो वह भी काफ़िर मोलवी गंगोही के इस फ़तवे की बिना पर जो वहाबी देवबन्दी तक़्वियतुलईमान न पढ़ता हो वह भी काफ़िर, मोलवी गंगोही के इस ज़लील हुक्म की बिना पर जो वहाबी देवबन्दी

तक़्वियतुलईमान के किसी एक ही हुक्म पर अमल करने से महरूम हो वह भी काफ़िर। वलाहौल वलाकुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलीय्यिल अज़ीम।

अजीब मुज़हिका अंगेज़ फ़तवा है जिसकी बिना पर हर वहाबी देवबन्दी को इसके हुक्म के मुताबिक़ मुसलमान रहने के लिए हर घड़ी हर आन हर जगह तक़्वियतुलईमान पढ़ते रहना हर जगह हर वक़्त तक़्वियतुल ईमान पर अमल करते रहना लाज़िम व ज़रूरी हो गया कि जो वहाबी, देवबन्दी सोते जागते, चलते फिरते, उठते बैठते, खाते पीते, अपने अहलो अयाल के हुकूक़ अदा करते, क़ज़ाए हाजत से फ़ारिग़ होते वक़्त किसी तरह किसी जगह किसी एक आन के लिए भी तक़्वियतुल ईमान को अपने पास रखने या उसको पढ़ने या उस पर अमल करने से क़ासिर रहा और मोलवी गंगोही के इस फ़तवे की बुनियाद पर फ़ौरन वह ऐने इस्लाम से महरूम होकर काफ़िर व बे ईमान हो गया। क्या कोई बड़े से बड़ा छोटे से छोटा वहाबी देवबन्दी इस बात का सुबूत दे सकता है कि वह मोलवी गंगोही के इस फ़तवे की बिना पर किसी वक़्त भी ऐने इस्लाम से महरूम होकर काफ़िर व बे ईमान हो जाता है यही कि इन देवबन्दी मोलवियों ने दीने इस्लाम व मज़्हबे अहले सुन्नत को लहवो लइब बना लिया।

किताब तक़्वियतुलईमान

मुसन्निफ़ मोलवी इस्माईल देहलवी

बहर हाल वहाबिया देवदन्दिया के सबसे बड़े मोलवी इस्माईल देहलवी अपनी इसी तक़्वियतुलईमान में जो देवबन्दी वहाबी का ऐने इस्लाम है सफ़ा 7 पर लिखते हैं।

पैग़म्बरे खुदा के वक़्त में काफ़िर भी अपने बुतों को अल्लाह के बराबर नहीं जानते थे बल्कि उसी का मख़्लूक़ और उसी का बन्दा समझते थे और उनको उसके मुक़ाबिल की ताक़त साबित नहीं करते थे मगर यही पुकारना और मन्नतें माननी और नज़रों नयाज़ करनी और उनको अपना वकील और सिफ़ारिशी समझना यही उनका कुफ़्र व शिर्क था सौ जो कोई किसी से यह मुआमला करेगा कि उसको अल्लाह का बन्दा व मख़्लूक़ ही समझे सो अबूजहल और वह शिर्क मे बराबर है। फिर 5 शतर बाद लिखते हैं :

इस बात में औलिया और अम्बिया में और जिन व शैतान मे और भूत व प्रेत मे कुछ फ़र्क़ नही यानी जिससे कोई यह मुआमला करेगा वह मुश्रिक हो जावेगा ख़्वाह अम्बिया व औलिया से ख़्वाह पीरों व शहीदों से ख़्वाह भूत व परी से।

यह तो इमामुलवहाबिया इस्माईल देहलवी का अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के महबूबों के साथ अदब है कि जाबजा जिन्नों शैतानों भूतों परियों के साथ अम्बिया व औलिया को पीरों और शहीदों को मिलाता जाता है इसी इमामुल वहाबिया से यही अन्दाज़े गुफ़्तगू सीखकर अगर कोई शख़्स यूं कहता फिरे कि अल्लाह का बन्दा व मख़्लूक़ होने के लिहाज़ से थानवी और सूअर

में गंगोही और कुत्ते में, नानौतवी और गदहे में, काकोरवी और उल्लू में, अम्वेठी और वैल में, कुछ फ़र्क़ नहीं जो कोई अल्लाह का बन्दा व मख़्लूक़ है ख़्वाह थानवी, गंगोही, नानौतवी, काकोरवी, अम्बेठी हों ख़्वाह सूअर, कुत्ते, गदहे, उल्लू हों तो क्या ऐसा कहना उन देवबन्दी वहाबियों के नज़्दीक थानवी, गंगोही, नानौतवी, काकोरवी, अम्बेठी की शान में तौहीन व गुस्ताख़ी न होगा। आह आह! सद हज़ार आह! उन वहाबियों देवबन्दियों को क्या हो गया है जिस तर्ज़ के कलाम को अपने मौलवी के लिए तौहीन व गुस्ताखी ठहराते हैं उसी तरह के कलाम को हुज़ूर आक़ाए दो आलम मालिके कौनैन शहन्शाहे दारैन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की शाने अरफ़ा व आला में जाइज़ व दरुस्त बताते हैं वल अयाज़ु बिल्लाहि सुब्हानहू व तआला।

आप हज़रात को इतनी बात और बता दूं कि अरबी में शफ़ाअत और फ़ारसी में सिफ़ारिश दोनों एक ही चीज़ के नाम हैं यूं ही जिसको अरबी में शफ़ीअ कहते हैं उसी को फ़ारसी में सिफ़ारिशी कहते हैं शफ़ाअत और शिफ़ारिश में या शफ़ीअ और सिफारिश में अरबी और फ़ारसी के सिवा हर्गिज़ कुछ और फ़र्क़ नहीं चुनांचे इसी तक़्वियतुल ईमान सफ़ा 6 पर شُفَعَاؤُنَا का तर्जमा हमारे सिफारिशी और सफ़ा 26 पर اَلشَّفَاعَةُ का तर्जमा सिफारिश किया है बल्कि सफ़ा 27 पर साफ़ लिख दिया कि शफ़ाअत कहते हैं सिफारिश को।

अब मुलाहज़ा फ़र्माइये इस इबारत सफ़ा 7 में साफ़ साफ़ कह दिया कि जो शख़्स किसी वली या नबी को किसी पीर या शहीद को पुकारे वह अबू जहल के बराबर मुश्रिक है जो शख़्स किसी वली या नबी को किसी पीर या शहीद को सवाब पहुँचाने

की मन्नत माने वह अबूजहल के बराबर मुश्रिक जो शख़्स किसी वली या नबी को किसी पीर या शहीद की नज़रो नियाज़ करे वह अबूजहल के बराबर मुश्रिक जो शख़्स किसी वली या नबी को किसी पीर या शहीद को शफ़ाअत करने वाला माने वह अबूजहल के बराबर मुश्रिक, हर मुसलमान जानता है कि अबूजहल इस उम्मत का फ़िरऔन और बदतरीन काफ़िर व मुश्रिक और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्मौला तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का अशद तरीन दुश्मन था और यह भी हर मुसलमान मानता है कि अल्लाह तबारक व तआला ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्मौला तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को अपना हबीबे जमील और वजीह व जलील बनाया और गुनाहगाराने उम्मत की शफ़ाअत व सिफ़ारिश की दुनिया ही में इज़्न अता फ़र्माया।

हुज़ूरे अक़्दस सय्यिदुलआलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के ज़मानए अक़्दस से लेकर अब तक जिस क़दर सुन्नी मुसलमान तेरह सौ पैसठ बर्ष के अन्दर होते चले आए और जिस क़दर सुन्नी मुसलमान दुनिया भर में इस वक़्त हैं उन सबका इस अक़ीदए हक़्क़ा मुबारका पर भी ईमान था और है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम अपने रब्बे करीम जल्ला जलालुहू के फ़ज़्लो करम से शफ़ीए रोज़े जज़ा व शफ़ीए महशर हैं और क़ियामत तक जिस क़दर सुन्नी मुसलमान पैदा होंगे उन सबका भी इस अक़ीदए हमीदा पर ऐतक़ाद व ईमान होगा क्योंकि अक़ीदए शफ़ाअत मुसलमानाने अहले सुन्नत के अक़ाइदे ज़रूरिया मज़हबिया में से हैं शफ़ाअत और सिफारिश के माना यह हैं कि कोई शख़्स किसी के लिए अपने बड़े मर्तबे वाली हस्ती से गुनाहों की बख़्शिश या किसी मन्सब व नेअमत को दाद व दहश तलब करे हज़रात महबूबाने

ख़ुदा अला सय्यिदिहिम व अला आलिही व अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम वस्सना का अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला की हज़रत इज़्ज़त में गुनाहगारों के लिए बिइज़्निही तआला शाफिओं व मुशफ़्फ़आ होना खुद अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने कुर्आने अज़ीम में जाबजा इर्शाद फ़र्माया है अल्लाह जल्ला जलालुहू फ़र्माता है "ला यम्लिकूनश्शफ़ाअत इल्ला मनित्तख़ज़ इन्दर्रहमानि अहदा" यानी लोग शफ़ाअत के मालिक नहीं मगर वही जिन्होंने रहमान के पास करार रखा है और अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है "वला यम्लिकुलज़ीन यद्ऊन मिन दूनिहिश्शफ़ाअत इल्ला मन शहिद बिल्हक़्क़ि व हुम यअमलून" यानी और जिनको यह अल्लाह के सिवा पूजते हैं शफ़ाअत के मालिक नहीं हां शफ़ाअत के मालिक वही हैं जिन्होंने हक़ की गवाही दी और इल्म रखते हैं और फ़र्माता अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला यानी और अगर जब वह अपनी जानों पर जुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुजूर हाज़िर हो फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहें और रसूल उनकी शफ़ाअत फर्माएं तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएंगे और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला फ़र्माता है यानी और ऐ महबूब अपने खासों और आम मुसलमान मर्दों व औरतों के गुनाहों की मुआफ़ी मांगो और अल्लाह जानता है दिन को तुम्हारा फिरना और रात को तुम्हारा आराम करना।

इन आयाते कुर्आनिया मुबारका ने अक़ीदए शफ़ाअत साफ़ तौर पर वाज़ेह व रौशन फ़र्मा दिया कि दुनिया ही में अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे अकरम को ईमान वाले गुनाहगार मर्द व औरतों की शफ़ाअत का इज़्न व हुक्म दे दिया बल्कि दुनिया में भी तौबा क़बूल होने गुनाहों के बख़्शे जाने की सिर्फ़ यही एक सूरत है कि जो मुसलमान अपनी जानों पर जुल्म

करें वह अल्लाह तबारक व तआला के हबीबे जमील महबूबे जलील हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के हुजूर हाज़िर हों अगर दरबारे महबूब में यह हाज़िरी हिस्सन व जिस्मन नसीब न हो तो हुजूर इल्मी व क़ल्बी ही सही कि ईमान वाला अपने आक़ा व मौला हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की तरफ़ अपने क़ल्ब से मुतवज्जे होकर यह यक़ीन करले कि मैं हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के पेशे नज़र अनवर हूं और हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम अपने रब्बे करीम जल्ला जलालुहू की अता फ़र्माई हुई ताक़त व समाअत व बिसारत से मुझे देख रहे हैं मेरी बातों को सुन रहे हैं मेरी क़ल्ब के ख़तरात व अज़ाइम व नीयात और मेरे जुम्ला हालात पर मुत्तलाअ हैं फिर इस हाज़िरी दरबारे महबूब से मुशर्रफ होने के बाद अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला से अपने गुनाहों की माफ़ी मांगे फिर अल्लाह का महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम भी अपने चाहने वाले अपनी नाज़ बरदारी फ़र्माने वाले रब जल्ला जलालुहू से अर्ज़ करे कि तेरे गुनहगार बन्दे तेरे महबूब के दामने रहमत की पनाह मे आ गए हैं अब तो इनके गुनाहों को मुआफ़ फ़र्मा दे।

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने अपने महबूब बन्दों को अपने फ़ज़्लोकरम से अपने गुनहगार बन्दों की शफ़ाअत का मालिक बना दिया है उन्होंने अपने बे इन्तहा रहमत वाले रब अज़्ज़ा व जल्ला के फ़ज़्लो करम से ईमान वाले गुनहगारों की शफ़ाअत का क़ौलो क़रार कर रखा है।

ज़ाहिर है कि बहुक्मे शरीअते मुतह्हरा हक़ीक़तन मुसलमान तो सिर्फ़ वही है जो क़ुर्आने अज़ीम के तमाम इर्शादाते मुबारका पर तमाम व कमाल ईमान रखे और क़ुर्आने अज़ीम ही के यह इर्शादाते

करीमा भी हैं जो अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के महबूबों का शाफ़ेए मुज़्निबां शफ़ीओ मुज्रिमां होना साफ़ साफ़ फ़र्मा रहे हैं तो वहाबियों देवबन्दियों के ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान की इस इबारत ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैही व अला आलिही वसल्लम के ज़मानए मुबारक से अब तक तेरह सौ पैंसठ बर्ष के तमाम मुसलमानाने अहले सुन्नत को जो इर्शादाते कुर्आनिया के मुताबिक़ अक़ीदए शफ़ाअत पर ईमान रखते चले आए और अब से क़ियामत तक पैदा होने वाले महा संखों महा संख सुन्नी मुसलमानों को जो फ़र्माने कुर्आनी के मुताबिक़ उस अक़ीदए शफ़ाअत पर ईमान रखेंगे उन सब अव्वलीन व आख़िरीन साबिक़ीन व लाहिक़ीन को मामूली और हल्के दर्जे का मुश्रिक व काफ़िर नहीं बल्कि अबूजहल के बराबर काफ़िर व मुशिरक बना दिया और वहाबियों नज्दियों का पहला मख़्सूस अक़ीदए बातिला फ़ासिदा जो मोलवी अबुल वफ़ा शाहजहाँपुरी ने बताया कि अपने फिरक़े के सिवा तमाम अहले इस्लाम को काफ़िर समझना वहाबियों देवबन्दियों का भी क़तई अक़ीदा होना साबित हो गया वहाबियों देवबन्दियों के उसी ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान की उसी इबारत ने हुज़ूरे अक़्दस सय्यिदुशशाफ़िईन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम से या किसी और नबी या वली किसी पीर या शहीद से शफ़ाअत की उम्मीद रखने को सिर्फ़ बिदअत व हराम व महज़ूर व मम्नूअ ही नहीं बल्कि अबू जहली कुफ्र व शिर्क क़रार दे दिया। तमाम वहाबियों नज्दियों का चौथा अक़ीदए बातिला फ़ासिदा जो मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी ने बताया कि उम्मीदे शफ़ाअत को बिदअत व हराम व महज़ूर व मम्नूअ क़रार देना तमाम वहाबियों नज्दियों का भी यक़ीनी अक़ीदा होना साबित हो गया।

किताब तक़्वियतुल ईमान

मुसन्निफ़ मोलवी इस्माईल देहलवी

फिर वहाबियों देवबन्दियों के इसी ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान के सफ़ा 10 पर इमामुल वहाबिया इस्माईल देहलवी लिखते हैं।

कोई किसी पीर व पैगम्बर को या भूत व परी को या किसी सच्ची कब्र को या किसी के थान को या किसी के चिल्ले को या किसी के मकान को किसी के तबर्रुक को या निशान को या ताबूत को सज्दा करे या रूकूअ करे या उसके नाम का रोज़ा रखे या हाथ बाँधकर खड़ा होवे या जानवर चढ़ाये या ऐसे मकानों में दूर दूर से कस्द करके जावे या वहां रौशनी को गिलाफ़ डाले, चादर चढ़ावे, या उनके नाम की छडी खडी करे, रूख़सत होते वक्त उलटे पाँव चले, उनकी कब्र को बोसा देवे, मूरछल झले, उस पर शामियाना खड़ा करे, चौखट को बोसा देवे, हाथ बाँधकर इल्तिजा करे, मुराद मांगे, मुजाविर बनकर बैठ रहे, वहां के गिर्दो पेश के जंगल का अदब करे और ऐसी किस्म की बातें करे तो उस पर शिर्क साबित होता है। उसको इश्तिराक फिल इबादत कहते हैं। यानी अल्लाह की सी ताज़ीम किसी की करनी, फिर ख्वाह यूं समझे कि यह आप ही इस ताज़ीम के लाइक है या यूं समझे कि उनकी इस तरह की ताज़ीम करने से अल्लाह खुश होता है और इस ताज़ीम की बरकत से अल्लाह मुश्किलें खोल देता है हर तरह शिर्क साबित होता है।

इमामुल वहाबिया इसमाईल देहलवी ने वहाबियों देवदन्दियों के इसी ऐने इस्लाम तक्वियतूलईमान के सफा 9 व 10 पर ऐसी किस्म की बातों में उसके नाम पर माल खर्च करना, ऐसी सूरत बनाकर चलना कि हर कोई जान लेवे कि यह उस घर की

ज़ियारत को जाते हैं, रास्ते में उसका नाम पुकारना, नामाकूल बातें करने से और शिकार से बचना, तवाफ़ करना, उसकी तरफ़ जानवर लेजाना, मिन्नतें मानना, उसकी दीवार से अपना मुंह और छाती मलना, फ़र्श बिछाना, वज़ू या गुस्ल का सामान लोगों के लिए दुरूस्त करना, उसके कूए के पानी को तबर्रुक समझकर पीना, बदन पर डालना, आपस में बांटना, गाइयों के वास्ते लेजाना, वहां शिकार न करना, दरख्त न काटना, घास न उखाड़ना, मवेशी न चुगाना भी गिना दिया।

इमामुल वहाबिया इस्माईल देहलवी ने वहाबियों देवबन्दियों के इसी ऐने इस्लाम तक्वियतुल ईमान के सफ़ा 7 पर शिर्क के माना भी बता दिए कि शिर्क के माना यह है कि जो चीजें अल्लाह ने अपने वास्ते ख़ास की है और अपने बन्दों के जिम्मे निशान बन्दगी की ठहराई हैं वह चीजें किसी और के वास्ते करनी पहले तो यही मुलाहज़ा फ़र्माइए कि इस इबारत सफ़ा 10 में भी पीर व पैग़म्बर को भूत व परी के साथ मिलाया है "वलअयाजु बिल्लाहि तआला"।

बहर हाल मोलवी इस्माईल देहलवी ने इन इबारतों में साफ़ साफ़ बता दिया कि जो शख़्स किसी पीर या पैग़म्बर यानी किसी वली या नबी को सवाब पहुँचाने के लिए उनके नाम पर अल्लाह तआला ही को राज़ी करने के वास्ते किसी नेक काम में माल ख़र्च करे वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी को सवाब पहुँचाने के लिए उनके नाम का रोजा अल्लाह तआला ही की इबादत के लिए और अल्लाह को खुश करने के वास्ते रखे वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी की क़ब्र को दूर से सफ़र करके जाए वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी के मकान को दूर से सफ़र करके जाए वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी की क़ब्र या उनके मकान को जाते हुए रास्ते में उनका नाम पुकारे वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी की क़ब्र या मकान को जाते हुए रास्ते मे नामाकूल बातों से बचे यानी

नामाकूल बातें न करे वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी की क़ब्र या मकान को जाते हुए रास्ते में शिकार न करे वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी की क़ब्र या उनके मकान को जाते हुए साथ में जानवर ले जाए वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी को सवाब पहुँचाने की मिन्नत माने वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी के मज़ार या मकान की दीवार से अपना मुंह मले वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी के मज़ार या मकान की दीवार से अपनी छाती मले वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी के मज़ार पर या मकान में लोगों के बैठने के लिए फ़र्श बिछाए वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी के मज़ार पर या मकान में जाने वालों के नमाज़ पढ़ने के लिए वजू का सामान करे वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी के मज़ार या मकान की ज़्यारत के लिए आने वालों के नमाज़ पढ़ने के लिए गुस्ल का सामान करे वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी के कूंए के पानी को तबर्रुक समझ कर पीए वह मुश्रिक, जो उस पानी को तबर्रुक समझ कर अपने बदन पर डाले वह मुश्रिक, जो उस पानी को तबर्रुक समझ कर लोगों को बांटे वह मुश्रिक, जो उस पानी को तबर्रुक समझ कर उन लोगों के लिए जो वहां हाज़िर नहीं हैं ले जाए वह मुश्रिक, जो किसी वली या नबी के मज़ार या मकान पर पहुँच कर वहाँ के दरख़्त न काटे वह मुश्रिक, जो किसी वली या नबी के मज़ार या मकान पर पहुँच कर वहाँ की घास न उखाड़े वह मुश्रिक, जो किसी वली या नबी के मज़ार या मकान पर पहुँच कर वहां चारपाए जानवर न चराये वह मुश्रिक, जो किसी वली या नबी को सवाब पहुँचाने के लिए अल्लाह तआला ही की खुशी हासिल करने के वास्ते अल्लाह ही के नाम पर जानवर ज़िबह करे वह मुश्रिक, जो किसी वली या नबी के मज़ार या मकान में ताज़ीम के लिए हाथ बाँधकर खड़ा हो वह मुश्रिक, जो किसी वली या नबी के मज़ार या मकान पर रौशनी करे वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी

वली या नबी की क़ब्र पर ग़िलाफ़ डाले वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी की क़ब्र पर शामियाना लगाये वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी के मज़ार या मकान की चौखट को बोसा दे वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी के मज़ार पर हाथ बांध कर उनसे कुछ इल्तिजा करे वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी के मज़ार पर उनका वसीला पेश करके अल्लाह तआला से अपनी मुराद मांगे वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी की क़ब्र पर चादर चढ़ाये वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी के नाम की छड़ी खड़ी करे वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी की क़ब्र से रुख़्सत होते वक़्त अदब के लिए उलटे पांव चले वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी की क़ब्र को बोसा दे वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी की क़ब्र पर मूरछल झले वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी की क़ब्र का मुजाविर बनकर वहीं क़याम करे वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी को या किसी वली या नबी की क़ब्र को उन्हें अल्लाह तआला का प्यारा बन्दा समझकर उनकी ताज़ीम के लिए सज्दा करे वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी के आगे या किसी वली या नबी की क़ब्र के आगे उनको अल्लाह तबारक व तआला ही का महबूब बन्दा समझ कर उनकी ताज़ीम के लिए झुक जाए वह मुश्रिक, जो शख़्स किसी वली या नबी के गिर्द या किसी वली या नबी की क़ब्र के गिर्द उनको अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ही का बन्दा और उसी का प्यारा समझ कर उनकी ताज़ीम के लिए तवाफ़ करे वह मुश्रिक।

यह तो आप हज़रात ने वहाबियों देवबन्दियों के ऐनें इस्लाम तक़्वियतुल ईमान के शिरकी फ़तवे सुनलिए लेकिन हम मुसलमानाने अहले सुन्नत के नज़्दीक जो शख़्स किसी वली या नबी को अपना ख़ुदा या माबूद समझकर मआज़ल्लाह उसकी क़ब्र को सज्दा या रुकूअ या उसका तवाफ़ करे वह तो काफ़िर व मुश्रिक है लेकिन जो शख़्स अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ही को

अपना और सारे जहान का खुदा और माबूद वहदहु ला शरीक लहू मानता हो हर वली और हर नबी और हर फ़िरिश्ते को उसी अल्लाह तआला ही का मम्लूक व मख़्लूक़ व बन्दा जानता हो फिर भी किसी वली या नबी को अल्लाह तबारक व तआला का प्यारा बन्दा मानते हुए महज़ उसकी ताज़ीम के लिए उसको या उसकी क़ब्र को सज्दा या रूकूअ़ या उसके गिर्द तवाफ़ करे वह गुनाहगार मुरतकिबे हराम तो ज़रूर है मगर काफ़िर मुश्रिक हर्गिज़ नहीं क्योंकि शिर्क किसी शरीअ़त में कभी जाइज़ नहीं हो सकता और अल्लाह अ़ज़्ज़ा व जल्ला के मुअ़ज़्ज़म व महबूब बन्दों को ताज़ीमी सज्दा करना हज़रते सय्यिदिना आदम सफ़ीउल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम व हज़रत सय्यिदिना याकूब व हज़रत सय्यिदिना यूसुफ़ सिद्दीक़ अलैहिमस्सलातु वस्सलाम की शरीअतों में जाइज़ था जिसे हमारे मालिक व मौला सरवर व आक़ा सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की शरीअते मुतह्हरा ने हमारे लिए मन्सूख़ फ़र्मा कर हराम फ़र्मा दिया। अलबत्ता अगर कोई मुसलमान किसी वली या नबी की क़ब्रे अक़्दस का सिर्फ़ इस नीयत से तवाफ़ करे कि उस मज़ारे मुबारक से उसको फ़ियूज़ व अनवार व बरकात हासिल हों उस तवाफ़ से उसको उस क़ब्र की ताज़ीम क़तअन मक़्सूद नहो तो उसको तवाफ़े इस्तिफ़ाज़ा कहते हैं तो मुसलमानाने अहले सुन्नत के दीन व मज़हब में मआज़ल्लाह किसी वली या नबी को या उनकी क़ब्र को सज्दए इबादत या रूकूए इबादत या तवाफ़े इबादत करने वाला क़तअन यक़ीनन काफ़िर मुश्रिक है और सज्दए ताज़ीम या रूकूए ताज़ीम या तवाफ़े ताज़ीम या सज्दए इस्तिफ़ाज़ा या रूकुए इस्तिफ़ाज़ा या करने वाला आसी व आसिम और गुनाहगार और हराम का मुर्तकिब है। इस्तिफ़ाज़ा के माना हैं फ़ैज़ हासिल करना हम सुन्नी मुसलमानों की मुबारक शरीअते मुतह्हरए मुहम्मदिया अला साहिबिहा व आलिहिस्सलातु वत्तहिय्यह में किसी वली या नबी के गिर्द या उनके मज़ारे पुर अनवार के

गिर्द सिर्फ़ यही तवाफ़े इस्तिफ़ाज़ा जाइज़ है।

हमारे प्यारे सुन्नी मुसलमान भाई देर से बार बार मुश्रिक मुश्रिक मुश्रिक सुनते सुनते घबरा गए होंगे लेकिन मैं क्या करूं मजबूर हूँ तक़्वियतुल ईमान की इन इबारतों सफ़ा 9 व सफ़ा 10 ने एक ही सांस में सारे जहान के मुसलमानों को मुश्रिक बना डाला है जब इन इबारत की तफ़्सील आप हज़रात को सुनाई जाएगी तो मजबूरन उतनी ही बार लफ़्ज़े मुश्रिक बोलना पड़ेगा जितनी बातों को इन इबारतों मे शिर्क बताया है प्यारे सुन्नी मुसलमान भाईयो आप हज़रात इस अम्र पर भी ग़ौर फ़र्माएं कि वहाबियों देवबन्दियों के इस ऐने इस्लाम तक़्वियतुलईमान ने किसी पीर या पैग़म्बर किसी भूत या परी के मकान को जाते हुए रास्ते में नामाकूल बातों से परहेज़ करने को भी शिर्क बता दिया नामाकूल बातों के माना गाली गलौज, पकड़ जकड़, लड़ना झगड़ना, धींगा मुश्ती ही तो हैं लिहाज़ा अब मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी व मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी व मोलवी मन्जूर सम्भली व मोलवी हुसैन अहमद टांडवी जो लखनऊ व शाहजहाँपुर व सम्भल व देवबन्द वग़ैरह दूर दराज़ के मक़ामात से मदरसा ज़िला फ़ैज़ाबाद के किसी वहाबी व देवबन्दी के मकान का क़स्द करके सफ़र करते हैं उन सब पर उनके ऐने इस्लाम तक़्वियतुल्ल ईमान के फ़तवे से फ़र्ज़े आज़म है कि शिर्क से बचने के लिए रास्ते में धौल धप्पा गालम गलौज, फक्कड़ छक्कड़, करते चलें अगर किसी सफ़र में भी उन्होंने ऐसा करने से परहेज़ किया तो अपने ही ऐने इस्लाम तक़्वियतुलईमान के फ़तवे से मुश्रिक हो गए फिर यह बात भी आप हज़रात के मुलाहज़ा फ़र्माने की है कि वहाबिया देवबन्दिया के इस ऐने इस्लाम का सफ़ा 9 तो कह रहा है कि किसी पीर व पैग़म्बर के मज़ार या मकान को जाते हुए जो शख़्स जानवर ले जाए वह मुश्रिक, और उसी का सफ़ा 10 बता रहा है कि जो शख़्स वहाँ पहुँच कर चार पाए जानवर न चराए वह मुश्रिक। अब अगर कोई वहाबी देवबन्दी साहब जानवर ले जाएं जो सफ़ा 9 के फ़तवे से मुश्रिक और अगर

जानवर न ले जाएं तो वहां पहुँचकर जानवर नहीं चरा सकते तो सफ़ा 10 के फ़तवे से मुश्रिक। ग़रज़ वहाबियों देवबन्दियों के ऐने इस्लाम तक़्वियतुलईमान ने उनके अगले पिछले दोंनों रास्ते बन्द कर दिए "

وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ۔

फिर यह बात भी आप हज़रात मुलाहज़ा फ़र्माइए कि वहाबियों देवबन्दियों के ऐने इस्लाम तक़्वियतुलईमान के सफ़ा 10 व सफ़ा 11 में किसी की क़ब्र पर रौशनी करना, शामियाना लगाना, मूरछल झलना, झाड़ू देना, फ़र्श बिछाना, प्यासों को पानी पिलाना, नमाज़ियों के लिए वज़ू व गुस्ल का सामान दुरूस्त करना, किसी की क़ब्र को चूमना भी शिर्क बता दिया और उसके सफ़ा 7 पर शिर्क के माना यह बताए कि जो चीज़ें अल्लाह ने अपने लिए ख़ास की हैं और अपने बन्दों के ज़िम्मे निशाने बन्दगी ठहराई हैं उनको किसी और के वास्ते करना तो साबित हुआ कि वहाबी देवबन्दी अक़ीदे में चूमना, रोशनी करना, शामियाना लगाना, मूरछल झलना, झाड़ू देना, फ़र्श बिछाना, प्यासों को पानी पिलाना, नमाज़ियों के लिए सामान दुरूस्त करना, यह सब काम ख़ुदा ने सिर्फ़ अपनी ही क़ब्र के लिए ख़ास किए हैं जभी तो यह सब काम किसी और की क़ब्र पर करने शिर्क हैं तो किसी की क़ब्र पर इन कामों में से किसी काम का शिर्क होना उसी वक़्त सहीह व दुरूस्त हो सकता है जबकि वहाबी देवबन्दी अक़ीदे मे ख़ुदा की मआज़ल्लाह मौत भी वाक़ेए हो फिर मआज़ल्लाह ख़ुदा की क़ब्र भी बने फिर मआज़ल्लाह यह सब बातें ख़ुदा ने अपनी ही क़ब्र के साथ भी की हों।

प्यारे सुन्नी मुसलमान भाइयो! ग़ौर और इन्साफ़ फ़र्माओ इन वहाबिया देवबन्दिया ने दीन व मज़हब को मस्ख़ करके ऐसी मकरुह व पलीद कुफ़्री सूरत में पेश किया है कि आर्यों के पण्डित और इसाइयों के पादरी भी इस सूरत को देखकर प्यारे दीने इस्लाम और मुहज़्ज़ब मज़्हबे अहले सुन्नत पर ऐतराज़ कर रहे हैं

वलाहौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलीय्यिल अज़ीम। बहर हाल वहाबियों देवबन्दियों के इस ऐने इस्लाम तक़्वियतुलईमान के सफ़ा 9 व 10 की इबारतों ने भी उन तमाम मुसलमानों को मुश्रिक बना दिया जिन्होंने इन कामों में से किसी एक काम को भी किया है तो वहाबियों नज्दियों का पहला मख़्सूस अक़ीदए बातिला फ़ासिदा जो मोलवी अबूलवफ़ा शाहजहाँपुरी ने बताया।

अपने फ़िरके के सिवा तमाम अहले इस्लाम को काफ़िर समझना फिर दोबारा तमाम वहाबियों देवबन्दियों का क़तई अक़ीदा होना साबित हो गया। हर मुसलमान जानता है कि मक्कए मुअज़्ज़मा मे ज़मज़म शरीफ अल्लाह तबारक व तआला के एक जलील पैग़म्बर हज़रत सय्यिदिना इस्माईल ज़बीहुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम का ही कुंआ है जो उनकी शीर ख़्वारी के वक़्त में उनकी मुक़द्दस एड़ियों के रगड़ने से अल्लाह जल्ला जलालुहू ने पैदा फ़र्मा दिया था जो उन्हीं की मिल्क उन्हीं के तसर्रूफ़ में रहा फिर कौन सा मुसलमान है जिसने हज्जे बैतुल्लाह शरीफ़ के मौक़े पर ज़मज़म शरीफ़ का पानी तबर्रूक समझ कर नहीं पिया अपने बदन पर नहीं डाला या दूसरे मुसलमानों के लिए वहां से नहीं ले गया फिर कौन सा मुसलमान है जिसने कभी न कभी किसी न किसी हाजी का लाया हुआ आबे ज़मज़म शरीफ तबर्रूक़ समझ कर नहीं पिया तो वहाबियों देवबन्दियों के इस ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान ने सब हाजियों को और तमाम मुसलमानों जिन्होंने अल्लाह तबारक व तआला पैग़म्बर हज़रत सय्यिदिना इस्माईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम के कूएं ज़मज़म शरीफ़ का पानी तबर्रुक़ समझ कर पिया या अपने बदन पर डाला या मुसलमानों को बांटा या दूसरे मुसलमान तक पहुंचाया सबको खुल्लम खुल्ला मुश्रिक बना दिया।

किताब तज़्किरतुर्रशीद हिस्सा अव्वल

मुसन्निफ़ मोलवी आशिक़ इलाही मेरठी

इसी के साथ वहाबियों देवबन्दियों का एक यह अक़ीदा भी मुलाहज़ा फ़र्मा लीजिए यह किताब तज़्किरतुर्रशीद हिस्सा अव्वल है जो बिलाली सिस्टम प्रेस साधुड़ा ज़िला अम्बाला की छपी हुई है यह वहाबियों देवबन्दियों के पेशवाओं मोलवी मसऊद अहमद गंगोही, मोलवी महमूदुलहसन देवबन्दी, मोलवी अबदुर्रहीम रायपुरी मोलवी ख़लील अहमद अम्बेठी, साहेबान के हुक्म से मोलवी रशीद अहमद गंगोही साहेब के ख़लीफ़ा मोलवी आशिक़ इलाही मेरठी साहब ने तस्नीफ़ की है यह उसका सफ़ा 113 है इसकी सतर 16 में यह इबारत है वल्लाहिल अज़ीम मोलाना थानवी के पांव धोकर पीना नजाते उख़्वी का सबब है।

सुन्नी मुसलमान भाइयो! इन्साफ़ करो यह है वहाबी देवबन्दी साहिबों का अक़ीदा कि किसी वली या नबी के कूएं का पानी तबर्रुक समझकर पीने वाला जहन्नमी है लेकिन मोलवी अशरफ़ अली थानवी के पांव का धोवन पीने वाला मुसलमान जन्नती है। वल्अयाज़ु बिल्लाहि तआला इतना और सुन लीजिए कि यह मस्अला मुत्तफ़क़ अलैह है कि शिर्क करने वाला भी मुश्रिक, शिर्क का हुक्म देने वाला भी मुश्रिक, शिर्क पर राज़ी रहने वाला भी मुश्रिक, और हर मुसलमान जानता और मानता है कि अल्लाह तबारक व तआला ने फिरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम को सज्दए ताज़ीमी करें तमाम फ़िरिश्तों ने बिला इस्तिसनाए हज़रत सय्यिदिना आदम सफ़ीउल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम को सज्दए ताज़ीमी किया हज़रत सय्यिदिना आदम सफ़ीउल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम इस ताज़ीमी सज्दे पर राज़ी हैं उन्होंने इस सज्दए ताज़ीमी पर कुछ भी ऐतराज़ व इन्कार हर्गिज़ न फ़र्माया नीज़ हज़रत सय्यिदिना याकूब

अलैहिस्सलातु वस्सलाम और उनकी अहलिया मोहतरमा और उनके ग्यारह साहिबज़ादों ने हज़रत सय्यिदिना यूसुफ़ सिद्दीक़ अलैहिस्सलातु वस्सलाम को ताज़ीमी सज्दा फ़र्माया हज़रत सय्यिदिना यूसुफ़ अलैहिस्सलातु वस्सलाम इस सज्दए ताज़ीमी पर राज़ी रहे तो वहाबियों देवबन्दियों के इस ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान के उसूले शिर्क की बिना पर तमाम मलाइका अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम हज़रते आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम को सज्दए ताज़ीमी करके मुश्रिक हुए। हज़रते याक़ूब अलैहिस्सलातु वस्सलाम भी हज़रते यूसुफ़ अलैहिस्सलातु वस्सलाम को ताज़ीमी सज्दा करके मुश्रिक हुए। हज़रते आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम और हज़रते यूसुफ़ अलैहिस्सलातु वस्सलाम दोनों इस ताज़ीमी सज्दे पर राज़ी रहकर मुश्रिक हुए और खुद अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त जल्ला जलालुहु सज्दए ताज़ीमी का हुक्म देकर मुश्रिक हो गया। 'वलाहौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह' आह कैसा नापाक अक़ीदा इन वहाबियों देवबन्दियों ने गढ़ा है कि अपने फ़िरक़े के सिवा तमाम अहले इस्लाम को काफ़िर बनाने के शौक़ में ऐसे उसूले शिर्क गढ़ डाले जिन्होंने मआज़ल्लाह तमाम फ़िरिश्तों को हज़रते आदम व हज़रते याक़ूब हज़रते यूसुफ़ जैसे जलीलुलक़द्र पैग़म्बरों को बल्कि ख़ुद अल्लाह तबारक व तआला को भी मुश्रिक ठहरा दिया जल्ला जलालुहू व अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम। अच्छा अब ज़रा ग़ौर से देखिए वहाबियों देवबन्दियों के इस ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान के इस फ़तवाए शिर्क से कोई बचा भी है तो आपको मालूम होगा कि इब्लीस इस शिर्क से महफ़ूज़ रहा वह शिर्क करने वाले फ़िरिश्तों से शिर्क पर राज़ी रहने वाले पैग़म्बर से शिर्क का हुक्म देने वाले खुदा से क़तअन बेज़ार होकर अलग खड़ा हो गया और बनिहायत तकब्बुर व गुरूर कहने लगा

أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهُ مِن طِينٍ

"अना खैरुम्मिनहु खलक़्तनी मिन्नारिंव व खलक़्तहु मिन तीन" यानी मैं तो आदम से बेहतर हूं। तूने मुझे आग से बनाया और

आदम को तूने गीली मिट्टी से पैदा फ़र्माया। कहीं आग भी मिट्टी के आगे झुक सकती है फिर भला मैं आदम को सज्दए ताज़ीमी क्यों कर सकता हूं। अल्लाह तआला ने उस पर लानत भी फ़र्माई उसको जन्नत से भी निकाला उसको संगसार भी फ़र्माया उस पर कुफ़्र का फ़तवा भी दिया।

اِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْٓ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ

पारा 23 रूकूअ 14"बेशक तुझ पर मेरी लानत है क़ियामत तक "

فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ

पारा 23 रूकूअ 14 तू जन्नत से निकल जा कि रांधा गया

كَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ

पारा 1 रूकूअ 4 काफ़िर हो गया।

लेकिन इब्लीस भी वहाबियों देवबन्दियों के ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान का इतना ज़बर दस्त पाबन्द ऐसा पक्का पैरू था कि उसने वाहिदे क़हहार जल्ला जलालुहू के सारे अज़ाबात गवारा कर लिए लेकिन हज़रते आदम सफ़ीउल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम को ताज़ीमी सज्दा न करना था न किया चूंकि तक़्वियतुल ईमान की तस्नीफ़ से बल्कि उसके मुसन्निफ़ की पैदाइश से भी हज़ारहा वर्ष पेशतर इब्लीस ने वहाबियों देवबन्दियों के इस ऐने इस्लाम के मुताबिक़ अमल करके उसकी लाज रख ली थी और एक अकेला तने तन्हा वही ऐसा मनचला बहादुर था जो उस शदीदुल अज़ाब जल्ला जलालुहु के क़हर व गज़ब की भी कुछ परवाह न करते हुए इस वहाबियाना शिर्क से क़तअन परहेज़ करके तक़्वियतुल ईमानी तौहीद पर साबित क़दम रहा था लिहाज़ा वहाबियों देवबन्दियों ने भी उसके इस बेमिस्ल एहसान के बदले में उसके साथ यह बेमिस्ल एहसान किया कि उसके इल्म को हुज़ूरे अक़्दस महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के इल्मे अक़्दस से भी ज़्यादा वसीअ बता दिया। इब्लीस के इल्म को जो वसीअ माने उसको मोमिन मुसलमान ठहरा दिया लेकिन हुज़ूरे अकरम सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के इल्मे अक़्दस को जो वसीअ माने

उसको मुश्रिक बेईमान बना दिया इसीलिए मक्का मुअज़्ज़मा व मदीना तय्यिबा के ओलमाए किराम अहले सुन्नत रदियल्लाहु तआला अन्हुम इन वहाबियों देवबन्दियों को हिज़्बुश्शैतान यानी इब्लीस का गिरोह तहरीर फ़र्माया है इब्लीस का गिरोह वही लोग हैं जो इब्लीस की इताअत व फ़र्मा बरदारी करें और इब्लीस की इताअत व फ़र्मा बरदारी इससे बढ़ कर क्या होगी कि मआज़ल्लाह कमाले इल्म में उसको हुज़ूरे अकरम सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम से भी अफ़ज़ल व आला बता दिया और इब्लीस की इताअत व फ़र्मा बरदारी को अल्लाह तबारक व तआला ने इब्लीस की पूजा फ़र्माया। हज़रत सय्यिदिना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपने चचा आज़र से जो उनका परवरिश कुनिन्दा और मुंह बोला बाप भी था इर्शाद फ़र्माया था।

يَآبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ اِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا

यानी ऐ मेरे बाप शैतान की पूजा न कर बेशक शैतान तो रहमान का ना फ़र्मान है। ज़ाहिर कि आज़र हर्गिज़ शैतान की पूजा नहीं करता था बल्कि उसका शिर्क तो बुत परस्ती व सितारा परस्ती व नमरूद परस्ती ही था लेकिन चूंकि बातिल परस्ती दर हक़ीक़त शैतान की इताअत व फ़र्मा बरदारी है इसलिए कुर्आने अज़ीम ने अपने प्यारे ख़लील अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़बाने पाक से फ़र्मा दिया कि शैतान की इताअत व फ़र्मा बरदारी दर हक़ीक़त शैतान की पूजा और परस्तिश है तो यह वहाबिया देवबन्दिया दर हक़ीक़त शैतान के पुजारी हैं और फ़ारसी मे शैतान को देव कहते हैं बन्दा बज़ुबाने फ़ारसी मुशतरक है मम्लूक और पुजारी दोनों इसके माना हैं तो शैतान के पुजारी का तर्जमा फ़ारसी में बन्दए देव हुआ लिहाज़ा यह वहाबियए देवबन्दिया दर हक़ीक़त देव के बन्दे हैं कुर्आने अज़ीम में है अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है।

قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَ غَضِبَ عَلَيْهِ وَ جَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَ عَبَدَ الطَّاغُوْتَ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّ اَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ

السَّبِيلِ ہ وَاِذَاجَآءُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَقَدْدَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ہ (پارہ ٦، آیت۔٦٠، سورۃ المائدۃ)

यानी (ऐ महबूब) तुम फ़र्माओ क्या मैं तुम्हें बता दूं वह लोग जो अल्लाह के यहां उससे बदतर दर्जे में हैं वह जिन पर अल्लाह ने लानत की और उन पर ग़ज़ब फ़र्माया और उनमें से कर दिए बन्दर और सूअर और शैतान के पुजारी (यानी देव के बन्दे) वह ठिकाने के ऐतबार से बहुत बदतर और सीधी राह से बहुत ज़्यादा बहके हुए हैं और (ऐ ईमान वालो) जब वह तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं हम मुसलमान हैं और वह आते वक़्त भी काफ़िर थे और जाते वक़्त भी काफ़िर थे और अल्लाह खूब जानता है जो वह छुपा रहे हैं। इस आयते करीमा ने साफ़ फ़र्मा दिया कि जो लोग अपने अक़ाइद की बिना पर बहुक्मे शरीअते मुतह्हरा काफ़िर हों फिर भी मुसलमानों के सामने आकर तक़िय्या करके अपने कुफ़्र को छुपाएं अपने आपको मुसलमान बताएं वह देव के बन्दे हैं वह बहुक्मे कुर्आने अज़ीम बन्दरों और सूअरों से भी ज़्यादा बदतर हैं और उनसे भी ज़्यादा गुमराह हैं और उनपर अल्लाह की लानत और अल्लाह का ग़ज़ब है अल्लाह की लानत और उसके ग़ज़ब से उसी की पनाह जल्ला जलालुहू व अला हबीबिही व आलिही सल्ला वसल्लमल्लाहु। ख़ैर कहना यह है कि वहाबियों देवबन्दियों के ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान के सफ़ा 9 सफ़ा 10 की इन इबारतों ने हुजूरे अक़्दस सय्यिदुल आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि अला आलिही वसल्लम के रौज़ए अक़्दस व गुम्बदे ख़ज़रा की ज़ियारत के लिए दूर से सफ़र करने को सिर्फ़ बिदअत व हराम व महजूर व मम्नूअ़ ही नहीं बल्कि साफ़ लफ्ज़ो में शिर्क बता दिया तो वहाबियों नज्दियों का तीसरा मख़्सूस अक़ीदए बातिला फ़ासिदा जो मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपूरी ने बताया कि ज़ियारत अफ्ज़लुलबिक़ाअ गुम्बदे ख़ज़रा नफ़्से ज़ियारत क़ब्र शरीफ़ के वास्ते सफ़र करने को बिदअत व हराम व महजूर व मम्नूअ़ समझना तमाम वहाबियों देवबन्दियों का अक़ीदा होना साबित हो गया।

किताब तक़्वियतुलईमान

का दूसरा हिस्सा तज़्कीरुल इख़्वान

मुसन्निफ़ : मोलवी इस्माईल देहलवी

वहाबियों देवबन्दियों के इसी ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान के दूसरे हिस्से तज़्कीरुल इख़्वान के सफ़ा 69 से सफ़ा 71 तक बहुत सी चीज़ों और रस्मों के साथ इन बातों को भी गिना दिया। लड़का पैदा होते वक़्त एक बकरा ज़िबह करना, नाम फ़लां बख़्श और गुलाम फ़लां रखना, बिस्मिल्लाह के वास्ते चार वर्ष और चार महीने की क़ैद करना, बिस्मिल्लाह की खुशी की महफ़िल करना, खत्ने में शादी और महफ़िल करना, मख़्तून को क़ब्रों के सलाम के लिए ले जाना, शादी में निकाह में सेहरा बांधना, शादी से पहले बिरादरी का खाना करना, मोहर्रम की महफ़िलें करना, रबीउलअव्वल में मौलूद की महफ़िल तरतीब देना, रबीउस्सानी को गियारहवीं करना, शाबान में हलवा पकाना, रमज़ान में अख़ीर जुमे को खुत्बए अल्वदा पढ़ना, कज़ाए उमरी पढ़ना, ईद के रोज़ सिवइयां पकाना, बाद नमाज़े ईद के बगलगीर होकर मिलना, मुसाफ़हा करना, कफ़न के साथ जानमाज़ बनाना, कफ़न के साथ चादर बनाना, कफ़न पर कलिमा लिखना, क़ब्र में कुल के डेले शिजरा रखना, तीजा, दसवां, चालिस्वां, छमाही, बरसी, उर्स करना, इस्क़ाते मुरव्वजा करना, हाफ़िज़ों को क़ब्रों पर बिठलाना, क़ब्रों पर चादर डालना, मक़बरे बनाना, तारीख़ लिखना, चिराग़ जलाना, दूर दूर से सफ़र करके क़ब्रों पर जाना, तोशे सेह मनिया करना, विर्दे नादे अली और ख़त्म बुज़ुर्गों के नाम के पढ़ना, शुग़्ले बरज़ख़ वग़ैरह तरीक़े ईजाद करना, और असल में लाना मग़रिब की नमाज़ के बाद बाजदाह क़दमी पढ़ना, मुक़ल्लिद

के हक़ में तक़लीद ही काफ़ी जानना, और तहक़ीक़ ज़रूरी न समझना, और सफ़ा 71 पर इनका हुक्म यह लिखा कि जो शख़्स इसकी बुराई दर्याफ़्त करके नाख़ुश और ख़फ़ा हो और उनका तर्क करना बुरा लगे तो साफ़ जान लिया चाहिए कि वह शख़्स इस आयत के बमूजिब मुसलमान नहीं। और सफ़ा 69 पर लिखा जो कुछ हज़रत फ़र्मा दें या हुज़ूर की हदीस से साबित हो उस हुक्म को ख़्वाह अपनी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ हो ख़्वाह ख़िलाफ़, जान व दिल से ख़ुश होकर क़बूल करें और मान ले तब मुसलमानी का दावा सच्चा मालूम हो और जो शख़्स पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को मुन्सिफ़ और हाकिम न बदे या हज़रत के हुक्म से दिल में नाख़ुश हो और हुक्म को न माने और चूं चिरा करे वह हर्गिज़ मुसलमान नहीं बल्कि काफ़िर व मुनाफ़िक़ है और सफ़ा 71 पर इन तमाम बातों के मुताल्लिक़ यह भी बता दिया कि उनका बुरा होना हज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के क़ौल और फ़ेल और तक़रीर से साबित है फर अपने नज़दीक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के क़ौलो फ़ेल व तक़रीर से सारी किताब में उन तमाम बातों के बुरा होने को सावित किया है इन सब इबारतों से साबित हो गया कि वहाबियों देवबन्दियों के ऐने इस्लाम के दूसरे हिस्से तज़्कीरुल इख़्वान के हुक्म से जो शख़्स लड़का पैदा होते वक़्त इज़हारे सुरुर और शुक्रे इलाही के लिए एक बकरा ज़िबह करे वह काफ़िर व मुनाफ़िक़, मुहम्मद बख़्श, अहमद बख़्श, रसूल बख़्श, नबी बख़्श, अली बख़्श, हुसैन बख़्श, पीर बख़्श, फ़रीद बख़्श, गुलाम मुहम्मद, गुलाम मुस्तफ़ा, गुलाम नबी, गुलाम रसूल, गुलाम अली, गुलाम हसन, गुलाम हुसैन, गुलाम मुर्तज़ा, गुलाम फ़रीद, नाम रखने वाले काफ़िर व मुनाफ़िक़, जो शख़्स अपने बच्चे की उर्म चार बर्ष चार महीने हो जाने पर उसको बिस्मिल्लाह

पढ़ाए वह काफ़िर व मुनाफ़िक़, जो शख़्स अपने बच्चे को बिस्मिल्लाह पढ़ाने की खुशी की महफ़िल करे वह काफ़िर व मुनाफ़िक़, जो शख़्स अपने बेटे के ख़त्ने के वक़्त एक शिआरे इस्लाम और सुन्नते नबविया अदा होने की खुशी ज़ाहिर करने के लिए महफ़िल करे वह काफ़िर व मुनाफ़िक़, जो शख़्स अपने बेटे को जब उसका ख़त्ना अच्छा हो जाए किसी बुर्जुग की क़ब्र पर फ़ातिहा पढ़ने और उसकी रूहे पाक को सलाम करने ले जाए वह काफ़िर व मुनाफ़िक़, जो शख़्स शादी से पहले बरादरी को खाना खिलाए वह काफ़िर व मुनाफ़िक़, जो शख़्स मोहर्रम में हज़रते इमामे हुसैन (रदियल्लाहु तआला अन्हु) के ज़िक्रे शहादत की महफ़िल करे वह काफ़िर व मुनाफ़िक़, जो शख़्स रबीउलअव्वल शरीफ़ में मीलाद शरीफ़ की महफ़िल करे वह काफ़िर व मुनाफ़िक़, जो शख़्स रबीउलआख़िर शरीफ़ में हुजूर सय्यिदिना ग़ौसे आज़म (रदियल्लाहु तआला अन्हु) की रूहे मुक़द्दस को सवाब पहुंचाने के लिए ग्यारहवीं करे वह काफ़िर व मुनाफ़िक़, जो शख़्स शबे बारात में हलवा पकाए वह काफ़िर व मुनाफ़िक़ (मगर जो वहाबी देवबन्दी तक़िय्या करके शबे बारात को हलवा खालें उस पर काफ़िर व मुनाफ़िक़ होने का फ़तवा नहीं है) रमज़ान के आख़िरी जुमे को अल्विदा का खुतबा पढ़ने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, उम्र भर जिस क़दर नमाज़ें क़ज़ा हो गई हैं उनको अदा करने वाला काफ़िरो मुनाफ़िक़ ईद के दिन सिवइयां पकाने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़ (लेकिन तक़िय्या करके सिवइयां खाने वाले वहाबी देवबन्दी पर काफ़िर व मुनाफ़िक़ होने का फ़तवा नहीं है) नमाज़े ईद के बाद बग़लगीर होकर मिलने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, नमाज़े ईद के बाद मुसाफ़हा करने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, कफ़न के साथ जानमाज़ बनाने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, कफ़न के साथ चादर बनाने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, (यह चादर और जानमाज़ मय्यित को सवाब पहुंचाने के लिए किसी ग़रीब मुसलमान को अल्लाह

तआला के वास्ते देदी जाती हैं और अगर सब वरसा बालिग़ीन आक़िलीन हों तो उनकी रज़ा से या किसी आक़िल बालिग़ वारिस का ख़ास अपने हिस्से से यह जानमाज़ व चादर बनाना क़तअन यक़ीनन सुन्नी मुसलमान के नज़्दीक जाइज़ है जिसमें शरअन हर्गिज़ कुछ हर्ज नहीं) मय्यित पर अहवाले क़ब्र आसान होने के लिए कफ़न पर कलिमा शरीफ़ लिखने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, इसी मक़सद के लिए मिट्टी के पाक डेलों पर قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ की सूरते मुबारका दम करके क़ब्र में रखने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, इसी मक़्सद के वास्ते अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के महबूब बन्दों हज़राते औलिया व मशाइख़ (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) के मुबारक नामों का शिजरए मुबारका क़ब्र में रखने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, मर जाने वाले मुसलमानों को सवाब पहुँचाने के लिए तीजा, दसवां, चालीसवां, छ:माही, बरसी करने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, बुजुर्गाने दीन का उर्स करने वाला काफ़िरो मुनाफ़िक़ मर जाने वाले मुसलमान के ज़िम्मे जिन नमाज़ों रोज़ों की क़ज़ा रह गई हो उनका कफ़्फ़ारा अदा करने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, कुर्आने अज़ीम पढ़कर साहिबे क़ब्र मुसलमान को सवाब पहुँचाने के लिए हाफ़िज़ों को क़ब्र पर बिठाने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, क़ब्र पर चादर डालने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, किसी वली या नबी की क़ब्र पर मक़बरा बनाने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, क़ब्र पर तारीख़ लिखने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, क़ब्र पर चिराग़ जलाने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, दूर से सफ़र करके किसी वली या नबी की क़ब्र की ज़ियारत के लिए जाने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, शाह अब्दुलहक़ साहेब रूदौलवी (रहमतुल्लाहि तआला अलैह) का तोशा करने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, हुजूर सय्यिदिना ग़ौसे आज़म (रदियल्लाहु तआला अन्हु) का तोशा करने वाला काफ़िर व मुनाफिक, हज़राते असहाबे कहफ़ (रदियल्लाहु तआला अन्हु) का तोशा करने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, शाह

बूअली क़लन्दर (रहमतुल्लाहि तआला अलैह) की सेह मनी करने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, नादे अली शरीफ़ का वज़ीफ़ा जो सूफ़ियाए किराम (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम) का मामूल है उसका पढ़ने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, ख़त्मे ख़्वाजगान पढ़ने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, ख़त्मे क़ादिरिया पढ़ने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, शुग्ले बरज़ख़ यानी तसव्वुरे शेख़ का शुग्ल जो तमाम सलासिलए त़रीक़त के मशाइख़ का ख़ुसूसन सिलसिलए नक़्शबन्दिया मुजद्दिदिया का मामूल है उसको ईजाद करने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, उसको अमल में लाने वाला काफ़िर व मुनाफिक़, वज़ीफ़ा व सुलूक व अमल के नए नए त़रीके़ जिनसे शाह वलीउल्लाह साहेब देहलवी की किताब अल्क़ौलुल जमील और मौलवी खुर्रमअली हल्हौरी की किताब शिफ़ाउल अलील भरी हुई हैं उनका ईजाद करने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़ उनको अमल मे लाने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, नमाज़े मग़रिब के बाद सलातुल्अस्रार शरीफ़ जिसमें दो रकअत नमाज़ बसूए क़िब्ला अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला की इबादत के लिए पढ़ कर सलाम फेर देने के बाद बग़दादे मुक़द्दस की तरफ़ ग्यारह क़दम चलते हैं जो सिलसिलए क़ादिरिया मुबारका का ख़ास तौर पर और दूसरे सिलसिलों का भी मामूल है उसका पढ़ने वाला काफ़िर व मुनाफ़िक़, मुक़ल्लिद के हक़ में इमामे आज़म अबू हनीफ़ा (रदि़यल्लाहु तआला अन्हु) या इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ई (रदि़यल्लाहु तआला अन्हु) इमाम मालिक बिन अनस (रदि़यल्लाहु तआला अन्हु) या इमाम अहमद बिन मुहम्मद हम्बल (रदि़यल्लाहु तआला अन्हु) की तक़्लीद को काफ़ी समझने वाला और मुक़ल्लिद के लिए इस बात की तहकीक़ को कि उसके इमाम का इज्तिहाद सवाब है या ख़त़ा ज़रूरी न समझने वाला काफ़िर व मुनाफिक़, वहाबियों देवबन्दियों के ऐने इस्लाम के इस दूसरे हिस्से तज़्कीरुलइख़्वान की इन इबारतों से वहाबियों नज्दियों का पहला

मख़सूस अक़ीदए बातिला फ़ासिदा जो मोलवी शाहजहाँपुरी ने बताया कि अपने फ़िरक़े के सिवा तमाम अहले इस्लाम को काफ़िर समझना फिर सेह बारा तमाम वहाबियों ,देवबन्दियों का भी अक़ीदा होना साबित हो गया। इसी फ़ेहरिस्त के एक नम्बर से वहाबियों नज्दियों का तीसरा मख़्सूस अक़ीदए बातिलाए फ़ासिदा जो मोलवी अबूलवफ़ा शाहजहाँपुरी ने बताया कि ज़ियारत अफ़्ज़लुल्बिक़ाअ गुम्बदे खज़रा नफ़्से ज़ियारत क़ब्र शरीफ़ के वास्ते सफ़र करने को बिदअत व हराम व महज़ूर व मम्नूअ क़रार देना फिर दोबारा तमाम वहाबियों, देवबन्दियों का भी अक़ीदा होना साबित हो गया कि हुज़ूरे अक़्दस सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के रौज़ए अक़्दस की ज़ियारत की नीयत से सफ़र करना वहाबियों देवबन्दियों के नज़्दीक सिर्फ़ बिदअत व हराम व महज़ूर व मम्नूअ ही नहीं बल्कि कुफ़्र भी है। हालांकि हदीस शरीफ़ में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम फ़र्माते हैं।

مَنْ زَارَ قَبْرِیْ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِیْ

यानी जिस मुसलमान ने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की उसके लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई।

दूसरी हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम फ़र्माते हैं।

مَنْ زَارَنِیْ بَعْدَ مَمَاتِیْ فَکَاَنَّمَا زَارَنِیْ فِیْ حَیَاتِیْ

यानी जिस मुसलमान ने मेरे विसाल शरीफ़ के बाद मेरी ज़ियारत की तो गोया उसने मेरी उसी हयाते दुनियविया ही में मेरी ज़ियारत की।

तीसरी हदीस शरीफ़ में है हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम फ़र्माते हैं।

مَنْ حَجَّ وَلَمْ يَزُرْنِىْ فَقَدْ جَفَانِىْ

यानी जिसने हज किया और मेरी ज़ियारत नकी तो बेशक उसने मुझ पर जुल्म किया। अभी मैं आपको आयते करीमा सुना चुका कि अल्लाह तबारक व तआला ने गुनाहों की मुआफ़ी हासिल होने का तरीक़ा यही बताया कि मुसलमान जब अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो बारगाहे महबूबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम में हाज़िर हों फिर अल्लाह तआला से मुआफ़ी चाहें और अल्लाह का महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम भी उनके लिए अल्लाह तआला से मुआफ़ी मांगें तब अल्लाह तबारक व तआला को तौबा बहुत ज़्यादा क़बूल फ़र्माने वाला मेहरबान पायेंगे। तो वहाबियों देवबन्दियों के ऐने इस्लाम के पहले हिस्से के हुक्म से इस आयते करीमा और उन अहादीसे मुबारका पर अमल करने वाला मुश्रिक है। और वहाबियों देवबन्दियों के ऐने इस्लाम के दूसरे हिस्से के हुक्म से काफ़िर व मुनाफ़िक़ है। वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह।

इसी फ़ेहरिस्त के एक नम्बर से वहाबियों नज्दियों का छटा मख़्सूस अक़ीदए बातिला फ़ासिदा जो मोलवी अबूलवफ़ा शाहजहाँपुरी ने लिखा कि तक़लीदे शख़्सी को शिर्क जानना वहाबियों देवबन्दियों का भी अक़ीदा होना साबित हो गया। इसी फ़ेहरिस्त के चन्द नम्बरों से वहाबियों नज्दियों का आठवां मख़्सूस अक़ीदए बातिला फ़ासिदा जो मोलवी अबूलवफ़ा शाहजहाँपुरी ने लिखा कि सूफ़ियाए किराम के अश्गाल व अज़्कार वग़ैरह को हराम व बिदअत व महजूर वग़ैरह समझना वहाबियों देवबन्दियों का भी अक़ीदा होना साबित हो गया कि सूफ़ियाए किराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) के जो अश्ग़ाल व अज़्कार व आमाल उन नम्बरों में मज़्कूर हुए वह वहाबियों देवबन्दियों के नज़्दीक सिर्फ़ हराम व बिदअत व महजूर व मम्नूअ़ ही नहीं बल्कि कुफ़्र भी हैं। वहाबियों देवबन्दियों के इसी ऐने इस्लाम के इसी दूसरे हिस्से

तज़्कीरुल इख़्वान के सफ़ा 66 पर लिखते हैं किसी ने आपको चिश्ती मुक़र्रर किया और किसी ने क़ादिरी और किसी ने नक़्शबन्दी किसी ने सोहरवर्दी किसी ने रफ़ाई ठहरा लिया और इसी के सफा 64 पर लिखते हैं कोई क़ादिरी कोई सोहरवर्दी, कोई नक़्शबन्दी, कोई चिश्ती बने। हुक्म यही है कि अब मिलकर क़ुर्आन व हदीस पर अमल करो और सुन्नत के तरीके के मुवाफिक मुसलमान रहो। और यहूदी व नसारा की तरह कई फ़िरके मत हो जाओ और नई नई बातें निकाल कर तफ़्रिक़ा और फूट मत डालो इस वास्ते कि क़ियामत को बाज़ लोग सुर्ख़रु और बाज़ रुस्याह होंगे तो उन रुस्याहों से कहा जायेगा कि तुम पहले मुसलमान हुए और अल्लाह की किताब क़ुर्आन के मानने का तुमने इक़रार किया फिर दीन में नई नई रस्में निकालीं और बिदआते कुफ़्रिया जारी कीं। तो उससे अल्लाह की किताब पर अमल करना छूट गया। फिर उन नई रस्मों के जारी होने से उनकी मुहब्बत दिल में पड़ गई और छूटना उनका मुश्किल पड़ गया। तो क़ुर्आन में जो उसके खिलाफ हुक्म है उस हुक्म से दिल में फ़र्क़ आ गया उस इन्कार का मज़ा चखो। इस आयत से मालूम हुआ कि जो शख़्स नई नई बातें बिदअतें निकाले और बिदअत के काम करे तो अल्लाह साहब के नज़्दीक क़ुर्आन का मुन्किर ठहर जाता है। और रोज़े क़यामत को रुस्याह उठेगा। फिर उस पर अज़ाब होगा।

इन दोनों इबारतों में सूफ़ियाए किराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) के सलासिले मुबारका क़ादिरिया व चिश्तिया व सोहरवर्दिया व नक़्शबन्दिया व रफ़ाइया में किसी एक सिलसिलए तय्यिबा में बयअत होने और क़ादिरी या चिश्ती या सोहरवर्दी या नक़्शबन्दी या रफ़ाई बनने को इस्लाम में तफ़्रिक़ा और फूट डालना और यहूद व नसारा की तरह कई कई फ़िरक़े होना और क़यामत

के रोज़ रूस्याही व अज़ाब में मुबतला होने का बाइस ठहरा दिया बल्कि क़ादिरीयों चिश्तियों सोहरवर्दियों नक़्शबन्दियों रफ़ाइयों को अल्लाह तआला के नज़्दीक कुर्आन का मुन्किर (यानी काफ़िर) भी बता दिया इन क़ादिरी व चिश्ती व सोहरवर्दी व नक़्शबन्दी व रफ़ाई हज़रात को बदमज़्हब व गुम्राह फ़िरक़ों मोअतज़ली ख़ारिजी राफ़िज़ी नासिबी जब्री क़द्री मरजई के साथ गिना दिया क़ादिरीयत चिश्तीयत व सोहरवर्दियत व नक़्शबन्दियत व रफ़ाइयत को बिदअ़ते कुफ़्रिया में शुमार करा दिया हालांकि हर सुन्नी मुसलमान जानता है कि जिस तरह लखनऊ व फ़ैज़ाबाद व बरेली व कानपुर का साकिन होने के सबब एक मुसलमान लखनवी दूसरा मुसलमान फैज़ाबादी तीसरा मुसलमान बरेलवी चौथा मुसलमान कानपुरी कहलाता है और शहरों की तरफ़ यह निस्बतें न तो इस्लाम में तफ्रिक़ा हैं, न फूट हैं न यह लखनवी, फैज़ाबादी बरेलवी कानपुरी वग़ैरह मुसलमानों के अलग, अलग फ़िरक़े हैं न यह निस्बतें गुनाह व नाजायज़ हैं क्योंकि महज़ सुकूनत के लिहाज़ से लखनवी या फैज़ाबादी या बरेलवी या कानपुरी होने के सबब किसी मुसलमान के अक़ीदा व मज़हब में हर्गिज़ कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता है। बिल्कुल बेऐनिही इसी तरह सिलसिलए क़ादिरिया व सिलसिलए चिश्तिया व सिलसिलए सोहरवर्दिया व सिलसिलए नक़्शबन्दिया व सिलसिलए रफ़ाइया में बयअत होने के सबब एक मुसलमान क़ादिरी दूसरा मुसलमान चिश्ती तीसरा मुसलमान सोहरवर्दी चौथा मुसलमान नक़्शबन्दी पांचवाँ मुसलमान रफ़ाई कहलाता है और हुजूर सय्यिदिना ग़ौसुस्सक़लैन शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी व हुजूर सय्यिदिना ग़रीब नवाज़ ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती व हुजूर सय्यिदिना शैखुश्शुयूख़ शहाबुद्दीन सोहरवर्दी व हुजूर सय्यिदिना ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबन्दी व हुजूर सय्यिदिना सय्यिद अहमद कबीर रफ़ाई (रदियल्लाहु तआला अन्हुम व अन्ना बिहिम) की तरफ़ यह निस्बतें न तो इस्लाम में

तफ़्रिक़ा हैं न फूट हैं न यह क़ादिरी चिश्ती सोहरवर्दी नक़्शबन्दी रफ़ाई वग़ैरह मुसलमानों के अलग अलग फ़िरक़े हैं न यह निस्बतें गुनाह व नाजायज़ हैं क्योंकि महज़ बयअत होने के लिहाज़ से क़ादिरी या चिश्ती या सोहरवर्दी या नक़्शबन्दी या रफ़ाई होने के सबब किसी मुसलमान के अक़ीदा व मज़हब में हर्गिज़ कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता है। बहर हाल वहाबियों देवबन्दियों के इस ऐने इस्लाम के हिस्सा दोम की इन इबारतों से वहाबियों देवबन्दियों का सातवां मख़्सूस अक़ीदए बातिला फ़ासिदा जो मोलवी अबुल वफ़ा शाहजहाँपुरी ने लिखा कि बयअते सूफ़ियाए किराम को हराम व बिदअत व महजूर वग़ैरह समझना वहाबियों, देवबन्दियों का भी अक़ीदा होना साबित हो गया कि वहाबियों देवबन्दियों के नज़्दीक यह सिर्फ़ हराम व बिदअत व महजूर ही नहीं बल्कि बदमज़्हबी व गुमराही व बिद्अते कुफ़्रिया व इन्कारे कुर्आन और बाइसे रूस्याहिए आख़िरत व मूजिबे अज़ाब और कुफ़्र भी है ।

वहाबियों देवबन्दियों के इसी ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान के सफ़ा 55 पर एक हदीस शरीफ़ लिखी जिसका तर्जमा यह है कि हज़रते क़ैस बिन साद (रदियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि मैं शहरे हीरा में गया वहाँ लोगों को देखा कि वह अपने हाकिम को सज्दा करते हैं तो मैंने कहा बेशक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम इस अम्र के ज़्यादा सज़ावार हैं कि हुजूर को सज्दा किया जाए फ़िर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की कि मैं हीरा में गया था वहां लोगों को देखा कि वह अपने सरदार को सज्दा करते हैं तो हुजूर इस बात के बहुत ज़्यादा हक़दार हैं कि हम हुजूर को सज्दा करें तो हुजूर ने मुझसे फ़र्माया भला देखो तो अगर तुम मेरी क़ब्र पर गुज़रोगे तो क्या उसको सज्दा करोगे मैंने अर्ज़ की नहीं हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ने फ़र्माया

(मुझे सज्दा) न करो ईमान वाली निगाहों में इस हदीस शरीफ़ का मतलब वाज़ेह है कि जब किसी महबूब का चाहने वाला किसी आशिक़ को देखता है कि वह अपने माशूक़ की ताज़ीम और उसके साथ इज़्हारे इश्क़ो मुहब्बत किसी नए निराले अनोखे अन्दाज़ में कर रहा है तो उसके दिल में तड़प पैदा होती है कि मैं भी अपने महबूब की ताज़ीम और उसके साथ इज़्हारे इश्क़ो मोहब्बत इसी तरीक़े पर करूं हज़रत क़ैस बिन साद (रदियल्लाहु तआला अन्हु) भी चूंकि आशिक़ाने जमाले मुहम्मदी व शैफ़्तगाने हुस्ने अहमदी में से हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम शहरे हीरा में पहुँच कर मुलाहज़ा फर्माते हैं कि वहाँ लोग अपने हाकिम व सरदार को सज्दा करते हैं दिल में तड़प पैदा हुई कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को तो उनके रब्बे करीम जल्ला जलालुहू ने हमारे लिए दारैन का हाकिम दीनो दुनिया का सरदार बना कर भेजा है। लिहाज़ा हम भी अपने महबूब आक़ा, अपने सरदारे दो जहां, अपने बादशाहे दारैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की ताज़ीम हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के साथ अपने नियाज़ मन्दाना इश्क़ अपनी गुलामाना महब्बत का इज़्हार इसी तरीक़े से बजा लाते। मदीना तय्यिबा हाज़िर होकर अपनी यही आशिक़ाना तमन्ना अर्ज़ करते हैं। इर्शाद फ़र्माया जाता है कि जब मेरी क़ब्रे अनवर पर हाज़िर होगे तो उस वक़्त भी सज्दए तज़ीमी करने के लिए ऐसी ही बेक़रारी और तड़प होगी अर्ज़ करते हैं नहीं क्योंकि उस वक़्त तो यह जमाले मुस्तफ़ा यह हुस्ने खुदानुमा और यह सरापाए अक़्दस जिसमें खुद वही शाहिदे अज़ल व महबूबे हक़ीक़ी यानी अल्लाह तबारक व तआला अपने ही हुस्नो जमाल व इज़्ज़ो जलाल व फ़ज़्लो कमाल व जूदो नवाल के जल्वे अपने बन्दों को दिखा रहा है इन ज़ाहिरी जिस्मानी आँखों से पर्दे में होगा। क़ब्रे अक़्दस का हिजाब जिस्मानी निगाहों के लिए

उस जमाले लाज़वाल के देखने से हाइल होगा और ज़ाहिर है कि। لَيْسَ الْخَبَرُ كَالْمُعَايَنَةِ

लिहाज़ा उस वक़्त सब्र हो जाएगा यह बेचैनी और तड़प न होगी इर्शाद फ़र्माया जाता है "ला तफ़अलू" यानी तो अभी सब्र करो मेरी इस हयाते ज़ाहिरी में भी मुझे सज्दा न करो लेकिन इमामुल वहाबिया ने वहाबियों देवबन्दियों के इसी ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान के सफ़ा 55 पर यह हदीस शरीफ़ और उसका लफ्ज़ी तर्जमा लिखकर साफ़ लिख दिया फ यानी मैं भी एक दिन मरकर मिट्टी में मिलने वाला हूँ। यानी इस हदीस शरीफ़ का फ़ाइदा यह निकला कि हुजूर ने "ला तफ़अलू" मुझे सज्दा न करो फ़र्मा कर यह मुराद लिया है कि एक रोज़ मैं भी मरकर मिट्टी में मिल जाऊंगा मिट्टी में मिल जाने का मुहावरा उर्दू में बकसरत मुस्तामल है इसके माना यही होते हैं कि कोई चीज़ पिस जाने या गल जाने के बाद मिट्टी के साथ इस तरह मिल जाए कि मिट्टी के ज़र्रों से उसके अज्ज़ा का अ़लाहिदा होना दुश्वार हो जाए। कोई शख़्स सोने का टुकड़ा ज़मीन में दफ़्न कर दे उसको हर्गिज़ नहीं कहा जाएगा कि उसका सोना मिट्टी मे मिल गया लेकिन कोई शख़्स अगर अपने सोने को सोबान से रेत कर बुरादा करके मिट्टी में बिखेर दे अब ज़रूर कहेंगें कि उसका सोना मिट्टी में मिल गया। तो वहाबियों देवबन्दियों के इस ऐने इस्लाम तक़्वियतुलईमान की इस इबारत से वहाबियों नज्दियों का दूसरा मख़सूस अक़ीदए बातिला फ़ासिदा जो मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी ने लिखा कि

حَيَاةُ الدُّنْيَا بَعْدَ وِصَالِ حَيَاةِ النَّبِي صَلَى اللّٰهُ عَلَيْهِ وسلم رُوْحِى وَقَلْبِى فِدَاهُ

का इन्कार वहाबियों देवबन्दियों का भी अक़ीदा होना साबित हो गया कि वहाबियों देवबन्दियों के नज़्दीक सिर्फ़ इतना ही नहीं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम क़ब्रे अक़्दस में ज़िन्दा नहीं बल्कि मआज़ल्लाह ख़ाक बदहने

गुस्ताख़ां मरने के बाद मिट्टी होकर मिट्टी में मिल गए हैं। "वल अयाज़ु बिल्लाही जल्ला व अला" हालांकि तमाम मुसलमानाने अहलेसुन्नत का इज्माई व इत्तिफ़ाक़ी अक़ीदए हक़्क़ा यही है कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के तमाम अम्बिया व मुर्सलीन सल्लल्लाहु तआला सय्यिदिहिम अलैहि व अला आलिही वसल्लम महज़ तस्दीक़े वादए इलाहिया के लिए कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला फ़र्माता है।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ

यानी हर जान मौत का मज़ा चखने वाली है सिर्फ़ एक आन को मौत का मज़ा चखते हैं फिर उसी आन के बाद वह अपनी क़ुबूरे मुक़द्दसा में उसी पहले वाली जिस्मानी हक़ीक़ी हयात के साथ ज़िन्दा हो जाते हैं हदीस शरीफ़ में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम फ़र्माते हैं

إِنَّ اللهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللهِ حَيٌّ يُرْزَقُ

यानी बेशक अल्लाह तआला ने ज़मीन पर हराम कर दिया है कि नबियों के जिस्मों को खाए तो अल्लाह के नबी ज़िन्दा हैं रोज़ी दिए जाते हैं हर शख़्स जानता है। कि रूह खाने पीने रिज़्क़ दिए जाने से पाक है खाना पीना रोज़ी दिया जाना उसी जिस्म की शान है जो ज़िन्दा हो तो इस हदीसे सहीह से साबित हो गया कि हज़रात अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम जो विसाल फ़र्मा चुके हैं वह अपनी अपनी मुबारक व मुनव्वर क़ब्रों में जिस्मानी ज़िन्दगी के साथ ज़िन्दा हैं। उनके खाने पीने के लिए अल्लाह जल्ला जलालुहू की नेअमतें उनकी ख़िदमतों में पेश की जाती हैं वह रिज़्क़ दिए जाते हैं तनावुल फ़र्माते हैं फिर अम्बिया व मुर्सलीन तो अम्बिया व मुर्सलीन हैं अला सय्यिदिहिम व अलैहिम व अला आलिहिस्सलातु वस्सलाम क़ुर्आने अज़ीम तो फ़र्मा रहा है कि।

وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللهِ أَمْوَاتٌ ط بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَٰكِنْ لَا تَشْعُرُونَ

यानी और ऐ मुसलमानों उन लोगों को जो अल्लाह के रास्ते में

क़त्ल किए जाते हैं यह न कहो कि वह मुर्दा हैं बल्कि वह ज़िन्दा हैं लेकिन तुमको ख़बर नहीं और कुर्आने अज़ीम फ़र्माता है।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ اَمْوَاتًا
بَلْ اَحْیَآءٌ عِنْدَ رَبِّھِمْ یُرْزَقُوْنَ (پ۴ ع۸ ۱۶۹)

यानी उन लोगों को जो अल्लाह के रास्ते में क़त्ल किए गए हर्गिज़ मुर्दा गुमान न करो बल्कि वह ज़िन्दा हैं। अपने रब के हुज़ूर रोज़ी दिए जाते हैं इन दोनों मुबारक आयतों ने साफ़ फ़र्मा दिया कि हज़रात अम्बिया व मुर्सलीन सलवातुल्लाहि तआला व सलामुहू अला सय्यिदिहिम व अलैहिम व अला आलिही अजमईन की महब्बत व इता़अत में उनके फ़रामीन व इर्शादात पर जो मुसलमान अपनी जानें कुर्बान कर देते हैं वह हर्गिज़ मुर्दा नहीं अपने रब्बे करीम जल्ला जलालुहू के हुज़ूर रोज़ी दिए जाते हैं उसकी पाकीज़ा नेअमतें खाते हैं उनको मुर्दा कहना भी ह़राम बल्कि अपने दिल में उनको मुर्दा समझना भी ह़राम फिर हज़रात अम्बिया व मुर्सलीन सलवातुल्लाहि तआला व सलामुहू की हयाते मुबारका बादल्विसाल का क्या पूछना। फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम तो तमाम अम्बिया के पेशवा जुम्ला मुर्सलीन के सरदार हैं लेकिन हैफ़ सद हैफ़ कि इमामुलवहाबिया इस्माईल देहलवी साहब ने मुंह भर कर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को मरकर मिट्टी में मिल जाने वाला बता दिया "व लाहौल व ला कुव्वत इल्लाबिल्लाहिल अलीय्यिल अज़ीम।

अख़बार अन्नजम

मोलवी अबदूश्शकूर काकोरवी एडीटर अन्नज्म

उन्हीं वहाबियों देवबन्दियों के पेशवा मोलवी अबदूश्शकूर काकोरवी एडीटर अन्नज्म अपने अख़बार अन्नज्म जिल्द 13नम्बर 11 मोर्रखा 23 रबीउल अव्वल शरीफ़ 1352 हि0 मुताबिक़ 6 जुलाई 1934 ई0 के सफ़ा 6 कालम 2 सतर 44 से सतर 47 तक लिखते हैं।

तारीफ़ के तमाम अफ़राद अल्लाह के लिए साबित हैं किसी तरह की तारीफ़ किसी दूसरे के लिए जाइज़ नहीं अल्लाह तआला की ज़ात के सिवा किसी की तारीफ़ करना हराम है। जितनी तारीफ़ें है सब अल्लाह तआला के लिए मख़्सूस हैं।

फिर इसी सफ़ा इसी कालम में सतर 54 से सतर 57 तक लिखते हैं।

अगर कोई दूसरा हमारा नाखुन ही बना देता तो हम कहते कि भाई उसकी भी तारीफ़ करनी चाहिए थी उसी ने हमारा नाखुन बनाया, उसी ने आँखें दीं, उसी ने ज़बान दी, सब चीजे उसी ने दी हैं फिर दूसरे की तारीफ़ का हक़ ही क्या है।

इन दोनों इबारतों में मोलवी काकोरवी ने साफ़ कह दिया कि सिर्फ़ अल्लाह तबारक व तआला ही की तारीफ़ करना जाइज़ है। अल्लाह तबारक व तआला के सिवा किसी की तारीफ़ करना जाइज़ नहीं। किसी रसूल की, किसी नबी की, किसी फ़िरिश्ते की, किसी सहाबी की, किसी इमाम की, किसी वली की, ग़रज़ यह कि

खुदाए तबारक व तआला के सिवा जिस किसी की भी जिस तरह की भी तारीफ़ की जाएगी वह नाजाइज़ होगी, हराम होगी, और अपने इस नापाक कुफ़्री दावा पर दलीले ज़लील यह पेश की कि हमारा नाखुन अल्लाह तआला ही ने बनाया है, हमारी आँखें अल्लाह तआला ही ने बनायीं, हमारी ज़बान अल्लाह तआला ही ने बनायी, हमारी हर एक चीज़ अल्लाह तआला ही ने पैदा फ़र्माई किसी रसूल, किसी नबी, किसी फिरिश्ते, किसी सहाबी, किसी इमाम, किसी वली ने हमारी कोई चीज़ नहीं पैदा की तो अल्लाह तआला के सिवा किसी और की तारीफ़ ख़्वाह वह रसूल व नबी हो या फिरिश्ता और सहाबी हो या इमाम और वली हो नाहक़ है, नाजाइज़ है, हराम है।

हालांकि मुक़द्दस दीने इस्लाम का यह अक़ीदए ज़रूरिया दीनिया है कि अल्लाह तआला के प्यारे रसूलों, नबियों की, उसके फिरिश्तों की, उसके महबूब के सहाबा व अहले बयत की, उसके महबूब की उम्मत के ओलमाए हक़्क़ानी व औलियाए रब्बानी की, उसके महबूबे अकरम व ख़लीफ़ए आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की जिस क़दर भी सच्ची हम्द व सना वाक़ई मद्ह व तारीफ़ अल्लाह तबारक व तआला की नाफ़र्मानी व माअसियत से बचा लिया। उन्होंने हमको अल्लाह तबारक व तआला का मुक़द्दस दीने इस्लाम अता फ़र्माया, उन्होंने हम तक अल्लाह तबारक व तआला का पैग़ाम पहुंचाया उन्होंने अल्लाह तबारक व तआला वहदहु ला शरीकलहू का हमारे नाखुनों, हमारी आँखों, हमारी ज़बानों, हमारी तमाम चीजों को पैदा फ़र्माने वाला होना हमें बताया, उन्होंने हमको अल्लाह तबारक व तआला की रज़ा व खुशी हासिल करने का तरीका सिखाया, उन्होंने

अल्लाह तबारक व तआला के इज़्ज़ो जलाल व फ़ज़्लो कमाल, हुस्नो जमाल, व जूदो नवाल का जल्वा दिखाया। तो वह सब जाइज़ है, मुस्तहब है। बल्कि अल्लाह तबारक व तआला ही की इबादत है क्योंकि शरीअते इस्लामिया में इबादत उसी काम को कहते हैं जो माबूद की रज़ा के लिए किया जाए। खुद अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला का प्यारा कलामे क़दीम कुर्आने अज़ीम हुज़ूरे अक़्दस महबूबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम व हज़राते मुर्सलीन अम्बिया व मलाइका अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम व हज़राते सहाबा व अहलेबयत (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम) व हज़राते औलियाए कामिलीन व ओलमाए दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन की हम्दो सना व मद्हो तारीफ़ से भरा हुआ है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की पाक मुबारक हदीसें इन मज़ामीन से गूंज रही हैं। अगर्चे मोलवी काकोरवी साहब की इन इबारतों के रद्दो इब्ताल में अभी बहुत कुछ बयान किया जा सकता है। लेकिन मुख़्तसरन इतना तो आप हज़रात समझ ही गये होंगे कि अल्लाह तआला की ज़ात के सिवा जिस किसी की जिस तरह भी तारीफ़ की जाए उसको मोलवी काकोरवी साहब ने नाहक़ व नाजाइज़ और हराम करके तमाम ओलमाए मिल्लत व औलियाए उम्मत (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम) की जुम्ला सहाबा व अहलेबयत (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम) की तमाम मलाइका अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की जमीअ अम्बिया व मुर्सलीन अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की बल्कि खुद हुज़ूरे अक़्दस सय्यिदुल आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की मुंह भरकर सख़्त शदीद इहानत की "वलअयाज़ु बिल्लाहि तआला"।

अन्नजम

एडीटर मोलवी अबदुश्शकूर काकोरवी

फिर इन्हीं मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी के अख़्बार अन्नज्म मोर्रख़ा 11 जून 1937 ई0 के सफ़ा 5 पर एक मज़मून छपवा कर शायेअ किया गया है उसके कालम 3 सत़र 15 ता सतर 19 में है नबीए करीम ने फ़र्माया।

إِنَّمَآ أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰٓ إِلَيَّ (پ-۲۴-سورۃ-حم سجدۃ، آیت-۶)

मैं तुम्हारी तरह एक मामूली इन्सान हूं। अगर तुममें और मुझमें कुछ फ़र्क़ है तो सिर्फ़ इतना कि मैं तुम्हारे पास खुदाए तआला का पयाम लाया हूँ।

हर उर्दू दां भी जानता है कि उर्दू मुहावरे में मामूली का लफ़्ज़ घटिया और अदना दर्जे की चीज़ के माना में आता है कहते हैं कि यह कपड़ा आला दर्जे का है और वह कपड़ा तो मामूली है। बोलते हैं कि आपके यहां दावत में बेहतरीन खाने तैयार हुए थे। और ग़रीब ख़ाने पर तो मामूली खाना आपकी ख़िदमत में पेश किया गया था तो अख़्बार अन्नज्म की इस नापाक इबारत में अल्लाह तबारक व तआला के ख़लीफ़ए आज़म व महबूबे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को मआज़ल्लाह हमारी तुम्हारी तरह एक मामूली इन्सान बना दिया। हालांकि इस आयते करीमा में कोई वहाबी, कोई देवबन्दी क़ियामत तक भी हर्गिज़ कोई ऐसा हर्फ़ नहीं बता सकता जिसका तर्जमा मामूली हो लेकिन मोलवी काकोरवी साहब के अख़्बार अन्नज्म के मज़्मून निगार ने हुज़ूरे अक़्दस सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की इहानत के नशे में चूर होकर तर्जमे में ख़ुद अपनी तरफ़ से मामूली का लफ़्ज़ बढ़ा दिया। क़ुर्आने अज़ीम तो बेफ़ज़्लिही तआला हर क़िस्म की तहरीफ़ व तग़्यीर व तब्दील व नुक़सान व ज़्यादत से पाक है तो तर्जमे ही में पेवन्द लगा दिया और मोलवी काकोरवी साहब के अख़्बार अन्नज्म ने इस नापाक कुफ़्री मज़मून को शायेअ भी करा दिया। वलाहौल वला कुव्वत इल्लाबिल्लाहिल अलीय्यिल अज़ीम। इस कुफ़्री इबारत के रद्द व इब्त़ाल में अभी बहुत कुछ कहना है जो फिर किसी मज्लिस में इन्शाअल्लाहु तआला सुम्म शाअ हबीबिही सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम अर्ज़ करुंगा।

रिसाला

सीरतुल हबीबिश्शफ़ीअ़ मिनलकिताबिलअज़ीज़िर्रफ़ीअ़

मुसन्निफ़ :–मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी

फिर यही मोलवी अब्दूश्शकूर काकोरवी मुबल्लिगे वहाबिया अपने रिसाले सीरतुल हबीबिश्शफ़ीअ़ मिनलकिताबिलअज़ीज़िर्रफ़ीअ़ के सफ़ा 22 पर जिसको अपने अख़्बार अन्नज्म के पर्चा नम्बर 5 जिल्द 10 बाबत रबीउल अव्वल शरीफ़ 1332 हि0 में शायेअ किया है लिखते हैं।

आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अलावा सादिक़ और अमीन होने के निहायत नरम दिल खल्के खुदा पर शफ़क़त करने वाले और शीरीं कलाम थे। जैसा कि आइन्दा बयान होगा लेकिन बावजूद इन महासिने अख़्लाक़ के महासिने शरइया से आप बिल्कुल बे खबर थे महासिने शरइया की अस्लुलउसूल यानी ईमान बिल्लाह की हक़ीक़त भी आप न जानते थे।

قَالَ تَعَالٰی وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰی (پارہ ۳۰ سورۃ والضحی)

और पाया उस परवर दिगार ने आपको राह से बेख़बर पस हिदायत की उसने आपको

وَقَالَ مَاكُنْتَ تَدْرِیْ مَاالْكِتَابُ وَلَا الْاِیْمَانُ (سورہ شوریٰ آیت ۵۲)

नहीं जानते थे आप कि क्या चीज़ है किताबे खुदा और न यह जानते थे कि ईमान बिल्लाह क्या चीज़ है।

وَقَالَ مَاكُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ (سورہ ہود آیت ۴۹)

नहीं जानते थे इसको आप और न आपकी कौम के लोग अख़्लाक़ी महासिन के तीन जुज़ हैं तहज़ीबे अख़्लाक़ तदबीरे मन्ज़िल, सियासते मुदुन इन तीनों से आप क़तअ़न असलन बेख़बर थे जब आप यह भी न जानते थे कि किताबे

इलाही क्या चीज है और ईमान क्या चीज है तो और महासिन से आपको क्योंकर आगाही हो सकती थी फिर यही मुबल्लिगे वहाबिया मोलवी काकोरवी अपने अन्नज्म नम्बर 9 जिल्द 3 बाबत जुमादलऊला शरीफ 1344 हि0 के सफा 8 पर लिखते हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम क़ब्ल अज नुबुव्वत किताबुल्लाह और ईमान की हक़ीक़त ही से नावाकिफ थे। पहले तो मैं आप सुन्नी भाइयों की ख़िदमत में यह अर्ज़ कर दूं कि पहली आयते करीमा जो मोलवी काकोरवी ने लिखी उसकी तफ़्सीर हज़राते मुफ़स्सिरीने अहले सुन्नत रहिमहुमुल्लाहु तआला ने यह फ़र्माई कि और ऐ महबूब आपके रब ने आपको अपनी महब्बत अपने इश्क़ में शिफ़्ता व वारफ़्ता पाया तो आपको मर्तबा

تَنَا فَتَدَلّٰی ہ فَکَانَ قَابَ قَوْسَیْنِ اَوْ اَدْنٰی (سورۂ نجم، آیت۔۸)

और अपने कुर्ब व विसाल तक पहुँचाया यहाँ "ज़ाल्लन" के माना इश्क़ व महब्बत में अज़ खुद रफ़्ता होने वाला और हिदायत के माना मतलूब व मक़सूद तक पहुँचा देना हैं दूसरी आयते मुबारका जो काकोरवी मुबल्लिगे वहाबिया साहब ने लिखी उसकी तफ़्सीर हज़राते मुफ़स्सिरीने अहले सुन्नत रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम ने यह फ़र्माई कि और ऐ महबूब तुम अपने क़यास और अपनी अटकल से किताबे इलाही और ईमान की हक़ीक़त नहीं जानते थे

وَلٰکِنْ جَعَلْنٰہُ نُوْرًا (سورہ۔شوریٰ، آیت۔۵۲)

लेकिन हमने उसको नूर कर दिया मतलब यह कि तुमको किताबे इलाही और ईमान का इल्म क़यास और अटकल से नहीं हुआ बल्कि नूरे इलाही से तुम पर किताबे इलाही और ईमान की हक़ीक़त रोशन हुई क़यास और अटकल से जो इल्म हासिल होता है वह तो यक़ीनी नहीं होता ज़न्नी और तख़्मीनी होता है लेकिन तुमको नूरे इलाही से जो उलूम हासिल हुए हैं वह तो क़तई व

यक़ीनी हैं जिनमें न शक की गुन्जाइश न शुब्हे की मजाल यहाँ दिरायत के माना अपनी अटकल और क़यास से मालूम करना हैं।

तीसरी आयते मुअज़्ज़मा जो मुबल्लिग़े वहाबिया मोलवी काकोरवी साहब ने लिखी उसमें तहरीफ़ करदी उससे पहले था।

تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَاۤءِ الْغَیْبِ نُوْحِیْهَاۤ اِلَیْكَ (سورہ ہود، آیت ۴۹)

यानी यह ग़ैब की ख़बरें हैं जिनको ऐ महबूब हम तुम्हें वही के ज़रिए से बता रहे हैं। इसको काकोरवी साहब ने अलग कतर लिया फिर उसमें لَا تَعْلَمُهَاۤ था जिसको मुबल्लिग़े वहाबिया ने لَا تَعْلَمُهٗ बना लिया फिर उसके बाद था।। مِنْ قَبْلِ هٰذَا यानी वही से पहले इसको भी मुबल्लिग़े वहाबिया काकोरवी ने साफ़ अलग उड़ाया। इस आयते मुकर्रमा की तफ़्सीर हज़राते मुॅफ़स्सिरीने अहले सुन्नत (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम) ने यह फ़र्माई कि ऐ महबूब यह अज़ीम व वसीअ व जलील व कसीर उलूमे ग़ैबिया जो तुम्हारी ज़बाने अक़्दस से तुम्हारी उम्मत वाले सुन रहे हैं यह मेरा करम है कि तुम पर मैंने वही फ़र्मा कर खुफ़िया व पोशीदा तौर पर उलूमे ग़ैब तुमको अता फ़र्माये वरन् बग़ैर मेरे बताये हुए उनको न तुम जान सकते थे न तुम्हारी क़ौम वाले उनको मालूम कर सकते थे यहाँ इल्म से क़तअन वही इल्म मुराद है जो क़ब्ले तालीमे इलाही हो कि हर्गिज़ मुम्किन ही नहीं। अब मुलाहज़ा हो कि इन तीनों आयाते कुर्आनिया की ग़लत तफ़्सीर गढ़कर ग़लत तर्जमा करके लफ़्ज़ी और मानवी तहरीफ़ें करके मुबल्लिग़े वहाबिया मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी ने अपने नज़्दीक यह साबित करा लिया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम अगर्चे नुबुव्वत के ज़ुहूर से पहले चालिस साल की उम्र तक झूट बोलने से शिर्क करने से, तमाम फ़वाहिशे अक़्लिया से परहेज़ रखते थे सच्चे अमानतदार निहायत नरमदिल मख़्लूक़े ख़ुदा पर शफ़क़त करने वाले शीरीं कलाम थे। लेकिन बावजूद इन तमाम फ़वाहिशे अक़्लिया से मुजतनिब और इन जुम्ला महासिने अक़्लिया

से मुत्तसिफ़ होने के फिर भी चालीस साल की उर्म शरीफ़ तक मआज़ल्लाह तहज़ीबे अख़्लाक़ और तदबीरे मन्ज़िल और सियासते मुदुन और ईमान बिल्लाह से क़तअन बिल्कुल बे ख़बर और मुत़लक़न नावाकिफ़ थे चालीस साल तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को मआज़ल्लाह न तो तहज़ीब आई थी न हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को अल्लाह तआला पर ईमान हासिल था।

आह आह! इस कुफ़्री मलऊन इबारत में मोलवी काकोरवी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को क्या कह दिया जिसको तहज़ीब नहीं आती उसे बे तहज़ीब कहते हैं और जिसको अल्लाह तआला पर ईमान नहीं होता उसको काफिर बेईमान कहते हैं।

सुन्नी मुसलमान भाइयो! लिल्लाह इन्साफ़ करो मोलवी काकोरवी क्या कह रहे हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम चालीस साल की उर्म तक क्या थे "व लाहौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलीय्यिल अज़ीम" अफ़्सोस और बे शुमार अफ़्सोस कि हुज़ूरे अकरम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की कैसी ज़बरदस्त तौहीन व तन्क़ीस हो रही है। हयहात हयहात इन नापाक इबारतों में मोलवी काकोरवी ने हुज़ूर आलमुलख़ल्के सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को मआज़ल्लाह जो कुछ कह डाला है वह आप सब हज़रात समझ गए होंगे मैं तो बतौरे नक़्ल भी शाने अक़्दस में वह नापाक मलऊन कलिमात कहने की जुर्अत अपने अन्दर नहीं पाता (फ़इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन)

रूदादे मुबाहसा सुल्तानपुर

मोलवी अबदूश्शकूर काकोरवी मुबल्लिगे वहाबिया ने एक रिसाला रुदादे मुबाहसए सुल्तानपुर खुद ही मुरत्तब करके अपने एक ज़नबे ख़ास मुन्शी तसद्दुक़ हुसैन मुअतमदे अन्जुमन हनफ़िया सुल्तानपुर के नाम से अहमदी प्रेस लखनऊ में छपवाया उसके सफ़ा 34 में सतर 2 से सतर 8 तक खुद मोलवी काकोरवी फ़र्माते हैं ।

तीसरा मस्अला हज़रत मोलाना इस्माईल शहीद देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के मुताल्लिक़ है हालांकि उनकी किताब निकालकर देखिए तो अस्ले हकीकत खुल जाए। वह सिर्फ़ इतना कहते है कि खुदा वन्द आलम जल्ला शानुहू अपने वादे के ख़िलाफ़ करने पर कादिर है लेकिन वह ऐसा नहीं करेगा क्योंकि नकाइस से उसकी जात पाक है। अगर यह मज़मून काबिले गिरिफ्त है तो हजरते नूह अलैहिस्सलाम भी इस गिरिफ्त से न बचेंगे कुर्आन मजीद मे है कि खुदा ने हज़रते नूह अलैहिस्सलाम से वादा किया कि हम तुमको और तुम्हारे अहल को तूफान से बचा लेंगे जब उनका एक काफ़िर बेटा डूबने लगा तो अर्ज़ करते हैं

رَبِّ اِنَّ ابْنِیْ مِنْ اَھْلِیْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْکَمُ الْحَاکِمِیْنَ ○ (سورہ ھود، آیت ۴۵)

यानी ऐ मेरे परवरदिगार मेरा बेटा मेरे अहल में से है और तेरा वादा सच्चा है और तू अहकमुलहाकिमीन है

इस इबारत में काकोरवी मुबल्लिगे वहाबिया मोलवी अब्दुश्शकूर एडीटर अन्नज्म ने साफ़ तौर पर यह बता दिया है कि

मोलवी इस्माईल देहलवी ने तो सिर्फ़ इतना लिखा है कि अल्लाह तआला अपने वादे के ख़िलाफ़ कर तो सकता है लेकिन करेगा नहीं क्योंकि वह ऐब व नुक़्सान से पाक है। फिर मोलवी देहलवी की इस इबारत पर ऐतराज़ ही क्या है अगर इस पर ऐतराज़ करते हो तो तुम्हारा ऐतराज़ हज़रते नूह अलैहिस्सलाम पर भी हो क्योंकि हज़रते नूह अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला ने वादा तो यह फ़र्माया था कि तुमको और तुम्हारे अहल को तूफ़ान से बचा लूंगा लेकिन उनके काफ़िर बेटे को जो उनके अहल में से था तूफ़ान से नहीं बचाया। अल्लाह तआला की इस वादा ख़िलाफ़ी को देखकर हज़रते नूह अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की कि अल्लाह तूने तो वादा किया था कि तुझको और तेरे अहल को तूफ़ान से बचा लूंगा फिर भी मेरे बेटे को जो मेरे अहल में से है तूफ़ान से नहीं बचाया हालांकि तेरा वादा तो सच्चा है और तू तमाम हाकिमों से बढ़कर हाकिम है यानी हज़रते नूह अलैहिस्सलाम ने तो अल्लाह तआला को वादा ख़िलाफ़ और दरोग़ गो बता दिया मत़लब यह हुआ कि जब अल्लाह तआला को हज़रते नूह अलैहिस्सलाम के वादा ख़िलाफ़ व दरोग़ गो बता देने पर कोई ऐतराज़ नहीं हो सकता फिर इमामुलवहाबिया मोलवी इस्माईल देहलवी ने तो अल्लाह तआला को वादा ख़िलाफ़ और दरोग़ गो भी नहीं बताया बल्कि सिर्फ़ इतना ही कहा है कि अल्लाह तआला की वादा ख़िलाफ़ी व दरोग़ गोई सिर्फ़ मुम्किन ही है। वाक़ेअ कभी न होगी तो इस्माईल साहब देहलवी पर क्योंकर ऐतराज़ हो सकता है। हालांकि तमाम अहले सुन्नत का ईमान व अक़ीदा है कि अल्लाह तबारक व तआला ने हर्गिज़ अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं किया और हज़रत

सय्यिदिना नूह नजीउल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने भी अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला को हर्गिज़ वादा ख़िलाफ़ नहीं बताया। हज़रत सय्यिदिना नूह नजीउल्लाह तो हज़रत सय्यिदिना नूह नजीउल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम हैं एक फ़ासिक़ व फ़ाजिर गुनाहगार स्याहकार मुसलमान भी अल्लाह तबारक व तआला को मआज़ल्लाह वादा ख़िलाफ़ और दरोग़ गो हर्गिज़ नहीं बता सकता और अगर बताए तो हर्गिज़ मुसलमान ही न रहेगा। क़तअन यक़ीनन बहुक्मे शरीअते मुतह्हरा काफ़िर मुर्तद हो जाएगा। बल्कि वाक़िआ यह है कि उस वक़्त शफ़क़ते पिदरी के सबब हज़रते सय्यिदिना नूह नजीउल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अहल के माना दुनियवी ज़ाहिरी रिश्ता व नसब रखने वाला तसव्वुर फ़र्माये कि आम तौर पर लोग इस लफ़्ज़ से यही माना मुराद लेते हैं लेकिन वादए इलाहिया में अहल के माना दीनी व मज़्हबी रिश्ता व इलाक़ा रखने वाला इत्तिबा व पैरवी करने वाला मुराद थे। हज़रत सय्यिदिना नूह नजीउल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम की अर्ज़ का मतलब सिर्फ़ यह था कि वादा तो तेरा यक़ीनन सच्चा और हक़ है लेकिन मेरा बेटा डूब गया तो ऐ रब मुझे बता दे कि तेरे वादे में अहल से किया मुराद थी। जवाब में फ़र्माया गया कि।

يٰنُوۡحُ اِنَّهٗ لَيۡسَ مِنۡ اَهۡلِكَ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيۡرُ صَالِحٍ (سورہ ہود، آیت ۴۶)

यानी ऐ नूह बेशक तुम्हारा वह बेटा किनआन जो डूब गया तुम्हारे अहल में से नहीं है क्योंकि इसके काम बड़े नालायक़ हैं मालूम हो गया कि नसबी क़राबत से दीनी क़राबत अफ़्ज़ल व आला व अरफ़ा व अक़्वा है और वादए इलाहिया में ऐसे नसबी क़राबत वाले मुराद न थे बल्कि दीनी क़राबत वाले ही मुराद थे।

इमामे अहले सुन्नत हज़रत शेख़ अबू मन्सूर मातरीदी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़र्माते हैं कि हज़रत सय्यिदिना नूह नजीउल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम का बेटा क़नआन मुनाफ़िक़ था अपने वालिदे माजिद अलैहिस्सलातु वस्सलाम के सामने अपने आपको मोमिन ज़ाहिर करता था। अगर वह अपने कुफ़्र को ज़ाहिर कर देता तो हज़रते सय्यिदिना नूह नजीउल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम हर्गिज़ यह अर्ज़ न करते जिसका मफ़ाद सिर्फ़ इस क़दर था कि अगर मेरा बेटा किनआन मेरे अहल में दाख़िल नहीं है तो ऐ रब मुझे बता दे कि अहल से तेरी क्या मुराद है और अगर मेरे अहल में दाख़िल है तो उसके हलाक कर दिए जाने में तेरी जो हिकमत है वह मुझे बता दे।

लेकिन मोलवी काकोरवी एडीटर अन्नज्म मुबल्लिग़े वहाबिया अब्दुश्शकूर ने इस नजिस इबारत में साफ़ तौर पर कह दिया कि अल्लाह तआला हज़रते सय्यिदिना नूह नजीउल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम से वादा ख़िलाफ़ी और दरोग़ गोई कर चुका है और हज़रते सय्यिदिना नूह नजीउल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम अल्लाह तआला को वादा ख़िलाफ़ और दरोग़ गो बता चुके हैं। जब इस पर कोई ऐतराज़ नहीं तो मोलवी इस्माईल देहलवी के उस क़ौल पर कि ख़ुदा तआला वादा ख़िलाफ़ी व दरोग़ गोई कर सकता है मगर करेगा नहीं। क्या ऐतराज़ हो सकता है। व लाहौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलीय्यिल अज़ीम।

तक़्वियतुल ईमान

मतबूआ मतबअ मजीद कानपुर

मुसन्निफ़ : इमामुल वहाबिया मोलवी इस्माईल देहलवी

इन्हीं वहाबियों देवबन्दियों के उसी ऐने इस्लाम तक़्वियतुलईमान मतबूआ मतबअ मजीद कानपुर के सफ़ा 13 पर इमामुल वहाबिया मोलवी इस्माईल साहब देहलवी लिखते हैं।

यह यकीन जान लेना चाहिए कि हर मख़्लूक बड़ा हो या छोटा वह अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़्यादा ज़लील है। यह इबारते कुफ़्रिया इब्तिदाए बयान के कुछ ही देर बाद सुना चुका हूँ। अब दुबारा फिर वही इबारत निकल आयी अच्छा ख़ैर फिर दोबारा इसका रदद सुन लीजिए। हर मुसलमान जानता और मानता है कि अल्लाह तआला की मख़्लूक़ात में सबसे बड़े मर्तबे वाले मख़्लूक़ हुजूरे अक़्दस सय्यिदे आलम हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम। और हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के मर्तबे से छोटे मर्तबे वाले मख़्लूक़ दूसरे अम्बिया व मुर्सलीन व मलाइका हैं। (अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम) तो इमामुल वहाबिया ने इस इबारत में हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम व दीगर मुर्सलीन व अम्बिया व मलाइका अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को अल्लाह तआला की शान के आगे चमार के बराबर नहीं बल्कि चमार से भी ज़्यादा ज़लील कह दिया जिसका साफ़ मतलब हुआ कि चमार की भी कुछ इज़्ज़त अल्लाह तआला की शान के आगे है लेकिन हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की और दीगर अम्बिया व मुर्सलीन व मलाइका अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की इज़्ज़त अल्लाह तआला की शान के आगे इतनी भी नहीं जितनी चमार की है। आह सद आह कि हुजूरे अक़्दस सय्यिदुल अअ़ज़्ज़ीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की कैसी खुली हुई तौहीन व तन्क़ीस की जा

रही है अगर किसी वहाबी देवबन्दी के सामने यह कहा जाए कि मोलवी इस्माईल देहलवी व मोलवी क़ासिम नानोतवी व मोलवी रशीद अहमद गंगोही व मोलवी ख़लील अहमद अम्बेठी व मोलवी अशरफ़ अली थानवी व मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी साहेबान अल्लाह तआला की शान के आगे उल्लू, गदहे, कुत्ते, सूअर से भी ज़्यादा ज़लील हैं तो क्या उस वहाबी देवबन्दी को गवारा होगा क्या वह उस इबारत को अपने मोलवियों की तौहीन नहीं समझेगा। और अगर ऐसा कहने में वहाबी देवबन्दी मोलवियों की तौहीन है तो फिर हुजूरे अक़्दस सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम व दीगर मुर्सलीन व अम्बिया व मलाइका अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़्यादा ज़लील बताना हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम व दीगर मुर्सलीन व अम्बिया व मलाइका अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की कैसी शदीद तौहीन व तन्क़ीस होगी। वलअयाजु बिल्लाहि तआला। हालांकि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला फ़र्माता है।

اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ہ ذِیْ قُوَّةٍ عِنْدَ ذِی الْعَرْشِ مَكِيْنٍ ہ
مُطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ (سورہ تکویر آیت ١٩)

यानी बेशक यह कुर्आन ऐसे रसूल का पढ़ना है जो बुज़ुर्गी वाला है कुव्वत वाला है, अर्श के मालिक के हूजूर इज़्ज़त वाला है, वहां उसका हुक्म चलता है, अमानतदार है, और अल्लाह तआला हज़रते सय्यिदिना मूसा कलीमुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मुताल्लिक़ फ़र्माता है ।

وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا

यानी और मूसा अल्लाह के हुजूर वजाहत व आबरु वाला है। और अल्लाह तआला हज़रते सय्यिदिना ईसा कलिमतुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मुताल्लिक़ फ़र्माता है।

وَجِيْهًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ہ

यानी ईसा दुनिया और आख़िरत में वजाहत व आबरू

वाला है, और अल्लाह तआला के मुक़र्रबाने बारगाह में से है, अल्लाह तबारक व तआला तो हज़रते ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को दुनिया और आख़िरत में आबरू वाला हज़रते मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को अपने हूज़ूर वजाहत वाला और अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को बुज़ुर्गी वाला और अपने हूज़ूर इज़्ज़त वाला फ़र्मा रहा है लेकिन इमामुल वहाबिया देहलवी हर एक बड़े और छोटे मख़्लूक़ को अल्लाह तआला की शान के आगे चमार से भी ज़्यादा ज़लील बता रहा है यह कुर्आने अज़ीम की कैसी जबरदस्त तक्ज़ीब है।

वहाबियों देवबन्दियों के इसी ऐने इस्लाम तक्वियतुलईमान के सफ़ा 50 व सफ़ा 51 पर यही इमामुल वहाबिया इस्माईल देहलवी साहब लिखते हैं।

अल्लाह की शान बहुत बड़ी है कि सब अम्बिया और औलिया उसके रूबरू एक ज़र्रए नाचीज से भी कमतर हैं।

हर उर्दू दां भी जानता है कि मिट्टी और बालू के बारीक तरीन अज्ज़ा को ज़र्रे कहते हैं जो तमाम इन्सानों जानवरों के पाउवों के नीचे हर वक़्त रौंदे जाते हैं। आह सद आह कि इस नापाक इबारत में अल्लाह तबारक व तआला के तमाम औलियाए किराम रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम को बल्कि अल्लाह तबारक व तआला के तमाम अम्बियाए इज़ाम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को अल्लाह तबारक व तआला के सामने एक ज़र्रए नाचीज़ से भी ज़्यादा घटिया बता दिया और फिर भी इस्लाम व ईमान का दावा बाक़ी है हैफ़ सद हैफ़ एक कलिमा पढ़ने वाला मुसलमान कहलाने वाला मोलवी यूं कह रहा है कि एक नाचीज़ हक़ीर ज़र्रे की भी किसी न किसी क़दर वक़अत अल्लाह तआला के रूबरू है लेकिन किसी नबी या किसी वली को अल्लाह तआला के रूबरू क़दर वक़अत भी नहीं जितनी वक़अत उसके रूबरू एक हक़ीर ज़र्रे की है व लाहौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलीय्यिल अज़ीम।

कुर्आने अज़ीम फ़र्माता है

وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً (سورہ۔بقرہ،آیت۳۰)

यानी ऐ महबूब याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़िरिश्तों से फ़र्माया बेशक मैं ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाने वाला हूँ। और फ़र्माता है।

سَلٰمٌ عَلٰی نُوْحٍ فِی الْعٰلَمِیْنَ ٥ (سورہ۔صٰفٰت،آیت۷۹)

तमाम जहानों में नूह पर सलाम। और फ़र्माता है

وَاتَّخَذَ اللّٰہُ اِبْرَاھِیْمَ خَلِیْلًا ٥ (سورہ۔نساء،آیت۱۲۵)

यानी और अल्लाह ने इब्राहीम को दोस्त बना लिया और फ़र्माता है।

وَكَلَّمَ اللّٰہُ مُوْسٰی تَكْلِیْمًا (سورہ۔نساء،آیت۱۶۴)

यानी और अल्लाह ने मूसा से बिला वास्ता कलाम फ़र्माया। और फ़र्माता है

وَاٰتَیْنَا عِیْسَی ابْنَ مَرْیَمَ الْبَیِّنٰتِ وَاَیَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ (سورہ۔بقرہ،آیت۸۷)

यानी और हमने मरियम के बेटे ईसा को खुली हुई निशानियां अत़ा फ़र्मायीं और पाकीज़गी की रुह से उनकी मदद फ़र्माई और फ़र्माता है।

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ ٥ (سورہ۔انبیاء،آیت۱۰۷)

यानी और ऐ महबूब हमने तुमको नहीं भेजा मगर रहमत सारे जहानों के लिए। और फ़र्माता है।

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰہَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰہُ (سورہ۔آلِ عمران،آیت۳۱)

यानी ऐ महबूब तुम फ़र्मा दो कि अगर तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरा इत्तिबा करो कि अल्लाह तुमको महबूब बना लेगा। और फ़र्माता है

وَمَا اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِیُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰہِ (سورہ۔نساء،آیت۶۴)

यानी और हमने किसी रसूल को नहीं भेजा मगर इसीलिए कि अल्लाह के हुक्म से उसकी इत़ाअत व फ़र्मा बरदारी की जाए। और फ़र्माता है।

فَبَعَثَ اللّٰہُ النَّبِیّٖنَ مُبَشِّرِیْنَ وَمُنْذِرِیْنَ ٥ (سورہ۔بقرہ،آیت۲۱۳)

यानी तो अल्लाह ने नबियों को भेजा ख़ुशख़बरी देते हुए डर सुनाते हुए और फ़र्माता है।

اَلَآ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰہِ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ٥ (سورہ۔یونس،آیت۶۲)

यानी आगाह हो बेशक अल्लाह के औलिया उनपर न कोई ख़ौफ़ है और न वह ग़मगीन होंगे। इस क़िस्म की सैकड़ों आयाते क़ुर्आनिया बिला मुबालग़ा बिऔनिल्लाहि तआला व बिऔनि

हबीबिही सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तिलावत कर सकता हूँ। लेकिन वक़्त कम है और मज़्मून ज़्यादा लिहाज़ा इस वक़्त इन्हीं दस आयाते मुबारका के सुनाने पर इक्तिफ़ा करता हूँ।

इन आयाते मुक़द्दसा ने साफ़ फ़र्मा दिया कि हज़रते आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ज़मीन में अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के ख़लीफ़ा और नाइब हैं। हज़रते नूह अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर हर एक जहां में अल्लाह तआला का सलाम है। हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम को अल्लाह तआला ने अपना दोस्त बनाया, हज़रते मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम से अल्लाह तआला ने बिला वास्ता कलाम किया, हज़रते ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को अल्लाह तआला ने रोशन मोअजज़े अता फ़र्माये और रुहुलक़ुदुस से उनकी ताईद फ़र्माई। हुज़ूरे अक़्दस सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को अल्लाह तआला ने तमाम जहानों के वास्ते रहमत बना कर भेजा। जिस तरह हर एक आलम का हर एक ज़र्रा, हर एक क़तरा, हर एक पत्ता, हर एक रेज़ा, हर एक बन्दा अल्लाह तआला की रबूबियत का मुहताज है। इसी तरह उसने हर एक जहान के हर एक ज़र्रे, हर एक क़तरे, हर एक रेज़े, हर एक बन्दे, को अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की रहमत का भी मुहताज बनाया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम अल्लाह तबारक व तआला के ऐसे महबूब हैं कि जो उनका मुत्तबेअ उनका गुलाम बन जाता है उसको भी अल्लाह तबारक व तआला अपना महबूब बना लेता है। जितने रसूल व पैग़म्बर अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम दुनिया में तशरीफ़ लाए वह सब अल्लाह तबारक व तआला के हुक्म से फ़र्मा रवां व हुक्मरां बनकर तशरीफ़ लाये। जिस क़दर नबी व रसूल अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम अल्लाह की तरफ़ से भेजे गये उन सबको अल्लाह तबारक व तआला ने अपनी नेअमतों और अपने अज़ाबों का जो आलमे ग़ैब में हैं इल्मे ग़ैब अता

फ़र्माया कि दुनिया में तशरीफ़ लाकर उन हज़राते किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम ने अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के बन्दों को उन नेमतों की खुशख़बरी दी और उन अज़ाबों से डराया। अल्लाह तबारक व तआला के औलिया का यह मर्तबा है कि उनपर दुनिया व आख़िरत में न किसी क़िस्म का ख़ौफ़ है न कभी किसी तरह का उन्हें रन्ज होगा। इन आयाते कुद्सिया ने बता दिया कि अल्लाह तबारक व तआला के अम्बिया व औलिया की अल्लाह तबारक व तआला के रुबरु यह वक़्अतें यह इज़्ज़तें हैं यह शानें यह रिफ़्अतें हैं। क्या मआज़ल्लाह हर एक नाचीज़ व हक़ीर ज़र्रे की भी अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के रुबरु यह वक़्अत है तो इस नापाक इबारत में मोलवी इस्माईल देहलवी इमामुल वहाबिया ने कुर्आने पाक की इन सब आयाते मुबारका को भी मुंह भरकर झुटला दिया। वलअयाज़ु बिल्लाहि तआला।

इसी तक़्वियतुल ईमान में जो तमाम वहाबियों देवबन्दियों का ऐने इस्लाम है सफ़ा 53 पर यही इमामुल वहाबिया इस्माईल देहलवी साहब लिखते है।

गैब की बात अल्लाह ही जानता है रसूल को क्या ख़बर इस नजिस इबारत में साफ़ कह दिया कि रसूल को ग़ैब की कुछ ख़बर नहीं रसूल को ग़ैब से मुत़लक़न नादान व बे ख़बर बता दिया। रसूल को ग़ैब से क़त़अन जाहिल व बे इल्म ठहरा दिया। अफ़सोस सद हज़ार अफ़सोस कि मुसलमानों के एक मोलवी कहलाने वाले के गन्दे क़लम से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की कैसी गन्दी इहानत हो रही है। कुर्आने अज़ीम फ़र्माता है اَلَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ यानी अल्लाह से डरने वाले वही हैं जो ग़ैब पर ईमान रखते हैं। हर मुसलमान जानता और मानता है कि ग़ैब ही की बातों को दिल से सच्चा मानने का नाम ईमान है। और ज़बान से उनको सच्चा मानने का इक़रार करना ईमान की शर्त़ है। अल्लाह तबारक व तआला ने अपने बन्दों को मालूमात हासिल करने और जानने के जो आदी

ज़रिए अता फ़र्माये हैं कि वे हुक्मे इलाही आँख से देखकर कान से सुनकर नाक से सूंघकर ज़बान से चखकर जिस्म से छूकर अक़्ल से सोचकर नामालूम चीज़ को मालूम कर लिया जाता है। इन आदी ज़रियों से आदी तौर पर जो चीज़े मालूम हों वह शहादत है और जो बातें इन मुदरिकाते आदिया से आदतन मालूम न हो सकें उनको इस्तिलाहे शरीअत में ग़ैब कहते हैं। शरीअत में नबियों रसूलों का मन्सब ही यह है कि अल्लाह तबारक व तआला से ग़ैब की बातों का क़तई यक़ीनी इल्म असालतन हासिल करें। फिर अल्लाह तबारक व तआला के बन्दों को उन उमूरे ग़ैबिया की ख़बर दें बन्दगाने खुदा उनसे ग़ैब की ख़बरें सुनकर दिल से उनको सच्चा मानें ज़बान से उनको सच्चा मानने का इक़रार करें और बितौफ़ीक़िल्लाहि सुब्हानहू तआला मोमिन बिलग़ैब होकर सच्चे मुसलमान बन जायें नुबुव्वत के माना ही शरअ़न यह हैं कि अल्लाह तबारक व तआला से असालतन बिला वास्ता ग़ैब पर यक़ीनी इत्तिला हासिल हो। इस्तिलाहे शरीअत में नबी उसीको कहते हैं जिसको रब्बुलइज़्ज़त आलिमुल ग़ैबि वश्शहादह जल्ला जलालुहू की बारगाह से ग़ैब का यक़ीनी इल्म असालतन अता फ़र्माया जाये।

وَالْوَلِيُّ تَابِعٌ لَهُ يَأْخُذُ عَنْهُ

और ग़ैब का इल्मे यक़ीनी हासिल करने में हर नबी की उम्मत के औलिया उसी नबी के ताबेअ हैं कि अपने नबी से हासिल करते हैं। मुसलमानाने अहले सुन्नत का ईमान है कि ग़ैब का इल्म यक़ीनी नबी को वहिए इलाही से और नबी के सदक़े और तवस्सुत में वली को इल्हामे खुदावन्दी से हासिल होता है। फिर नबी अपनी उम्मत को और वली अपने मुत्तबिईन को जिस क़दर हुक्मे इलाही होता है उसी क़दर उलूमे ग़ैबिया अता फ़र्माता है उसके सिवा बन्दों के लिए ग़ैब का इल्म यक़ीनी हासिल होने का क़तअन कोई और ज़रिआ नहीं। न कस्बो रियाज़त को ग़ैब का यक़ीनी इल्म हासिल होने में हर्गिज़ कुछ दख़ल है। कसबो रियाज़त से उमूरे मख़्फ़िया का जो कुछ इल्म हासिल होगा वह

कश्फ़ होगा इल्मे ग़ैब हर्गिज़ न होगा। अब मुलाहज़ा कीजिए इस इबारत में इमामुल वहाबिया ने रसूल को ग़ैब से मुत़लक़न बे ख़बर व बे इल्म बताकर तमाम अम्बिया व मुर्सलीन अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के मन्सबे नुबुव्वत व मर्तबए रिसालत को क़तअन झुटला कर कैसी ज़बरदस्त इहानत की है। और आयते करीमा

يُؤمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ

की भी तक्ज़ीब की है "व लाहौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलीय्यिल अज़ीम"।

कमालाते नुबुव्वत तो कमालाते नुबुव्वत हैं कश्फ़ तो कमालाते ईमान से भी नहीं कश्फ़ तो जोगियों और सन्यासियों को भी मुजाहदात व रियाज़ाते शाक़्क़ा करने से हासिल हो जाया करता है। अल्बत्ता अल्लाह तबारक व तआला की बारगाह से असालतन जो इल्मे ग़ैब अता फ़र्माया जाए वह यक़ीनन आला तरीन कमालाते नुबुव्वत में से है। चुनांचे अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है

عالِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ ہ (سورہ جن، آیت ۲۶)

यानी अल्लाह आलिमुलग़ैब है तो वह अपने ग़ैब पर अपने पसन्दीदा रसूलों के सिवा किसी और को मुसल्लत़ नहीं फ़र्माता और अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है।

وَمَا كَانَ اللهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ (سورہ آل عمران آیت ۱۷۹)

यानी और ऐ आम लोगो! अल्लाह तुमको ग़ैब पर मुत्तला नहीं फ़र्माने का लेकिन वह अपने रसूलों में से जिसको चाहता है चुन लेता है और अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है।

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ہ (سورہ تکویر، آیت ۲۴)

यानी और रसूल ग़ैब पर बख़ील नहीं। मतलब यह कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को इल्मे ग़ैब आता है तो वह इल्मे ग़ैब के बारे में तुम पर बुख़्ल नहीं फ़र्माते बल्कि तुमको भी ग़ैब का इल्म अता फ़र्माते हैं।

कुर्आन मजीद तर्जमा शैखुल हिन्द असीरे मालटा

मोलवी महमूद हसन देवबन्दी

मतबूआ : मदीना प्रेस बिजनौर

चुनांचे वहाबियों देवबन्दियों के शैखुल हिन्द असीरे मालटा मोलवी महमूद हसन देवबन्दी साहब इस आयते करीमा का तर्जमा यूं लिखते हैं :

और यह गैब की बात बताने में बखील नहीं (मुलाहज़ा हो कुर्आन मजीद तर्जमए शैखुल हिन्द मतबूआ मदीना प्रेस बिजनौर सफ़ा 936) और वहाबियों देवबन्दियों के शैखुत्तफ़्सीर मोलवी शब्बीर अहमद देवबन्दी साहब इस आयते मुबारका की तफ़्सीर यूं लिखते हैं।

यानी यह पैगम्बर हर किस्म के गुयूब की खबर देता है। माज़ी से मुताल्लिक हों या मुस्तक़्बिल से या अल्लाह के अस्मा व सिफात से या अहकामे शरइया से या मज़ाहिब की हकीकत व बुतलान से या जन्नत व दोज़ख के अहवाल से या वाकिआते बादलमौत से और इन चीज़ों के बतलाने में ज़रा बुख्ल नहीं करता न उज्रत मांगता है न नज़राना न बख्शिश फिर काहिन का लकब उस पर कैसे चस्पा हो सकता है। काहिन महज एक जुज़्ई और नामुकम्मल बात गैब की सौ झूट मिलाकर बयान करता है और उसके बतलाने में भी इस कदर बखील है कि बदूं मिठाई या नज़राना वगैरह वसूल किए एक हर्फ़ ज़बान से नहीं निकालता। पैगम्बरों की सीरत से काहिनों की पोजीशन को क्या निस्बत। (मुलाहज़ा हो कुर्आन मजीद मुतर्जम बतर्जमए शेखुलहिन्द मज़्कूर सफ़ा 937) ज़ाहिर है कि जिसको खुद ही ग़ैब की ख़बर न हो वह दूसरे को ग़ैब की ख़बर

हर्गिज़ नहीं दे सकता। तो इस इबारत में मोलवी इस्माईल देहलवी इमामुल वहाबिया ने रसूल को ग़ैब से मुतलक़न बेख़बर बताकर उन आयाते क़ुर्आनिया को यक्सर झुटला दिया। वलअयाज़ु बिल्लाहि तआला। इस इबारत से दो सतर पहले वहाबियों देवबन्दियों के उसी ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान के उसी सफ़ा 53 पर यही इमामुल वहाबिया मोलवी इस्माईल देहलवी साहब लिखते हैं।

सारा कारोबार जहाँ का अल्लाह ही के चाहने से होता है। रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता अल्लाहु अकबर कैसा नजिस अन्दाज़े गुफ़्तगू है कितनी नापाक तर्जे कलाम है। कि रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता हर शख़्स अपनी आँखों से देख रहा है कि जहाँ के कारोबार में बहुक्मे इलाही जहान वालों के चाहे से क्या क्या कुछ हो चुका है। और क्या क्या कुछ हो रहा है। लेकिन वहाबियों देवबन्दियों के यहाँ रसूल की यह बे क़दरी व बे वक़्अती है कि रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता ईमान वाले जानते हैं कि पहले क़िब्ला बैतुलमुक़द्दस था रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम मअ सहाबए किराम(रदियल्लाहु तआला अन्हुम) बैतुलमुक़द्दस ही की तरफ़ मुंह करके नमाज़ अदा फ़र्माते। कुछ महीनों के बाद क़ल्बे अक़्दस में यह ख़्याले मुबारक पैदा हुआ कि अगर काबए मुअज़्ज़मा हमारा क़िब्ला बन जाता तो इससे अच्छा होता क्योंकि उसकी तामीर हमारे जद्दे करीम हज़रते खलीलुल्लाह इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम बित्तकरीम ने फ़र्माई थी। और उसकी तामीर के लिए पत्थर और गारा हमारे जद्दे जलील हज़रते ज़बीहुल्लाह इस्माईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम बित्तब्जील ढोढो कर लाते थे। यह ख़्याले अक़्दस सिर्फ़ क़ल्बे मुबारक ही में था ज़बाने मुक़द्दस से दुआ नहीं अर्ज़ की थी कि "अल्लाहुम्मज्अलिल काबता क़िब्लतल्लना" यानी ऐ अल्लाह काबे को हमारे लिए क़िब्ला बना दे लेकिन जब

बेफ़ज़्लिही तआला व बकरमे हबीबिही सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम हम मुसलमानाने अहले सुन्नत इस अक़ीदए हक़्क़ा पर ईमान रखते हैं कि हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के ऐसे महबूब हैं कि खुद अल्लाह तबारक व तआला हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की रज़ा चाहता है। तो हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम भी जानते हैं कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के ऐसे महबूब हैं कि खुद अल्लाह तबारक व तआला हमारी रज़ा चाहता है लिहाज़ा अगर्चे हमने ज़बान से तो अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला की बारगाह में यह दुआ नहीं अर्ज़ की है कि ऐ अल्लाह हमारे लिए काबे को क़िब्ला बना दे लेकिन हम चाहते तो हैं कि काबा क़िब्ला बन जाये फिर अल्लाह तबारक व तआला तो हमारी दिली ख़्वाहिश को जानता है। इसलिए देखें तो हज़रते जिबरीले अमीन अलैहिस्सलातु वस्सलाम आसमान की तरफ़ से हुक्मे इलाही ला रहे हैं कि काबे की तरफ मुंह करलो और बार बार हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम चेहरए अक़्दस आसमान की तरफ़ मुतवज्जेह फ़र्माकर मुलाहज़ा फ़र्माते हैं हुज़ूर महबूबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की यही अदाए महबूबाना है कि ऐन इसी हालत में कलामे इलाही नाज़िल होता है।

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِى السَّمَآءِ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ (سورہ بقرہ، آیت ۱۴۴)

यानी बेशक बार बार तुम्हारा आसमान की तरफ़ चेहरए अन्वर फेरकर मुलाहज़ा फ़र्माना हम देख रहे हैं तो बेशक ज़रूर हम तुमको उसी क़िब्ले की तरफ़ फेर देंगे जिसको तुम पसन्द करते हो तो अपना चेहरा हुर्मत वाली मस्जिद (काबे) की तरफ़ फेर दो।

अल्हम्दुलिल्लाह मुसलमानाने अहले सुन्नत जानते और मानते हैं कि रसूल के चाहने से जहान का सारा कारोबार होता है जो रसूल चाहता है वही होता है जो रसूल नहीं चाहता वह हर्गिज़ नहीं होता क्योंकि रसूल वही चाहता है जो ख़ुदा चाहता है। रसूल की रज़ा ख़ुदा ही की रज़ा है।

जो वह चाहेंगे वह होगा और वह जो चाहें करें।
रब ही जब चाहे उन्हें फिर उनका चाहा क्यों न हो।।

ख़ुदा की रज़ा चाहते हैं दो आलम। ख़ुदा चाहता है रज़ाए मुहम्मद। जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अ़ला हबीबिहिल करीम व महबूबिहिल आज़म व अला आलिही व अस्हाबिही व बारक वसल्लम।

बहरहाल आप हज़रात बनज़रे इन्साफ़ मुलाहज़ा फ़र्मा रहे हैं कि इमामुल वहाबिया इस्माईल देहलवी ने इस इबारत में आयते कुर्आनिया को झुटला दिया। वलअयाज़ु बिल्लाहि तआला।

वहाबियों देवबन्दियों के उसी ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान के सफ़ा 37 पर यही इमामुलवहाबिया मोलवी इस्माईल देहलवी लिखता है।

जिसका नाम मुहम्मद या अली है वह किसी चीज़ का मालिको मुख़्तार नहीं। अल्अज़मतु लिल्लाहि तआला कैसी गुस्ताख़ाना इबारत है हुज़ूरे अक़्दस शहनशाहे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के नामे अक़्दस के क़ब्ल या बाद और हज़रते मौला अली मुश्किल कुशा (रदियल्लाहु तआला अन्हु) के नामे पाक से आगे या पीछे अदब व ताज़ीम का मुतलक़न एक लफ़्ज़ भी नहीं, न अव्वल में हुज़ूर या हज़रत या जनाब है न आख़िर में सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम या अलैहि व अला आलिहिस्सलातु वस्सलाम, या रदियल्लाहु तआला अन्हु या कर्रमल्लाहु तआला वज्हहु है। जिस तरह अपने से छोटे किसी मामूली हैसियत वाले

शख़्स का नाम लिया जाता है बिल्कुल इसी तरह हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम व हज़रत मौलाए काएनात अलीए मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहु के पाक मुबारक नाम के लिए हैं कि आर्यो का कोई पण्डित या इसाइयों का कोई पादरी भी इस तरह हुजूर अलैहि व अला आलिहिस्सलातु वस्सलाम व मौला अली रदियल्लाहु तआला अन्हु के प्यारे नाम हर्गिज़ नहीं लेता वह भी कम अज़ कम अव्वल में हज़रत या जनाब का लफ़्ज़ और आख़िर में साहिब का लफ़्ज़ ताज़ीम के लिए इज़ाफ़ा कर दिया करता है फिर कहना यह है कि अल्लाह तबारक व तआला तो अपने प्यारे रसूल अलैहि व अला आलिहिस्सलातु वस्सलाम की शान यह बयान फ़र्माता है

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ٥ ذِيْ قُوَّةٍ عِنْدَ ذِى الْعَرْشِ مَكِيْنٍ مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ (سورہ تکویر، آیت ۱۹)

यानी बेशक यह इज़्ज़त वाले रसूल का पढ़ना है जो कुव्वत वाला है मालिके अर्श के हुजूर इज़्ज़त वाला वहाँ उसका हुक्म चलता है। अमानतदार और अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है।

اَغْنٰهُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ (سورہ توبہ، آیت ۷۴)

यानी अल्लाह उसके रसूल ने उनको अपने फ़ज़्ल से दौलतमन्द कर दिया और अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है।

وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗٓ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رَاغِبُوْنَ ٥ (سورہ توبہ، آیت ۵۹)

यानी और क्या अच्छा होता अगर वह उस पर राज़ी होते जो अल्लाह और उसके रसूल ने उनको दिया और कहते हैं हमें अल्लाह काफ़ी है अब देता है हमको अल्लाह और उसका रसूल अपने फ़ज़्ल से बेशक हम अल्लाह ही की तरफ़ रग़बत करने वाले हैं हुजूरे अक़्दस ख़लीफ़तुल्लाहुल आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को किसी चीज़ का भी मुतलक़न मुख़्तार न मानना इन आयाते कुर्आनिया की खुली हुई तक्ज़ीब है।

वलअयाजु बिल्लाहि तआला।

वहाबियों देवबन्दियों के उसी ऐने इस्लाम तक़्वियतुलईमान मतबूआ मतबअ मजीदी कानपुर के सफ़ा 33 पर यही इमामुल वहाबिया मोलवी इस्माईल देहलवी लिखता है।

अल्लाह साहब ने अपने पैग़म्बर को फ़र्माया कि अपने क़राबतियों को डरा देवे सो उन्होंने सबको यल्कि अपनी बेटी तक को खोलकर सुना दिया कि क़राबत का हक़ अदा करना उसी चीज़ में हो सकता है कि अपने इख़्तियार में हो सो यह मेरा माल मौजूद है इसमें मुझको कुछ बुख़्ल नहीं और अल्लाह के हां का मामला मेरे इख़्तियार से बाहर है। वहाँ में किसी की हिमायत नहीं कर सकता और किसी का वकील नहीं बन सकता। सौ वहां का मामला हर कोई अपना अपना दुरुस्त करे और दोज़ख से बचने की हर कोई तदबीर करे। और वहाबियों देवबन्दियों के इसी ऐने इस्लाम तक़्वियतुलईमान के सफ़ा 25 पर यही इमामुल वहाबिया साहब लिखते हैं कि अल्लाह ने पैगम्बर को हुक्म किया कि लोगों को सुना देवें कि मैं आप ही को डरता हूँ और अल्लाह से वरे अपना कोई बचाव नहीं जानता सौ दूसरों को क्या बचा सकूं।

इन दोनों इबारतों में साफ़ कह दिया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम खुद अपने ही लिए डर रहे हैं वह किसी और को तो क्या खुद ही अपनी बेटी को भी दोज़ख से नहीं बचा सकते। अलकिब्रियाउ लिल्लाह मुक़द्दस दीने इस्लाम की हक़्क़ानियत पर कैसा ज़बरदस्त हमला है ऐसे ही मोलवी कहलाने वालों की ऐसी ही नापाक इबारतों को देखकर इसाई पादरियों ने ऐतराज़ किया है कि जब पैग़म्बरे इस्लाम अपनी बेटी को भी जहन्नम से नहीं बचा सकते पैग़म्बरे इस्लाम खुद अपने ही लिए डर रहे हैं कि मआज़ल्लाह जहन्नम से बचूंगा या नहीं। तो दीने इस्लाम किसी की नजात का कफ़ील व

ज़ामिन नहीं हालांकि इस मज़्मून की जिस क़दर आयाते कुर्आनिया व अहादीसे करीमा हैं उनका मक़्सद सिर्फ इसी क़दर है कि हुज़ूरे अक़्दस महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को और हुज़ूर के अहले बयते त़हारत अलैहि व अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को सुनाया जाये और अवामे अहले इस्लाम को डराया जाये कि महबूबाने ख़ुदा अला सय्यिदिहिम व अलैहिमुस्सलातु वस्सलामु वस्सना के साथ उनको जो निस्बत हासिल है उसी पर भरोसा करके कहीं ऐसा न हो कि अवामिरे इलाहिया की बजा आवुरी और नवाहिए इलाहिया से परहेज़ यक्सर छोड़ बैठें यह भी कलाम की एक शाने बलाग़त है कि ख़्वास को सुनाना और अवाम को डराना उससे मक़्सूद हो। हिन्दी में भी मसल है कि बेटी से कहो कि बहू कान धरे। वरन् सहाबए किराम (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम) में हज़राते ख़ुलफ़ाए अरबाअ व साइरे अशरए मुबश्शरा व अस्हाबे बदर व अस्हाबे उहुद व अस्हाबे बयअतुर्रिज़्वान (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम) और अहले बयते इज़ाम (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम) में तमाम अज़्वाजे़ मुत़ह्हरात उम्महातुल मोमिनीन व जुम्ला बनाते मुक़द्दसात (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुन्न) व हसनैने करीमैन (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुमा) क़त़ई जन्नती हैं कि खुसूसी त़ौर पर इन तमाम हज़रात (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम) में से हर एक से क़त़ई त़ौर पर जन्नती होने का वादा फ़र्मा लिया गया है। और यूं तो आम त़ौर पर तमाम सहाबए किराम (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम) से आख़िरत की भलाई का और जुम्ला अहले बयते इज़ाम (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम) से त़ाहिर व मुत़ह्हर फ़र्मा देने का वादा फ़र्मा लिया गया है लेकिन हज़रत सय्यिदिना मौला अली मुश्किल कुशा(रदि़यल्लाहु तआला अन्हु) व हज़रत सय्यिदा फ़ात़िमा ज़हरा (रदि़यल्लाहु तआला अन्हा) व हज़राते हसनैने करीमैन (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुमा) का और हज़राते अज़्वाजे़ मुत़ह्हरात उम्महातुल मोमिनीन (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुन्न) का वह

मर्तबए जलीला है कि अल्लाह तबारक व तआला ने इन हज़राते किराम से मुवद्दत व ताज़ीम व महब्बत रखना फ़र्ज़ फ़र्माया अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला फ़र्माता है।

قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْراً اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبىٰ (سورہ۔شوریٰ،آیت۔۲۳)

यानी ऐ महबूब तुम फ़र्मा दो कि मैं तुमसे इस (दावत इलल्हक़्क़ा और तब्लीग़े इस्लाम) पर कोई उजरत ज़रूरी नहीं मांगता मगर तुमसे यह ज़रूर तलब करता हूँ कि तुम मेरे क़राबत दारों से मोवद्दत और ताज़ीमो महब्बत रखो ज़ाहिर है इमामुल वहाबिया मोलवी इस्माईल देहलवी यह कह कर कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ख़ुद अपने ही आपको डरते हैं। बेटी को भी जहन्नम से नहीं बचा सकते इन इबारतों में इस आयते कुर्आनिया की खुली हुई तक्ज़ीब भी की हज़रत सय्यिदा त़य्यिबा त़ाहिरा फ़ातिमा ज़हरा (रदियल्लाहु तआला अन्हा) की तौहीन भी की और ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस मालिके जन्नत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की इहानत भी की। वहाबियों देवबन्दियों के यहां सिर्फ़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ही का मर्तबा इस क़दर हल्का है कि मआज़ल्लाह वह अपने ही को डरते हैं, वह अपनी साहिबज़ादी को भी जहन्नम से नहीं बचा सकते, फिर किसी और को क्या बचा सकेंगे। लेकिन वहाबिया देवबन्दिया के पीराने पीर सय्यिद अहमद साहब रायबरेलवी जो इमामुल वहाबिया इसमाईल देहलवी साहब के पीर थे उनके मर्तबे को वहाबी देवबन्दी लोग इससे बहुत ज़्यादा बुलन्द व बाला मानते हैं।

सिराते मुस्तक़ीम

मुसन्निफ़ :–मोलवी इसमाईल देहलवी

मतबअ :–क़य्यूमी

चुनांचे यही इमामुल वहाबिया इसमाईल देहलवी साहब अपनी किताब सिराते मुस्तक़ीम मतबअ क़य्यूमी के सफ़ा 150 पर लिखतें हैं।

शख़्से बजनाबे हजरते ईशा इस्तिदाए बयअत नुमूद। हजरत दरां अय्याम अललउमूम अख़्जे बयअत नमी करदन्द बिनाअन अलैहि मुल्तमिसे आं शख़्स रा हम क़बूल नफ़र्मूदन्द। आं शख़्स बेश अज बेश इल्हाह करदा कि हज़रत ई शा बआं शख़्स फ़र्मूदन कि यक दो रोज़ तवक्क़ुफ़ बायद कर्द। बाद अजां हरचे मुनासिब वक्त ख़्वाहद शुद हमां बअमल ख़्वाहद आमद बाज़ हज़रत ईशा बिना बर इस्तिफ़सार व इस्तीजान बजनाबे हजरते हक मुतवज्जहे शुदन्द व अर्ज़ नुमूदन कि बन्दए अज़ बन्दगाने तू इस्तिदआ मी कुनद कि बयअत बमन नुमायद व तू दस्ते मरा फ़िरा गिरिफ़्तई बहरकि दरीं आलम दस्ते करो रा मी गीरद पासे दस्तगीरी हमेशा मी कुनद व औसाफ़े तोरा बअख़्लाके मख़्लूक़ात हेच निस्बते निस्त। पस दरां मुआमला चे मन्जूरस्त अजां तरफ़ हुक्म शुद कि हर कि बर दस्ते तू बयअत ख़्वाहद कर्द गो लक्कोकहा बाशन्द हर यक रा किफ़ायत ख़्वाहम कर्द।

यानी एक शख़्स ने हमारे पीर सय्यिद अहमद साहब की ख़िदमत में बयअत करने "मुरीद होने" की ख़्वाहिश अर्ज़ की। हमारे पीर साहब उन दिनों में आम तौर पर बयअत नहीं लेते थे मुरीद नहीं करते थे इसी बिना पर उस शख़्स की दरख़्वास्त को भी क़बूल न फ़र्माया उस शख़्स ने ज़्यादा से ज़्यादा ख़ुशामद के साथ इस्रार किया यहां तक कि हमारे पीर साहब ने उस शख़्स से

फ़र्माया कि एक दो दिन तवक़्क़ुफ़ करना और ठहर जाना चाहिए। उसके बाद जो कुछ उस वक़्त मुनासिब होगा वही अमल में आएगा फिर हमारे पीर साहिब ने पूछने और हुक़्म लेने के लिए अल्लाह तबारक व तआला की बारगाह में मुतवज्जेह हुए और अर्ज़ किया कि तेरे बन्दों में से एक बन्दा ख़्वाहिश करता है कि मुझसे बयअत करे और तूने मेरा हाथ पकड़ लिया है और इस जहां में जो शख़्स किसी के हाथ को पकड़ लेता है हमेशा हाथ पकड़ने का लिहाज़ करता है और तेरी सिफ़्तों को तमाम मख़्लूक़ात की आदतों के साथ कुछ निस्बत ही नहीं तो इस मुआमले में क्या मन्जूर है अल्लाह तआला की तरफ़ से हुक़्म हुआ कि जो शख़्स तेरे हाथ पर बयअत करेगा अगर्चे लाखों होंगे हर शख़्स की मैं किफ़ायत फ़र्माऊंगा यानी उसकी हर क़िस्म की कार बरआरी दुनिया में और हर तरह की हाजत रवाई आख़िरत में करूंगा।

अल्लाहु अकबर यह है वहाबियए मुरतद्दीन व देवबन्दिए ज़िन्दीक़ीन का नापाक अक़ीदा कि रसूलुल्लाह महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम तो अपनी शहज़ादी (रदियल्लाहु तआला अन्हा) को भी जहन्नम से नहीं बचा सकते लेकिन इमामुल वहाबिया साहब के पीर जी के अगर लाखों करोड़ों मुरीद भी हों तो उन सबको अल्लाह तआला बख़्श देगा उनकी दुनिया व आख़िरत की हर एक हाजत पूरी कर देगा।

क्यों सुन्नी मुसलमान भाइयो! जो शख़्स अपने पीर के मर्तबे को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के मर्तबे से भी ज़्यादा बढ़ाए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के मर्तबे को अपने पीर के मर्तबे से भी ज़्यादा घटाए क्या वह बहुक्मे शरीअते मुतह्हरा काफ़िर व मुर्तद बद्दीन न होगा। हालांकि सहीह हदीस शरीफ़ में है हुज़ूरे अक़्दस शहनशाहे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम फ़र्माते हैं "फ़ातिमतु बिदअतुम्मिन्नी

सय्यिदतुन निसाइ अहलिल्जन्नति" यानी फातमा मेरे जिगर का टुकडा जन्नत की तमाम औरतों की सरदार है।(रदियल्लाहु तआला अन्हा)

एक और हदीस शरीफ में है हुजूरे अक्दस शहनशाहे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम फर्माते हैं।

إنّ الله فطمها وذريتها عن النار

यानी बेशक अल्लाह तआला ने फातिमा को और उसकी औलाद को दोजख से आजाद कर दिया है।

एक और हदीस शरीफ में है हुजूर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम फर्माते हैं।

إنّ الله حرّمها ومحبّيها على النار

यानी बेशक अल्लाह तआला ने फातिमा पर और उसके साथ महब्बत रखने वालों पर दोजख को हराम फर्मा दिया है।

हर सुन्नी मुसलमान जानता और मानता है कि हजरत सय्यिदतुन्निसा फ़ातिमा ज़हरा (रदियल्लाहु तआला अन्हा) को यह तमाम फज़ाइल व मरातिब सिर्फ़ इसी वजह से अता हुए कि वह हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की नूरे नज़र व लख़्ते जिगर हैं। इन फज़ाइल व महासिन का दारो मदार हर्गिज़ आमाल पर नहीं बल्कि सिर्फ़ हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की साहिबज़ादी होना ही इन मरातिब व मनासिब का मदार है। लेकिन वहाबियों देवबन्दियों को तो सिरे से हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ही की इज़्ज़तो अज़मत का साफ़ इन्कार है और फिर भी अपने मुंह से इस्लामो सुन्नियत का झूटा इज़्हार है अपनी वहाबियत व देवबन्दियत को छुपाने पर इस्रार है वल्अयाजु बिल्लाहि तआला।

तक़्वियतुल ईमान

मुसन्निफ़ : मोलवी इस्माईल देहलवी

वहाबियों देवबन्दियों के उसी ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान के सफ़ा 58 पर यही इमामुल वहाविया साहब हमारे और तुम्हारे आक़ा व मौला सय्यिदुना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के मुताल्लिक लिखते है।

किसी बुज़ुर्ग की तारीफ़ में ज़बान सम्भाल कर बोलो और जो बशर की सी तारीफ़ हो सोही करो सो उसमें भी इख़्तिसार ही करो।

इस गन्दी इबारत में साफ़ बता दिया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की भी तारीफ़ बस ऐसी ही करो जैसी आपस में एक दूसरे बशर और इन्सान की तारीफ़ करते हो हालांकि अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है।

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا (سورہ نور، آیت ۶۳)

यानी ऐ मुसलमानो रसूल के पुकारने को ऐसा न बनाओ जैसा आपस में एक दूसरे बशर को पुकारते हो और अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है।

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝ (سورہ حجرات، آیت ۲)

यानी ऐ ईमान वालो नबी की आवाज़ पर अपनी आवाज़ों को ऊँचा न करो और उनको इस तरह न पुकारो जिस तरह आपस में एक दूसरे को पुकारते हो वरन् तुम्हारे सब आमाल अकारत हो जाएंगे। और तुमको ख़बर न होगी "अलइज़्ज़तु लिल्लाह"। क़ुर्आने अज़ीम अपने प्यारे महबूब सय्यिदुना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का मर्तबए उज़्मा व रूतबए कुब्रा बता रहा है कि ऐ ईमान वालो! मेरा महबूब अगर तुम में से किसी को किसी वक़्त किसी हालत में पुकारे तो उसको ऐसा समझना हराम जैसे तुममें का एक दूसरे को पुकारता है बल्कि तुम पर उसी वक़्त उसी हालत में मेरे

महबूब को जवाब देना और मेरे महबूब के पुकारने की तामील करना फर्ज़ है (अगर्चे नमाज़ ही में हो) अगर मेरे महबूब को तुममें से कोई शख़्स पुकारे तो उसको ऐसा समझना हराम जैसे तुममें का एक दूसरे को नाम लेकर पुकारता है मेरे महबूब का नाम लेकर या मुहम्मद या अहमद कहकर पुकारना गुनाह व नाजाइज़ है बल्कि मेरे महबूब के अल्क़ाबे अज़ीमा व औसाफ़े करीमा के साथ

يَا رَسُوْلَ اللهِ يَا حَبِيْبَ اللهِ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللهِ يَا قَاسِمَ رِزْقِ اللهِ

कहकर पुकारा करो मेरा महबूब अगर किसी अपने नाम लेवा के हक़ में बरकत व रहमत की या किसी बेईमान बदकार के लिए तबाही व हलाकत की दुआ फ़र्माए तो उसको ऐसा समझना हराम जैसे तुम आपस में एक दूसरे को दुआ देते हो या एक दूसरे के हक़ में बद दुआ करते हो कि तुम्हें हर्गिज़ यक़ीन नहीं होता कि तुम्हारी वह दुआ या बद दुआ बारगाहे इलाही में क़बूल हुई या नहीं बल्कि तुम पर इस बात का यक़ीन करना भी फ़र्ज़ है कि मेरे महबूब की हर एक दुआ मेरे करम व फ़ज़्ल से मेरी सरकार में यक़ीनन मक़बूल है।

जिलू में इजाबत ख़वासी में रहमत
बढ़ी किस तुज़ुक से दुआए मुहम्मद
इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा
दुल्हन बनके निकली दुआए मुहम्मद
इजाबत ने झुककर गले से लगाया
बड़ी नाज़ से जब दुआए मुहम्मद
सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम

मेरे महबूब की पाक आवाज़ पर तुमको अपनी आवाज़ें ऊँची करना हराम। मेरे महबूब को इस तरह आवाज़ देना हराम जैसे आपस में एक दूसरे को आवाज़ देते हो। मेरे महबूब के अदब और मेरे महबूब की ताज़ीम के यह अहकाम जो तुमको बताए गए हैं उनके ख़िलाफ़ अगर आइन्दा तुमसे सरज़द हुआ तो तुम्हारे तमाम आमाल जो पहले कर चुके थे सब बरबाद और मलिया मेट कर दिए जाएंगे और तुमको अपने आमाल की तबाही व बरबादी का इल्म भी न होगा। हर मुसलमान जानता है कि मआज़ल्लाह

काफ़िर और मुर्तद हो जाने के सिवा हर्गिज़ कोई गुनाह ऐसा नहीं जिसके सबब पहले के तमाम आमाले हसना और साबिक़ की जुम्ला नेकियां अकारत हो जाएं। अलबत्ता सिर्फ़ काफ़िर हो जाना इस्लाम से फ़िर जाना ही मआज़ल्लाह ऐसा गुनाह है जो अपने पहले के तमाम नेक अमलों को क़तअ़न अकारत और मलियामेट कर दिया करता है तो इस आयते मुबारका ने साफ़ बता दिया कि मेरे महबूब की वह बुलन्द व बाला सरकार है कि वह बरताव जो आलम में किसी और बशर के साथ करते हो अगर वही बरताव तुमने मेरे महबूब के साथ किया जिससे यह ज़ाहिर होता हो कि दुनिया जहान के किसी छोटे बड़े बशर की हम्सरी तुमने मेरे महबूब के साथ कर दिखाई तो तुम काफ़िर हो जाओगे, मुर्तद हो जाओगे, दीन से निकल जाओगे, उससे पहले ईमान व इस्लाम के जिस क़दर भी नेक अमल तुमने किए थे सब मिट्टी में मिला दिए जाएंगे, वह हर्गिज़ तुम्हारे कुछ काम न आएंगे आह! आह! सद हज़ार आह! अल्लाह तबारक व तआला तो अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के यह आदाब सिखाए और इमामुल वहाबिया अपने मुत्तबिईन को यह बताए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की तारीफ़ भी बस ऐसी ही करो जैसी आपस में एक दूसरे बशर की तारीफ़ करते हो बल्कि उसमें भी कमी ही करो।

इमामुल वहाबिया के इसी क़ौल पर मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी मुबल्लिग़े वहाबिया एडीटर अन्नज्म ने अमल किया है कि अपने अख़्बार में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की तारीफ़ को हराम बता दिया और अपने अख़्बार में अपने एक चेले का एक ऐसा नापाक मज़्मून छपवा दिया जिसमें हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को दूसरे इन्सानों की तरह एक मामूली बशर ठहरा दिया।

प्यारे सुन्नी भइयो! ग़ौर व इन्साफ़ से काम लो क्या इमामुल वहाबिया ने इस इबारत में आयते क़ुर्आनिया की खुली हुई तक्ज़ीब नहीं की।

तक़्वियतुल ईमान

मुसन्निफ़ : मोलवी इस्माईल देहलवी

वहाबियों देवबन्दियों के उसी ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान के सफ़ा 58 पर यही इमामुल वाहाबिया मोलवी इस्माईल साहब देहलवी लिखते है।

जैसा हर कौम का चौधरी और गाँव का जमींदार सो इन मानों को हर पैग़म्बर अपनी उम्मत का सरदार है। इस इबारत में इमामुल वहाबिया मोलवी इस्माईल देहलवी ने साफ़ कह दिया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को जो सारे जहान का सरदार कहा जाता है तो उस सरदारी की बस ऐसी ही हैसियत है जैसी हर क़ौम के चौधरी और एक गाँव के ज़मीदार की हैसियत होती है। अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है।

وَمَاكَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّ لَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ ورسُوْلُهٗٓ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ وَ مَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا (سورہ۔احزاب،آیت۔٣٦)

यानी और किसी ईमान वाले मर्द और किसी ईमान वाली औरत को यह नहीं पहुँचता कि जब अल्लाह तबारक व तआला और उसका रसूल किसी बात का क़तई हुक्म फ़र्मादे तो उनको अपने मुआमले का कुछ इख़्तियार बाक़ी रहे और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़र्मानी करे तो बेशक वह खुल्लम खुल्ला गुमराह हो गया और अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है।

وَ مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ (سورہ۔نساء،آیت۔٨٠)

यानी और जो रसूल की इताअत करे तो बेशक उसने अल्लाह ही की इताअत की। अल्ग़रज़ इन आयाते मुबारका से वाज़ेह है और कुर्आने अज़ीम व हदीसे करीम से लायेह है कि हुज़ूर रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का अल्लाह तबारक व तआला के हुज़ूर हर्गिज़ वह मर्तबा

नहीं जो एक शहंशाह के सामने नूरबाफ़ों या नद्दाफ़ों या ख़य्यातों के चौधरियों का या गाँव के ज़मीदारों का मर्तबा हुआ करता है। बल्कि अल्लाह तबारक व तआला ने अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को अपना नाइबे आज़म और अपना ख़लीफ़ए मुतलक़ और सारे जहान का अपने हुक्म से मुताअ व फ़र्मारवा बना कर भेजा है हुज़ूर की इताअत अल्लाह की इताअत है हुज़ूर की नाफ़र्मानी अल्लाह की नाफ़र्मानी है। हुज़ूर की महब्बत ख़ुदा की महब्बत है। हुज़ूर की अदावत ख़ुदा की अदावत है। अल्लाह तबारक व तआला की इताअत व फ़र्माबरदारी का सिर्फ़ यही एक तरीक़ा है कि अल्लाह जल्ला जलालुहू के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की इताअत व फ़र्माबरदारी की जाए मिसाल के तौर पर यूं समझिए कि किसी चौधरी को अपनी क़ौम पर या किसी ज़मींदार को अपने गांव पर हर्गिज़ वह इक़्तिदार व इख़्तियार नहीं होता जो नाइबुस्सल्तनत यानी वायसराय को शहंशाह की रिआया पर इक़्तिदार व इख़्तियार हुआ करता है। चौधरी अपनी क़ौम पर और ज़मींदार अपने गांव पर मामूली से चन्द इख़्तियारात रखता है लेकिन नाइबुसल्तनत को जिस मुल्क पर भेजा जाता है उसको उस मुल्क की जुम्ला रिआयाए शाही पर शहनशाह की नियाबत से क़तअन वही इख़्तियारात व इक़्तिदारात का होते हैं जो उस शहंशाह को अपनी सारी सल्तनत के सारे मुल्कों की सारी रअइय्यत पर असालतन हासिल हैं। लेकिन इमामुल वहाबिया इस्माईल देहलवी ने हुज़ूर सरकारे दो जहान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को बस ऐसा ही सरदार बता दिया जैसा हर चौधरी अपनी क़ौम का और ज़मींदार अपने गांव का सरदार हुआ करता है।

बताओ सुन्नी मुसलमानो यह आयते क़ुर्आनिया की तक्ज़ीब और हुज़ूर सय्यिदुस्सादात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला

आलिही वसल्लम की तौहीन हुई या नहीं। वलअयाज़ु बिल्लाहि तआला।

वहाबियों देवबन्दियों के इसी ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान के सफ़ा 55 पर यही मोलवी इस्माईल देहलवी इमामुल वहाबिया साहब लिखते हैं।

इन्सान आपस में सब भाई हैं जो बड़ा बुज़ुर्ग हो वह बड़ा भाई है सो उसकी बड़े भाई की सी ताज़ीम कीजिए और मालिक सबका अल्लाह है बन्दगी उसी को चाहिए। इस हदीस से मालूम हुआ कि औलिया, अम्बिया, इमाम, इमामज़ादे पीर, शहीद, यानी जितने अल्लाह के मुक़र्रब बन्दे हैं वह सब इन्सान ही हैं और बन्दे आजिज़ मगर उनको अल्लाह ने बड़ाई दी और वह बड़े भाई हुए हमको उनकी फ़र्माबरदारी का हुक्म है। हम उनके छोटे हैं सो उनकी ताज़ीम इन्सानो की सी करनी चाहिए। न खुदा की सी।

हदीस शरीफ़ में सिर्फ इस क़दर है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम हज़राते मुहाजिरीन व अन्सार (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) के एक गिरोह में तशरीफ़ फ़र्मा हैं कि एक ऊँट आता है और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को सज्दा करता है सहाबाए किराम रदियल्लाहु तआला अन्हुम जो हुज़ूर अलैहि व अला आलिहिस्सलातु वस्सलाम के सच्चे फ़िदाई कामिल शैदाई हैं जोशे महब्बत में बेक़रार होकर अर्ज़ करते हैं या रसूलल्लाह यह चारपाये और दरख़्त भी हुज़ूर को सज्दा करते हैं फिर हम तो इन्सान हैं तो हम इस बात के ज़्यादा हक़दार हैं कि हुज़ूर को सज्दा करें सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम फ़र्माते हैं।

اُعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَاَكْرِمُوْا اَخَاكُمْ

यानी अपने रब की इबादत करो और अपने भाई की

ताज़ीम करो। इसी हदीस शरीफ़ को हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने हज़रते उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत फ़र्माया इस हदीसे करीम में तवाज़ोअन हुज़ूर सय्यिदुल आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ने अपनी ज़ाते अक़्दस को हज़राते मुहाजिरीनो अन्सार रदियल्लाहु तआला अन्हुम का भाई फ़र्माया।

यह सरकार का करम है हर अक़्ल वाला जानता है कि तवाज़ोअ और इन्किसार के लिए जो अल्फ़ाज़ो कलिमात बोले जाते हैं उनको दूसरा शख़्स उस बोलने वाले के हक़ में नहीं कह सकता। एक शख़्स तवाज़ोअन अपने आपको कमतरीन और ख़ाकसार और नाचीज़ कहा करता है लेकिन उसके बेटे उसके शार्गिद उसके मुरीद भी उसे सुनकर कहें कि इस क़ौल से साबित हुआ कि हमारे बाप या उस्ताज़ या पीर कमतरीन और मिट्टी के मानिन्द और हेच हैं। तो हर अक़्लमन्द उस बेटे या शार्गिद या मुरीद को बे अदब और गुस्ताख़ ही कहेगा। खुद मोलवी रशीद अहमद गंगोही ने बराहीने क़ातिआ की तक़रीज़ में अपने आपको अहक़रुन्नास यानी तमाम इन्सानों में सबसे ज़्यादा ज़लील लिखा मोलवी हुसैन अहमद टांडवी सदर मदरसा देवबन्द अपने आपको नंगे अस्लाफ़ लिखा करते हैं यानी ऐसा नालायक़ बेटा कि उसके बाप दादा को उसे अपना बेटा पोता कहते हुए शर्म आए लेकिन कोई दूसरा शख़्स अगर कहे कि मोलवी गंगोही अहक़रुन्नास और सदरे देवबन्द मोलवी हुसैन अहमद नंगे अस्लाफ़ हैं तो फ़ौरन तमाम वहाबिया देवबन्दिया बिगड़ जाएंगे कि तुमने मोलवी गंगोही व मोलवी हुसैन अहमद की तौहीन की। उन दोनों ने तवाज़ोअ इन्किसार में अपने आपको अहक़रुन्नास व नंगे अस्लाफ़ लिखा था मगर तुम जो यही अल्फ़ाज़ उनकी शान में कहते हो इसमें उनकी तौहीन है। लेकिन इमामुल वहाबिया इस्माईल देहलवी को हुज़ूर

सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की तौहीन के जोश में न तवाज़ोअ सूझी न इन्किसार सूझा साफ़ तौर पर कह दिया कि इस हदीस से साबित हुआ कि हुजूर हमारे बड़े भाई हैं और हम हुजूर के छोटे भाई हैं हुजूर की ताज़ीम ऐसी ही करनी चाहिए जैसी बस एक छोटा भाई अपने बड़े भाई की ताज़ीम किया करता है। अगर्चे आख़िर में मुसलमानों को दिखाने के लिए यह अल्फ़ाज़ भी लिख दिए कि उनकी ताज़ीम इन्सानों की सी करनी चाहिए न खुदा की सी। लेकिन ऊपर साफ़ कह दिया कि बड़े भाई की सी ताज़ीम कीजिए। इस जुम्ले में साफ़ बता दिया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की ताज़ीम जिन इन्सानों की सी करनी चाहिए वह बादशाह नहीं उस्ताद नहीं, पीर नहीं, आक़ा नहीं, बाप नहीं, बल्कि बड़े भाई हैं। हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की ताज़ीम ऐसी न करो जैसे गुलाम अपने आक़ा की, या बेटा अपने बाप की, या मुरीद अपने पीर की, या शार्गिद अपने उस्ताद की, या रअय्यत अपने बादशाह की ताज़ीम करता है। बल्कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की बस ऐसी ही ताज़ीम करो जैसे छोटा भाई अपने बड़े भाई की ताज़ीम करता है।

मोलवी रशीद अहमद गंगोही तो इमामुल वहाबिया की हिमायत में यहां तक बढ़े कि अपने फ़तावा रशीदिया हिस्सा अव्वल सफ़ा 12 में साफ़ लिख दिया कि चूंकि हदीस में आपने खुद इर्शाद फ़र्माया था कि मुझको भाई कहो बई रिआयत तक़्वियतुलईमान में इस लफ़्ज़ को लिखा है।

हालांकि यह बिल्कुल ग़लत व झूट है हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम पर खुला हुआ बुहतान है और सरीह इफ़्तिरा है। हर्गिज़ कोई हदीस क़तअन ऐसी नहीं जिसमें हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ने मुसलमानों से यह फ़र्माया हो कि मुझको भाई

कहो। यह ज़रुर है कि तवाज़ोअन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ने अपनी ज़ाते अक़्दस को भी अपने गुलामों का भाई फ़र्माया है। हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ने तवाज़ोअन अपने गुलामों को भी अपना भाई फ़र्माया है। लेकिन हर्गिज़ किसी हदीस में यह नहीं कि गुलामों को हुक्म भी दिया हो कि मुझको भाई कहो। खुद मोलवी अबुलवफ़ा साहब से मुल्तान शरीफ़ के मुनाज़रे में पूछा बार बार पूछा बइस्रार पूछा बताकीदे विसियार पूछा कि कोई एक ऐसी हदीस बता दीजिए जिसमें हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ने इर्शाद फ़र्माया हो कि मुझको भाई कहो मगर नहीं बता सके और क़ियामत तक कोई वहाबी देवबन्दी मोलवी हर्गिज़ हर्गिज़ हर्गिज नहीं बता सकता। अल्लाहु अकबर हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की शाने अक़्दस घटाने का किस क़दर जोश है कि हदीस शरीफ़ पर खुल्लम खुल्ला इफ़्तिरा व बुहतान कर दिया जाता है। वलअयाजु बिल्लाहि तआला।

और झूट तो वहाबियों देवबन्दियों की घुट्टी में पड़ा है। यही मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी अपने इसी फ़त्वे में जो किताब बराअतुल अबरार के सफ़ा 300 से सफ़ा 310 तक ग्यारह सफ़ों पर छपा है। उसके सफ़ा 302 पर लिखते हैं ।

हज़रत इमामे रब्बानी मुजद्दिदे अल्फ़े सानी को अलावा और गन्दी गुस्ताखियों के न सिर्फ़ वहाबी बल्कि वहाबियों का आक़ा व पेशवा वग़ैरह कह डाला। और वह लिखा जिसका ख्याल तक इन्सान और खुसूसन मुस्लिम क़ल्ब को तड़पा देता है।

फिर 3 सतर के बाद इस मज़मून का हवाला देते हुए लिखते हैं ।

الياقوتة الواسطة وغيره لاحمد رضا خان بريلوى

हालांकि हुजूर पुरनूर मुर्शिदे बरहक़ इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे आज़मे दीनो मिल्लत सय्यिदिना आलाहज़रत मौलाना शाह अब्दुल मुस्तफ़ा मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ाँ साहिब क़िब्ला फ़ाज़िले बरेलवी क़ादिरी बरकाती (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) का रिसालाए मुबारका "अल्याक़ूततुलवासिता यह इस वक़्त मेरे हाथ में मौजूद है किसी वहाबी देवबन्दी को यह मजाल नहीं कि हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी अलैहिर्रहमा के मुताल्लिक़ वहाबी या वहाबियों का आक़ा व पेशवा या कोई और गुस्ताख़ी का लफ़्ज़ क़ियामत तक भी दिखा सके। यह हैं वहाबियों के हकीमुल उम्मत और देवबन्दियो के मुजद्दिदुल मिल्लत मोलवी अशरफ़ अली थानवी के वकीले तफ़्हीम नम्बर 3 मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी जिसको ऐसा सफ़ेद झूट बोलते हुए ऐसा मलऊन इफ़्तिरा बांधते हुए ऐसी गन्दी तोहमत उठाते हुए ज़रा शर्म नहीं मुतलक़न हया नहीं और ग़ज़ब तो वहाबियों देवबन्दियों के खमीर में मिला हुआ है चुनांचे यही मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी जिन्हें मोलवी अशरफ़ अली थानवी ने हिफ़्ज़ुल ईमान की वही कुफ़्री इबारत अवाम को समझाने के लिए अपना वकील नम्बर 3 बनाया था उसी किताब "बरातुल अबरार" के सफ़ा 301 पर अपने इसी फ़त्वे में लिखते हैं।

बिहम्दिल्लाह ओलमाए देवबन्द किसी मुसलमान को काफ़िर नहीं कहते हत्ता कि बरेलवी मुब्तदिईन और फ़िर्क़ा परदाज़ों की भी तक्फ़ीर नहीं करते अल्लाहु अकबर कितनी ज़बरदस्त जुर्अत और कैसी शदीद वक़ाहत है कि ऐसे खुले हुए स्याह झूट पर बिहम्दिल्लाह पढ़ा जा रहा है आप हज़रात को सुना चुका किताब खोलकर दिखा चुका कि वहाबियों देवबन्दियों के ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान ने न दुब्ला छोड़ा न मोटा न बड़ा छोड़ा न छोटा हर एक मुसलमान को काफ़िर मुश्रिक बना डाला है लेकिन मुसलमानों को धोका देने के लिए यह काला झूट बोला जा रहा है कि ओलमाए देवबन्द किसी मुसलमान को काफ़िर नहीं कहते और फ़िर बकमाले हयादारी इस खुले हुए काले झूट पर बेहम्दिल्लाह भी सुना रहे हैं यानी अल्लाह तबारक व तआला की हम्द कर करके झूट के फ़न्के उड़ा रहे हैं।

मोलवी रशीद अहमद गंगोही का फ़तवा

वहाबियों देवबन्दियों के इस क़दर बेधड़क झूट बोलने पर ताज्जुब भी क्या है उनके एक बड़े मोलवी रशीद अहमद गंगोही से सुवाल किया गया कि।

दो शख़्स किज़्बे बारी में गुफ़्तगू कर रहे थे एक की तरफ़दारी के वास्ते तीसरे शख़्स ने कहा मैनें कब कहा है कि मैं वुक़ूअ का क़ाइल नही हूँ आया यह क़ाइल मुसलमान है या काफ़िर और मुसलमान है तो बिदअती ज़ाल्ल या अहले सुन्नत व जमाअत बावजूद कबूल करने के वुकूए किज़्बे बारी तआला को। बय्यिनू तूजिरु।

मोलवी गंगोही ने इस सुवाल पर जो फ़तवा दिया उसका यह फ़ोटो इस वक़्त मेरे पास मौजूद है जो आप हज़रात मुलाहज़ा फ़र्मा रहे हैं। सुनिए मोलवी गंगोही फ़र्माते हैं।

अल्जवाब – अगर शख़्से सालिस ने ताबीले आयत में ख़ता की मगर ताहम उसको काफ़िर कहना या बिदअती ज़ाल्ल कहना नहीं चाहिए। क्योंकि वुकूए ख़ुल्फ़े वईद को जमाअते कसीरा ओलमाए सलफ़ की कबूल करती है। फिर कोई सतर बाद लिखते हैं। ख़ुल्फ़े वईद ख़ास है और किज़्ब आम है। क्योंकि किज़्ब बोलते हैं क़ौले ख़िलाफ़ वाकेअ को। सौ वह गाहे वईद होता है। गाहे वादा गाहे ख़बर और सब किज़्ब के अन्वाअ हैं। और वुजूद नौअ का वुजूदे जिन्स को मुस्तल्ज़िम है। इन्सान अगर होगा तो हैवान बिज़्ज़रुर मौजूद होवेगा। लिहाज़ा वुकूए किज़्ब के माना दुरुस्त हो गये। अगर्चे बज़िम्न किसी फ़र्द के हो पस बिनाअन अलैहे इस सालिस को कोई सख़्त कलिमा न कहना चाहिए कि इसमें तक्फ़ीर

ओलमाए सलफ़ की लाज़िम आती है। हर चन्द यह कौल ज़ईफ़ ही है। मगर ताहम मुतक़द्दिमीन के मज़्हब पर साहिबे दलीले कवी को तज़्लील साहिबे दलीले ज़ईफ़ की दुरुस्त नहीं। देखो कि हनफ़ी, शाफ़ई पर और बअक्स बवज्हे कुव्वते दलील अपनी के तअन व तज़्लील नहीं कर सकता।

انا مؤمنٌ انشاء الله

का मस्अला कुतुबे अक़ाइद में खुद लिखते हैं। लिहाज़ा इस सालिस को तज़्लील व तफ़सीक़ से मामून करना चाहिए।

इस नजिस नापाक फ़तवे का खुलासा मतलब यह हुआ कि अगर्चे इस तीसरे शख़्स ने आयतों का मतलब बताने में ग़लती की लेकिन फिर भी उसको काफ़िर या गुमराह या फ़ासिक़ नहीं कहना चाहिए बल्कि उसको कोई सख़्त कलिमा भी नहीं कहना चाहिए। क्योंकि बहुत से अगले इमामों का मज़्हब भी यही था कि खुदा झूटा है। जिस तरह हनफ़ी शाफ़ई का इख़्तिलाफ़ है हनफ़ी कहते हैं नमाज़ में नाफ़ से नीचे हाथ बांधो शाफ़ई कहते हैं नमाज़ में नाफ़ से ऊपर हाथ बांधो मगर न तो हनफ़ी शाफ़इयों को काफ़िर कहते हैं न शाफ़ई हन्फ़ियों को काफ़िर कहते हैं। इसी तरह यह इख़्तिलाफ़ भी है कोई इमाम कहता है कि खुदा सच्चा है कोई इमाम कहता है कि खुदा झूटा है। मगर जो शख़्स खुदा को सच्चा कहे उसको यह हक़ नहीं कि खुदा को झूटा कहने वाले को काफ़िर कहे। क्योंकि वुकूए किज़्बे बारी के माना दुरुस्त हो गए यानी यह बात ठीक हो गई कि खुदा झूटा है।

प्यारे सुन्नी भाइयो! खुदारा इन्साफ़। ईमान काहे का नाम था। तस्दीक़े इलाही का। तस्दीक़ का सरीह मुख़ालिफ़ क्या है। तक्ज़ीब। तक्ज़ीब के क्या माना हैं किसी की तरफ़ किज़्ब मन्सूब करना जब सराहतन खुदा को काज़िब कहकर भी ईमान बाक़ी रहे तो खुदा जाने ईमान किस जानवर का नाम है। खुदा जाने मजूस व हुनूद व नसारा व यहूद क्यों काफ़िर हुए उनमें तो कोई साफ़

साफ़ अपने माबूद को झूटा भी नहीं बताता। हां माबूदे बरहक़ की बातों को यूं नहीं मानते कि उन्हें उसकी बातें ही नहीं जानते या तस्लीम नहीं करते। ऐसा तो दुनिया के पर्दे पर कोई काफिर सा काफ़िर भी शायद न निकले। खुदा को खुदा मानता हो उसके कलाम को उसका कलाम जानता हो और फिर बेधड़क यूं कहता हो कि उसने झूट बोला उससे कुफ़्रए किज़्ब के माना दुरुस्त हो गये। वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलीय्यिल अज़ीम। वहाबियों देवबन्दियों के यहाँ जब खुदा झूट बोल चुका तो रसूल व कुर्आन व इस्लाम व ईमान सब हाथ से जाता रहा वलअयाज़ु बिल्लाहि तआला।

बहर हाल कहना यह है कि वहाबियों देवबन्दियों के ख़्याल में झूट बोलना खुदा की सुन्नत है। तो फिर उसके बन्दे क्यों बेतकान सफ़ेद व स्याह झूट न बोलें। इसी लिए मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी को स्याह झूट बोलते शर्म न आई कि मआज़ल्लाह आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहिब अलैहिर्रहमा ने "अल्याकूततुल्वासिता" में हज़रत इमामे रब्बानी मुजद्दिदे अल्फ़े सानी अलैहिर्रहमा को वहाबी बल्कि वहाबियों का आक़ा व पेशवा लिख दिया है। हालांकि मुनाज़िरए बसडीला ज़िला बस्ती में मोलवी अबुलवफ़ा के सामने मैंने रिसालए मुबारक "अल्याकूततुल वासिता" पेश किया और मुतालबा ज़बरदस्त व ज़ोरदार मुतालबा किया कि यह एक मुख़्तसर रिसाला सिर्फ 24 सफ़हों का है इसमें वह जगह बता दीजिए जहां हज़रत इमामे रब्बानी मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह को वहाबी और वहाबियों का आक़ा व पेशवा लिखा हो अगर्चे तीन रोज़ तक पैहम मुतालबाते क़ाहिरा उन पर होते रहे लेकिन वह न बता सके और न अब कोई वहाबी देवबन्दी इस खुले हुए स्याह झूट को सच बता सकता है। मगर फिर भी न तो झूट से तौबा की न अपने फ़त्वे की इस्लाह छपवाई। "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन"

और चूंकि वहाबिया देवबन्दिया के अक़ीदे में झूट बोलना ख़ुदा की सुन्नत है इसीलिए मोलवी रशीद अहमद गंगोही ने यह सफ़ेद झूट बरमला बोला कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने ख़ुद हदीस में फ़र्माया था कि मुझको भाई कहो। अल्ग़रज़ गुज़ारिश यह है कि इमामुल वहाबिया मोलवी इस्माईल देहलवी ने हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को बड़ा भाई बताकर और हुज़ूर अलैहि व अला आलिहिस्सलातु वस्सलाम की ताज़ीम बड़े भाई की सी ठहरा कर हुज़ूर अलैहि व अला आलिहिस्सलातु वस्सलाम की तौहीन की कुर्आने करीम की तक्ज़ीब की।

वहाबियों देवबन्दियों के इस ऐने इस्लाम में और बहुत से अक़्वाले कुफ़्रिया हैं तवालत के ख़्याल से मैं सिर्फ़ इतनी ही इबारतों पर इक्तिफ़ा करता हूँ जो आप हज़रात को दिखा चुका हूँ। सुना चुका हूँ। बहरहाल इन इबारतों से वहाबियों नज्दियों का पाचवां मख़्सूस अक़ीदए बातिला फ़ासिदा जो मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी ने बताया कि।

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी अपने को अयाजन बिल्लाह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के हम पल्ला समझना तमाम वहाबियों देवबन्दियों का भी पुख़्ता अक़ीदा होना साबित हो गया। यहाँ पर सिर्फ़ तीन मुख़्तसर बातें और सुन लीजिए। (पहली) बात तो यह है कि यह अक़ीदए ज़रुरिया दीनिया ईमानिया है कि ज़ाती इल्म जो ख़ुद बख़ुद अपनी ज़ात से बग़ैर किसी दूसरे के बताए हुए हासिल हो यह सिर्फ़ अल्लाह तबारक व तआला ही की शान है। अल्लाह तआला के सिवा किसी और को किसी ज़र्रे के करोरवें हिस्से का इल्म ज़ाती तौर पर बग़ैर ख़ुदा के दिए हुए हर्गिज़ नहीं हो सकता। जो शख़्स

अल्लाह तआला के सिवा किसी और के लिए गैब या शहादत का जाती इल्म माने वह कतअन यकीनन ऐसा काफिर व मुर्तद है कि जो शख़्स उसके कुफ्र पर मुत्तला होने के बाद भी उसके काफिर मुर्तद होने में शक रखे वह खुद भी यकीनन काफिर व मुर्तद है क्योंकि जाती इल्म सिर्फ खुदा ही के लिए है किसी शख़्स के लिए जाती इल्म बगैर खुदा के दिए हुए मानना मआज़ल्लाह उसको भी खुदा मानना है।(दूसरी) बात यह है कि अताई इल्म जो किसी दूसरे का दिया हुआ हो हर्गिज खुदा के लिए नहीं हो सकता। खुदा इससे पाक है कि मआजल्लाह कोई दूसरा उसको इल्म या किसी किस्म का कोई और कमाल अता करे और शरीअते मुतहहरा में शिर्क सिर्फ इसी का नाम है कि इबादत में किसी और को खुदा का शरीक किया जाए या अल्लाह तबारक व तआला के किसी वस्फ में उसको शरीक माना जाए। क्योंकि अल्लाह तबारक व तआला की हर एक सिफत कतअन यकीनन उसी के साथ खास है। तो जो शख़्स तमाम रुए ज़मीन के ज़र्रे ज़र्रे का बल्कि तमाम ज़मीन और तमाम आसमानों की हरएक चीज़ का बल्कि तमाम आलम की हरएक शै का इल्मे मुहीत अल्लाह तआला की अता से उसके किसी बन्दे के लिए माने लेकिन उस बन्दे को माबूद न माने तो वह हर्गिज़ मुश्रिक नहीं उसको मुश्रिक कहने का यह मतलब होगा कि अताई इल्म भी मआज़ल्लाह अल्लाह तआला की सिफ़त है। अताई इल्म सिर्फ़ बन्दे ही के लिए है अल्लाह तआला के लिए अताई इल्म मानना मआज़ल्लाह उसकी खुदाई से इन्कार करना और अल्लाह तआला को बन्दा मानना है। लेकिन वहाबियों देवबन्दियों ने इन दोनों ज़रुरी दीनी अक़ीदों का इन्कार करके हमारे प्यारे दीने इस्लाम में रख़्ना डाला है।

इस्राईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम को वही से पहले खुद बखुद अपनी जात से बगैर खुदा के अता फर्माये हुए यह उलूमे गैबिया हासिल थे उसको इमाम बनाना नहीं चाहिए यानी उसके पीछे नमाज पढ़ना मकरूह है अगर्चे उसके काफिर हो जाने का अन्देशा है। लेकिन फिर भी उसको काफिर कहना जाइज नहीं बल्कि उसके इस कौल में तावील करने का हुक्म है। अल्लाहु अकबर जो शख़्स एक कतई यकीनी अकीदए जरूरिया दीनिया का खुले तौर पर साफ लफ्जों में इन्कार कर रहा है मोलवी गंगोही साहब उसको काफिर कहने से भी जबान रोकने का फतवा दे रहे हैं और खुले हुए कुफ्रे कतई यकीनी में भी तावील का हुक्म सादिर फर्मा रहे हैं कि जबरदस्ती खींच तानकर, तोड़ मरोड़ कर जिस तरह भी हो सके उसके इस कतई यकीनी सरीह के भी कोई इस्लामी माना गढ़ लिए जाएं मगर यह कौल ऐसा खुला हुआ कुफ्र है जिसमें कोई तावील मुम्किन ही नहीं चुनांचे मोलवी मन्जूर सम्भली जिनको मोलवी अशरफ अली थानवी ने अपनी कुफ्री इबारत हिफ्जुल ईमान का मतलब समझाने के लिए वकील नम्बर अव्वल बनाकर लाहौर के मशहूर फ़ैसलाकुन मुनाज़रे में मेरे सामने भेजा था। मौज़ा अदरी डाकख़ाना इन्दिरा ज़िला आज़मगढ़ में कुफ़्रियाते देवबन्दिया पर मुनाज़रा पैहम तीन रोज़ तक बराबर मैं उनके साथ करता रहा उस मुनाज़रे में पै दर पै तीन रोज़ तक यह ज़ाहिर मुतालबा मेरा उन पर होता रहा कि इस कुफ़्री क़ौल में अगर कोई तावील हो सकती हो तो बराहे मेहरबानी बता दीजिए कि वह तावील क्या है हैरान व परेशान होकर आजिज़ व मजबूर होकर बज़रिए पुलिस इन्सपेक्टर मुनाज़रा बन्द करा लिया लेकिन तावील न बता सके ।

इसी तरह मोलवी अबुल वफ़ा शाहजहाँपुरी जो मोलवी अशरफ़ अली थानवी के वकीले तफ़्हीम नम्बर 3 हैं जब चन्दौसी ज़िला मुरादाबाद की जामा मस्जिद में मेरे शार्गिद मोलवी मुहम्मद

हुसैन साहिब सम्भली सल्लमहू रब्बुहुल्उला ने कुफ़्रियाते देवबन्दिया पर लाजवाब मुनाज़रा उनके साथ किया और दिन भर में यह लाजवाब मुतालबा बार बार उन पर करते रहे कि इस खुली हुई इबारते कुफ़्रियए क़तइया यक़ीनिया में कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को वग़ैर हक़ तआला के दिए हुए खुद बखुद इल्मे ग़ैव वही से पहले ही हासिल था आपके मोलवी गंगोही ने तावील करने का हुक्म दिया है तो इसमें क्या तावील हो सकती है। और अगर इसमें कोई तावील किसी क़िस्म की तावील हर्गिज़ मुम्किन न हो तो जो शख़्स कुफ़्रे सरीह ग़ैरे मुम्किनुत्तावील में भी तावील का हुक्म दे और उसको काफ़िर कहने से ज़बान रोकने का फ़तवा दे वह खुद भी बहुक्मे शरीअ़ते मुतहहरा काफ़िर मुर्तद है या नहीं हवास बाख़्ता व सरा सीमा होकर दूसरे दिन मुनाज़रे के मैदान ही में न आये और मेरे शार्गिद मौलवी मुहम्मद हुसैन सल्लमहू रब्बुलकौनेन मिन्कुल्लि शर्रिं व शैन के आगे से फ़रार की ज़िल्लत गवारा कर ली। लेकिन इस कुफ़्रे क़तई यक़ीनी में कोई तावील नहीं बता सके। और क़ियामत तक भी कोई बड़े से बड़ा वहाबी देवबन्दी इस कुफ़्रे क़तई यक़ीनी में किसी क़िस्म की कोई तावील हर्गिज़ नहीं बता सकता। अल्गरज़ हर सुन्नी मुसलमान देख रहा है कि जो शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए बग़ैर खुदा के दिए हुए ज़ाती इल्मे ग़ैब माने उसको काफ़िर कहने से ज़बान रोकने का फ़तवा और उसके इस कुफ़्रे मलऊन में तावील गढ़ने का हुक्म देकर अल्लाह तबारक व तआला के क़तई यक़ीनी तौर पर शरीके फ़िलइल्म से पाक होने का इन्कार कर दिया और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के वहदहू लाशरीकलहू होने की सख़्त शदीद तौहीन की। वलअयाज़ु बिल्लाहि तआला।

तक़्वियतुल ईमान

मुसन्निफ़ इमामुलवहाबिया मोलवी इस्माईल देहलवी

वहाबियों देवबन्दियों के इसी ऐने इस्लाम तक़्वियतुलईमान के सफ़ा 8 पर यही इमामुलवहाबिया मोलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं।

हर जगह हाजिर व नाज़िर रहना और हर चीज की ख़बर हर वक्त बराबर रखनी दूर हो या नज्दीक छुपी हो या खुली अन्धेरे में हो या उजाले मे आसमानों में हो या ज़मीनों में पहाड़ो की चोटी पर हो या समन्दर की तह मे। यह अल्लाह ही की शान है और किसी की यह शान नहीं फिर मुलाहज़ा हो इसी मज़मून के आख़िर में सफ़ा 9 पर लिखते हैं ।

अल्लाह का सा इल्म और को साबित करना सो इस अक़ीदे से आदमी अलबत्ता मुश्रिक हो जाता है ख़्वाह यह अक़ीदा अम्बिया औलिया से रखे ख़्वाह पीर व शहीद से ख़्वाह इमाम व इमामजादा से ख़्वाह भूत व परी से फिर ख़्वाह यू समझे कि यह बात उनको अपनी जात से है ख़्वाह अल्लाह के देने से गरज़ इस अक़ीदे से हर तरह शिर्क साबित होता है।

इस इबारत में साफ़ कह दिया कि आसमानों और ज़मीनों की, पहाड़ों की चोटियों और समन्दरों की तहों की, अन्धेरे और उजाले की, दूर और नज़्दीक की, खुली और छुपी हर एक चीज

की ख़बर हर वक़्त बराबर रखना और इस तरह हर जगह हाज़िर व नाज़िर रहना ख़्वाह खुद बखुद अपनी ज़ात से बग़ैर किसी दूसरे के दिए हुए हो ख़्वाह दूसरे के देने से हो हर तरह यह अल्लाह तआला ही की सिफ़त है। इसीलिए जो शख़्स इस तरह का अताए इल्मे ग़ैब अल्लाह तआला का दिया हुआ भी उसके किसी बन्दे के लिए माने उसने अल्लाह ही की सिफ़त में उसको शरीक कर लिया लिहाज़ा वह भी मुश्रिक है। सुब्हानल्लाह फ़तावए रशीदिया का तो फ़तवा है कि जो शख़्स बग़ैर ख़ुदा के दिए हुए ज़ाती इल्मे ग़ैब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए माने वह भी काफ़िर नहीं मुश्रिक नहीं।

और तक़्वियतुलईमान का फ़तवा है कि जो शख़्स यह इल्मे ग़ैब यह हाज़िर व नाज़िर होने की सिफ़त अल्लाह तआला की अता फ़र्माई हुई उसी की दी हुई उसके प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए माने वह भी मुश्रिक व काफ़िर है कहीं यह शोरा शोरी और कहीं वह बे नमकी। फ़तावा रशीदिया का वह इफ़रात भी बहुक्मे शरीअते मुतहहरा हद्दे कुफ़्र को पहुंच गया और तक़्वियतुलईमान की यह तफ़रीत भी शरअन कुफ़्र हो गई। यह सुवाल भी मुनाज़रए अदरी में मोलवी मन्जूर सम्भली पर कर चुका हूं न इस मुनाज़रे में उसका कुछ जवाब मिला न क़ियामत तक किसी वहाबी देवबन्दी को इसका जवाब देने की हिम्मत हो सकती है।

बराअतुल अबरार

उर्दू टीचर अब्दूर्रऊफ़ ख़ाँ

मतबूआ : मदीना बरकी प्रेस बिजनौर

अब कहना यह है कि वहाबियत व देवबन्दियत के एक प्रचारक जगनपुर डाकख़ाना रौनाही ज़िला फ़ैज़ाबाद के उर्दू टीचर अब्दूर्रऊफ़ ख़ाँ ने 548 सफ़ात की जो यह मबसूत व ज़ख़ीम किताब बराअतुल अबरार अन्मकाइदिल अश्रार 616 वहाबियों देवबन्दियों के दस्तख़तों के साथ मदीना बरक़ी प्रेस बिजनौर में रंगून के वहाबिया देवबन्दिया के रूपये से जो अपने वक़्त में मालदारी के लिहाज़ से शद्दाद व क़ारून की यादगार हैं छपवाकर शायेअ कराई है। इसी किताब के सफ़ा 300 से सफ़ा 310 तक में आपको मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी का फ़तवा अभी दिखा चुका हूँ मुलाहज़ा फ़र्माइए। इसी किताब के सफ़ा 57 पर टीचर साहब लिखते हैं।

मलकुलमौत और शैतान मरदूद का हर जगह हाज़िरो नाज़िर होना नस्से क़तई से साबित है और महफ़िले मीलाद में जनाबे ख़ातिमुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का तशरीफ़ लाना नस्से क़तई से साबित नहीं है। अल्किब्रियाउ लिल्लाह इन वहाबियों देवबन्दियों को हुज़ूरे अक़्दस ख़ातिमुल अम्बिया सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम से किस क़दर खुली हुई अदावत व दुश्मनी है कि हज़रत मलकुलमौत अलैहिस्सलातु वस्सलाम और शैताने मलऊन के लिए तो हर जगह हाज़िरो नाज़िर होना नस्से क़तई से साबित बता

दिया लेकिन हुजूरे अक़्दस महबूबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के सिर्फ़ महफ़िले मीलादे अक़्दस ही में तशरीफ़ लाने का नस्से क़तई से सुबूत होने का क़तअन इन्कार कर दिया और तुर्रा यह कि इसी कुफ़्री मज़मून को बराहीने क़ातिआ की उस सफ़ा 51 वाली कुफ़्री इबारत का मत़लब बताया है। नानपारा ज़िला बहराइच शरीफ़ की जामा मस्जिद में जो मआरिकतुल आरा मुनाज़रा देवबन्दी कुफ़्रियात पर मैंने मोलवी नूर मुहम्मद टान्डवी के साथ किया था उसमें जब यह इबारत पेश की तो मोलवी टान्डवी भौचक्का होकर मबहूत हो गया कुछ देर सोचकर बोला यह इबारत बराहीने क़ातिआ के सफ़ा 57 से अधूरी और नाक़िस ली गई है इसलिए इस किताब में इस इबारत का सही मत़लब नहीं समझा जा सकता। अलबत्ता बराहीने क़ातिआ के सफ़ा 57 पर यह पूरी कामिल इबारत दर्ज है वहाँ इसका सहीह मत़लब बिल्कुल वाज़ेह है। मैंने फ़ौरन बराहीने क़ातिआ का सफ़ा 57 खोलकर उनके आगे रख दिया और कहा बराहे करम वह पूरी इबारत इसमें दिखाकर सहीह मत़लब बता दीजिए मोलवी टान्डवी नूर मोहम्मद चुन्धिया से गए और कुछ जवाब नहीं दे सके। बिल्आख़िर जवाब से आजिज़ व मजबूर होकर पुलिस को अन्देशए फ़साद की झूटी रिपोर्टें दिलवाकर बज़रिए पुलिस यह ज़बरदस्त मुनाज़रा बन्द करा दिया और इस तरह लाजवाब ऐतराज़ाते क़ाहिरा से अपना पीछा छुड़ा लिया। कहना यह है कि इस किताब बराअतुल अबरार पर दस्तख़त़ करने वाले 616 वहाबिया देवबन्दिया जिनके फ़तवे इस किताब में छपे हैं जो इस किताब के मज़ामीन को दुरूस्त मानते हैं।

उन सब हज़रात का अक़ीदा इस इबारत से यह साबित

हो गया कि वह हज़रत मलकुल मौत अलैहिस्सलातु वस्सलाम और शैताने लईन का हर जगह हाज़िरो नाज़िर होना नस्से क़तई से साबित मानते हैं लेकिन जो शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को यह माने कि जहाँ महफ़िले मीलाद शरीफ़ होती है वहाँ बहुक्मे इलाही तशरीफ़ फ़र्मा होते हैं उस बेचारे को यह हज़रात वहाबिया देवबन्दिया मुश्रिक व बेईमान जानते हैं। व लाहौल व लाकुव्वत इल्लाबिल्लाहिल अलीय्यिल अज़ीम ।

लेकिन पीछा तो फ़िर भी नहीं छूटा। मैं अभी सुना चुका हूँ कि वहाबियों देवबन्दियों के ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान का फ़तवा है कि जो शख़्स किसी वली नबी को पीर व शहीद को किसी इमाम व इमामजा़दे को, किसी भूत व परी को, किसी जिन व शैतान को, हर जगह हाज़िर व नाज़िर माने वह हर तरह मुश्रिक व काफ़िर है ख़्वाह यह हाज़िरो नाज़िर होने की सिफ़त उसके लिए ज़ाती माने या अल्लाह की दी हुई माने। दोनों सूरतों में शिर्क व कुफ़्र साबित है तो अब बेचारे सुन्नी मुसलमानों को मुश्रिक व काफ़िर बनाने वाले यह 616 हज़राते मोलवियाने वहाबिया देवबन्दिया खुद अपने ही ऐने इस्लाम तक़्वियतुल ईमान के फ़तवे से मुश्रिक व काफ़िर होगए। लिहाज़ा बराअतुल अबरार किताब सारी की सारी मरदूद व ना मोअतबर हो गई। क्योंकि मुश्रिकों की तस्नीफ़ है ।सच्च है "चाहकन रा चाह दर पेश"

وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ (سورہ فاطر، آیت ۴۳)

बुरा मकर करने वाले का मकर ख़ुद उसी पर पलट पड़ता है।

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (سورہ صٰفٰت، آیت ۱۸۲)

फ़तावा रशीदिया हिस्सा सोम व हिस्सा दोम

मुसन्निफ़ मोलवी रशीद अहमद गंगोही

हां अब तीसरी बात और सुन लीजिए : वहाबियों देवबन्दियों के यही बड़े मोलवी रशीद अहमद गंगोही अपने फ़तावा रशीदिया हिस्सा सोम सफ़ा 16 पर इमामुल वहाबिया इस्माईल देहलवी के मुताल्लिक लिखते हैं यह किताब मुलाहज़ा हो ।

जो ऐसा शख़्स हो कि ज़ाहिर में तक़वा के साथ रहा और फिर हक़ तआला की राह में शहीद हो वह क़तई जन्नती है और मुख़्लिस वली है ऐसे शख़्स को मरदूद कहना ख़ुद मरदूद होना है और ऐसे मक़बूल को काफ़िर कहना ख़ुद काफ़िर होना है।

इस इबारत में इमामुल वहाबिया मोलवी इस्माईल देहलवी को मुत्तक़ी क़तई जन्नती और मुख़्लिस वली और मक़बूल बताया और साफ़ कह दिया कि जो उनको मरदूद कहे वह ख़ुद मरदूद है और उनको काफ़िर कहने वाला ख़ुद ही काफ़िर है। यह मर्तबा तो वहाबियों देवबन्दियों के यहाँ इमामुल वहाबिया का है लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के प्यारे सहाबाए किराम मुहाजिरीन व अन्सार (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) का मर्तबा इन वहाबियों देवबन्दियों के यहाँ इससे बहुत ज़्यादा घटा हुआ है चुनांचे अपने फ़तावा रशीदिया हिस्सा दोम के सफ़ा 141 पर लिखते हैं।

जो शख़्स सहाबाए किराम में से किसी की तक्फ़ीर करे वह मलऊन है ऐसे शख़्स को इमाम मस्जिद बनाना हराम है और वह अपनी इस कबीरा के सबब सुन्नत जमाअत से

ख़ारिज न होगा।

इस इबारत में मोलवी गंगोही ने साफ़ कह दिया कि हज़रात सहाबाए किराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) में से किसी सहाबी को मआज़ल्लाह काफ़िर कहने वाला मलऊन है। उसके पीछे नमाज़ पढ़ना हराम है। फिर भी वह अपने इस कबीरा गुनाह के सबब न काफ़िर होगा न गुमराह होगा बल्कि अहले सुन्नत व जमाअत ही में दाख़िल रहेगा। सहाबाए किराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) में से किसी सहाबी को काफ़िर कहने की वजह से न उसके मुसलमान होने में कुछ फ़र्क़ पड़ेगा न उसके सुन्नी होने में कुछ ख़लल आयेगा। यह हज़रात सहाबाए किराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) की कैसी ज़बरदस्त तौहीन है कि इमामुल वहाबिया का मर्तबा इनसे भी बढ़ा दिया गया।

मोलवी इस्माईल देहलवी इमामुल वहाबिया को काफ़िर कहने वाला तो न सुन्नी रहे न मुसलमान रहे बल्कि काफ़िर हो जाये लेकिन हज़रात सहाबाए किराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) में से किसी को काफ़िर कहने वाला न काफ़िर होगा न गुमराह होगा बल्कि बदस्तूर सुन्नी मुसलमान ही बना रहे। फ़इलल्लाहिल मुश्तका।

मेरे इस बयान से आप सब हज़रात बख़ूबी समझ गये होंगे कि मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी ने वहाबियों के जिस क़दर अक़ाइदे बातिला फ़ासिदा अपने इस फ़तवे में लिखे वहाबियों देवबन्दियों की मानी हुई किताबों से रोशन कि वही सब बातिल व फ़ासिद अक़ीदे इन वहाबियों देवबन्दियों के भी हैं।

1. मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज्दी के अक़ीदों को उम्दा भी बताते हैं।

2. उसको और उसके पैरुओं को अच्छा भी कहते हैं।

3. अपने फ़िरक़ए बातिला के सिवा साढ़े तेरह सौ बरस के जुम्ला अहले इस्लाम को काफ़िर व मुश्रिक भी कहते हैं।

4.हुजूर हय्यि व क्य्यिम सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हयात बादल्विसाल का इन्कार भी करते हैं।

5. बल्कि मआज़ल्लाह मरकर मिट्टी में मिलने वाला बताते हैं।

6. हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के रौज़ए अक़्दस की ज़्यारत के लिए सफ़र करने को कुफ़्र व शिर्क भी कहते हैं।

7. जो शख़्स हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से शफ़ाअत की उम्मीद रखे और हुजूर अलैहि व अला आलिहिस्सलातु वस्सलाम को अपना शफ़ीअ माने उसको अबूजहल के बराबर काफ़िर व मुश्रिक भी कहते हैं।

8. किसी इमाम मुज्तहिद की तक़्लीद करने वाले को मुश्रिक व काफ़िर भी मानते हैं।

9. सूफ़ियाए किराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) की बयअ़त करके क़ादिरी चिश्ती, सोहरवर्दी, नक़्शबन्दी, अत्तासी, अब्दली, शाज़ली ऐद रुसी वग़ैरह बनने को आख़िरत की रुस्याही कुफ़्र व गुमराही भी कहते हैं।

10. हज़राते सूफ़िया साफ़िया नफ़अनल्लाहु तआला फ़िद्दारैन बिबरकातिहिमुल कुद्सिया के अज़्कार व अश्ग़ाल करने वाले को मुश्रिक व काफ़िर भी कहते हैं।

11. हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की शाने अक़्दस में गुस्ताख़ियां भी करते हैं।

12. हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को अपनी तरह एक मामूली इन्सान और अल्लाह तआला की शान के आगे 13.चमार से भी ज़्यादा ज़लील और 14.खुदाए तआला के रुबरु एक ज़र्रए नाचीज़ से भी कमतर और 15.हुजूर अलैहि व अला आलिहिस्सलातु वस्सलाम की ताज़ीम को बड़े भाई की सी ताज़ीम और 16.हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही

वसल्लम की सरदारी हर कौम के चौधरी और हर गांव के ज़मींदार की सी सरदारी और 17.नमाज़ में हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का ख़्याले मुबारक लाने को बैल और गदहे के ख़्याल में डूब जाने से भी बदरजहा बदतर और 18.हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की तारीफ़ को हराम और 19.चालिस बरस की उम्र शरीफ़ तक हुजूर नबीए उम्मी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को तहज़ीब और ईमान से क़तअन नावाक़िफ़ व बेख़बर भी कहते हैं।

20. हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के इल्मे ग़ैब को हरएक बच्चे हरएक पागल का सा और हरएक जानवर व हरएक चारपाए का सा इल्मे ग़ैब भी मानते हैं।

21. हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के इल्मे अक़्दस को हज़रत मलकुलमौत अलैहिस्सलातु वस्सलाम व शैतान‌े लईन के इल्म से कम भी कहते हैं।

22. हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के मोअजज़ों से कमाल व कूव्वत में बढ़े हुए तमाशे और जादू दिखा सकने वाला भानमतियों और जादूगरों को भी बताते हैं।

23. यह भी कहते हैं कि रसूल को ग़ैब की क्या ख़बर।

24. यह भी मानते हैं कि रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता।

25. यह भी कहते हैं कि रसूल की तारीफ़ बस ऐसी ही करो जैसे एक बशर की करते हो सौ उसमें भी कम ही करो।

26. यह भी कहते हैं कि जिसका नाम मुहम्मद या अली है वह किसी चीज़ का मुख़्तार नहीं।

27. यह भी कहते हैं कि पैग़म्बर अपनी बेटी को भी दोज़ख़ से नहीं बचा सकते।

वह अपने ही आपको डरते हैं फिर दूसरे को जहन्नम से क्या बचा

सकते हैं। फिर सिर्फ़ इन्हीं बातों पर बस नहीं।

28. हज़राते सहाबाए किराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) की तौहीन भी करते हैं कि उनमें से किसी को काफ़िर कहने वाला न काफ़िर होगा न गुमराह होगा बल्कि सुन्नी मुसलमान रहेगा।

29. हज़रात अहलेबयते इज़ाम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) की इहानत भी करते हैं कि उनकी मुम्ताज़ तरीन हस्ती हज़रत सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा (रदियल्लाहु तआला अन्हा) को भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम दोज़ख़ से नहीं बचा सकते।

30. कुर्आने पाक की शान में गुस्ताख़ी भी करते हैं कि इन्साफ़ के लिए कुर्आने पाक की पाक मुबारक आयतों को अंगूर के पत्ते पर लिखकर बाए रान पर बांधने का अमल शायेअ करते हैं।

31. हत्ता कि खुद अल्लाह तबारक व तआला की शान में कहते हैं कि वह झूट बोल सकता है।

32. चोरी कर सकता है। 33.शराब पी सकता है।

34. जाहिल हो सकता है।

35. ज़ालिम हो सकता है।

36. जितने गन्दे घिनौने बुरे काम बन्दे कर सकते हैं वह सब काम खुदा भी कर सकता है।

37. हज़रत सय्यिदिना नूह नजियुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम के ज़माने में वादा ख़िलाफ़ी कर चुका।

38. उसका झूट ज़ाहिर हो चुका।

39. जो शख़्स यूं कहे खुदा झूट बोला, झूट बोलता है, झूट बोलेगा वह न काफ़िर है 40.न गुमराह, 41.न गुनहगार। बल्कि मुसलमान सुन्नी सालेह है।

42. उसको कोई सख़्त कलमा भी न कहना चाहिए।

43. यहां तक कि कहते हैं वुकूए किज़्ब के माना दुरुस्त हो गए

यानी यह बात ठीक हो गई कि खुदा झूटा है। फिर सिर्फ़ इन्हीं कुफ़्रियात पर बस नहीं।

44. बल्कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के वस्फ़े करीम ख़ातिमुन्नबिय्यीन के इस ज़रुरी दीनी माना को यह हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम सबसे पिछले नबी हैं, नासमझ लोगों का ख़्याल ठहराते हैं।

45. हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के ज़मानए अक़्दस में नये नबी के पैदा होने को हुजूर के ख़ातिमुल अम्बिया होने में कुछ ख़लल न डालने वाला बताते हैं।

46. हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के बाद भी जदीद नबियों के पैदा होने से हुजूर के ख़ातिमुन्नबिय्यीन होने में कुछ फ़र्क़ न आने का गीत गाते हैं।

47. साफ़ कहते हैं कि इस ज़माने में जो और नबी होंगे उनमें जो अम्बिया हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के मुशाबा होंगे वह हुजूर ही के नूरे नुबुव्वत से ऐसे रोशन होंगे जैसे आफ़ताब के मुक़ाबिल आइना होता है। उसमें आफ़ताब ही का अक्स बिल्कुल आफ़ताब ही की तरह नज़र आया करता है फिर अगर यह सही है कि दरख़्त अपने फलों से पहचाने जाते हैं, तो फ़िरके भी ज़रुर अपने अक़्वाल और अपने अक़ाइद से पहचाने जाएंगे। जब वहाबियों के सारे अक़ाइदे बातिला फ़ासिदा देवबन्दी मोलवियों की मोअतबर व मुस्तनद किताबों में साफ़ तौर पर मौजूद हैं तो इन किताबों के मुसन्निफ़ीन के और इन किताबों को मानने वालों के वहाबी होने में क्या शक व शुब्हा रह गया। बल्कि आप हज़रात देख रहे हैं कि अक़ाइदे बातिलाए फ़ासिदा के लिहाज़ से नज्दी वहाबियों पर भी इन देवबन्दियों वहाबियों का नम्बर बदरजहा बढ़ा चढ़ा हुआ है। बहुतेरे कलिमाते कुफ़्रिया इन देवबन्दी वहाबियों

ने ऐसे बके हैं जो उन नज्दियों वहाबियों से भी साबित नहीं। तो इन देवबन्दियों की वहाबियत उन नज्दियों की वहाबियत से भी बदरजहा बढ़ी चढ़ी हुई है। फिर भी मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी का अपने इसी फ़तवे में सफ़ा 303पर यह लिखना (कैसा ज़बरदस्त तक़िय्या और कितना रोशन झूट है)

इन रज़वी या रज़ाई बदनसीबों ने जिनका कोई ज़रिअए मआश सिवाए दज्ल व फ़रेब के न था न इल्म न अमल न दयानत न तक़वा न सदाक़त न हया न कुव्वते कसब सिर्फ़ अपना उल्लू सीधा करने और अपने उयूब छुपाने के वास्ते अकाबिर ओलमाए रब्बानिय्यीन पर फ़र्ज़ी बुहतान व दूर अज़ क़यास बातें गढ़ गढ़ कर अवाम को गुमराह किया और इन्दल्लाह रुस्याह हुए। जिस शख़्स को मुत्तबेए सुन्नत शिफ़्तए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम माहिए बिदअ़त देखा फ़ौरन वहाबी कहकर अवाम को उससे बरगश्ता कर दिया ताकि इनके हल्वे मान्डे नज़्रानों में फ़र्क़ न आ जाए।

तहज़ीब व शाइस्तगी और शराफ़त व सन्जीदगी से भरी हुई इस इबारत पर हमको मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी से कोई शिकायत नहीं जो लोग खुद अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की पाक मुबारक शानों में गुस्ताख़ियां बदज़बानियां ज़बानदराज़ियां दुश्नाम बाज़ियां करते रहने के आदी हो चुके हैं अगर हम सुन्नी मुसलमानों को वह बदनसीब दज्जाल फ़रेबी, बेइल्म, बेअमल, बद दियानत, फ़ासिक़, काज़िब, बेहया, अपना उल्लू सीधा करने वाले, अपने उयूब छुपाने वाले, बड़े बड़े रब्बानी आलिमों पर बुहतान और ख़िलाफ़े अक़्ल बातें गढ़ने वाले इस तरह अवाम को गुमराह करने वाले और अल्लाह तआला के हुज़ूर रुस्याह जो कुछ चाहें कहे

बकें लिखें छापें शायेअ करें तो हम खुश हैं कि दुष्नामी हज़रात जितनी देर तक हमको गालियां देने बुरा कहने में मशगूल रहेंगे कम अज़ कम उतनी देर तक तो इनकी ज़बान इनके क़लम से अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की शान में गुस्ताख़ियां दुश्नामें सादिर न होंगी। कम अज़ कम उतनी ही देर तक हम मुसलमानाने अहले सुन्नत की इज़्ज़तें आबरुएं अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की इज़्ज़त व अज़मत के लिए सिपर रहेंगी।

कहना सिर्फ़ इस क़दर है कि जिस तरह राफ़ज़ी लोग हम अहले सुन्नत को कभी आम्मा कह देते हैं कभी नासबी कह देते हैं इसी तरह यह वहाबी देवबन्दियों ने भी हम मुसलमानाने अहले सुन्नत को बदनाम करने के लिए रज़वी फ़िरक़ा, रज़ाई गिरोह, रज़ा ख़्वानी पार्टी, बरेलवी जमाअत, कह दिया करते हैं ताकि अवाम को यूं गुमराह करें कि मुसलमानों में मआज़ल्लाह यह भी कोई जदीद फिरक़ा है।

فَاللّٰهُ يُحَاسِبُهُمْ وَيُجَازِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

बहरहाल मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी का इन देवबन्दी मोलवियों और उनके हम अक़ीदा लोगों के वहाबी होने से इन्कार करना और उन्हें वहाबी बताने को फ़र्ज़ी बुहतान कहना कैसा ज़बरदस्त तक़िय्या और कितना रोशन झूट है। वहाबियों के सारे के सारे कुफ़्री बातिल व फ़ासिद अक़ीदे मानते भी जाओ और फिर अपनी वहाबियत को सुन्नियत व हनफ़ियत के पर्दे में छुपाओ। भोले भाले सीधे सादे सुन्नी मुसलमानों को बहकाने के लिए तक़िय्या फ़र्माओ।

मुनाज़रए चन्दौसी

इसी तक़िय्ये की एक बदतरीन मिसाल यह है कि मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँ पुरी ने मुनाज़रए चन्दौसी में मोलवी अशरफ़ अली थानवी के कुफ़्र को इस्लाम बनाने के लिए यह झूट बोला कि इबारते हिफ़्ज़ुल ईमान में बक़ौले ज़ैद का लफ़्ज़ है मोलवी थानवी खुद हुज़ूर की तौहीन नहीं कर रहे हैं बल्कि ज़ैद को हुज़ूर की तौहीन से रोक रहे हैं और जब मेरे शार्गिद मौलाना मुहम्मद हुसैन सम्भली सल्लमहू रब्बहू ने उनके इस खुले हुए झूट पर यह रद्दे क़ाहिर फ़र्माया कि हिफ़्ज़ुल ईमान के सुवाल में ज़ैद का क़ौल तो सिर्फ़ इसी क़दर है कि।

इल्मे ग़ैब की दो क़िस्में हैं

1. बिज़्ज़ात इस माना कर आलिमुलग़ैब खुदा तआला के सिवा कोई नहीं हो सकता।

2. और बवास्ता इस माना कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम आलिमुलग़ैब थे।

ज़ैद की इस इबारत में न तो इल्मे ग़ैब को कुल इल्मे ग़ैब और बाज़ इल्मे ग़ैब दो क़िस्मों पर तक़सीम किया गया है न रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए कुल इल्मे ग़ैब को अक़्ली व नक़्ली दलीलों से बातिल बताया गया है न बाज़ इल्मे ग़ैब में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की खुसूसियत का इन्कार किया गया है। न ज़ैद की इबारत में ज़ैद व अमर के अल्फ़ाज़ हैं न ज़ैद के क़ौल में हर सबी मजनून और जमीअ हैवानात व बहाइम के कलिमात हैं न ज़ैद की इबारत में ज़ैद व अमर के लिए या हर सबी व मजनून के लिए या तमाम जानवरों चारपायों के लिए किसी तरह का इल्मे ग़ैब साबित किया गया है। ज़ैद के क़ौल का मतलब तो सिर्फ़ इसी क़दर है कि ज़ाती इल्मे ग़ैब अल्लाह तआला

के सिवा किसी को नहीं और अल्लाह तआला की अता से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को इल्मे ग़ैब है। अल्लाह तबारक व तआला आलिमुलग़ैब बिज़्ज़ात है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम आलिमुलग़ैब बेअताइल्लाहि तआला हैं।

बोलिए ज़ैद के इस कौल में हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की क्या तौहीन है जिससे ज़ैद को रोकने की ज़रुरत मोलवी थानवी को महसूस हुई हर्गिज़ नहीं। बल्कि खुद मोलवी अशरफ़ अली थानवी इल्मे ग़ैब की दो क़िस्में करते हैं। कुल इल्मे ग़ैब और बाज़ इल्मे ग़ैब फिर आख़िर इबारत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए कुल इल्मे ग़ैब को नक़्ली और अक़्ली दलीलों से बात़िल बताते हैं अब हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए सिर्फ़ बाज़ इल्मे ग़ैब ही रह गया इसको बात़िल नहीं बताते बल्कि मुसलमानाने अहले सुन्नत के डर से बाज़ इल्मे ग़ैब को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए मजबूरन तस्लीम करते हैं लेकिन इस बाज़ इल्मे ग़ैब में हुजूर अलैहि व अला आलिहिस्सलातु वस्सलाम की खुसूसियत को बात़िल बताते हैं कहते हैं कि इसमें हुजूर की क्या तख्सीस है यानी यह जो बाज़ ग़ैबों का इल्म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को है इसमें हुजूर की कुछ खुसूसियत नहीं फिर कहते हैं कि ऐसा इल्मे ग़ैब तो जैद व अमर (यानी आम व ख़ास हर एक शख़्स को) बल्कि हर एक सबी व मजनून (यानी हर एक बच्चे हर एक पागल को) बल्कि जमीअ हैवानात व बहाइम (यानी तमाम जानवरों और सब चारपाओं) के लिए भी हासिल हैं। हर शख़्स जिसके सर में दिमाग़ और दिमाग़ में समझने का माद्दा है देख रहा है कि खुद मोलवी अशरफ़ अली थानवी ही ने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

अला आलिही वसल्लम के पाक मुबारक इल्मे गैब को हरएक ऐरे गैरे नत्थू खैरे का सा हरएक बच्चे हर एक पागल का सा हरएक जानवर हरएक चारपाये का सा इल्मे ग़ैब बताया मोलवी थानवी ही ने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की यह शदीद व सख़्त तौहीन की। फिर इस तौहीन का मुरतकिब ज़ैद बिचारे को बता देना और बिचारे ज़ैद के सर इस तौहीन को थोप देना और यह कह देना कि मोलवी अशरफ़ अली थानवी ने ज़ैद को तौहीन करने से रोका है। कैसा ज़बरदस्त तक़िय्या और कैसा खुला हुआ झूट है। इससे तो यही बेहतर था कि आप यूं कह देते कि हिफ़्ज़ुल ईमान मोलवी थानवी की तस्नीफ़ ही नहीं। हिफ़्ज़ुल ईमान तो ज़ैद की लिखी हुई किताब है। चलिए छुट्टी हो जाती लेकिन जब हर्गिज़ ऐसा नहीं और हिफ़्ज़ुल ईमान यक़ीनन मोलवी थानवी ही की किताब है। तो साफ़ ज़ाहिर है बिला शक व शुब्हा ज़ाहिर है कि ज़ैद जो एक सुन्नी मुसलमान है उसने अपने क़ौल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की हम्दो सना करते हुए हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का एक वस्फ़े कमाल बयान किया कि तालीमे खुदावन्दी के वास्ते से हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम आलिमुलग़ैब हैं। ज़ैद के इस क़ौल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का इल्मे ग़ैब बेअताइल्लाहि तआला देखकर मोलवी थानवी बिगड़ गये, बिफर गये, चिढ़ गये बिखर गए।

और बक़ौले ज़ैद कहकर ज़ैद के इस सच्चे ईमानी इस्लामी क़ौल पर ऐतराज़ करने लग गये चुनांचे कहते हैं।

आपकी ज़ाते मुक़द्दसा पर इल्मे ग़ैब का हुक्म किया जाना अगर बक़ौले ज़ैद सहीह हो इसका साफ़ सरीह मतलब यह हुआ कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की हम्दो सना करते हुए हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि

व अला आलिही वसल्लम को आलिमुल ग़ैब बेतालीमिल्लाही तआला कहना मोलवी थानवी के नज़्दीक सहीह नहीं। अगर ज़ैद के क़ौल के मुताबिक ऐसा कहना सहीह हो तो अब मोलवी थानवी कहते हैं कि दरयाफ़्त तलब यह अम्र है कि इस ग़ैब से मुराद बाज़ ग़ैब हैं या कुल ग़ैब यानी मोलवी थानवी ज़ैद से पूछ रहे हैं कि हुज़ूर को आलिमुल ग़ैब बेतालीमिल्लाहि तआला कहना जो तुम सहीह मानते हो इसमें ग़ैब से कुल इल्मे ग़ैब मुराद लेते हो या बाज़ इल्मे ग़ैब तो ठीक दोपहर के आफ़ताब से भी ज़्यादा रोशन तौर पर साबित कि बक़ौले ज़ैद का सिर्फ़ यही मतलब है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को अल्लाह तआला की अता से आलिमुलग़ैब कहना ज़ैद के क़ौल पर सहीह है। आप बक़ौले ज़ैद का मतलब जो ज़बरदस्ती यह गढ़ रहे हैं कि ज़ैद ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की तौहीन की है ज़ैद ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के इल्मे ग़ैब को बच्चों पागलों जानवरों चारपायों के इल्मे ग़ैब से तश्बीह दी है हद भर की ढिटाई और बेहयाई है जो मौलवी तो मौलवी किसी नाख़्वान्दा शरीफ़ आदमी का भी काम नहीं तो मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी ऐसे लाजवाब हुए कि गोया उनमें सांस ही नहीं थी। व लिल्लाहिल्हम्द व अला हबीबिही व आलिहिस्सलातु वस्सलाम। यहीं पर एक ज़रुरी बात और भी सुन लीजिए इस हिफ़्ज़ुलईमान के आख़िर में मोलवी अशरफ़ अली थानवी लिखते हैं।

ज़ैद का अक़ीदा और क़ौल सर ता सर ग़लत और ख़िलाफ़े नुसूसे शरइया है हर्गिज़ इसका क़बूल करना किसी को जाइज़ नहीं। ज़ैद को चाहिए कि तौबा करे और इत्तिबाए सुन्नत इख़्तियार करे हर उर्दू ख़्वां भी जानता है कि उर्दू मुहावरे में सरासर और सर ता सर के माना सबका सब सारे का सारा तमाम व कमाल होते हैं किसी मज़्मून को सर ता सर सहीह कहने का

यही मत़लब होता है कि इस मज़्मून का हर एक जुज़ सहीह है किसी मज़्मून को सर ता सर ग़लत कहने का मत़लब यही होता है कि इस मज़्मून का हर हर हिस्सा ग़लत़ है। अब ज़ैद के अक़ीदे और क़ौल के दो जुज़ हैं। पहला यह कि बिज़्ज़ात आलिमुल ग़ैब अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं हो सकता दूसरा यह कि अल्लाह तआला की ताज़ीम व अत़ा के वास्ते से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम भी आलिमुल ग़ैब हैं।

अब मोलवी थानवी ज़ैद के अक़ीदे और क़ौल को सर ता सर ग़लत और नुसूसे शरइया के ख़िलाफ़ और इस पूरे अक़ीदे और क़ौल से तौबा ज़रुरी बता रहे हैं। इससे साबित हुआ कि अल्लाह तआला के सिवा किसी और का बिज़्ज़ात आलिमुलग़ैब न होना और ज़ाती इल्मे ग़ैब में अल्लाह तआला का वहदहू लाशरीक लहू होना भी मोलवी थानवी के नज़्दीक ग़लत और नुसूसे शरइया के ख़िलाफ़ है जिसका साफ़ मत़लब यही हुआ कि मोलवी थानवी के अक़ीदे में अल्लाह तआला के सिवा दूसरे भी बिज़्ज़ात आलिमुल ग़ैब हैं। बिज़्ज़ात इल्मे ग़ैब में दूसरे भी अल्लाह तआला के शरीक हैं। यह भी कुर्आने अज़ीम की खुली हुई तक्ज़ीब और अक़ीदए ज़रुरिया दीनिया का खुला हुआ इन्कार है।

अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है।

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ (سورہ نمل، آیت ۶۵)

यानी ऐ महबूब तुम फ़र्मा दो कि आसमानों और ज़मीन में कोई भी अपनी ज़ात से ग़ैब नहीं जानता बजुज़ अल्लाह के और अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِيْحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ (سورہ انعام، آیت ۵۹)

यानी और उसी के पास ग़ैब की कुन्जियां हैं जिनको उसके सिवा अपनी ज़ात से कोई नहीं जानता बहर हाल लफ़्ज़े बक़ौले ज़ैद से जो धोका दिया जाता है उसका जवाब पहले मैं अर्ज़ कर चुका हूँ

और दोबारा फिर याद देहानी करता हूँ कि अगर फ़ैज़ाबाद की पब्लिक में से हुकूमत का कोई वफ़ादार जिसका नाम ज़ैद हो यूं कहे कि हुकूमत की दो क़िस्में हैं बिज़्ज़ात इस मानाकर खुदा तआला के सिवा कोई हाकिम नहीं और बवास्ता (यानी अल्लाह ही के हुक्म व अता के वास्ते से) इस माना कर हमारे शहर फ़ैज़ाबाद के कलक्टर साहब बहादुर भी हाकिम हैं उसके जवाब में एक ग़द्दार बे वफ़ा यूं कहे।

कि कलक्टर साहब बहादुर ज़िला फ़ैज़ाबाद की जात पर हुकूमत का हुक्म किया जाना अगर बक़ौले ज़ैद वफ़ादार सहीह हो तो दरयाफ़्त तलब यह अम्र है कि इस हुकूमत से दुनिया के हर हर हिस्से हरएक ख़ित्ते पर हुकूमत मुराद है या ज़मीन के बाज हिस्सों पर। अगर ज़मीन के बाज हिस्सों पर हुकूमत मुराद है तो इसमें कलक्टर साहब बहादुर फ़ैज़ाबाद की क्या तख़्सीस है ऐसी हुकूमत तो हर चमार को अपने घर पर हर भंगी को अपने मकान पर बल्कि हर उल्लू को अपने आशियाने पर हर सूअर को अपने भट्टे पर हासिल है और अगर दुनिया के हरएक हिस्से पर हर ख़ित्ते पर हुकूमत मुराद है इस तरह कि दुनिया का कोई गोशा कोई हिस्सा खारिज न रहे तो उसका बुतलान दलीले नक़्ली व अक़्ली से साबित है।

तो क्या इस ग़द्दार बेवफ़ा का ऐसा कहना कलक्टर साहब बहादुर ज़िला फ़ैज़ाबाद की तौहीन न होगी ? होगी और ज़रूर होगी जिस सल्तनत की तरफ़ से उनको ज़िला फ़ैज़ाबाद की कलेक्टरी मिली है क्या उस ग़द्दार बे वफ़ा का यूं कहना इस सल्तनत के साथ भी ग़द्दारी न होगी ? होगी और यक़ीनन होगी क्या ऐसा कहने पर कलक्टर साहब बहादुर ज़िला फ़ैज़ाबाद का उस सल्तनत का जिसने उनको ज़िला फ़ैज़ाबाद की कलेक्टरी का ओहदा दिया है वह ग़द्दार बेवफ़ा उन दोनों का मुज्रिम न होगा ? होगा और बेशक होगा फिर जब उस ग़द्दार बेवफ़ा की दारोगीर

हो तो क्या कोई आक़िल मुन्सिफ़ उसका यह बहाना क़बूल कर लेगा कि मेरी इबारत में बक़ौले ज़ैदे वफ़ादार का लफ़्ज मौजूद है क्या उस ग़द्दार बेवफ़ा का यह हीला क़बूल किया जा सकता है कि मैनें कलक्टर साहब बहादुर ज़िला फ़ैज़ाबाद की तौहीन नहीं की है बल्कि ज़ैदे वफ़ादार को उनकी तौहीन से रोका है क्या उस ग़द्दारे बेवफ़ा को यह कहने का किसी तरह भी कुछ हक है कि अगर्चे हुकूमत की दो क़िस्में कुल दुनियां पर और बाज़ हिस्से ज़मीन पर। फिर कलक्टर साहब बहादुर ज़िला फ़ैज़ाबाद के लिए हुकूमत की पहली क़िस्म को नक़्ली व अक़्ली दलीलों से बातिल बताना फिर दूसरी क़िस्म की हुकूमत में कलक्टर साहब बहादुर ज़िला फ़ैज़ाबाद की ख़ुसूसियत का इन्कार करना फिर चमार भंगी उल्लू सूअर वग़ैरह अल्फ़ाज़ हर्गिज़ ज़ैदे वफ़ादार की इबारत में नहीं। अगर्चे यह सब बातें ख़ुद मेरी ही इबारत में हैं लेकिन मैनें तो ज़ैदे वफ़ादार को ऐसे ग़लत ख़्याल से रोका है जिससे कलक्टर साहब बहादुर ज़िला फ़ैज़ाबाद की तौहीन लाज़िम आती है। कलक्टर साहब के मुताल्लिक़ ख़ुद मैंने अपने ख़्याल का इज़्हार हर्गिज़ नहीं किया है। जिस कचहरी में ग़द्दारे बेवफ़ा पर कलक्टर साहब बहादुर की तौहीन का मुक़द्दमा पेश हो क्या उस इज्लास में उसका यह उज़्र सुना जा सकता है कि अगर्चे यह तमाम अल्फ़ाज़ व कलिमात मेरे ही हैं ज़ैदे वफ़ादार के नहीं हैं लेकिन मफ़्हूम ज़ैदे वफ़ादार ही का है। अगर इन तमाम सवालों का जवाब हर अक़्लमन्द के नज़्दीक सिर्फ़ यही हो सकता है कि नहीं नहीं हर्गिज़ नहीं तो समझ लेना चाहिए कि बादशाहों का बादशाह, शहंशाहों का शहंशाह, हक़ीक़ी बादशाह वही अल्लाह है जल्ला जलालुहू अल्लाह तबारक व तआला ने जिस ज़ाते अक़्दस को सारे जहान के लिए अपना नाइबे अकबर व ख़लीफ़ए आज़म और अपना रसूल बना कर भेजा है और उसका नाम है सय्यिदुना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम।

ज़ैदे वफ़ादार वह सुन्नी मुसलमान है जो अल्लाह तआला की अता व तालीम के वास्ते से हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को आलिमुल गैब मानता है और सरकार मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के ग़द्दार बेवफ़ा मोलवी अशरफ़ अली थानवी हैं जो इल्मे गैब की दो किस्में कुल और बाज़ करके कुल इल्मे गैब को हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के लिए नक़्ली व अक़्ली दलीलों से बातिल बता रहे हैं और बाज़ इल्मे गैब में हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की हर तरह की ख़ुसूसियत का इन्कार कर रहे हैं फिर हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के इल्मे गैब को हरएक जानवर हरएक चारपाए हरएक बच्चे हर एक पागल का सा इल्मे गैब बता रहे हैं फिर मोलवी अशरफ़ अली थानवी की तरफ़ से यह ग़लत उज़्रात यह झूटे हीले बातिल बहाने क्योंकर क़ाबिले क़बूल हो सकते हैं।

प्यारे सुन्नी मुसलमान भाइयो! आप हज़रात ने किताबें देख लीं इबारतें सुन लीं आप हज़रात पर रोशन हो गया कि इन वहाबियों देवबन्दियों ने सय्यिदिना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की कैसी कैसी इहानतें की हैं कुर्आने अज़ीम की कैसी कैसी बेअदबियां की हैं। सहाबाए किराम व अहले बयते इज़ाम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) की शान में कैसी कैसी गुस्ताख़ियां की हैं। मुक़द्दस दीने इस्लाम के अक़ाइदे ज़रुरिया दीनिया की कैसी कैसी तक्ज़ीबें की हैं। हमारे प्यारे दीने इस्लाम में कैसे कैसे रख़्ने डाले हैं हमारे महबूब मज़्हबे अहले सुन्नत पर कैसे कैसे हमले किए हैं हत्ता कि खुद अल्लाह तबारक व तआला की कैसी कैसी तौहीनें की हैं। उस पाक बे ऐब खुदाए अक्दस अज़्ज़ा व जल्ला को कैसा कैसा झुटलाया है कि आर्या समाज के पण्डितों और इसाई मिशन के पादरियों से भी तुमने

इसकी नज़ीर नहीं देखी होगी न कभी सुनी होगी।

लेकिन फिर भी वहाबिया देवबन्दिया अपने आपको वहाबी नहीं कहते बल्कि सुन्नी, हनफ़ी, चिश्ती, साबिरी, नक़्शबन्दी, मुजद्दीदी बनते हैं। बल्कि अपने आपको अहलेसुन्नत का पेशवा और मज़हबे अहलेसुन्नत का अलम्बरदार और दीने इस्लाम का सच्चा मुबल्लिग़ बताते हैं। कहीं जाकर सुन्नियों के पीर बन जाते हैं, कहीं पहुँच कर सुन्नियों के वाइज़ सुन्नियों के मौलवी कहलाते हैं, और अपने इसी तक़िय्ये के जाल में अवामे अहले इस्लाम व सुन्नियत को फंसाते हैं अगर यह वहाबी देवबन्दी लोग तक़िय्या न करते अपने आपको सुन्नी, हनफ़ी न बताते अपना वहाबी होना खुल्लमखुल्ला ज़ाहिर कर देते तो आम सुन्नी मुसलमान कहीं भी इनके धोके में हर्गिज़ न आते। जब यह अपने आपको वहाबी बताकर अपने अक़ाइदे कुफ़्रिया लोगों को सुनाते तो गंवार और जाहिल मुसलमान भी समझ लेते कि यह अक़ीदे सुन्नी मुसलमानों के नहीं बल्कि वहाबियों के हैं और वह इनके अक़ाइदे बातिला हर्गिज़ क़बूल न करते।और उस वक़्त हम भी उनसे क़तअन हर्गिज़ इस क़दर तआर्रुज़ न करते। जब तक कि यह लोग खुद हमको चैलेंज न देते क्योंकि मौजूदा गर्वन्मेंट ने हर मज़्हब वाले को उसके मज़्हब की तब्लीग़ व इशाअत का हक़ दिया है और हर मज़्हब वाले को पूरी मज़्हबी आज़ादी दी है। उस वक़्त हम समझ लेते कि जब मौजूदा गर्वन्मेंट के ज़ेरे साया आर्या अपना प्रचार करते हैं सनातन धर्म वाले अपना उपदेश देते हैं, पादरी अपना बपतिस्मा देते हैं तो इन वहाबियों को भी उनके वहाबी मज़्हब की तब्लीग़ से रोकने का हमको क़ानूनन कोई हक़ नहीं वह अपने वहाबी मज़्हब की तब्लीग़ करते।

हम अपने मज़्हबे अहलेसुन्नत की तब्लीग़ करते वहाबियों को सुन्नियों से कुछ मतलब न होता सुन्नियों को वहाबियों से कुछ सरोकार न होता लेकिन ग़ज़ब तो यह है कि यह वहाबी देवबन्दी

हज़रात जहां पहली बार पहुँचते हैं वहां सुन्नी हनफ़ी मुसलमानों के पीर या सुन्नी हनफ़ी मुसलमानों के मोलवी बन जाते हैं लोगों के सामने वहाबियों को बुरा भी कह देते हैं नाख़्वान्दा और सादा लौह सुन्नी मुसलमान पर अपने ज़ाहिरी तक़्वा और परहेज़गारी और दिखावे के इत्तिबाए शरीअत का सिक्का जमा लेते हैं दुआ तावीज़ झाड़ फूंक वाज़ व तक़रीरों से अवाम के दिलों पर अपना असर व रुसूख़ बिठा देते हैं।

शुरु शुरु में तो अपने वहाबियाना अक़ाइद को यह क़तअन किसी पर किसी तरह ज़ाहिर नहीं होने देते। लेकिन जब उनको इत्मिनान हो जाता है कि हां अब यह लोग मुअतक़िद हो चुके पूरी तरह क़ब्ज़े में आ चुके दस बीस मुरीदी के जाल में बीस पच्चीस शार्गिदी के दाम में फंस चुके तो आहिस्ता आहिस्ता निहायत ही ख़ामोशी के साथ उन्हें अक़ाइदे वहाबिया कुफ़्रिया को सुन्नी मुसलमानों के अक़ीदे बताकर एक एक दो दो करके समझाते हैं और इस तरह अपने दाम उफ़्तादों को मज़्हबे अहलेसुन्नत से मुर्तद करके वहाबी बना लेते हैं। फिर अगर किसी समझदार सुन्नी मुसलमान के कान में कोई बात पड़ी और उसने अपने प्यारे दीने इस्लाम के तहफ़्फ़ुज़ की, अपने महबूब मज़्हबे अहलेसुन्नत की हिफ़ाज़त की कुछ कोशिश भी की तो उसको मुफ़्सिद तफ़्रिक़ा परदाज़ कहा जाता है, उसकी हिफ़ाज़त इस्लाम व सुन्नियत की कोशिशों को इश्तिआल अंगेज़ी तफ़्रिका परदाज़ी बताया जाता है। उस वक़्त इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ की स्पीचें होने लगती हैं। आपस में मेल महब्बत क़ायिम रखने के लेक्चरज़ धड़ल्ले से शुरु हो जाते हैं वह देवबन्दी वहाबी पीर जी या मुल्ला जी तो किसी ख़ानक़ाह में बिल्कुल अलाहिदा बगुला भगत बने हुए बैठे रहते हैं और उसी बस्ती के जो लोग मुअतक़िदीन या मुरीद या शार्गिद हो चुके हैं वही उनकी हिमायत व तरफ़दारी के लिए उस बेचारे हमदरदे इस्लाम व सुन्नियत सुन्नी मुसलमान के मुक़ाबले में उठ खड़े होते

हैं और खुद उसी बस्ती ही के अन्दर बाप बेटे में भाई भाई में बीवी शौहर में, पंचायतों और बरादरियों में जंग व फ़साद व मुनाफ़रत बाहमी की कभी न बुझने वाली आग लग जाया करती है।

बस्ती में आपस का यह फ़ित्ना व फ़साद इन अक़ाइदे कुफ़्रिया वहाबिया की वजह से बढ़ता रहता है और वह देवबन्दी वहाबी पीर जी साहब या मुल्ला जी साहब कभी कभी तक़रीर फ़र्मा देते हैं कि भाइयो! नमाज़ पढ़ो आपस में इत्तिफ़क़ व इत्तिहाद के साथ रहो किसी को वहाबी किसी को देवबन्दी कहने के फ़ुज़ूल झगड़ों से दूर रहो कभी कभी बाहर से खुफ़िया तौर पर किसी देवबन्दी वहाबी लेक्चरार या वाइज़ को बुलवा लिया जाता है वह इसी क़िस्म के मज़ामीन बयान कर देता है कि भाइयो नाज़ुक ज़माना है इस वक़्त शियों से हमारा मुक़ाबला है इस वक़्त हिन्दुओं से हम बर सरे पैकार हैं आजकल सियासी मैदान में दूसरी क़ौमों से हमें बाज़ी ले जाना है। लिहाज़ा आपस में यह वहाबी सुन्नी के झगड़े न छेड़ो। सब लोग बाहम मिलकर एक हो जाओ इस क़िस्म की सारी तक़रीरों का मतलब सिर्फ़ यह होता है कि उन पीर जी साहब मुल्लाजी साहब की वहाबियत देवबन्दियत का राज़ जो कुछ फ़ाश हो चला है उसकी फिर पर्दा दारी कर दीजाए और उनके लिए वहाबियत की तब्लीग़ का मैदान जो कुछ संगलाख हो गया है उसको फिर हमवार कर दिया जाए और वह बेचारे सुन्नी मुसलमान जो इस्लाम व कुर्आन, दीनो ईमान रसूल व रहमान पर नजिस नापाक हमले देखकर अपने दीन इस्लाम अपने मज़्हबे अहलेसुन्नत के तहफ़्फ़ुज़ के लिए कुछ बेदार व होशियार हो गए हैं वह फिर मरऊब होकर ख़ामोश हो जाएं अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम पर गन्दे घिनौने हमले होते देखकर भी टुकटुक दीदम दम न कशीदम पर अमल कर लें अपना प्यारा इस्लाम अपना महबूब मज़्हबे अहलेसुन्नत मिटने का तमाशा चुप बैठे दम साधे हुए

देखते रहें फिर सितम यह है कि वह पीरजी साहब या मुल्लाजी साहब वहाबियाना अक़ाइदे कुफ़्रिया की इशाअत ऐसी राज़दारी के साथ करते हैं कि बस्ती के जो सादा लौह अवाम मआज़ल्लाह अक़ाइदे कुफ़्रिया वहाबिया क़बूल करके कट्टर वहाबी बन जाते हैं वह भी अपने आपको वहाबी नहीं कहते बल्कि अपने आपको पक्का सुन्नी हनफ़ी बताते हैं ऐसे तरीक़े के साथ वहाबियत के अक़ीदों का प्रचार करके इन वहाबियों देवबन्दियों ने गाँव के गाँव वहाबी बना डाले ज़िले के ज़िले तबाह कर दिए। दोस्त को दोस्त से बाप को बेटे से लड़ा दिया, भाई को भाई से बीवी को शौहर से जुदा करा दिया, चचा को भतीजे का मामूं को भांजे का दुश्मन बना दिया। बरादरियों पंचायतों क़ौमों में तब्लीगे वहाबियत करके फ़िरक़ा वाराना झगड़ा फ़साद डलवा दिया। उन्हीं मनाज़िर को यहाँ भी देखकर हम मजबूरन आप हज़रात को शरीअते इस्लामिया का हुक्म बताते हैं। कि अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की तौहीन व इहानत करने वाले ज़रुरियाते दीनिया ईमानिया में से किसी अक़ीदे का इन्कार करने वाले बहुक्मे शरीअते मुतह्हरा काफ़िर मुर्तद बेदीन हैं।मैं ख़ुद अपनी तरफ़ से इनको काफ़िर मुर्तद बेदीन कहता बल्कि आज से साढ़े तेरह सौ साल से ज़्यादा पहले अल्लाह तबारक व तआला की भेजी हुई हुजूर सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की लाई हुई शरीअते मुतह्हरा इस्लामिया इनको काफ़िर मुर्तद बेदीन बता रही है।

मैं तो उसी हुक्मे शरीअत का इज़्हार कर रहा हूँ इससे किसी की दिलआज़ारी हर्गिज़ मक़सूद नहीं फ़ित्ना परदाज़ी इश्तिआल अंगेज़ी क़तअन मुराद नहीं बल्कि अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम शाहिद हैं कि उनको अहकामे शरइया सुनाने से ख़ालिस हमदर्दी सच्ची नेक नीयती के साथ हमारा सिर्फ़ इसी क़दर मक़सद

है कि हमारे सुन्नी मुसलमान भाई ऐसे अक़ाइदे कुफ़्रिया वहाबिया देवबन्दिया हर्गिज़ क़बूल न करें।

खुदा तबारक व तआला की उसके प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की उसके पाक कलाम कुर्आने अज़ीम की हज़राते सहाबा व अहले बैत (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) की पाक मुबारक शानों में गुस्ताख़ियां हर्गिज़ न करने लगें। खूब याद रखिए कि वफ़ादार बन्दा जो अल्लाह तआला और उसके महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम से बाग़ी व ग़द्दार न हो उससे अगर अपनी शामते नफ़्स या शरारते शैतान के सबब कितने भी गुनाह हो जांए लेकिन उसका ख़ात्मा बिऔनिल्लाहि तआला व बिऔनि हबीबिही सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम इस्लाम पर हुआ तो अल्लाह तबारक व तआला की रहमत से या उसके महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की शफ़ाअत से या कुछ मुद्दत जहन्नम की सज़ा भुगतने के बाद एक न एक दिन उसकी मग़्फ़िरत व बख़्शिश ज़रुर होगी मगर जो शख़्स किसी अक़ीदए ज़रुरिया दीनिया को झुटला कर या अल्लाह तआला या उसके महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की या उसके पाक कलाम कुर्आने अज़ीम की या उसके किसी नबी किसी रसूल किसी फ़िरिश्ते की तौहीन करके अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम से बाग़ी व ग़द्दार हो गया और उसी पर मआज़ल्लाह बे तौबा मर गया तो भड़कते हुए जहन्नम के अज़ाबे शदीद से हमेशा हमेशा कभी उसकी नजात न होगी। हमारा दूसरा मक़्सद इस बयान से यह भी है कि जो लोग धोके में फंस कर इन वहाबियाना अक़ाइदे कुफ़्रिया को क़बूल कर चुके हैं वह भी ठन्डे दिल के साथ ग़ौर व इन्साफ़ करके समझें कि यह अक़ाइदे कुफ़्रिया सुन्नी मुसलमानों के हर्गिज़ नहीं बल्कि यह नजिस और

गन्दे अक़ीदे वहाबियों के हैं और वह भी बितौफ़ीक़िल्लाहि तआला व बिइनायतिही हबीबिही सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम उन कुफ़्री अक़ीदों से तौबा करके फिर सच्चे पक्के सुन्नी मुसलमान बन जाएं और इस वहाबियत व देवबन्दियत के सबब जो मुसलमान कहलाने वालों के दर्मियान बाहमी झगड़े फ़ित्ने हो रहे हैं आपस में अदावतें मुनाफ़रतें फैली हुई हैं यह सब बिइज़्निल्लाहि तआला व बहुक्मे हबीबिही सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम दूर होकर सब अहले इस्लाम आपस में मुत्तहिद व मुत्तफ़िक़ व शीरो शकर और यक जान व चन्द क़ालब हो जाएं आमीन या रब्बल आलमीन।

आख़िर में इतनी बात और गुज़ारिश करूं कि शरीअते मुतह्हरा से इब्तिदाअन खुद मैंने यह अहकाम नहीं निकाले कि वहाबिया देवबन्दिया कुर्आन व रसूल व रहमान जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की तौहीन और अक़ाइदे ज़रूरिया दीनिया की तक्ज़ीब करने के सबब बहुक्मे शरीअते मुतह्हरा काफ़िर मुर्तद बे दीन हैं बल्कि माहे ज़िल्हिज्जतुल हराम 1323 ई0 की 21 तारीख़ रोज़े पंजशम्बा को मोलवी अशरफ़ अली थानवी की इबारत हिफ़्ज़ुलईमान सफ़ा 8 और मोलवी ख़लील अहमद अम्बेठी की इबारत बराहीने क़ातिआ सफ़ा 51 और मोलवी रशीद अहमद गंगोही के फ़तवे के फ़ोटो और मोलवी क़ासिम नानौतवी की इबारात सफ़ा 3, 14 तहज़ीरून्नास सफ़ा 28 के मुताल्लिक़ एक इस्तिफ़्ता मुरत्तब होकर मक्का मुअज़्ज़मा के ओलमाए किराम के सामने पेश हुआ फिर पांच माहे फ़ाख़िर रबीउल आख़िर शरीफ़ 1324 हि0 को मदीना तय्यिबा के मुफ़्तियाने इज़ाम के हुजूर पेश किया गया।

मक्का मुअज़्ज़मा वह पाक व मुबारक शहर है जिसमें उस रब्बे बेनियाज़ जल्ला जलालुहू का प्यारा घर है जो घर दर से पाक है जिसकी तरफ़ हम उसके हुक्म से उसी के लिए नमाज़

पढ़ते हैं उसी की तरफ़ हम अपने सरों को झुकाकर उसी के लिए सज्दा करते हैं।

मदीना तय्यिबा वह बरकत व रहमत वाला शहर है जिसमें उसके प्यारे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की मुनव्वर व मुतह्हर आरामगाह रौज़ए अक़्दस है जिसकी तरफ़ आशिक़ाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के कुलूब झुके हुए हैं मक्काए मुअज़्ज़मा व मदीनाए तय्यिबा के ओलमाए किराम व मुफ़्तियाने इज़ाम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) ने फ़तवे दिए कि यह चारों अश्ख़ास अपने इन अक़्वाल के सबब बहुक्मे शरीअते मुतह्हरा इस्लाम से क़तअन ख़ारिज हैं उन मुबारक फ़तावा का मज्मूआ उर्दू तर्जमे के साथ हि0 1326 में किताब حُسَامُ الْحَرَمَيْن عَلٰى مَنْحَرِ الْكُفْرِ وَالْمَيْن के नाम से छपकर शायेअ हो गया उस वक़्त से अब तक चार एडीशन इस मुबारक किताब के शायेअ हो चुके हैं इस वक़्त भी वह मुक़द्दस किताब हुसामुल हरमैन शरीफ़ यह मेरे हाथ में मौजूद है इस मुबारक मज्मूआए मुक़द्दसा के सिर्फ़ सफ़ा 73, 74, 75 का मुख़्तसर खुलासा आप हज़रात को सुनाता हूँ।

मुलाहज़ा हो फ़र्माते हैं इन अक़्वाल के क़ाइलीन बिदअत कुफ़्रिया वाले। अश्क़िया इन काफ़िरों के कुफ़्र पर आगाही लाज़िम है। इस्लाम के नाम को पर्दा बनाए हैं यह सबके सब मुर्तद हैं। बइज्माए उम्मत इस्लाम से ख़ारिज हैं। बेदीनी व बद मज़्हबी के ख़बीस सरदार, हर ख़बीस और मुफ़्सिद व हट धर्म से बदतर फ़ाजिर मुल्हिद हैं जो इन अक़्वाल का मोअतक़िद हो काफ़िर है गुमराह है। दूसरों को गुमराह करता है मुसलमानों के तमाम ओलमा के नज़्दीक दीन से निकल गया जैसे तीर निशाने से। कुछ शक नहीं कि यह ख़ारजी यह दोज़ख़ के कुत्ते यह शैतान के गिरोह काफ़िर है उनके कुफ़्र में कोई शुब्हा नहीं न शक की मजाल ज़िन्दीक बेदीन वहाबी वलूहियत

व रिसालत की शान घटाते हैं इन पर वबाल और खराबिए हाल लाज़िम हो चुकी।

मक्का मुअज़्ज़मा व मदीना मुनव्वरा के ओलमाए आमिलीन व मुफ़्तियाने कामिलीन (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) ने इन बद गोयों के साथ मुसलमानों को जो बरताव करने के शरई हुक्म दिए उनका मुख़्तसर खुलासा इस मज्मूआए मुबारका के सफ़ा 83 व 84 से सुनाता हूँ मुलाहज़ा हो।

फ़र्माते हैं उसके पीछे नमाज़ पढ़ने, उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ने, और उसके साथ शादी ब्याह करने, उसके हाथ का ज़बीहा खाने, उसके पास बैठने, उससे बात चीत करने और तमाम मुआमलात में उसका हुक्म बेऐनिही वही है जो मुर्तद का है हां हां एहतियात एहतियात कि बेशक काफ़िर की तौक़ीर न की जाएगी और बेशक गुमराही से बचना सबसे ज़्यादा अहम है वाजिब है कि मुसलमानों को उनसे डराया जाए, उनसे नफ़रत दिलाई जाए, मेम्बरों पर और रिसालों और मज्लिसों और महफ़िलों में, ताकि उनके शर का माद्दा जल जाए और उनके कुफ़्र की जड़ कट जाए। कहीं उनकी गुमराही की रूह इस्लामी दुनिया की तरफ़ सरायत न करे।

फिर 1345 हि0 हिन्द व सिन्ध व दकन व कोकन व पंजाब व बंगाल व मद्रास व बुलूचिस्तान व काठियावाड़ व गुजरात में दो सौ अड़सठ हज़रात जो उस वक़्त ओलमाए अहलेसुन्नत व मुफ़्तियाने दीनों व मिल्लत व मशाइखे तरीक़त थे उन्होंने फ़तवे दिए कि बेशक यह लोग बहुक्मे शरीअते मुतहहरा ऐसे ही काफ़िर मुर्तद बेदीन वहाबी हैं जिस तरह 'हुसामुलहरमैन शरीफ़' में तहरीर फ़र्माया।

इन फ़तावा मुबारका का मज्मूआ भी उसी वक़्त किताब

اَلصَّوَارِمُ الْهِنْدِيَّه عَلٰى مَكْرِشَيَا طِيْنِ الدِّ يُوبَنْدِ يَّه

के नाम से छपकर शायेअ हो चुका इस किताब के भी दो एडीशन

अब तक छप चुके हैं आप हज़रात के सामने इस किताब का भी एक नुस्ख़ा पेश करता हूँ मुलाहज़ा फ़र्माइये।

इसकी पेशानी ही पर 'हुसामुलहरमैन' शरीफ़ की मुकम्मल तस्दीक़ मौजूद है फिर 1349 हि0 में हिन्दुस्तान के मुख़्तलिफ़ बिलाद व अम्सार के चौरानवे हज़रात का फ़त्वा मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी के काफ़िर मुर्तद बेदीन होने पर मुरत्तब हुआ जो उसी वक़्त रिसाला मुबल्लिग़े वहाबिया की ज़ारी के नाम से छपकर शायेअ हो चुका है उसका भी एक नुस्ख़ा इस वक़्त मेरे पास मौजूद है मुलाहज़ा हो इसमें भी तमाम ओलमाए किराम यही फ़र्माते हैं कि मोलवी अब्दूश्शकुर काकोरवी ऐडीटर अन्नज्म मुबल्लिग़े वहाबिया ने चूंकि अपनी किताब नुस्रते आसमानी बर फिर्क़ए रज़ा ख़ानी में मोलवी अशरफ़ अली थानवी की कुफ़्री इबारत हिफ़्ज़ुल ईमान सफ़ा 8 की और मोलवी ख़लील अहमद अम्बेठी की कुफ़्री इबारत बराहीने क़ातिआ सफ़ा 51 की तरफ़दारी व हिमायत की है लिहाज़ा वह भी बहुक्मे शरीअते मुतह्हरा क़तअन यक़ीनन वहाबी काफ़िर मुर्तद् बेदीन हैं। वहाबियों देवबन्दियों से इन मुबारक किताबों का कुछ भी जवाब न हो सका तो सुन्नी मुसलमानों को धोका देने के लिए कहते हैं कि हुसामुल हरमैन शरीफ़ में पहले तहज़ीरून्नास के सफ़ा 14 वाली इबारत लिखी है फिर सफ़ा 28 वाली इबारत लिखी है फिर सफ़ा 3 वाली इबारत लिखी है और इस तरह मुक़द्दस व मुअख़्ख़र करके मुसलसल एक इबारत बनाकर कुफ़्री माना पैदा कर लिए गऐ हैं।

मौज़ा अदरी डाकख़ाना इन्दिरा ज़िला आज़मगढ़ के मुनाज़रे में फिर शहर गया के मुनाज़रे में भी मोलवी मन्जूर सम्भली ने यही ऐतराज़ कि मैनें जवाब दिया कि तहज़ीरून्नास सफ़ा 3 की इबारत में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के वस्फ़े मुबारक خَاتَمَ النَّبِيِّيْنَ के इस ज़रूरी दीनी माना को कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला

आलिही वसल्लम तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के मबऊस हो चुकने के बाद मबऊस हुए हैं और हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम बेअसत के लिहाज़ से सबसे आख़िरी नबी हैं अवाम यानी ना समझ लोगों का ख़्याल और अहले फ़हम यानी समझदार लोगों के नज़्दीक ग़लत व बातिल बताया यह एक अक़ीदए ज़रूरिया दीनिया का इन्कार और एक मुस्तक़िल कुफ़्र है।

तहज़ीरुन्नास सफ़ा 14 वाली इबारत में हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के ज़मानए अक़्दस में किसी और नए नबी के पैदा होने के शरअन मोहाल व ग़ैर मुम्किन होने का इन्कार किया और साफ़ लिख दिया।

अगर बिल्फ़र्ज़ आपके ज़माने में भी कहीं और कोई नबी हो तो भी आपका ख़ातिम होना बदस्तूर बाक़ी रहता है।

हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के ज़मानए मुबारक में और नबी के पैदा होने को शरअन जाइज़ व मुम्किन बताना और उसे ख़त्मे नुबुव्वत के ख़िलाफ़ न ठहराना यह एक दूसरे अक़ीदए ज़रूरिया दीनिया की तक्ज़ीब और दूसरा मुस्तक़िल कुफ़्र है।

तहज़ीरुन्नास सफ़ा 28 वाली इबारत में हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के बाद भी जदीद नबी के पैदा होने के शरअ़न मोहाल और ना मुम्किन होने का इन्कार किया और साफ़ लिख दिया।

अगर बिल्फ़र्ज़ बादे ज़मानए नबवी भी कोई नबी पैदा हो तो फिर भी ख़ातमियते मुहम्मदी में कुछ फ़र्क़ न आएगा।

हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के बाद जदीद नबी के पैदा होने को शरअन जाइज़ व मुम्किन बताना और उसको ख़त्मुन्नुबुव्वत के मुख़ालिफ़ न ठहराना यह एक तीसरे अक़ीदए ज़रूरिया दीनिया को झुटलाना और तीसरा

मुस्तक़िल कुफ़्र है। तो हरएक इबारत में एक एक कुफ़्र बका है लिहाज़ा अगर पहले सफ़ा 3 वाली फिर सफ़ा 28 वाली इबारतें लिखी जाएं तो भी तीन कुफ़्र होते, अगर पहले सफ़ा 28 वाली फिर सफ़ा 14 वाली फिर सफ़ा 3 वाली इबारतें नक़्ल की जातीं तो भी तीन कुफ़्र होते, अगर पहले सफ़ा 3 वाली फिर सफ़ा 28 वाली फिर सफ़ा 14 वाली इबारतें दर्ज की जातीं तो भी तीन कुफ़्र होते, अगर पहले सफ़ा 28 वाली फिर सफ़ा 3 वाली फिर सफ़ा 14 वाली इबारतें तहरीर की जातीं तो भी तीन कुफ़्र होते, अगर पहले सफ़ा 14 वाली फिर सफ़ा 3 वाली फिर सफ़ा 28 वाली इबारतें मुन्दरज की जातीं तो भी तीन कुफ़्र होते, और अब कि पहले सफ़ा 14 वाली फिर सफ़ा 28 वाली फिर सफ़ा 3 वाली इबारतें पेश की गई हैं अब भी वही तीन कुफ़्र हैं, हरएक इबारत अलग अलग कुफ़्री माना में मुस्ताअमल और मोतइय्यन है, तरतीब बदल जाने से कुफ़्री माना पैदा हुए बल्कि हर एक इबारत कुफ़्री माना बताने में ऐसी सरीह नस्से मुफ़स्सर है कि इन तीनों इबारतों में से किसी इबारत में किसी और इस्लामी माना का क़तअन कोई एहतिमाल ही नहीं फिर तरतीब बदल जाने पर आपका ऐतराज़ लागू और मोहमल व बेकार हो गया या नहीं। इस लाजवाब क़ाहिर जवाब पर अदरी के मुनाज़रे में मोलवी मन्ज़ूर सम्भली को क़तअन साकित व सामित ही होना पड़ा था और उनकी हिमायत व इम्दाद के लिए ज़िला आज़मगढ़ व ज़िला गोरखपुर व ज़िला बलिया व ज़िला जौनपुर के जो डेढ़ सौ वहाबी देवबन्दी मोलवी अदरी के जल्सए मुनाज़रा में जमा हो गए थे उनमें से भी कोई साहब़ इस क़ाहिर व लाजवाब ईराद का कोई जवाब नहीं दे सके थे। कमाले हयादारी यह है कि मुनाज़राए गया में भी वही बात अपनी पुरानी बोसीदा जिसकी धज्जियां बरसों पहले मैं उड़ा चुका था फिर मेरे आगे पेश कर दी और मैंने फिर अपना वही क़ाहिर व ज़बरदस्त ईराद कुछ तौज़ीह व तम्सील के इज़ाफ़े के साथ उस पर नाज़िल

कर दिया और मोलवी मन्जूर सम्भली को इस जवाब के जवाब से फिर आजिज़ व मबहूत ही होना पड़ा और गया के उस जल्साए मुनाज़रा मे मोलवी अब्दुलकुद्दूस व मोलवी विलायत हुसैन व मोलवी नाज़िर इमाम वग़ैरहुम पैसठ वहाबी देवबन्दी मोलवी मन्जूर सम्भली की इम्दाद और इआनत के लिए मौजूद थे उनमें से भी किसी साहब से इस लाजवाब जवाब का कुछ जवाब नहीं दिया जा सका فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ وَعَلٰى حَبِيْبِهٖ وَآلِهِ الصَّلاةُ و السَّلام रिसालए मुबारका मुबल्लिग़े वहाबिया की ज़ारी के मुक़ाबले में तो वहाबिया देवबन्दिया कुछ हरकत मज़्बुही भी नहीं कर सके।

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ وَعَلٰى حَبِيْبِهٖ وآلِهِ الصَّلاةُ و السَّلامُ

अलबत्ता मुक़द्दस व मुबारक किताब मुस्तिताबे हुसामुल हरमैन शरीफ़ के मुक़ाबले में नावाक़िफ़ सादा लौह भोले भाले सीधे सादे सुन्नी मुसलमानों को धोके देने के लिए मोलवी ख़लील अहमद अम्बेठी ने ज़रूर एक किताब अल्मुहन्नद लिखी और शायेअ की जिसका सिर्फ़ तर्जमा "अक़ाइदे ओलमाए देवबन्द" के नाम से एक रिसाले की शक्ल में वहाबियों देवबन्दियों ने छपवा कर शायेअ कराया है।

मैंने अल्मुहन्नद का मुफ़स्सल व मबसूत क़ाहिर रद लिख कर 1345 हि० में जबकि मोलवी ख़लील अहमद ज़िन्दा थे "राद्दुल मुहन्नद" के नाम से छपवा कर शायेअ कर दिया जिसका जवाब न तो खुद मोलवी अम्बेठी से हो सका और फिर बिहौलिल्लाहि तआला व कुव्वतिही कहा जाता है कि न अब कोई वहाबी देवबन्दी राद्दुलमुहन्नद का जवाबे बासवाब लिख सकता है।

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ وَعَلٰى حَبِيْبِهٖ وآلِهِ الصَّلاةُ و السَّلامُ

वहाबिया देवबन्दिया बेचारे नावाक़िफ़ सादा लौह मुसलमानाने अहलेसुन्नत को इस तरह धोके देते हैं कि हुसामुल हरमैन में मोलवी अशरफ़ अली थानवी व मोलवी ख़लील अहमद अम्बेठी व मोलवी रशीद अहमद गंगोही व मोलवी क़ासिम नानौतवी की

इबारतें क़ताअ व बरीद करके काट छांटकर उनके ग़लत मतलब बयान करके हरमैने शरीफ़ैन के ओलमाए किराम के सामने पेश की गई थीं और उन हज़रात को धोका देकर देवबन्दी मोलवियों पर कुफ़्र के फ़तवे हासिल कर लिए गए थे लेकिन जब मोलवी ख़लील अहमद अम्बेठी ने अपनी किताब अलमुहन्नद में हिफ़्ज़ुल ईमान व बराहीने क़ातिआ व तहज़ीरुन्नास की अस्ली सहीह इबारतें बिला कम व कास्त फिर ओलमाए हरमैन के सामने पेश कीं और उन इबारतों के सहीह मतलब लिखे तो ओलमाए हरमैन ने वह कुफ़्र के फ़तवे वापस ले लिए और लिख दिया की हुसामुल हरमैन में धोके देकर हमसे कुफ़्र के ग़लत फ़तवे हासिल कर लिए गए थे हालांकि यह भी खुला हुआ झूट है। रान्देर ज़िला सूरत के मशहूर मुनाज़रे में जो कुफ़्रियाते वहाबिया देवबन्दिया पर मैंने मोलवी मुहम्मद हुसैन रान्देरी साहब के साथ उन्हीं के मदरसा मुहम्मदिया में किया था रान्देरी साहब ने यही तक़रीर की। खुदा और रसूल जल्ला जलालुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की मदद व नुस्रत से मैंने फ़ौरन जवाब दिया कि किताब अलमुहन्नद यह मेरे हाथ में है न तो हर्गिज़ इसमें यह इबारत है कि हमने वह कुफ़्र के फ़तवे वापस ले लिए न हर्गिज़ इसमें यह इबारत है कि हुसामुल हरमैन में हमको धोका देकर हमसे कुफ़्र के ग़लत फ़तवे हासिल कर लिए गए और बिफ़ज़्लिही तआला व बकरमे हबीबिही सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम दावे से कहा जाता है कि कोई वहाबी देवबन्दी इन दोनों में से कोई एक जुम्ला भी अलमुहन्नद के अन्दर किसी जगह भी हर्गिज़ नहीं दिखा सकता।

فَلِلّٰہِ الْحَمْدُ وَ عَلٰی حَبِیْبِہٖ وَآلِہِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ

अलमुहन्नद में कैसी कैसी अइयारियां मक्कारियां दज्जालियां फ़रेबकारिया की गई हैं इसका मुफ़स्सल बयान तो बहुत तवील है बिफ़ज़्लिही तआला व बकरमे हबीबिही सल्लल्लाहु तआला अलैहि

व अला आलिही वसल्लम यह मुफ़स्सल बयान 1345 हि0 में आज से बीस बरस पहले किताब राद्दुलमुहन्नद के नाम से छाप कर शायेअ कर दिया गया अकाबिरे वहाबिया देवबन्दिया मोलवी अम्बेठी व मोलवी थानवी व मोलवी काकोरवी के हाथों में पहुंचा दिया गया अब तक किसी साहब से इसका जवाब न हो सका न कभी क़ियामत तक हो सकता है।

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ وَعَلٰى حَبِيْبِهٖ وَآلِهٖ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ

इस मुनाज़रे में उन सबको दिखाने का वक़्त नहीं अलबत्ता इस वक़्त इतनी मुख़्तसर सी बात गुज़ारिश करूंगा अगर अलमुहन्नद में हिफ़्ज़ुल ईमान नानौतवी व बराहिने क़ातिआ अम्बेठी व गंगोही व तहज़ीरुन्नास नानौतवी की वह अस्ल इबारतें बिल्कुल सही सही बिला कम व कास्त पेश कर दी जातीं जिन पर हुसामुल हरमैन शरीफ़ में कुफ़्र के फ़तवे दिए गए हैं और फिर ओलमाए हरमैने मोहतरमैन तहरीर फ़र्मा देते कि इन इबारतों में कोई कुफ़्र नहीं और इन इबारतों की वजह से इनके लिखने वाले काफ़िर मुर्तद बेदीन वहाबी नहीं तो ज़रूर अलमुहन्नद हुसामुल हरमैन शरीफ़ का जवाब कहा जा सकता था लेकिन मोलवी ख़लील अहमद अम्बेठी ने ग़ज़ब बालाए ग़ज़ब तो यह ढाया सितम बर सितम तो यह तोड़ा कि अलमुहन्नद में न तो हिफ़्ज़ुल ईमान थानवी की उस इबारत सफ़ा 8 का अरबी तर्जमा दिया न बराहीने क़ातिआ गंगोही की उस इबारत सफ़ा 51 का अरबी तर्जमा लिखा न तहज़ीरुन्नास नानौतवी के सफ़ा 3 व 14 व 28 की इन इबारतों के अरबी तर्जमे लिखे बल्कि बिल्कुल नई नई अनोखी निराली इबारतें लिख दीं जो दुनिया भर की किसी हिफ़्ज़ुलईमान किसी बराहीने क़ातिआ किसी तहज़ीरुन्नास में क़तअन नहीं और कमाले बेबाकी के साथ किसी इबारत को लिख दिया कि यह हमारी बराहीने क़ातिआ के मज़्मून का ख़ुलासा है किसी इबारत को लिखने के बाद कह दिया **मोलवी थानवी का कलाम ख़त्म हुआ**

कहना यह है कि अगर मोलवी अम्बेठी के नज़्दीक उन इबाराते हिफ़्ज़ुल ईमान सफ़ा 8 व बराहीने क़ातिआ सफ़ा 51 व तहज़ीरुन्नास सफ़ा 3 व 14 व 28 में कोई कुफ़्र न था तो उनको डर किस बात का था उन पर लाज़िम था कि वही अस्ल इबारतें ओलमाऐ हरमैने तय्यिबैन के सामने पेश करते उनके सही तर्जमे अरबी में लिखते फिर उन इबारतों के जो सही मतलब उनके नज़्दीक थे वह बताते और फिर उन हज़रात से पूछते कि उन इबारतों के यही मतलब हैं या नहीं और यह इबारतें कुफ़्र से पाक हैं या नहीं और मोलवी अम्बेठी ने ऐसा नहीं किया तो साबित हो गया कि ख़ुद मोलवी अम्बेठी को भी क़तई यक़ीन था कि इबाराते हिफ्ज़ुल ईमान सफ़ा 8 व बराहीने क़ातिआ सफ़ा 51 व तहज़ीरुन्नास सफ़ा 3,14 व 28 में यक़ीनन कुफ़्रियात भरे हुए हैं अगर फिर उन्हीं इबारतों को ओलमाए हरमैन शरीफ़ैन के सामने अरबी में तर्जमा करके पेश कर दिया जाएगा तो फिर वही कुफ़्र व इर्तिदाद व बेदीनी व वहाबियत के फ़तवे सादिर होंगे। हुसामुल हरमैन शरीफ़ में सादिर हो चुके हैं इसी लिए और सिर्फ़ इसी लिए मोलवी अम्बेठी इस बात पर मजबूर हुए कि इन अस्ल इबारतों को छुपाएं उनके अरबी तर्जमे भी ओलमाए हरमैने करीमैन को न दिखाएं और बिल्कुल नई निराली अनोखी इबारतें अपने जी से गढ़कर पेश करदें और कह दें कि हिफ्ज़ुल ईमान व बराहीने क़ातिआ व तहज़ीरुन्नास के मज़ामीन के यही मतालिब हैं फिर मोलवी अम्बेठी की इस हरकत पर मोलवी अशरफ़ अली थानवी के भी तस्दीक़ी दस्तख़त हैं तो वहाबियों देवबन्दियों की इसी मायए नाज़ किताब अल्मुहन्नद ही से साबित हो गया कि हिफ़्ज़ुल ईमान सफ़ा 8 व बराहीने क़ातिआ सफ़ा 51 व तहज़ीरुन्नास सफ़ा 3 व 14 व 28 की उन इबारतों में ख़ुद थानवी व अम्बेठी के नज़्दीक भी यक़ीनन कुफ़्र व इर्तिदाद व बेदीनी व वहाबियत है और उनके लिखने वालों पर काफ़िर मुर्तद बेदीन वहाबी होने के जो फ़तवे

हुसामुल हरमैन शरीफ़ में सादिर फ़र्माए गए हैं वह क़तअन बेशक बिला शुब्हा हक़ व सही व दूरूस्त हैं वरन् इसी बात पर फ़ैसला है कि हुसामुल हरमैन शरीफ़ में हिफ़्ज़ुल ईमान थानवी व बराहीने क़ातिआ गंगोही व अम्बेठी व तहज़ीरुन्नास नानौतवी की जिन इबारतों पर मक्का मुअज़्ज़मा व मदीनाए तय्यिबा के ओलमाए केराम व मुफ़्तियाने इज़ाम ने कुफ़्र व इर्तिदाद व बेदीनी व वहाबियत के फ़तवे दे दिए अल्मुहन्नद की अस्ल अरबी में उन इबारतों के अरबी तर्जमे और अल्मुहन्नद के उर्दू तर्जमे में वह अस्ल इबारतें दिखा दीजिए।

मोलवी रान्देरी इन इबाराते हिफ़्ज़ुल ईमान व बराहीने क़ातिआ व तहज़ीरुन्नास में से न तो किसी इबारत का अरबी तर्जमा अल्मुहन्नद की अस्ल अरबी में और न कोई अस्ल इबारत अल्मुहन्नद के उर्दू तर्जमे में दिखा सके और न कभी कोई वहाबी देवबन्दी मोलवी क़ियामत तक दिखा सकता है और मदरसए मुहम्मदिया तो उस वक़्त वहाबी देवबन्दी मोलवियों से भरा हुआ था उनमें से मशहूर लोगों के नाम यह हैं :–

मोलवी उज़ैर गुलकाबुली, मोलवी मेहदी हुसैन शाहजहाँपुरी, मोलवी इब्राहीम रान्देरी, मोलवी अहमद अशरफ़ रान्देरी, मोलवी इस्माईल बिस्मिल्ला मोलवी इस्माईल सादिक़, मोलवी अब्दुर्रहीम रान्देरी, साहेबान सबके सब ख़ामोश व दम बखुद रह गए

فللّٰہ الحمد وعلیٰ حبیبہٖ وآلہٖ الصلاۃ والسلام

प्यारे सुन्नी मुसलमान भाइयो! आप हज़रात के बइस्रारे बिसियार बार बार बुलाने पर मीलाद शरीफ़ बयान करने के वास्ते सिर्फ़ तीन दिन के लिए मैं रोज़े पंजशम्बा 20 जुमादलउख़रा 1365हि0 मुताबिक़ 23मई 1946 ई0 को आपकी ख़िदमत में मदरसे आया और उसी रोज़ पहला बयान मोहल्ला कटरा में मस्जिद की जानिब मग़रिब वाले मैदान में मेरा बयान मीलाद शरीफ़ हुआ दूसरे ही दिन के बयान में यहाँ के वहाबियों देवबन्दियों ने एक छुपा हुआ

चैलेंज मेरे पास भेज दिया जिसमें बीसियों गंदी गालियां भरी हुई थीं और बार बार बइस्रारे बिसियार कहा कि इसी को क़बूल करके मुनाज़रे के लिए तैयार हो जाओ वरन् तुम्हारी शिकस्त होगी। यहाँ तक कहा कि तुमको बग़ैर मुनाज़रा किए मदरसे से भागने नहीं दिया जाएगा उनके इस शदीद पुर इस्रार तक़ाज़े पर ख़ुदा और रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का नाम लेकर मैंने वही चैलेंज जो तहज़ीब व शराफ़त से क़तअन बेगाना था क़बूल कर लिया और बिऔनिही तआला व बिऔनि हबीबिही सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम वहाबियों देवबन्दियों से मुनाज़रे के लिए तैयार हो गया और मुनाज़रे को फ़ैसला कुन बनाने और फ़ित्ना व फ़साद से बचाने के लिए मुनाज़रे का यह तरीक़ा तज्वीज़ किया कि दोनों जानिब का हर एक मुनाज़िर जो कुछ कहना चाहे लिखकर उस पर दस्तख़त करके अपने मुक़ाबिल को दे दिया करे और फिर उसी का मुसन्ना मज्मए मुनाज़रा में खड़ा होकर सुना दिया करे ताकि हाज़िरीन भी सुनते रहें कि किस मुनाज़िर ने क्या कहा और हरएक मुनाज़िर का हरएक लफ़्ज़ उसके मुक़ाबिल के पास महफ़ूज़ रहे किसी वक़्त भी यह फ़ुज़ूल गुफ़्तगू न होने पाए कि मैंने ऐसा नहीं वैसा कहा था और तुमने वैसा नहीं ऐसा कहा था कि इस गुफ़्तगू में बेकार वक़्त बहुत ज़ायेअ हो जाता है। फिर मुनाज़रा ख़त्म हो जाने के बाद भी किसी फ़रीक़ को झूटी रूदादे मुनाज़रा छापकर ग़लत पिरोपिगंडे का मौक़ा न मिले और मुनाज़रों में जो कभी इश्तिआल होने का अन्देशा हो जाया करता है उसका सबब भी अक्सर व बेशतर यही होता है कि किसी मुनाज़िर की ज़ुबानी तक़रीर में हाज़िरीन मुदाख़लत कर बैठते हैं जब कोई मुनाज़िर ज़बानी कुछ कहेगा ही नहीं बल्कि अपनी लिखी हुई तहरीर पढ़कर सुनाया करेगा तो हाज़िरीन में से किसी को दख़ल अन्दाज़ी का मौक़ा भी नहीं मिलेगा।

जब अहले सुन्नत की तरफ़ से ऐसा लिखकर भेज दिया गया तो सब लोहे ठन्डे हो गए मदरसे के बेचारे वहाबिया देवबन्दिया तो मुझे जानते न थे समझे हुए थे कि चैलेन्ज की धमकी से डरकर हशमत अ़ली भी भाग जायेगा लेकिन उनके मोलवी साहेबान तो मुझे खूब पहचानते हैं मदरसए मदारी दरवाज़ा बरेली के जलसे में जब मोलवी थानवी आऐ तो मेरे मुक़ाबले से फ़रार हो गऐ, अबोहर मन्डी में मोलवी मुर्तज़ा हसन दरभंगी, नौसारी ज़िला सूरत में मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी, मान्डले अपर बर्मा में मोलवी अब्दुल शकूर काकोरवी, व मोलवी मन्जूर संम्भली, मालेगाँव ज़िला सूरत में वहाँ के ग्यारह देवबन्दी मोलवी, बम्बई में एक मर्तबा मोलवी शब्बीर अहमद देवबन्दी,दूसरी बार मोलवी मुर्तज़ा हसन दरभंगी, तीसरी बार मोलवी अहमद सईद देहलवी,चौथी मर्तबा मोलवी मन्जूर संम्भली, और कई मर्तबा बम्बई के मशहूर वहाबी देवबन्दी ख़्वाजा हसन सरहन्दी रंगून में मोलवी शब्बीर अहमद देवबन्दी व मोलवी अनवर शाह कश्मीरी, शहर फतेहपुर में मोलवी मन्जूर संम्भली, राँदेर ज़िला सूरत में मोलवी अब्दुल शकूर काकोरवी व मोलवी मुर्तज़ा हसन दरभंगी साहेबान मेरे मुक़ाबिले से फ़रार फ़र्मा चुके हैं।

हल्द्वानी मन्डी ज़िला नैनीताल में मोलवी यासीन ख़ाम सराई से, मोहल्ला चकमन्डी लखनऊ में मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी से, पादरा ज़िला सूरत में मोलवी सनाउल्लाह अमृतसरी ऐडीटर अख़बार अहले हदीस से, रान्देर ज़िला सूरत में मोलवी मोहम्मद हुसेन रान्देरी से, लाहौर व अदरी ज़िला आज़मगढ़ व सय्यलाँवाली ज़िला झेलम व संम्भल ज़िला मुरादाबाद व गया में मोलवी मन्जूर संम्भली से, नानपारा ज़िला बहराईच शरीफ़ व मौरावां ज़िला उन्नाव में मोलवी नूर मोहम्मद टान्डवी से, मुल्तान शरीफ़ में मोलवी अबुलवफ़ा शाहजहाँपुरी से, शहरे सुल्तान ज़िला मुज़फ़्फ़रगढ़ में वहाँ के बाइस देवबन्दी मोलवियों से, बसडीला

डाकख़ाना दुधारा ज़िला बस्ती में मोलवी अब्दुल्लतीफ़ मउवी से अक़ाइदे कुफ़्रिया वहाबिया देवबन्दिया पर मेरे मुनाज़रे हो चुके हैं और उन मक़ामात के अलावा जहाँ जहाँ वहाबिया देवबन्दिया के मोलवी साहेबान से मेरे मुनाज़रे और मुक़ाबले हो चुके हैं उन सब मक़ामाते कसीरा की फ़ेहरिस्त मुझे इस वक़्त याद नहीं बहर हाल भदरसे के वहाबिया देवबन्दिया ने तहरीर बाज़ी शुरू कर दी खुद भदरसे में मोलवी नज़ीर वहाबी देवबन्दी तो मुलाज़िम ही है उनके अलावा इस अर्से में मोलवी यूनुस ख़ारजी, मोलवी नूर मोहम्मद टान्डवी, और मोलवी अब्दुल बारी सुल्तानपुरी, मोलवी अबुलवफ़ा शहजहाँपुरी और मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी के बेटे मोलवी अब्दुस्सलाम लखनवी वग़ैरहुम पै दर पै भदरसे आते जाते रहते हैं लेकिन वहाबिया देवबन्दिया के इस्रार पर भी कुफ़्रियाते देवबन्दिया वहाबिया पर मुक़ाबले के लिए तैयार नहीं हो सकते दो दो तीन तीन दिन भदरसे में छुपे बैठे रहते और चले जाते हैं वहाबिया देवबन्दिया के मोलवी बार बार इश्तिआल अंगेज़ फ़ुहुश आमेज़ तहरीरात लिख लिखकर किसी ग़ैरे मारूफ़ शख़्स के दस्तख़त कराके भेज रहे हैं।

मुसलमानाने अहलेसुन्नत की तरफ़ से उन गाली नामों के मुहज़्ज़ब व मुनासिब जवाबात मुहम्मद अख़्तर अन्सारी व मुहम्मद अशरफ़ ख़ाँ रवाना फ़र्मा रहे हैं और इन्तिहाई कोशिश कर रहे हैं कि भदरसे में कुफ़्रियाते देवबन्दियाए वहाबिया पर एक फ़ैसलाकुन मुनाज़रा तै पा जाए। अगर्चे मुझे वहाबी हज़रात के हालात और वाक़िआत देखते हुए क़तअन ऐसी उम्मीद नहीं लेकिन अगर मुनाज़रा तै भी हो जाए तो मैं कह देता हूँ कि इन्शा अल्लाहुल वाहिदुल क़हहार सुम्म शाअ हबीबिहिलमुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम मैदाने मुनाज़रा में वक़्ते मुनाज़रा पर वहाबियों देवबन्दियों का कोई मुनाज़िर नहीं पहुँच सकेगा क्योंकि सुना गया है कि मऊ ज़िला आज़मगढ़ के वहाबी देवबन्दी

मोलवी हबीबुर्रहमान मोलवी अब्दुल्लतीफ़ के पास और संम्भल ज़िला मुरादाबाद के वहाबी देवबन्दी मोलवी मन्जूर के पास और दोबारा फिर लहरपुर ज़िला सीतापुर के मोलवी अबुलवफ़ा के पास जो अपने आपको शाहजहाँपुरी कहा करता है और लखनऊ में पाटानाला का रहने वाला मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी के पास मदरसे के वहाबी देवबन्दी बार बार जा रहे हैं खुशामदें कर रहे हैं लेकिन मेरे मुक़ाबिल कुफ़्रियाते वहाबिया देवबन्दिया पर मुनाज़रे के लिए आने के लिए कोई तैयार नहीं हो रहा है अजब नहीं कि मक़ामे मुनाज़रा व तारीखे़ मुनाज़रा तै हो जाने के बाद मदरसे के वहाबिया देवबन्दिया अपनी शिकस्ते फ़ाश को छुपाने के लिए थाने में किसी से ख़तरए फ़साद की रिपोर्ट दिलवाएं और मैदाने मुनाज़रा में पुलिस की मुदाख़िलत के ज़रिए से मुनाज़रा बन्द करा दें। क्योंकि मैं छब्बीस 26 साल से वहाबी देवबन्दी की इसी क़िस्म की कार्रवाइयों के तज्रिबे पैहम मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर कर रहा हूँ और इसी क़िस्म के वाक़िआत पर मैं मुसलमानाने अहलेसुन्नत की फ़तहे मुबीन का और वहाबिया देवबन्दिया की इबरतनाक शिकस्त का ऐलान बिइज्निल्लाहि तआला व बहुक्मे हबीबिही सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम बार बार कर चुका हूँ।

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ وَعَلٰى حَبِيْبِهٖ وَاٰلِهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

एक और पुर लुत्फ़ बात यह है कि मुख़्तलिफ़ मक़ामात के वहाबिया देवबन्दिया खुद ही तो मुझे मुनाज़रे की दावत दिया करते हैं खुद ही इस्रारे बिसियार के साथ मुनाज़रा मन्जूर मुझसे कराते हैं और फिर ख़ुद ही यह हज़रात मेरे ख़िलाफ़ पुलिस में ग़लत् रिपोर्टें भी दिलवा दिया करते हैं। ख़ैर जो कुछ वाक़िआत होंगे आप हज़रात मुलाहज़ा फ़र्मायेंगे।

अब आख़िर में यह गुज़ारिश करता हूँ कि सब मुसलमानाने अहले सुन्नत पुर अमन रहें। इश्तिआल अंगेज़ व फ़साद से क़त्अन परहेज़ रखें। आपका प्यारा दीने इस्लाम आप पर अम्न क़ायम

रखना फर्ज़ और फ़साद करना हराम फ़र्माता है। अम्न बड़ी नेमत है और बदअम्नी सख़्त मुसीबत है। वहाबी देवबन्दी से क़तअन अलाहिदा रहें कि न उनकी सोहबत में बैठें, न उनकी ज़बानों से अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की तौहीनें सुनें न इश्तिआल हो न झगड़ा फ़साद होने पाये। वहाबी देवबन्दी से भी गुज़ारिश है कि मेरे बयानात पर और उन वाक़िआत पर ठन्डे दिल से ग़ौर करें इन्साफ़ से काम लें अगर वाक़ई उनको भी अक़ाइदे मज़्कूरा कुफ़्रिया वहाबिया और इस्लाम व कुर्आन के ख़िलाफ़ मालूम होते हों तो सच्चे दिल से तौबा करके फिर हमारे सुन्नी मुसलमान भाई बन जायें समझाना हमारा काम, मानना और अमल करना आपका काम तौफ़ीक़ देना अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला का काम। बहरहाल मेरे सारे बयानात का मक़सद सिर्फ़ इसी क़दर है कि वहाबियों देवबन्दियों के मोलवी ने हमारे दीने इस्लाम पर हमारे मज़्हबे अहलेसुन्नत पर अपनी किताबों में जो सख़्त सख़्त हमले किये हैं उन कलिमात व अल्फ़ाज़ को अवामे वहाबिया देवबन्दिया हमारे सुन्नी मुसलमान भाइयों के सामने बोलकर उनके दिल न दुखायें और इसका बेहतरीन तरीक़ा यह है कि वहाबी देवबन्दी इन्साफ़ से काम लें तो उनसे तौबाए सहीहए शरइया करलें और सारे झगड़े फ़साद यक्सर ख़त्म हो जायें यही वह कलिमात हैं जिनको सुनकर मुसलमानाने अहले सुन्नत के दिलों में दुश्मनी व नफ़रत के जज़्बात पैदा हो जाते हैं और ऐसे ऐतिक़ादाते फ़ासिदा बातिला कुफ़्रिया वहाबिया की सज़ा आख़िरत में हमेशा हमेशा के लिए जहन्नम के भड़कते हुए अंगारे तो हैं ही लिहाज़ा मैं तमाम मुसलमानों के दुनिया व आख़िरत के फ़ाइदे के लिए अर्ज़ करता हूं कि इस क़िस्म के कलिमात व अक़ाइदे कुफ़्रिया से सच्ची तौबा फ़र्मा लें। दुनिया में अम्नो अमान व महब्बत व आराम के साथ रहें। आख़िरत में भी अल्लाह तबारक व तआला के क़हर व ग़ज़ब से

हमें। अल्लाह तबारक व तआला फिर उसका प्यारा महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ही मुझ गुनहगार स्याहकार अदना तरीन सगाने बारगाहे रज़वी को मेरे इस मकसद मे खुलूस और कामयाबी अता फर्माये आमीन।

बहरहाल कहना यह है कि वहाबियों देवबन्दियों की और से कुफ्री इबारतें बहुत है जिनमे इनके मोलवियों ने ख़ुदा व रसूल जल्ल जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम और इस्लाम व क़ुर्आन पर सख़्त नारवा हमले किये हैं अब मुसलमान अहले सुन्नत ख़ुद ही अपने ईमानों से फैसला कर लें कि अगर वहाबियों देवबन्दियों के दिलों में अल्लाह व रसूल जल्ल जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की महब्बत व उल्फ़त व इज़्ज़त व अज़मत होती तो क्या यह ऐसे गन्दे गुस्ताख़ाना हम्ले अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम पर कर सकते क्या ऐसी तौहीनों गुस्ताख़ियों से भरी हुई किताबें छापकर शाए कर सकते, दूसरी तरफ़ फ़िर्क़ए मिर्ज़ाइया क़दियानिया है उसका एक अक़ीदा यह है कि क़ादियान ज़िला गुरदासपुर का रहने वाला मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी जो 1326 हिजरी में फौत हुआ वह अल्लाह का रसूल व नबी है (देखो मिर्ज़ाइयों क़ादियानियों के मिर्ज़ा क़ादियानी का रिसाला "एक ग़ल्ती का इज़ाला" सफ़ा 2 व 3 व 4) हालांकि अल्लाह तबारक व तआला ने क़ुर्आने पाक में अपने हबीब सय्यिदिना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का नाम ख़ातिमुन्नबिय्यीन रखा यानी तमाम नबियों का ख़त्म करने वाला और क़ुर्आने अज़ीम की सैकड़ों आयतों और हुज़ूरे अक़रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की सदहा हदीसों से

रोशन तौर पर साबित कि खातिमुन्नबिय्यीन के यही माना हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम पर नुबुव्वत ख़त्म कर दी गयी। जब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम मबऊस हो चुके तो अब कोई नया नबी पैदा नहीं हो सकता किसी दूसरे को नुबुव्वत नहीं मिल सकती ।

उनका दूसरा अक़ीदा यह है कि ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने जो मोअजज़े दिखाए वह सब मुस्मिरेज़म के करिश्मे थे। अगर मिर्ज़ा उनको मकरुह व क़ाबिले नफ़रत न समझता तो मिर्ज़ा इन अजूबा नुमाइयों में मसीह अलैहिस्सलातु वस्सलाम से किसी तरह कम न रहता। (देखो मिर्ज़ाइयों क़ादियानियों के मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी की किताब इज़ालतुलऔहाम) हालांकि कुर्आन अज़ीम ने फर्माया।

وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ (سورہ۔بقرہ،آیت ۸۷)

यानी और हमने मरियम के बेटे ईसा को रोशन मोअजज़े अता फ़र्माए और हम ने पाकीज़ा रुह से उनकी मदद फ़र्माई। अगर मिर्ज़ाइयों क़ादियानियों के दिलों में अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की महब्बत व उल्फ़त इज़्ज़त व अज़मत होती तो क्या कुर्आने पाक की सच्चाई व हक़्क़ानियत और सय्यिदिना ईसा रुहुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम की अज़्मत पर ऐसे गन्दे गुस्ताख़ाना हम्ले करते क्या मिर्ज़ा को नबी व रसूल मानकर कुर्आने पाक के फ़र्मान व ख़ातिमुन्नबिय्यीन को झुटला सकते क्या इन गुस्ताख़ियों तौहीनों से भरी हुई किताबें छापकर शायेअ कर सकते।

मुसलमानो सुन्नी भाइयो! इस अम्र का फ़ैसला तुम्हारे ही ईमानों पर छोड़ता हूं। तीसरी तरफ़ फ़िर्क़ए नैचरिया है जिसका अक़ीदा है कि पैग़म्बरों ने अपनी उम्मतों के सामने जो कलामे

इलाही पेश किया वह कलामे इलाही हर्गिज़ न था बल्कि वह सब उन्हीं पैग़म्बरों के दिलों के ख़्यालात थे जो फ़व्वारे के पानी की तरह उन्हीं के कुलूब से जोश मारकर निकले और फिर उन्हीं के दिलों पर नाज़िल हो गये जिब्रईल किसी हस्ती का नाम नहीं, फ़िरिश्तों का कोई वुजूद नहीं बल्कि जैसे पागल अपनी दिमाग़ी बिमारी के सबब यह समझता है कि मेरे पास कोई खड़ा हुआ मुझसे बातें कर रहा है और हक़ीक़त में वहां किसी का वुजूद नहीं होता वह सब उसी पागल के ख़्यालात हैं। इसी तरह लोगों की रुहानी तर्बियत में मश्गूल होने के सबब पैग़म्बर भी यह समझता है कि मेरे पास जिब्रईल ख़ुदा का यह कलाम लाए फ़िरिश्तों ने मुझे ख़ुदा का यह पैग़ाम पहुंचाया और दर हक़ीक़त न जिब्रईल का वुजूद है और न किसी फिरिश्ते का न वह कलाम कलामे ख़ुदा वन्दी है बल्कि वह सब उसी पैग़म्बर के दिल के ख़्यालात हैं जो पैग़म्बर को फ़िरिश्तों की शक्ल में दिखाई देते हैं और कलामे इलाही की तरह सुनाई देते हैं (देखो नैचरियों के इमाम व मुक़्तदा सर सैय्यद अहमद ख़ाँ कोली अलीगढ़ी की किताब तफ़्सीरुल क़ुर्आन सफ़ा 29)जन्नत व दोज़ख़ के सवाब व अज़ाब की जो तफ़्सीलात आयाते इलाहिया व अहादीसे नबविया में बयान फ़र्माई गई हैं वह सब ग़लत हैं। जन्नतो दोज़ख़ की हक़ीक़त महज़ रुहानी मसर्रत और रुहानी सदमें के सिवा कुछ नहीं(देखो तफ़्सीरुल क़ुर्आन सफ़ा 40)

अम्बिया व मुर्सलीन अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के मोअजिज़े मौजूदा ज़माने के साइंस के ख़िलाफ़ हैं इसलिए वह सब झूटे और गढ़े हुए हैं (देखो तफ़्सीरुल क़ुर्आन सफ़ा 128) फ़िर्क़ए नैचरिया के बीसियों कुफ़्री अक़्वाल हैं जिनमें अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम पर गुस्ताख़ाना बे अदबाना हम्ले किए गए हैं नमूने के तौर पर इस वक़्त इस फ़िर्क़ए नैचरिया के सिर्फ़ तीन अक़्वाले कुफ़्रिया सुना

दिए हैं मुख़्तसर तफ़्सील देखना चाहो तो किताबे मुबारक तजानुबे अहले सुन्नह अन अहलिल्फ़ित्नह' मुलाहज़ा फ़र्माओ।

अब मुसलमान सुन्नी भाइयो! अपने दीन व ईमान से फ़ैसला करो नैचरियों के दिलों में अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की महब्बत व उल्फ़त इज़्ज़त व अज़मत होती तो क्या पैग़म्बरों को पागलों के साथ तश्बीह दे सकते क्या तौराते मुक़द्दसा व ज़बूरे मुबारक व इन्जील शरीफ़ व कुर्आने अज़ीम के कलामे इलाही होने से इन्कार कर सकते क्या साइंस जैसे मौहूम और ज़न्नी व ग़ैर यक़ीनी फ़न पर भरोसा करके ख़ुदा व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के फ़र्माए हुए मोअजिज़ाते अम्बिया अलैहिस्सलातु वस्सलाम को झुटला सकते क्या जन्नतो दोज़ख़ के सवाब व अज़ाब की जो तफ़्सीलात कलामे इलाही व कलामे नबवी में बयान फ़र्माई गई हैं उनकी तक्ज़ीब कर सकते क्या अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की इज़्ज़त व अज़मत पर गन्दे घिनौने हमलों से भरी हुई ऐसी किताबें छापकर शायेअ कर सकते।

सुन्नी मुसलमान भाईयो! अपने इमानों से इस अम्र का ख़ुदी फ़ैसला लो कि क्या कुर्आने पाक व हदीस की रूसे वहाबी देवबन्दी व मिर्ज़ाई क़ादियानी व नैचरी मुसलमान व साहिबे ईमान शामिल हो सकते हैं हर्गिज़ नहीं शरीअते मुतह्हरा इस्लामिया के हुक्म से ख़ारिज और काफ़िर व मुर्तद हैं। इन्हीं फ़िरकों की तरह कलामे इलाही की तकज़ीब रसूले पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की तौहीन ज़रूरियाते दीनिया का इन्कार करने वाले और भी नए नए फ़िरके निकल पड़े हैं जैसे नासबी और बहाई और राफ़िज़ियों में से वह लोग जो कुर्आने अज़ीम को नाक़िस और हज़राते सहाबाए किराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम)

की शान में अलल्ऐलान तबर्रा बकने को अपना मज़्हबी हक़ बताते हैं और मुबल्लिगे वहाबिया ऐडीटर अन्नज्म मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी के ख़ारजी चेले जो हज़रात अहले बयते नुबुव्वत (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) की शान में गुस्ताख़ियां करते हैं और इसी के साथ साथ वह अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की इहानत करने वालों की हिमायत व ताईद करते रहते हैं और चकड़ालवी और वहाबी गैर मुक़ल्लिद और ख़ाकसारी यह सब फ़िर्के तुम्हारे दीन व ईमान पर हमले कर रहे हैं और तुमको साढ़े तेरह सौ साल वाले पुराने सच्चे दीने ईस्लाम व मज़्हबे अहलेसुन्नत से बहकाना चाहते हैं तुम पर फ़र्ज़ है कि इनके हमलों से अपने दीन व ईमान को बचाओ और उसकी इस ज़मानए पुर फ़ितन में तुम्हारे लिए सिर्फ़ यही एक सूरत है कि इन सब गुमराहों बदमज़्हबों की सोहबतों से दूर रहो इनके जलसों में मत जाओ इनकी तक़रीरों को मत सुनो अगर तुम इनके जलसों में शरीक हुए और इन बद मज़्हब फ़िरकों के आदमियों ने हस्बे आदत अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम पर अपने अक़ीदा व मज़्हब के मुताबिक़ हमले किए तो दो ही सूरतें हैं अगर तुमने ख़ामोशी के साथ अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम पर हमले सुन लिए तो याद रखो तुम शरई मुजरिम हो गए और फ़ितरते इन्सानी का मुक़्तज़ा है कि कैसी ही नागवार और मकरुह बात क्यों न हो इन्सान बार बार सुनते सुनते उसपर ख़ामोशी इख़्तियार करते करते उसका आदी हो जाता है और एक वक़्त वह आ जाता है कि वह नागवार बात उसको गवारा और मकरुह बात मरग़ूब हो जाती है अगर खुदा नख़्वास्ता बद मज़्हब फ़िरकों के यह अक़्वाले कुफ़्रिया जिनमें अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम पर गन्दे

हमले किए गए हैं उन बदमज़्हबों की सोहबतों में बैठते बैठते बार बार सुनते सुनते मआज़ल्लाह तुमको गवारा हो गए तो तुम्हारा ईमान ही जाता रहेगा। और तुम भी उन्हीं बेदीनो की तरह बेईमान हो जाओगे और अगर अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम पर गुस्ताख़ाना हमले सुनकर तुम्हारी हरारते ईमानी जोश में आगई और वहीं तुमने उनका रद्द शुरूअ कर दिया तो लड़ाई झगड़े का अन्देशा है फ़ित्ना व फ़साद का एहतिमाल है लिहाज़ा फ़ित्ना व फ़साद से बचने और अपने दीन व ईमान बचाने की बेहतरीन सूरत यही है कि बद मज़्हबों बेदीनों से क़तअन अलाहिदा रहो जो दीने इस्लाम व मज़्हबे अहलेसुन्नत साढ़े तेरह सौ साल पेशतर सरकारे दो आलम सय्यिदुना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ने तालीम फ़र्माया था उसी पुराने सच्चे मज़्हब पर पुख़्तगी व मज़्बूती के साथ साबित व मुस्तक़ीम रहो और हर बात में शरीअते मुहम्मदिया साहिबिहा व अलैहिस्सलातु वस्सलाम के इत्तिबाअ को अपना दस्तूरूल अमल बनालो फिर दुनिया की कामयाबी तुम्हारे क़दम चूमेगी और आख़िरत में तुम्हारे सर पर कामयाबी का सेहरा बांधा जाएगा। समझा देना हमारा फ़र्ज़ है तौफ़ीक़ देना अल्लाह तबारक व तआला के इख़्तियार में है हमारी इस तक़रीर से यह भी रौशन हो गया कि मुबल्लिग़ीने अहलेसुन्नत जो उसी साढ़े तेरह सौ साल वाले पुराने सच्चे दीन व मज़्हब की तरफ़ दावत देते हैं वह दर हक़ीक़त इन तमाम नए जदीद फ़िरकों को इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद की तब्लीग़ फ़र्मा रहे हैं जिसकी तब्लीग़ साढ़े तेरह सौ साल पहले हुज़ूर सय्यिदिना पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ने कुर्आने पाक के इन अल्फ़ाज़े मुबारका में फ़र्माई थी

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعاً وَّ لَا تَفَرَّقُوْا (سورہ آل عمران، آیت ۱۰۳)

और यह नए नए फ़िरक़े जो मुसलमानों को उस साढ़े तेरह सौ

साल वाले दीने इस्लाम व मज़्हबे अहलेसुन्नत से हटाना चाहते हैं और अपने अपने नए फ़िरक़ों की तरफ़ बुलाना चाहते हैं दर हक़ीक़त यही फ़ित्नागर और मुफ़्सिद हैं यही मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ व इफ़्तिराक़ फ़ैलाने वाले हैं यही मुसलमानों को चन्द फ़िरक़ों में तक़सीम करके उनको आपस में लड़ाने वाले हैं अल्लाह तआला हिदायत बख़्शे आमीन।

बहर हाल जो शख़्स वली अल्लाह कहलाता हो लेकिन उस साढ़े तेरह सौ साल वाले पुराने सच्चे दीने इस्लाम व मज़्हबे अहलेसुन्नत के सिवा किसी और फ़िरक़े का पैरु किसी और जदीद मज़्हब का मुत्तबेअ हो या शरीअते मुतह्हरा का मुख़ालिफ़ हो फिर चाहे कैसा ही ज़बरदस्त कश्फ़ दिखाए कैसी ही शानदार करामतें ज़ाहिर करे उसको हर्गिज़ वली अल्लाह मत समझो वह वली अल्लाह नहीं वलीउश्शैतान है और जो शख़्स ईमान व तक़्वा दोनों सिफ़तों में कमाल हासिल कर लेता है वह यक़ीनन अल्लाह का दोस्त उसका वली है अगर्चे उससे कश्फ़ सादिर न हो अगर्चे उससे कोई करामत ज़ाहिर न हो कि तमाम करामतों से अफ़्ज़ल व आला करामत यही है कि इन्सान दीन व मज़्हब पर इस्तिक़ामत रखता हो

اَلْاِسْتِقَامَةُ فَوْقَ الْكَرَامَةِ

अब जो शख़्स मोमिने कामिल व मुत्तक़िए कामिल हो जाता है तो बुख़ारी शरीफ़ में हदीस है कि अल्लाह उसे महबूब बना लेता है और वह बे नियाज़ रब्बे क़दीर जो आँख नाक हाथ पैर जिस्म व जिस्मानियत से वुजूबन मुनज़्ज़ा है अपनी रहमत व करम से फ़र्माता है कि उसका हाथ बन जाता हूँ कि उससे सब तसर्रुफ़ात करता है उसकी आँखें बन जाता हूँ उससे देखता है उसके कान बन जाता हूँ उससे सुनता है और बकमाले करम फ़र्माता है उसके पैर बन जाता हूँ उससे चलता फिरता है यानी अल्लाह तबारक व तआला की सिफ़ात की तजल्लियात का परतव और मज़्हर हो

जाता है और उसकी उनमें जलवा गरी होती है।

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तफ़्सीरे कबीर में इसी हदीस को लिखकर फ़र्माते हैं कि जब वली अल्लाह के कान और आँखें ख़ुदा हो जाता है तो दूर व नज़्दीक की हरएक बात को सुनता है हर चीज़ को देखता है और जब वली अल्लाह के हाथ ख़ुदा हो जाता है तो दूर व नज़्दीक का आसान व मुश्किल हरएक तरह का तसर्रुफ़ कर सकता है बन्दा बन्दा ही रहता है ख़ुदा नहीं हो जाता मगर इस मर्तबे में पहुँच कर बिला तश्बीह बन्दे की वह शान हो जाती है जैसे एक लोहा थोड़ी देर के लिए अपने आपको आग के सुपुर्द कर देता है जब भट्टी से निकलता है तो उसका रंग आग का रंग है, उसका काम आग का काम है, क्या लोहा आग है नहीं लोहा लोहा है आग नहीं, मगर उस वक़्त लोहा आग का मज़हर बन गया है और आग ने अपनी तजल्लियां लोहे में ज़ाहिर कर दी हैं तो लोहा अगर उस वक़्त आग नहीं है तो आग से जुदा भी नहीं। इसी तरह बिला तश्बीह बन्दा अपने आपको जब अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के दस्ते क़ुदरत उसकी रज़ा के सुपुर्द कर देता है रब्बे क़दीर जल्ला जलालुहू उस बन्दे को अपनी तजल्लियात का मज़हर बना लेता है बन्दे से ख़ुदा की शानें ज़हूर फ़र्माने लगती हैं बन्दा ख़ुदा नहीं होता लेकिन इस मर्तबे में पहुँच कर ख़ुदा से जुदा भी नहीं होता।

मर्दाने ख़ुदा ख़ुदा नबाशन्द ::: लेकिन ज़े ख़ुदा जुदा न बाशन्द

और बिला तश्बीह इसलिए मैंने कहा कि यह तम्सील महज़ तफ़्हीम के लिए मैंने अर्ज़ की है वरन् इस तम्सील में लोहे के अन्दर आग का जुलूल व सुरयान है और अल्लाह तबारक व तआला इससे भी पाक व मुनज़्ज़ा है ग़रज़ विलायत के इस मर्तबे में पहुँच कर बन्दे से वह काम ज़ाहिर होने लगते हैं जो बन्दे से नहीं हो सकते यह औलियाए रब्बानी अपने अपने ज़मानों में बहुक्मे इलाही अपनी करामतें ज़ाहिर फ़र्माकर दर हक़ीक़त अपने आक़ा व

मौला पैग़म्बरे इस्लाम सय्यिदुना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के मोअजिज़े दिखाते हैं और पाक दीने इस्लाम और मुक़द्दस मज़्हबे अहलेसुन्नत की हक़्क़ानियत के क़ाहिर जल्वे ज़ाहिर फ़र्माते हैं और इस्लाम के मुख़ालिफ़ों अहलेसुन्नत के दुश्मनों को साकित व सामित व मब्हूत बनाते हैं इनकी करामाते बाहिरा दर हक़ीक़त हुज़ूरे अक़्दस पैग़म्बरे इस्लाम सय्यिदुना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के मोअजज़ाते क़ाहिरा हैं अक़्लों को आजिज़ और फ़लसफ़ा व साइंस को गुंग व 'कोर व कर' बना दिया करती हैं और क्यों न हो यह हज़रात औलियाए किराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) अपने माल व अहलो अयाल बल्कि अपनी जान व आबरू की उल्फ़त व मुहब्बत को अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के इश्क़ व मुहब्बत पर कुर्बान कर दिया करते हैं यह हज़रात अगर माल की ख़्वाहिश करते हैं तो अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ही की रज़ा के लिए अगर अपने बाल बच्चों की परवरिश करते हैं तो अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ही की खुशी के लिए वह अगर अपने अहल के हुकूक़े ज़ौजियत अदा फ़र्माते हैं तो अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ही की मर्ज़ी के लिए। वह अगर अपनी जान व आबरू की हिफ़ाज़त करते हैं तो अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ही की इत़ाअत व फ़र्माबरदारी के लिए। खुलासा यह कि उन हज़रात का चलना फिरना, उठना बैठना, सोना जागना, खाना पीना, हर एक क़ौल हर एक फ़ेल अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ही के

अह्काम व फ़रामीन के मातहत हुआ करता है और जब मौक़ा होता है तो यह हज़रात अपना माल अपनी इ़ज़्ज़त अपनी आबरू अपने बच्चे अपनी जान ग़रज़ अपना सब कुछ अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की इ़ज़्ज़त व अज़मत व शरीअ़त पर सदक़ा कर देते हैं यह वह लोग हैं जिनको न तो अपने माल व जान व आबरू पर किसी आने वाले नुक़्सान का कुछ ख़ौफ़ होता है, न किसी हो चुकने वाली मुसीबत पर कुछ रन्ज व ग़म होता है इन हज़रात को सिर्फ़ अल्लाह तबारक व तआला ही का ख़ौफ़ होता है और सिर्फ़ अल्लाह तबारक व तआला ही के प्यारे दीन पर आने वाली मुसीबतों का रन्ज होता है यह दुनिया ही में। لَا خَوْفٌ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ की ज़िन्दा तस्वीर और। الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا का मुकम्मल पैकर और। كَانُوْا يَتَّقُوْنَ का कामिल नमूना होते हैं यह हज़रात। فَاتَّبِعُوْنِىْ पर अमल करते हुए अल्लाह तआला के प्यारे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की इत्तिबाअ में अपनी हस्ती को मिटा देते हैं और इसी लिए। يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ का मिस्दाक़ होकर अल्लाह तबारक व तआला के महबूब बन जाते हैं यह हज़रात कामिल तौर पर हुज़ूर महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के रज़ा जो हो जाते हैं तो ख़ुद अल्लाह तबारक व तआला बकमाले करम इन हज़राते औलिया (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम) का रज़ा जो हो जाता है यह हज़रात सच्चे दिल से सच्चे त़ौर पर उसके महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम को चाहते हैं तो ख़ुद अल्लाह तबारक व तआला उन हज़रात को चाहता है फिर उन हज़रात का यह मर्तबा हो जाता है कि जो यह चाहते हैं वही ख़ुदा चाहता है इसलिए कि यह वही चाहते हैं जो ख़ुदा चाहता है यह औलियाए किराम अपने अपने वक़्त में अल्लाह तबारक व तआला के मज़हर और उसके महबूब सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के नाइब होते हैं इन अस्फ़ियाए इज़ाम को अल्लाह तबारक व तआला अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के सदक़े में लौहे महफ़ूज़ पर मुत्तला फ़र्मा देता है और अपने अहकामे तक्वीनिया का इल्म भी अता फ़र्मा दिया करता है यह हज़रात दुनियवी मसाइब व आफ़ात का मुक़ाबला करने के लिए सिर्फ़ उसी क़दर तदबीरें और कोशिशें करते हैं जिस क़दर अपने लिए उम्मुल किताब लौहे महफ़ूज़ में मुक़द्दर देख लेते हैं और तक्लीफ़ व शिद्दत के लिए उनको मालूम हो जाता है कि यह इल्मे इलाही में हमारे लिए क़ज़ाए मुबरम यानी न टलने वाला हुक्म है फिर यह बरज़ा व ख़ुशी उसको बर्दाश्त करने के लिए अपना सरे तस्लीम ख़म कर दिया करते हैं उन मसाइब व शदाइद पर यह हज़रात सिर्फ़ सब्र व तस्लीम ही से काम नहीं लेते बल्कि ख़ुलूसे क़ल्ब के साथ उस पर राज़ी भी होते हैं और उन मुसीबतों और तक्लीफ़ों पर अल्लाह तबारक व तआला का शुक्र भी बजा लाते हैं कि रब्बे करीम व रहीम जल्ला जलालुहु का एहसान है कि उसने तोहफ़ए महब्बत से हमको नवाज़ा यह हज़रात मुसीबत को राहत से अफ़्ज़ल व बेहतर जानते हैं कि इस लिहाज़ से कि दोनों अल्लाह तबारक व तआला ही की भेजी हुई हैं दोस्त जो तोहफ़ा भेजे वह चाहने वाले को महबूब ही होता है मुसीबत व राहत दोनों बराबर हैं कि "हरचे अज़ दोस्त मी रसद नेकोस्त" लेकिन इस लिहाज़ से कि राहत में नफ़्स को भी ख़ुशी होती है और मुसीबत पर सिर्फ़ रब तबारक व तआला ही की रज़ा होती है उनके नज़्दीक राहत से ज़्यादा महबूब मुसीबत हुआ करती है।

इन्हीं हज़रात (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) की शान में हुज़ूर पुरनूर मुर्शिदे बरहक़ आलाहज़रत क़िब्ला इमामे अहलेसुन्नत मुजद्दिदे आज़मे दीनो मिल्लत मौलाना अश्शाह अब्दुल मुस्तफ़ा मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ाँ साहिब फ़ाज़िले बरेलवी क़ादिरी बरकाती

(रदियल्लाहु तआला अन्हु) के मंझले भाई हज़रत मौलाना हसन रज़ा ख़ाँ फ़र्माते हैं।

बेखुदे दीदार की तुर्बत पे मेला क्यों न हो।
उनके जल्वे का तमाशाई तमाशा क्यों न हो।।

वक़्ते जल्वा बेख़ुदे मदहोश शैदा क्यों न हो।
यह तमाशा हो तो फिर ऐसा तमाशा क्यों न हो।।

नीम जल्वे से मुनव्वर कर दिए दोनों जहां।
क्यों न हो ऐ आफ़ताबे आलम आरा क्यों न हो।।

देखने वाले की आँखें बन्द होनी चाहिए।
फिर मैं देखूं पर्दे वालों का नज़ारा क्यों न हो ।।

ख़्वाहिशें अपनी फ़िदा करदे रज़ाए दोस्त पर।
फिर मैं देखूं चाहने वाले का चाहा क्यों न हो।।

मौत और उनकी गली की सदक़े ऐसी मौत पर।
ज़िन्दगी का लुत्फ़ इस मरने से पैदा क्यों न हो।।

जो वह चाहेंगे वह होगा और वह जो चाहें करें ।
रब ही जब चाहे उन्हें फिर उनका चाहा क्यों न हो।।

अपनी हस्ती सद्दे राहे वस्ले जाना है हसन।
हम अगर गुम जाएं तो फिर उनसे मिलना क्यों न हो।।

और हज़रत मुजाहिदे इस्लाम सैफुल्लाहिल्मस्लूल मौलाना अश्शाह अबुल वक़्त मुहम्मद हिदायत रसूल साहेब लखनवी क़ादिरी बरकाती अबुल हुसैनी अहमद रज़ाई (रदियल्लाहु तआला अन्हु) अपने और मेरे और सारे जहान के आक़ा व मौला हुज़ूर सय्यिदुना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की सरकारे अर्श विक़ार में यूं अर्ज़ करते हैं।

तेरी उल्फ़त में मर मिटना शहादत इसको कहते हैं।
तेरे कूंचे में होना दफ़्न जन्नत इसको कहते हैं।।

कटाना सर को तेरी राह में और उफ़ नहीं करना।
ज़बां में तेरे जाँ दादों की हिम्मत इसको कहते हैं।।

विलायत इम्तिहाने दोस्त में साबित क़दम रहना।
बलाओं से न घबराना करामत इसको कहते हैं।।
रियाज़त नाम है तेरी गली में आने जाने का।
तसव्वुर में तेरे रहना इबादत इसको कहते हैं।।
तुझी को देखना तेरी ही सुनना तुझ में गुम होना।
हक़ीक़त मारिफ़त अहले तरीक़त इसको कहते हैं।।
तुम्हारे ग़ैर के ख़तरे से करना पाक बातिन को।
शहा सब औलिया गुस्ले तहारत इसको कहते हैं।।
ज़हे तुग़यां कि दरिया से नबी के प्यारे बच्चों को।
न दी इक बूँद पानी की शक़ावत इसको कहते हैं।
सगे दरगाहे जीलां मुझको हक़ करदे तू शाहों से।
कहूँ दुनिया के कुत्तो बादशाहत इसको कहते हैं।।
तेरा साइल, तेरा मंगता, तेरा आशिक़, तेरा शैदा।
तेरा ख़ादिम तेरा बन्दा हिदायत इसको कहते हैं।।

इस पाक मुबारक गिरोहे औलिया (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) में हज़रात ख़ोलफ़ाए अरबाअ राशिदीन हादीन महदीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर व हज़रते सय्यिदुना उमरे फ़रूक़े आज़म व हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी जुन्नूरैन व हज़रते सय्यिदुना मौला अली मुश्किल कुशा (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) के बाद सबसे बड़ा मर्तबा हज़रते सय्यिदुना इमामे हसने मुज्तबा व हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन शहीदे करबला (रदियल्लाहु तआला अन्हुमा) का है मैदाने करबला में जो हज़रते इमाम अर्श मक़ाम (रदियल्लाहु तआला अन्हु) से बेशुमार करामतें ज़ाहिर हुई हैं उनमें मुख़्तसरन महज़ चन्द करामाते जलीला आप हज़रात के ईमानों को ताज़ा करने के लिए सुनाता हूँ।

रिवायत है कि मुहर्रमुलहराम 60 हि0 की नवीं तारीख़ गुज़र कर जब दसवीं शब आती है जिसकी सुबह को मैदाने करबला में वह क़ियामते कुब्रा क़ायम होने वाली है जिसकी नज़ीर

पेश करने से आलम की तारीखें आजिज़ हैं तो हज़रते इमाम अर्श मक़ाम (रदियल्लाहु तआला अन्हु) तयम्मुम से इशा की नमाज़ बाजमाअत अपने हमराहियों शौक़े शहादत के मतवालों के साथ अदा फ़र्मा कर हुक्म देते हैं कि तमाम ख़ेमों की तनाबें बाहम एक की दूसरी तनाबों में दाख़िल करके सब ख़ेमों को क़रीब क़रीब कर लिया जाए और गिर्दा गिर्द चारों तरफ़ ख़न्दक ख़ोद कर जंगल की लकड़ियां डालकर उसमें आग रौशन कर दी जाए और आने जाने के लिए सिर्फ़ एक रास्ता रखा जाए ताकि दुश्मन शब को ख़ेमों पर किसी तरफ़ से हमला न करने पाएं। हुक्म की तामील की जाती है ख़ेमों के गिर्दा गिर्द ख़न्दक़ में आग के शोले भड़क रहे हैं उनकी तपिश से नन्हें नन्हें भूके प्यासे बच्चों की प्यास में और तरक़्क़ी हो गई है जो रास्ता छोड़ दिया गया है उसपर कुर्सी बिछी हुई है उसपर जवानाने जन्नत के सरदार तशरीफ़ फ़र्मा हैं सामने भाई भतीजे भान्जे बेटे और जांनिसार हमराही हाज़िर हैं (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) शब का वक़्त है इब्ने ज़ियाद बद निहाद के लश्कर का एक शख़्स घोड़े पर सवार चला आता है ख़बीस कहता है ऐ हुसैन तुमको तो आख़िरत की आग से पहले दुनया ही की आग ने जल्दी से ले लिया हुज़ूर मालिके तस्नीम व कौसर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के प्यारे नवासे (रदियल्लाहु तआला अन्हु) फ़र्माते हैं यह कौन है ख़ादिमाने जांबाज़ अर्ज़ करते हैं ऐ फ़र्ज़न्दे रसूलुल्लाह जुबैरा कलबी है इजाज़त हो तो अभी इस गुस्ताख़ी की इसको सज़ा देदी जाए फ़र्माते हैं अल्लाह का इन्तिक़ाम इससे बहुत ज़्यादा सख़्त है इसके बाद उस बदबख़्त से इर्शाद फ़र्माते हैं तू मुझको आग से डराता है मैं तो उस रब के हुज़ूर जा रहा हूँ जो करीम है फिर अपने रब जल्ला जलालुहू की बारगाह में अर्ज़ करते हैं ऐ रब "इसको आख़िरत से पहले दुनियां में भी जला दे" फ़ौरन उसका घोड़ा उसको सर के बल उसी ख़न्दक में डाल देता है मुनादी आसमान

से निदा करता है ऐ रसूलुल्लाह के नवासे दुआ का क़बूल होना आपका मुबारक हो एक और रिवायत है कि उसी शबे आशूरा में हज़रते सय्यिदुना साअ़द (रदियल्लाहु तआला अन्हु) के शक़ी व ख़बीस फ़र्ज़न्द अमर के लश्कर में मालिक बिन उरवा जब जुबैरा कलबी का यह वाक़िआ सुनता है तो वह हंसता है कहता है उसका घोड़ा आग देखकर भड़क गया होगा। जुबैरा संभल न सका होगा ख़न्दक में गिर पड़ा होगा इसमें हुसैन की क़बूलीयते दुआ को क्या दख़ल है मैं तो शहसवार हूँ शरीर से शरीर घोड़े पर जब पैड़ी जमा लेता हूँ तो वह भी मेरे इशारों पर चलता है मेरा घोड़ा ऐसा नहीं जो आग को देखकर या शोलों की गर्मी से भड़क जाए मैं जाता हूँ और हुसैन से वही बात कहता हूँ देखूं तो मुझे उनकी दुआ आग में क्यों कर गिराती है।

ख़बीस व शक़ी अपने घोड़े पर सवार आता है कहता है ऐ हुसैन तुमने तो उस जहाँ की आग से पहले इसी जहाँ में अपने गिर्द आग भड़काली। हज़रते सय्यिदुना सय्यिदुश्शोहदा (रदियल्लाहु तआला अन्हु) फ़र्माते हैं।

كَذِبْتَ يَا عَدُوَّ اللهِ

यानी ऐ ख़ुदा के दुश्मन तू झूटा है फ़िदाइयाने इमामे आली मक़ाम (रदियल्लाहु तआला अन्हु व अन्हुम) में से हज़रात मुस्लिम बिन औसजा असदी (रदियल्लाहु तआला अन्हु) अर्ज़ करते हैं ऐ जन्नत के जवानों के आक़ा इजाज़त हो तो जिस नापाक मुँह से इसने यह गुस्ताख़ी बकी है उसी मुँह में तीर मार दूं मालिके जन्नत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के शहज़ादे फ़र्माते हैं मैं लड़ाई में सबक़त करना नहीं चाहता तुम मेरे चाहने वाले बकमाले बे नियाज़ी मेरी नाज़ बरदारी फ़र्माने वाले रब्बे क़दीर जल्ला जलालुहु की कुदरत देखो फिर अपने रब जल्ला जलालुहू से अर्ज़ करते हैं ऐ अल्लाह इसको जहन्नम की आग से पहले आग की सज़ा दे फ़ौरन ही उस ख़बीस के घोड़े का पैर एक

सूराख़ में जा पड़ता है घोड़ा झुक पड़ता है लगाम उस मुर्दक के हाथ से छूट जाती है घोड़े से नीचे गिर पड़ता है मगर एक पाँव रिकाब में फंसा रह जाता है उसी हालत में घोड़ा दौड़ा दौड़ाकर उसको मार डालता है फिर खड़े होकर फुरेरी लेता है उसका जो पाँव रिकाब में फंस गया था वह निकल जाता है उसीका घोड़ा उसकी मुरदार लाश को अपनी टापों से ठोकरें मारकर उसी आग में डाल देता है।

हुज़ूर इमामुश्शोहदा (रदि़यल्लाहु तआला अन्हु) खुश हो जाते हैं और अपने रब जल्ला जलालुहू की नेमते जलीला का ऐलान फ़र्माते हैं और बआवाज़े बुलन्द अपने रब्बे करीम से अर्ज़ करते हैं

اَللّٰهُمَّ نَحْنُ اَهْلُ بَيْتِ رَسُوْلِكَ وَ عِتْرَتُهٗ و ذُرِّيَّتُهٗ فَانْصِفْنَا مِنْ هٰؤُلَاۤءِ الظَّالِمِيْنَ

यानी ऐ अल्लाह हम तेरे रसूल के घर वाले और उनके ख़ानदान वाले और उनकी औलाद हैं हमारी दाद इन ज़ालिमों से ले। इब्ने अश्अस भी लश्करे अश्क़िया में से निकल आया है मालिक बिन उरवा का आग में गिरना देखकर खुद भी जल रहा है हज़रते आली मक़ाम (रदि़यल्लाहु तआला अन्हु) की यह दुआ सुनकर भड़क उठता है कहता है ऐ हुसैन तुमको रसूले खुदा से क्या क़राबत है कि हर वक़्त क़राबते रसूल का दम मारा करते हो यह हज़रते इब्ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के नसबे पाक पर गन्दा नजिस हमला था क़लबे पाक दुख जाता है।

अर्ज़ करते हैं ऐ रब यह इब्ने अश्अ़स तेरे रसूल से मेरे नसब को क़ताअ़ करता है मुझको तेरे रसूल का फ़र्ज़न्द नहीं जानता। आज ही इसको ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ हलाक कर। वह ख़बीस क़हक़हा लगाता हुआ ठट्ठे उड़ाता हुआ वहाँ से हटता है उसी वक़्त उसको पाख़ाने पेशाब की हाजत होती है घोड़े से उतरकर क़ज़ाए हाजत के लिए बैठता है फ़ौरन ही उसकी शरमगाह पर एक बिच्छू डन्क मार देता है और वह शक़ी अपने

पेशाब अपने पाख़ाने में ही तड़प तड़पकर ज़लील व रूस्वाई के साथ नंगा जहन्नम में पहुँचा। एक और चौथी रिवायत है कि उसी शबे आशूरा में एक ख़बीस जिसका नाम जाअ़दे क़रनी था आता है कहता है ऐ हुसैन तुम देख रहे हो दरियाए फ़ोरात कैसी मौजें मार रहा है कैसा ठन्डा मीठा पानी है सूअर और कुत्ते भी पीकर सैराब हो रहे हैं लेकिन अल्लाह की क़सम तुमको और तुम्हारे बच्चों को पानी का क़तरा भी हर्गिज़ न देंगे यहाँ तक की प्यास की शिद्दत में तड़प तड़पकर तुम हलाक हो जाओ नन्हें नन्हें बच्चों की प्यास का ताअ़ना सुनकर इमामुस्साबिरीन (रदियल्लाहु तआला अन्हु) की चश्माने मुबारक में आँसू डबडबा आते हैं। अर्ज़ करते हैं ।

اَللّٰهُمَّ اَمِتْهُ عَطْشَانًا

यानी ऐ अल्लाह इसको प्यासा मार वह ख़बीस अपने नापाक लश्कर में वापस जाता है अपने ख़ेमे के पास पहुँच कर घोड़े से उतरता है घोड़ा भागता है वह पकड़ने दौड़ता है प्यास उस पर ग़ालिब होती है प्यास प्यास पुकारता है ख़बीसों के लश्कर में पानी की क्या कमी है दरियाए फुरात पर क़ब्ज़ा है अश्क़िया उसके मुँह में पानी डालते थे लेकिन वह बहुक्मे इलाही पानी नहीं पी सकता था आख़िर प्यास ही की शिद्दत में तड़प तड़पकर दाख़िले जहन्नम हुआ। जिस वक़्त बयासी तलवारों के ज़ख़्म खाते हैं वह जिस्मे नाज़नीन जो मुस्तफ़ा प्यारे सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के दोशे अक़्दस पर सवार हुआ करता था तीरों से छलनी हो जाता है वह जिस्मे मुबारक जो बचपन में हुज़ूर सय्यिदुना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के सीनए अक़्दस पर लेटा करता था नेज़ों से मुश्तबक हो जाता है बदने अक़्दस का मुबारक ख़ून जिसमें अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का मुक़द्दस ख़ून शामिल है निचुड़ जाता है घोड़े पर तशरीफ़ रखने की ताक़त नहीं रहती है तो वह फ़ातिमा का

चमकता हुआ चाँद अलीए मुर्तज़ा का दमकता हुआ सूरज वह अर्शे इलाही का तारा ज़मीन पर गिरता है मलए आला में कोहराम पड़ जाता है अर्शे आज़म लरज़ने लगता है।

وَ نَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَ نُقَدِّسُ لَك (سورہ۔بقرہ،آیت۳۰)

अर्ज़ करने वाले मासूम फ़िरिश्ते मैदाने करबला की तरफ़ टकटकी बांधे हुए

اِنِّیْ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (سورہ۔بقرہ،آیت۳۰)

के नज़ारे देखने में मसरूफ़ हो जाते हैं जुमा का दिन है ज़ोहर का वक़्त शुरू हो गया है रिवायत है कि उसी हालत में इमामे अर्श मक़ाम (रदियल्लाहु तआला अन्हु) ख़्याल फ़र्माते हैं कि नमाज़े ज़ोहर अदा करके अपने रब से मिलूँ वजू के लिए पानी कहाँ जहाँ पर पड़े हुए हैं उसी जगह अपने दोनों तरफ़ ज़मीन पर हाथ मारकर तयम्मुम फ़र्माते हैं और उठने की ताक़त नहीं बैठने की कुव्वत नहीं इसी तरह फ़र्शे ख़ाक पर पड़े पड़े अपने रब जल्ला जलालुहू की इबादत उससे राज़ व नियाज़ में मशगूल हो जाते हैं इशारे से नमाज़ अदा फ़र्मा रहे हैं।

आह इसी हालत में हसीन बिन तमीम ख़बीस ताककर तीर मारता है जो सय्यिदुस्साबिरीन इमामुश्शोहदा(रदियल्लाहु तआला अन्हु) के तालू में पेवस्त हो जाता है इमामे अर्श मक़ाम (रदियल्लाहु तआला अन्हु) उस तीर को खींचकर निकाल लेते हैं आह आह उस दहने अक़्दस से जिसको जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम चूमा करते थे खून का फ़व्वारा जारी हो जाता है हुज़ूर सय्यिदुश्शोहदा (रदियल्लाहु तआला अन्हु) अर्ज़ करते हैं ऐ अल्लाह इसने मेरी नमाज़ क़ताअ़ कर दी तो तू इसको प्यासा कर दे उस ख़बीस को प्यास की ज़्यादत और भूख की शिद्दत होती है उस मरदूद का पेट गर्मी से तपने लगता है उस नापाक की पीठ सर्दी से अकड़ने लगती है चिल्लाने लगता है हाए प्यास हाए गर्मी हाए भूख हाए सर्दी उसके आगे आग जलाई जाती है

उसकी पीठ पर ठन्डे पानी की मश्कें बहाई जाती हैं पाँच पाँच आदमियों के पेट भरकर खाने और पीने के लायक़ सत्तू दूध और पानी पी जाने पर भी भूख और प्यास में तड़पता रहता था आख़िर उसका पेट फट गया और फ़िन्नार व सक़र हो गया।

इन करामतों से साबित हो गया कि वह जो ख़ारजी नासबी वहाबी बकते हैं कि इमामे हुसैन (रदियल्लाहु तआला अन्हु) मजबूर व बेकस व बेबस होकर शहीद हुए क़तअ़न ग़लत व बातिल है। इन वाक़िआत से रौशन है कि अल्लाह तबारक व तआला अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के महबूब नवासे (रदियल्लाहु तआला अन्हु) की रज़ा का तालिब था वह मैदाने करबला में भी अपने प्यारे रसूल के प्यारे फ़र्ज़न्द की जुम्बिशे लब को देख रहा था अगर उफ़ फ़र्मा देते तो बहुक्मे इलाही लश्करे अश्क़िया पर आसमान से आग बरसने लगती। वह अगर करबला की तपती हुई ज़मीन पर ठोकर मार देते बहुक्मे खुदा वन्दी ज़मीने करबला से जन्नत की नहर निकल आती।

बहाँरों पर हैं आज आराईशें गुलज़ारे जन्नत की।
सवारी आने वाली है शहीदाने महब्बत की।।

अली के प्यारे, ख़ातूने क़यामत, के जिगर पारे।
ज़मीं से आसमां तक धूम है उनकी सियादत की।।

शहीदे नाज़ की तफ़्रीह ज़ख़्मों से न क्यों कर हो।
हवाएं आती हैं इन खिड़कियों से बाग़े जन्नत की।।

न होते गर हुसैन इब्ने अली उस प्यास के भूके।
निकल आती ज़मीने करबला से नहर जन्नत की।।

मगर मक़सूद था प्यासा गला ही उनको कटवाना।
कि ख़्वाहिश प्यास से बढ़ती रहे रूयत के शर्बत की।।

ज़मीने करबला पर आज मज्मा है हसीनों का।
जमी है अन्जुमन रोशन हैं शमएं नूरो तलअ़त की।।

यह वह शमएं नहीं जो फूक दें अपने फ़िदाई को।
यह वह शमएं नहीं रोकर जो काटें रात आफ़त की।।
यह वह शमएं हैं जिनसे जानें ताज़ा पाएं परवाने।
यह वह शमएं हैं जो हंसकर गुज़ारें शब मुसीबत की।।
हवाये यार ने पंखे बनाए पर फ़िरिश्तों के।
सबीलें रखी हैं दीदार ने खुद अपने शर्बत की।।
यह वक़्ते ज़ख़्म निकला खूं उछलकर जिस्मे अत़हर से।
कि रौशन हो गई मश्अ़ल शबिस्ताने महब्बत की।।
गला कटवा के बेड़ी काटने आए हैं उम्मत की ।
कोई तक़्दीर तो देखे असीराने मुसीबत की।।
उधर चिल्मन उठी हुस्ने अज़ल के पाक जलवों से ।
इधर चमकी तजल्ली बदरे ताबाने रिसालत की।।
सरे बे तन, तन आसानी को शहरे तै़बा में पहुँचा।
तने बे सर को सरदारी मिली मुल्के शहादत की।।
हसन सुन्नी है फिर इफ़्रातो तफ़्रीत उससे क्योंकर हो।
अदब के साथ रहती है रविश अरबाबे सुन्नत की।।

एक और रिवायत भी सुन लीजिए एक साहब हैं जिनका नाम अब्दुल्लाह यमनी है रहमतुल्लाहि तआला अलैह वह हज़रते सय्यिदुना इमामे अर्श मक़ाम शहज़ादए गुलगूं क़बा शहीदे करबला दाफ़ेए करबोबला अला जद्दिहिलकरीम अलैहि व अला आलिहिस्स लातु वस्सलाम वस्सना के दस्ते हक़ परस्त पर बयअ़त से मुशर्रफ़ और आपके मुरीद हैं सौदागरी करते हैं अपना सामाने तिजारत लिए हुए एक जहाज़ पर समन्दर का सफ़र कर रहे हैं जहाज़ भी आजकल का स्टीमर और दुख़ानी जहाज़ नहीं बल्कि वह पुराने ज़माने का कपड़े के पर्दों से चलने वाला जहाज़ है मुहर्रम 60 हि० का महीना है दसवीं तारीख़ है जुमा मुबारका का दिन है दोपहर का वक़्त हो चुका है समन्दर में तूफ़ान आ जाता है इनका जहाज़ तूफ़ान में फंस जाता है पर्दे फट जाते हैं मस्तूल टूट जाते हैं

इनको अपने और अपने सारे मुलाज़िमों के डूब जाने का जो उसी जहाज़ में हैं यक़ीन हो जाता है यकायक इनको अपने पीर दस्तगीर अपने मुर्शिदे बरहक़ हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन (रदियल्लाहु तआला अन्हु) की याद आ जाती है अर्ज़ करते हैं।

يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَدْرِكْنِىْ

यानी ऐ फ़र्ज़न्दे रसूलुल्लाह मेरी ख़बर लीजिए फ़ौरन देखते हैं कि एक साहिब तेज़ी से पानी के उपर घोड़ा दौड़ाते हुए तशरीफ़ ला रहे हैं जिनके चेहरए अनवर पर नक़ाब है कपड़ों पर गरदो गुबार और जाबजा खून के छींटे हैं दोनों हाथों से एक शीर ख़्वार नन्हें बच्चे को गले लगाए हैं वह बच्चा अपने नन्हें नन्हें हाथों को उनकी गर्दन में हमाइल किए हुए है उस बच्चे के हलकूम से कुछ खून के क़तरे टपक रहे हैं तूफ़ान के अन्दर घोड़े को लाकर जहाज़ के पास तशरीफ़ ले आते हैं हाथ तो ख़ाली नहीं लिहाज़ा अपने दाहिने बाजू से जहाज़ को सहारा देकर तूफ़ान से बाहर पहुँचा देते हैं। अब्दुल्लाह यमनी रहमतुल्लाहि तआला अलैह यह होशरुबा हैरत अफ़ज़ा मन्ज़र देखकर अर्ज़ करते हैं कि हुज़ूर कौन हैं चेहरए अनवर से नक़ाब उठा दी जाती है यह देखते हैं कि मेरे पीर दस्तगीर हज़रते इमाम अर्श मक़ाम (रदियल्लाहु तआला अन्हु) हैं यह बेचैन हो जाते हैं अर्ज़ करते हैं ऐ आक़ा मेरी जान मेरे मां बाप हुज़ूर पर कुर्बान मैं सरकार को किस हाल में देख रहा हूँ।

इर्शाद फ़र्माते हैं मेरे नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का कलिमा पढ़ने वालों उनके उम्मती कहलाने वालों ने मैदाने करबला में मुझको घेरा है चाहते हैं कि यज़ीद जो एक फ़ासिक़ फ़ाजिर, शराब ख़ोर, बेनमाज़ी, ज़िनाकार बदकार है मुझसे उसकी बयअ़त लेकर मेरे नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के दीने पाक में रख़्ना डाल दें लेकिन इसलिए कि दीने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम में रख़्ना न पड़ने पाए नाना जान

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की शरीअते ताहिरा के सिर्फ़ इस मस्अले की ख़ातिर कि जो शख़्स मुख़ालिफ़े शरीअते इस्लामिया और फ़ासिक़ व फ़ाजिर हो उसके हाथ में हाथ देना उसको अपना क़ाइदे आज़म और अमीरूल मोमिनीन बनाना जाइज़ नहीं आज सुबह से इस वक़्त तक मेरे साथी और रफ़ीक़ भाई और भतीजे भान्जे और बेटे तीन रोज़ के भूखे और प्यासे खुशी खुशी दीने हक़ पर कुर्बान हो चुके हैं यह वह वक़्त था कि मैं अपने जिगर के टुकड़े आँखों के तारे छः महीने के नन्हें शीर ख़्वार बच्चे को आदा के सामने ले गया था कि जिस नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम का तुम कलिमा पढ़ते हो जिसका उम्मती बनते हो उसका तो हुक्म है कि काफ़िरों मुश्रिकों के भी बच्चों पर रहम किया जाए फिर यह तो तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की साहिबज़ादी का पोता है तीन रोज़ से प्यास में तड़प रहा है तुम्हारे ख़्याल में यज़ीद की बयअत से इन्कार करने पर कुसूरवार हूँ तो मैं हूँ इस दूध पीते बच्चे ने तुम्हारा क्या कुसूर किया है देखो ज़ोअ़फ़ से निढाल हो गया है नक़ाहत की वजह से अब तो इसकी आवाज़ भी नहीं निकलती आँखें हल्क़ों में डगमगा रही हैं होटों पर खुश्की से पपड़ी जम गई है हलक़ सूख गया है अगर तुमको यह ख़्याल हो कि इसके बहाने से पानी मांगकर मैं खुद पी लूंगा तो तुम में से भी हज़ारों औलाद वाले हैं कोई शख़्स जो बच्चों की मामता रखता हो इस पर रहम करे आये और मेरी गोद में से खुद अपनी गोद में ले जाये इस बच्चे को खुद अपने ही हाथों से पानी पिलाकर मुझे दे जाये इस पर भी उन ख़बीसों के दिलों में रहम न आया हिरमिला बिन काहिल शक़ी ने ता़क कर तीर मारा जो उसके हल्कूम पर पड़ा यह बच्चा तड़पने लगा मैंने तीर निकाला तीर के साथ ही नन्हीं सी जान भी निकल गई। मैं इस बच्चे अली असग़र को मैदाने करबला से ख़ेमे में ले जा रहा था कि इसकी

फूफी ज़ैनब की गोद में जाकर देदूँ और कह दूँ कि अपनी भाभी जान शहर बानो से कह देना कि देखना बेसबरी न करना बल्कि अल्लाह जल्ला जलालुहू का शुक्र अदा करना कि उसने अपने करम से यह नन्हीं सी कुर्बानी भी क़बूल फ़र्माली और कह देना कि लो यह नन्हा सा शहीद भी मुबारक हो यह शर्बते शहादत पीकर सैराब हो गया है इत्मिनान रखो अब यह तुमसे पानी मांगने के लिए इशारा भी नहीं करेगा। आबे पैकान पीने के बाद अब यह ऐसी मीठी नींद सो गया है कि क़ियामत से पहले किसी के जगाने पर भी नहीं जागेगा अभी निस्फ़ रास्ते में था कि तुम्हारी फ़रियाद मेरे कान में पहुँची ख़्याल हुआ कि जब तक इस बच्चे को पहुँचाने जाऊँ उतनी देर में कहीं तुम्हारा जहाज़ डूब न जाए तो क़ियामत के दिन तुमसे मुझे शर्मिन्दगी हो कि तुमने मुझसे फ़रियाद की मैं ने तुम्हारी फ़रियाद सुनी फिर भी तुम्हारी फ़रियाद को न पहुँचा इसलिए जल्दी में इस नन्हे से शहीद को गले से लगाए हुए चला आया।

अच्छा अब फुर्सत नहीं है शर्बते दीदार की प्यास बहुत तड़पा रही है अरुसे शहादत मुझे बुला रही है लो अब रुख़्सत होता हूँ अस्सलामो अलैकुम अब्दुल्लाह यमनी ज़ारो क़तार रो रहे हैं हिच्कियां बंधी हुई हैं आंसू पोछते हुए अर्ज़ करते हैं व अलैकुम अस्सलाम व रह्मतुल्लाहि तआला व बरकातुहू।

अब जो देखते तो सवारी निगाहों से ग़ायब हो चुकी है इस क़िस्म की करामतों पर शायद आजकल के साइंस परस्त तमस्खुर उड़ायें कि पुरानी कहानियाँ हैं पारीना क़िस्से हैं भला साइंस के उसूल पर ऐसा कब हो सकता है तो मैं उनका जवाब क्या दे सकता हूँ जिन लोगों का हज़राते अम्बियाए इज़ाम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के मोअजिज़ात ही पर ईमान नहीं वह औलियाए किराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) की करामात पर क्या ईमान लाएंगे।

देख लीजिए आज वहाबिया व नयाचिरा क़ादियानिया इसी ग़लत व बातिल साइंस पर ईमान लाकर अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के मोअजिज़ाते मुबारका से कुफ़्र कर रहे हैं मगर हुज़ूर सय्यिदुना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के गुलामाने ख़ास मुक़र्रबाने बाइख़्लासास हज़राते औलियाए किराम (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम) की वह क़ाहिर व बाहिर ज़िन्दा करामतें दुनिया में जल्वागर हैं जिन्होंने माद्दियत परस्ती की धज्जियां उड़ा दी हैं और साइंस को अन्धा बहरा गूंगा बना दिया है रियासते पटियाला में शहरे पटियाला से 22 मील के फ़ासले पर एक क़स्बा 'सामाना' है वहां के सादात मशहूर हैं हज़रते इमामे रब्बानी मुजद्दिदे अल्फ़े सानी शेख़ अहमद सरहन्दी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मक्तूबात में सादाते सामाना के नाम एक मक्तूब भी है जिसमें वहां के एक ख़तीब पर शरई सरज़निश व निकोहिश फ़र्माई है। जिसने खुतबए जुमा में हज़राते ख़ोलफ़ाए राशिदीन अबूबकर सिद्दीक़ व उमरे फ़ारुक़ व उस्माने ग़नी व अलीए मुर्तज़ा (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम) के अस्माए मुबारका पढ़ना छोड़ दिए थे सादाते सामाना के एक ख़ानदान में तस्बीह है जिसके दाने करबलाए मुअल्ला की मिट्टी से बने हुए हैं जिनका रंग आम तौर पर मिट्टी का सा रंग है कहा जाता है कि उस ख़ाक में हज़रते इमामे मज़्लूम सय्यिदुश्शोहदा(रदि़यल्लाहु तआला अन्हु) का खूने मुबारक शामिल है।

हर साल मुहर्रम शरीफ़ का चाँद होते ही उन दानों में सुर्ख़ी की झलक नमूदार हो जाती है और वह सुर्ख़ी बराबर बढ़ती रहती है यहाँ तक कि मुहर्रम की दसवीं तारीख़ ज़ोहर के वक़्त उन दानों का रंग ऐसा हो जाता है जैसे बिल्कुल ताज़ा खून में डुबोकर अभी निकाले गये हों देखने से ख़्याल होता है कि तरो ताज़ा खून लगा हुआ है हाथ में लेने या कपड़ा लगाने से हाथ और कपड़े में भी खून लग जाएगा लेकिन वह सिर्फ रंग ही रंग

होता है उसमें तरी मुतलकन नहीं होती। ज़ोहर की नमाज़ खत्म होते ही वह सुर्ख़ी कम होने लगती है हत्ता कि फिर बीसवीं मुहर्रम शरीफ़ को उनका वही मामूली ख़ाकी रंग हो जाता है अल्लाहु अकबर मुस्तफ़ा प्यारे सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम की इज़्ज़त व अज़्मत पर मिटने वाले ऐसे हय्ये अबदी हो जाते हैं कि जिस ख़ाक पर उनके ख़ून का क़तरा पड़ जाता है उस मिट्‌टी को भी हयाते जावेद अता फ़र्मा दी जाती है (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) वारदाहुम अन्ना व रदियअन्नाबिहिम फ़िद्दारैन व नफ़अनल्लाहु तआला फ़िद्दीने वद्दुनिया वलआख़िरह बरकातहुमुल कुद्सिया व फ़ियुजुहुमुत्ताहिरा आमीन बिहुरमतिही हबीबिहिल किराम मालिकिनर्रसूलिल्आज़म व आलिहि व अस्हाबिही वब्निहिल गौसिल आज़म व अहज़ाबिही व सिराजि उम्मतिहिल इमामिल आज़म व अहबाबिही व इमामे अहले सुन्नतिहिल मुजद्दिदिल आज़मिल आलिम बिदीनिही व किताबिही व अलैना व अला जमीइ अहलि सुन्नतिहिस्सवादिल आज़म अल्मुताद्दिबीन बिताअज़ीमिही व आदाबिही आमीन या अर्हमर्राहिमीन।

शहरे अहमदाबाद के क़रीब एक मक़ाम बटवा है वहाँ हज़रत शाह कुतुबे आलम साहिब रहमतुल्लाहि तआला अलैह तश्रीफ़ फ़र्मा थे और अब वहीं आराम फ़र्मा हैं। शब को तहज्जुद के लिए अंधेरे में मस्जिद तश्रीफ़ लिए जाते थे राह में लकड़ी के एक टुकड़े से ठोकर लगी फ़र्माया लकड़ी है, लोहा है, पत्थर है ख़ुदा जाने क्या है वली अल्लाह की ज़बान से निकल गया जिसकी शान यह होती है।

गुफ़्तए ऊ गुफ़्तए अल्ला बुवद –गरचे अज़ हलकूम अब्दुल्ला बुवद कि उसका फ़र्मान ख़ुदा का फ़र्मान होता है अगर्चे बज़ाहिर बन्दए ख़ुदा के मुँह से सादिर होता है सैकड़ों साल गुज़र गए अब तक लट्‌ठे का वह टुकड़ा मौजूद है बड़े बड़े डाक्टर बड़े बड़े साइंस दां बड़े बड़े कीमियागर देखने के लिए हाज़िर होते हैं जिन्होंने समन्दर

के जिगर चीर डाले हवाओं पर उड़ने लगे आवाज़ों को क़ैद कर लिया एशिया में बैठकर अमेरिका से बातें करलें मगर उस लकड़ी के टुकड़े को देखकर यही कहना पड़ता है कि लकड़ी भी है लोहा भी है, पत्थर भी है, और ख़ुदा जाने क्या है।

अमरोहा ज़िला मुरादाबाद में अल्लाह के दो वली थे हज़रत शाह विलायत साहिब और हज़रत शाह नसीरूद्दीन साहिब रहमतुल्लाहि तआला अलैहिमा दोनों में बाहम राजो नियाज़ के तौर पर कुछ गुफ़्तगू होती है शाह विलायत साहिब फ़र्माते हैं तुम्हारी क़ब्र पर गदहे लोटेंगे शाह नसीरूद्दीन साहिब फ़र्माते हैं तुम्हारी क़ब्र पर बिच्छू होंगे वह फ़र्माते हैं मेरी क़ब्र पर गदहे होंगे मगर पाख़ाना पेशाब नहीं करेंगे। वह फ़र्माते हैं मेरी क़ब्र पर बिच्छू होंगे मगर किसी को डंक नहीं मारेंगे इस बात को आज 7 सात सौ साल हो गए मगर करामतें वैसी ही अब तक ज़ाहिर हैं जिस धोबी जिस कुम्हार का गद्हा गुम हो जाता है वह उसकी तलाश ही नहीं करता सीधा हज़रत शाह नसीरूद्दीन साहेब के मज़ार शरीफ़ पर चला जाता है वहाँ हर वक़्त बीसों गदहे मौजूद रहते हैं मगर मज़ार शरीफ़ के इहाते के अन्दर पाख़ाना पेशाब नहीं करते जब उनको हाजत होती है जंगल में जाकर फ़ारिग़ हो लेते हैं और फिर इसी तरह मज़ार शरीफ़ के गिर्दा गिर्द आकर जमा हो जाते हैं वह धोबी वह कुम्हार भी वहाँ पहुँच कर उन्हीं में से अपने गद्हे को पहचान कर ले आता है।

शाह विलायत साहिब के मजार शरीफ़ के इहाते में बकसरत और हर रंग के बिच्छू होते हैं मगर जहाँ तक मज़ार शरीफ़ की हद है वहाँ तक उनकी यह मजाल नहीं कि किसी को डन्क मार सकें दर हक़ीक़त यह वही बात है कि अल्लाह का वली ख़ुदा तो नहीं होता मगर ख़ुदा से जुदा भी नहीं होता।

दीमश्क़ुश्शाम में एक कुर्दी शेख़ सालेह वलीअल्लाह अलैहिर्रहमा का मज़ार शरीफ़ है किसी शख़्स ने हाज़िर होकर

उनकी विलायत का इन्कार किया कुर्दी वलीअल्लाह को जलाल आ गया क़ब्र में से पाँव बाहर निकाल दिया मुजाविरों ने अर्ज़ की हुजूर अब पाँव बाहर निकाला है तो बाहर ही रहने दीजिए आपके पाँव के सदक़े में हमारी रोटियों का सहारा अल्लाह तआला क़ायिम रखेगा सैकड़ों साल हो गए अब तक वह क़दमे पाक बाहर ही है ज़ाइरीन हाज़िर होकर ज़ियारत करते हैं।

जाइस ज़िला रायबरेली में एक वली अल्लाह की क़ब्रे मुबारक नौ गज़ी क़ब्र के नाम से मशहूर है जिसको कभी कोई शख़्स सहीह नाप नहीं सकता है जब नापता है पैमाइश में कभी कमी कभी बेशी हो जाती है मारहरा मुतह्हरा ज़िला एटा में हज़रत सय्यिदुना शाह अब्दुल जलील साहिब (रदि़यल्लाहु तआला अन्हु) का मज़ार शरीफ़ है आपने फ़र्माया था कि मेरी मिस्वाक मेरे मज़ार पर साया करेगी आपके विसाल शरीफ़ के बाद आपकी मिस्वाक बकुदरते खुदावन्दी सरसब्ज़ होकर एक दरख़्त हो गई जो अब बशक्ले गुम्बद मज़ार शरीफ़ पर साया किये हुए है उसकी ढाई पत्तियां पीस कर शहद के साथ पिलाना मौत के सिवा हर मर्ज़ के लिए बिइज़्निही तआला व बकरमे हबीबिही सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम शिफ़ाए ताम है हाजतमन्द हाज़िर होकर ढाई पत्तियां ले जाते और शिफ़ा पाते हैं तो बात वही है कि।

गुफ़्तए उ गुफ़्तए अल्ला बुवद –गरचे अज़ हलकूम अब्दुल्लाह बुवद

वली अल्लाह के मुंह से जो कलाम निकलता है वह दर अस्ल कलामे खुदा होता है अगर्चे बज़ाहिर खुदा के बन्दे के मुँह से निकलता है।

रायचूर इलाक़ा रियासते हैदराबाद दकन में एक पहाड़ी पर हज़रात पन्ज बीबियों के मज़ारात हैं (रदि़यल्लाहु तआला अन्हुन्ना) जिन पर नीम का दरख़्त साया अफ़गन है इसकी जिस क़दर पत्तियां मज़ाराते शरीफ़ा से अलाहिदा हैं वह सब अपनी तबई

हालत पर कड़वी हैं हो सकता था कि बकुदरते इलाही इस दरख़्त की सारी ही पत्तियां मीठी होतीं जो क़ादिरे मुतलक़ ख़ुदा जल्ला जलालुहू नीम को कड़वा कर देता है वह उसको मीठा भी कर सकता है लेकिन ऐसा होता तो नैचरियों को ऐतराज़ करने का मौक़ा होता कि इसमें कुदरते इलाही को या करामाते औलिया को क्या दख़ल यह तो नैचर के करिश्मे हैं कोई लौकी कड़वी होती है, कोई मीठी होती है, कोई ककड़ी कड़वी होती है, कोई मीठी होती है, इसी तरह यह भी मीठी क़िस्म का नीम है इसलिए वहाँ कुदरते इलाहिया अपना निराला जल्वा दिखा रही है उस नीम की जड़ छाल गाभ सीकें शाख़ें पत्तियां ग़रज़ सारी चीज़ें कड़वी हैं सिर्फ़ जो पत्तियां शाख़ों के बढ़ने से उन मज़ाराते त़य्यिबा पर साया कर लेती हैं बस वही मीठी हो जाती हैं अल्लाह तबारक व तआला दिखा रहा है कि मेरा महबूब तो मेरा महबूब है सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम देखो मेरे महबूब की नस्ले पाक से यह पाँच सय्यिदानियां हैं जो नबीया नहीं बल्कि मेरी वलीया हैं उनकी हयाते त़य्यिबा की यह शान है कि सात सौ साल हो चुके हैं अब तक कड़वी पत्तियां जो उनकी क़ब्रे मुत़ह्हरा पर साया कर लेती हैं क़ब्रे मुबारका से अनवार छन छनकर उन पत्तियों पर पड़ रहे हैं जो मेरी कुदरत और मेरे हुक्म से उनकी कड़वाहट दूर करके उनको शीरीं बना रहे हैं और बात वही है कि।

औलिया रा हस्त कुदरत अज़ इलाह–बाज़ मी दारन्द तीर अज़ नीम राह

यानी औलियाए किराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) को अल्लाह जल्ला जलालुहू वह अज़ीम व जलील कुदरत अत़ा फ़र्मा देता है कि वह बहुक्मे इलाही कमान से निकले हुए तीर को आधे रास्ते से लौटा देते हैं हज़राते औलियाए किराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) की ऐसी हज़ारहा करामाते क़ाहिरा हैं जिनकी पुरशिकोह तजल्लियों ने फ़लसफ़ा व साइंस की आँखों को ख़ीरा कर दिया है हाँ हाँ वहाबियों देवबन्दियों नैचरियों क़ादियानियों वग़ैरहुम तमाम

बदमज़हबों बेदीनों को चैलेन्ज है जिस वहाबी देवबन्दी नैचरी क़ादियानी का जिस दुश्मने अहले सुन्नत का जिस मुख़ालिफ़े इस्लाम का जी चाहे हाज़िर होकर अपनी आँखों से औलियाए किराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) की मुबारक करामतें देखकर दीने इस्लाम की हक़्क़ानियत और मज़्हबे अहलेसुन्नत की सच्चाई पर ईमान ले आए इस्लाम ज़िन्दा दीन है ईस्लाम के औलिया ज़िन्दा हैं इस्लाम के सुबूत ज़िन्दा हैं पैग़म्बरे इस्लाम सय्यिदुना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के मोअजिज़ाते क़ाहिरा ज़िन्दा हैं।

فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّ مَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ (سورہ کہف، آیت ۲۹)

तो जिसका जी चाहे हक़्क़ानियते दीने इस्लाम व हक़्क़ानियते मज़्हबे अहलेसुन्नत के जल्वे देखकर ईमान लाए और जिसका जी चाहे सब कुछ देखकर भी अपनी आँखें बन्द करले तौफ़ीक अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के हाथ है।

अब मैं अपने इस बयान को इस दुआ पर ख़त्म करता हूँ कि अल्लाह तबारक व तआला अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के सदक़े में हमको और आपको अपने औलियाए किराम (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) का सच्चा गुलाम बनाए और जो दीन व मज़हब सय्यिदुल औलिया सय्यिदुना ग़ौसे आज़म व हज़रते सुल्तानुलहिन्द ग़रीब नवाज़ ख़्वाजए अजमेर व हज़रत ख़्वाजए नक़्शबन्द व हज़रत शेख़ शहाबुद्दीन सोहरवर्दी (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) व दीगर तमाम हज़राते औलियाए किराम का था जो साढ़े तेरह सौ साल से चला आ रहा है। उसी दीनो मज़्हब पर पुख़्तगी व मज़बूती के साथ साबित व मुस्तक़ीम रखे और नए नए मज़्हबों नए नए फ़िरक़ों से बचाए। आमीन (वल्हमदु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन)।

अबुल फतह उबैदुर्रज़ा मुहम्मद हशमत अली ख़ाँ बक़लम ख़ुद

786 / 92

वहाबियों देवबन्दियों के कुफ़्रो इर्तिदाद पर क़ानूनी मोहर सब्त करने वाला

तारीख़ी फ़ैसला

मुसम्मा बनामे तारीख़ी

फ़तहुलअबरार अलल्कुफ़्फ़ार

13 हिजरी 65

यह मुबारक किताब जिसका तारीख़ी नाम शमए मुनव्वर रहे नजात है जो आपने मुलाहज़ा फ़र्माई इसका नूरानी व ईमानी मज़्मून सफ़ए क़िर्तास पर बिखरे हुए वह गौहरे आबदार हैं जिनकी चमक अहले बातिल की नाक आँखों में चकाचौंध पैदा करती और ख़ुदा व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के फ़ज़्लो करम से मुसलमानाने अहले सुन्नत के कुलूबो ईमान रौशन कर देती है।

फ़ैज़ाबाद का वह तारीख़ी मुक़दमा (जिसने वहाबियों देवबन्दियों के काफ़िर मुर्तद होने पर गर्वन्मेन्टी मोहर लगा दी) जो वहाबियों देवबन्दियों ने हज़रत शेरबेशए अहलेसुन्नत क़िब्ला (रदियल्लाहु तआला अन्हु) पर दायर किया था और अपनी आदत के मुताबिक़ ख़ुद ही मुनाज़रा की दावत दी थी और ख़ुद ही पुलिस में रिपोर्ट लिखवाई थी और ख़ुद ही या मजिस्ट्रेट अल्ग़ियास का नारा लगाकर फ़रियाद की थी कि हज़रत शेरबेशए अहलेसुन्नत क़िब्ला (रदियल्लाहु तआला अन्हु) हमको और हमारे अकाबिरीन को काफ़िरो मुर्तद व देव के बन्दे कहते हैं मजिस्ट्रेट साहब ने हज़रत साहिब क़िब्ला से फ़र्माया कि आप अपनी वह तक़रीरें लिखकर पेश करें जिन पर मुद्दइयान को ऐतराज़ है। चुनांचे हज़रत शेरबेशए अहले सुन्नत क़िब्ला (रदियल्लाहु तआला अन्हु) ने यही सुन्नियत अफ़रोज़ व देवबन्दियत सोज तक़रीर (यानी यही किताबे मुबारक शमए मुनव्वर

रहे नजात) लिख कर

مع المعتمد المستند و حسام الحرمين والصوارم الهنديه

वग़ैरह कुतुबे ओलमाए अहलेसुन्नत और मौलवी गंगोही का मोहरी दस्तख़ती फ़तवे का फ़ोटो (जिसमें उन्होंने लिख दिया कि "वुकूए किज़्ब के माना दुरुस्त हो गये" यानी यह बात ठीक हो गई कि ख़ुदा झूट बोल चुका, ख़ुदा झूट बोलता है, ख़ुदा झूट बोलेगा, ख़ुदा झूटा है) व हिफ़्ज़ुल ईमान व बराहीने क़ातिआ व तहज़ीरुन्नास वग़ैरह कुतुबे मोलवियाने वहाबिया देवबन्दिया पेश फ़र्माई जिनको पढ़ने व समझने और बहस करने के बाद मजिस्ट्रेट साहब ने जो फ़ैसला सादिर फ़र्माया वह इस किताब के साथ शायेअ किया जा रहा है मुसलमानाने अहलेसुन्नत से पुर ख़ुलूस गुज़ारिश है कि वह बनज़रे ईमान व इन्साफ़ पढ़ें और अपने ईमानों की हिफ़ाज़त फ़र्मायें अगर मुक़द्दमे के पूरे वाक़िआत से आगाही हासिल करना हो तो किताबे मुबारक फ़रहत अफ़्ज़ा फ़तहे मुबीन मुलाहज़ा फ़र्मायें।

बिऔनिही तआला व बिऔनिही हबीबिही सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम मुसलमानाने अहलेसुन्नत की फ़तहे मुबीन।

नीज़ वहाबियों देव के बन्दों की शिकिस्ते मुहीन

जनाब स्पेशल मजिस्ट्रेट साहब बहादुर बिअल्क़ाबिही का फ़ैसला

(फ़ैसला की नक़ल अंग्रेज़ी में है इसका तर्जमा हिन्दी में करके पेश किया जा रहा है) नक़ल तजवीज़ मोर्रख़ा 25 सितम्बर 1948 ई0 बहुक्म जनाब महाबीर प्रशाद अग्रवाल।

मजिस्ट्रेट दरजए अव्वल – फ़ैज़ाबाद

मुक़द्दमा नम्बर 84/1ज़ेरे दफ़ा 298' 500' 153 ताज़ीराते हिन्द

अब्दुलहमीद खाँ वग़ैरह बनाम हशमत अली थाना पूरा क़लन्दर अब्दुल हमीद ख़ाँ वग़ैरह बनाम हशमत अली ज़ेरे दफ़ा 298' 500' 153 ताज़ीराते हिन्द अब्दुलहमीद ख़ाँ सिराजुलहक़ ख़ाँ व हबीबुल्ला जो कि क़स्बा भदरसा के हैं उन्होंने यह इस्तिग़ासा हशमत अली के ख़िलाफ़ दायर किया जो पीलीभीत का साकिन है इस्तिग़ासा के इल्ज़ामात हस्बे ज़ेल हैं :–

कि मुस्तग़ीसान हनफ़ी मुसलमान हैं और मुल्ज़िम पीलीभीत का बाशिन्दा है और अपने को यक़ीनी तौर पर बरेली के आलिमों के ख़्याल का बताता है मुल्ज़िम चाहता है कि मुसलमानों के मुख़्तलिफ़ फ़िरक़ों में तनाज़ा हो जाए और ऐसे मुसलमान जो कि उनके ख़्याल के नहीं हैं उनको गाली देता है वह क़स्बा भदरसा में तक़रीबन एक माह से मुक़ीम है और अपने दौराने क़याम में अपने ख़्यालात के इज़्हार के लिए हर मुम्किन कोशिश करता है और अपने हम ख़्याल लोगों की इम्दाद से दौरे क़याम में उसने बहुत से वाज़ किए हैं और उन वाज़ों में मुस्तग़ीसान और उनके ओलमा के ख़िलाफ़ कलिमाते तौहीन इस्तेमाल करता है जिनकी मुस्तग़ीसान इज़्ज़त करते हैं मुस्तग़ीसान ने बहुत कोशिशें कीं कि मुल्ज़िम अपनी हरकते तौहीन से बाज़ आए लेकिन सब बेसूद हुई।

8जून 1946 ई0 को मुल्ज़िम ने 9 बजे और 12 बजे शब के दर्मियान एक वाअज़ कहा जिसमें उसने बाज़ ऐसी बातें कहीं जो तौहीन आमेज़ और मुख़्तलिफ़ फ़िरक़ों के दर्मियान फ़साद अंगेज़ थीं। अल्फ़ाज़ यह थे कि मोलवी अशरफ़ अली थानवी व मोलवी क़ासिम नानौतवी मोलवी ख़लील अहमद अम्बेठी व मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी व मोलवी रशीद अहमद गंगोही काफ़िर मुर्दत और बे दीन हैं आगे चलकर कहा कि मुसम्मियान अब्दुल हमीद ख़ाँ व हबीबुल्ला व मुहम्मद शरीफ़ ख़ाँ व मोलवी सिराजुलहक़ व मुहम्मद आरिफ़ साकिन भदरसा वहाबी मुर्तद काफ़िर बेदीन और देव के बन्दे हैं इसके अलावा मुल्ज़िम की यह भी कोशिश है कि उनके ख़्यालात के लोग दूसरे ख़्यालात के लोगों से न मिलें और न वह उनमें शादी ब्याह करें यानी उनसे बिल्कुल क़ताए ताल्लुक़ कर दें मुल्ज़िम एक दूसरे मुसलमान के दर्मियान जज़्बाते मुनाफ़िरत फैला रहा है मुल्ज़िम की इस तक़रीर से मुस्तग़ीसान की और उनके ओलमा की इज़्ज़त को नुक़सान पहुँचा है और यह तक़रीर उनको बदनाम करने वाली है। मुल्ज़िम का यह भी इरादा था कि मुसलमानों के मुख़्तलिफ़ फिरक़ों के दर्मियान मज़्हबी मुनाफ़िरत पैदा की जाए। मुस्तग़ीस अब्दुलहमीद ख़ाँ ने इस वाक़िए की रिपोर्ट थाने में भी की कि मुल्ज़िम पर जुर्म ज़ेरे दफ़ा 298' 500' 153 दायर हुए जिसका मुल्ज़िम इन्कार करता है मुल्ज़िम कहता है कि उसने 8 जून 1946 ई0 को कोई तक़रीर भदरसा में नहीं की और न उसने कभी भी ऐसे अल्फ़ाज़ स्तेमाल किए हैं जो मुस्तग़ीसान ने हलफ़न बयान किए हैं न कभी वह इस तरह ऐसे अल्फ़ाज़ स्तेमाल करता है वह क़तई तौर पर कहता है कि उसने 7जून 1946 ई0 के पहले कुछ तक़रीरें की थीं जिनमें उसने मुख़्तलिफ़ किताबों से कुछ इबारतें पढ़ी थीं उन किताबों में यह मोलवियाने इस्लामी फ़तवे से बेदीन काफ़िर मुर्तद और देव के बन्दे कहे गये हैं इसने यह बातें अपनी तरफ़ से नहीं कहीं। वह कहता

है कि मुस्तग़ीसान को पहचानता तक नहीं शायद मुस्तग़ीसान उन्हीं मौलानाओं के ख़्याल के हों और उन्होंने इन अल्फ़ाज़ को अपने ऊपर ख़्याल किया हो 7जून 1946 ई0 को दोनों फ़िरक़ों के दर्मियान समझौता हुआ कि क़स्बा भदरसा में दोनों फिरक़े 15 यौम तक मज़्हबी बातों पर तक़रीर न करें बिला डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की इजाज़त के 7 जून 1946 ई0 के पहले मुल्ज़िम की जो तक़रीरें मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर हुई उनका एक नोट इस मुक़द्दमा में मुल्ज़िम की तरफ़ से पेश किया गया है मुझको यहां पर देखना है कि मुल्ज़िम ने 8 जून 1946 ई0 को वाक़ई एक तक़रीर की जैसा कि इस्तिग़ासा का बयान है और फिर वह तक़रीर मुस्तग़ीसान की और उनके ओलमा की बदनामी करने वाली थी और इस तक़रीर में मुल्ज़िम ने क़सदन बद नियती से मुआ़निदाना ख़िलाफ़े क़ानून फ़साद करने के लिए इश्तिआल दिलाया या नहीं जहां तक तारीख़े तक़रीर का सुवाल है हलफ़न कहा जाता है कि मुल्ज़िम ने 8 जून 1946 ई0 को तक़रीर की और अब्दुलहमीद ख़ाँ ने इसकी रिपोर्ट थाने पर की है न तो उस मुक़द्दमा में वह रिपोर्ट पेश की गयी है और न किसी गवाह ने उसको साबित किया है इससे इस्तिग़ासा के ख़िलाफ़ यह साबित होता है कि कोई रिपोर्ट नहीं की गयी है इस्तिग़ासा 12जून 1946 ई0 को दायर किया गया है।

मुस्तग़ीसान ने कोई वजह नहीं बताई कि इस्तिग़ासा में देर क्यों हुई है जबकि रिपोर्ट थाने पर नहीं की गयी गवाह 1 सिराजुलहक़ कहता है कि 7 जून 1946 ई0 को मौज़ा में पुलिस आई और चेयरमैन टाउन एरिया साहिब भी आए उन्होंने ऐलान किया कि भदरसा में बिला इजाज़त मज़्हबी या दूसरी तक़रीर न हो या और कोई ऐसा आम जलसा न किया जाये जिससे फ़साद और झगड़े का एहतिमाल हो।

यह ग़ैर मुम्किन है कि जब उस दिन ऐसा ऐलान हो गया था तो उसके बाद भी कोई तक़रीर वग़ैरह हुई हो सिराजुलहक़ ने

दौराने जिरह में हलफ़न यह बताया कि इस्तिग़ासा वाक़िआ के साथ या 8 यौम के बाद किया गया है इस्तिग़ासा की तारीख़ 12जून 1946 ई0 है जिसके माना यह हुए कि वाक़िआ 4 या 5 जून 1946 का होगा। मुस्तग़ीस अब्दुलहमीद ख़ा बयान करता है कि मुनाज़रा 7जून 1946 ई0 को होने वाला था लेकिन मुहम्मद अकबर की रिपोर्ट पर पुलिस आ गई और गवाह और फ़रीक़े सानी के दर्मियान यह फ़ैसला हुआ कि कोई ऐसा मक़ालमा न हो जिससे दिल आज़ारी हो यह वाक़िआ 7 जून 1946 ई0 की शाम को गुज़रा और उसी दिन शब को मुल्ज़िम ने तक़रीर की और उस पर अब्दुल हमीद ख़ाँ ने सुबह को यानी 8 जून 1946 ई0 को पुलिस में रिपोर्ट की। यह बात वाक़िआ की तारीख़ 8 जून 1946 ई0 होना ख़त्म कर देती है दोनों मुस्तग़ीसान के बयान से मालूम होता है कि तक़रीर 8 जून 1946 ई0 को नहीं हो सकी होगी।

अब हम यह देखेंगे कि तक़रीर में क्या कहा गया। मुस्तग़ीसान और दो गवाहान का बयान है कि मुल्ज़िम ने ऊपर के लिखे हुए अल्फ़ाज़ स्तेमाल किए हैं मुल्ज़िम यह मानता है कि उसने इन मोलवियों के हक़ में ऊपर लिखे हुए अल्फ़ाज़ स्तेमाल किए हैं मगर वह इबारत दूसरी थी।

गवाह 1. कहता है कि तक़रीर को किसी ने भी नोट नहीं किया और न ख़ुद उसने नोट किया मुल्ज़िम ने जो अल्फ़ाज़ कहे हैं वह उनको ज़बानी याद हैं और कुछ मुख़्तसर मफ़्हूम तक़रीर का भी याद है उसके बयान के मुताबिक़ मुल्ज़िम तक़रीर के वक़्त किताबें अपने हाथ में लिया था इस बयान से मुल्ज़िम की बात को तक़्वियत मिलती है गवाहों में से किसी ने तक़रीर को तहरीर में नहीं पेश किया न किसी और ने बल्कि मुल्ज़िम ने तक़रीर के ख़ास मज़्मून को तहरीर में पेश किया है किसी दूसरी तहरीर की अदमे मौजूदगी में मुल्ज़िम की तहरीर को दुरुस्त और सहीह माना जायेगा इस तहरीर के कुछ हिस्से जब गवाहों के सामने पढ़े गये

तो उन्होंने इन्कार कर दिया है लेकिन ज़बानी इन्कार बेकार है मुल्ज़िम इक़रार करता है कि उसने उन मोलवियों के हक़ में ऊपर के लिखे हुए अल्फ़ाज़ स्तेमाल किये हैं लेकिन इबारत दूसरी है और उसने वह अल्फ़ाज़ चन्द किताबों की तहरीर की मदद से किये थे मेरा ख़्याल है कि मुल्ज़िम का फ़ेल बिल्कुल दुरुस्त था कि वह किताब से पढ़ रहा था और मुल्ज़िम यह बात नेक नियती से पब्लिक की आगाही के लिए कर रहा था ताकि वह मज़्हबी बातें समझ लें मुल्ज़िम का फ़ेल दफ़ा 500 ताज़ीराते हिन्द में नहीं आता है मुल्ज़िम की तक़रीर से पब्लिक के इश्तिआल झगड़े के एहतिमाल के मुताल्लिक़ कुछ गवाहों ने यह बयान किया है कि मुल्ज़िम की तक़रीर सुनकर बहुत से लोग उनकी बातें समझ कर मुल्ज़िम के हम मज़्हब हो गये इसके यह माना होते हैं कि मुल्ज़िम का वाज़ बहुत दिलचस्प था। मुस्तग़ीस अब्दुलहमीद ख़ाँ बयान करता है मुनाज़रे से फ़साद का एहतिमाल था न कि तक़रीर से। हालांकि खुद अब्दुलहमीद मुनाज़रे का खुला चैलेन्ज देने वाला था इससे हमको यह मालूम होता है कि झगड़ा फ़साद मुल्ज़िम की वजह से नहीं हो सकता था बल्कि मुस्तग़ीस इसका ज़िम्मेदार था।

इस मुक़द्दमा में 1 इन्सपेक्टर मोलाना अबुलवफ़ा पेश किया गया मुल्ज़िम ने मज़्हबी उमूर में ख़ुद बड़ी लम्बी जिरह उस पर की उसकी गवाही को मुक़द्दमे की गवाही कहने से उसको मज़्हबी मुनाज़रा कहना ज़्यादा मुनासिब है क्योंकि होता चला आ रहा है कि हर एक मज़्हबी किताब की इबारतों के मुख़्तलिफ़ माना लिये जाते हैं और हर शख़्स अपने ख़्याल के मुताबिक़ उसके माना निकाल लेता है और इस तरह सारा मुआमला ख़त्म हो जाता है सहीह माना और मुसन्निफ़ की अस्ल मुराद और जिस माहौल में वह किताबें लिखी गयी थीं उनके देखने की कोई कोशिश नहीं करता उसकी गवाही का अक्सर हिस्सा मज़्हबी मुनाज़रा था मज़्हबी मुनाज़रे में कोई हार जीत नहीं होती क्योंकि जिसका जैसा

ऐतक़ाद होता है वह वैसा ही किताबों का मत़लब समझता है मुस्तग़ीसान एक गिरोह के हैं और मुल्ज़िम दूसरी गिरोह का है।

अब्दुलहमीद ख़ाँ के बयान से साफ़ ज़ाहिर है कि उसके और अशरफ़ के दर्मियान कुछ ख़तो किताबत हुई यह लोग दस्तख़त करने वाले थे और एक त़रफ़ के ओलमा उनको मज़मून देते थे दूसरा फ़रीक़ अपने ओलमा के आलाकार बनकर जवाब देते थे इन ख़ुतूत़ में अब्दुलहमीद ख़ाँ ने अशरफ़ व अख़्तर के जवाब में मुल्ज़िम के लिए वही अल्फ़ाज़ स्तेमाल किये थे जिनको वह इस्तिग़ासा में पेश करता है जो सुबूत मिस्ल में पेश किये गये हैं उनसे मुझे यह बात नज़र आती है कि अब्दुलहमीद ख़ाँ अपने मज़्हब का अन्धा मुअ़तक़िद है और वह मुल्ज़िम के वाज़ों से जो कि मई 1946 ई0 में हुए हैं बहुत रन्जीदा हुआ और उसने मुल्ज़िम के मुरीदीन से कहा कि एक मुनाज़रा हो जाये जो कि जून 1946 ई0 में होने वाला था उसने इस काम के लिए एक मोलवी नूर मुहम्मद को बुलवाया अब्दुलहमीद ख़ाँ यह भी कहता है कि उसने पुलिस का भी इन्तिज़ाम किया क्योंकि भदरसा में फ़साद का डर था पुलिस को इस बात की रिपोर्ट दी गई और मुनाज़रा रोक दिया गया। मुस्तग़ीस अब्दुलहमीद ख़ाँ शायद इस बात पर बहुत रन्जीदा हुआ कि मुल्ज़िम ने मौज़ा में जो कुछ कहना था कह दिया और लोगों ने उनको सुना और क़बूल व तस्लीम कर लिया जिनको वह मुनाफ़रत के ज़रिए रद् करना चाहता था और उसने दो और आदमियों को अपना हम ख़्याल कर लिया और 8 जून 1946 ई0 को वाक़िआ की तारीख़ मुतइयन करने का मौक़ा हासिल कर लिया हालांकि यह वाक़िआ बयाने मज़्कूरे बाला के मुत़ाबिक़ कभी न हो पाया और मुल्ज़िम के ख़िलाफ़ झूटा और बात़िल इस्तिग़ासा दायर कर दिया जिसका सच्चा होना वह साबित न कर सका अगर हक़ीक़तन मुल्ज़िम ने 8 जून 1946 ई0 को मुसलमानों के मुख़्तलिफ़ फ़िरक़ों में मज़्हबी मुनाफ़िरत पैदा करने वाली तक़रीर

की थी तो यह कैसे मुमकिन है कि मदरसा में कोई मोअतबर आदमी मुस्तगीस की बात की ताईद करने वाला उसको नहीं मिला।

सिर्फ़ तीन गवाह पेश किये गये हैं पहला नजमुल हुसैन है जो कि अपने को मदरसा का हकीम बताता है और शाह बदीअ जो कि ढाई मील की दूरी पर है वहाँ का साकिन है वह कहता है कि वह उस दिन मदरसा से घर नहीं गया और तक़रीर सुनने के लिये गया वह कहता है कि मौलाना हशमत अली ने अपनी तक़रीर में कहा है कि इन मौलवियों ने अपनी किताबों में ऐसा लिखा है इसी वजह से वह काफ़िर हो गये हैं यह गवाही मुल्ज़िम की ताईद करती है दूसरा गवाह क़ायम अली पेश किया गया है जो कि एक मील की दूरी पर रहता है वह कहता है कि मौलाना ने कहा कि देवबन्दी मोलवियो के कहने पर मत अमल करो मैं उनके तरीके पर चलता था और मैं ने उससे कहा कि अगर यक़ीन करा दिया जाये कि उनका तरीक़ा किस तरह ख़राब है तो मैं खुद फिर जाऊं। उसके बाद मीलाद हुआ और मैं चला गया। दूसरे मौज़ा के इन दोनों गवाहों के सिवा दूसरा कोई मौक़े का गवाह पेश नहीं किया गया।

मेरा ख़्याल है कि जैसा मैंने ऊपर बहस की है कि 8 जून 1946 ई० का वाक़िआ सरासर गढ़ी हुई बात है और ऐसा कोई वाक़िआ न होने पाया वह मुल्ज़िम की अगली तक़रीरें थीं जिनसे मुस्तग़ीसों की दिल आज़ारी हुई क्योंकि फ़रीक़े सानी के अक़ाइद क़ब्ज़ा जमा रहे थे इसलिए मुस्तग़ीसों ने बग़ैर सियाक़ व सबाक़ का ताल्लुक़ देखते हुए तक़रीर के चन्द अल्फ़ाज़ लेकर मुल्ज़िम के ख़िलाफ़ झूठा मुक़द्दमा दायर कर दिया है मेरे ख़्याल में मुल्ज़िम को उसकी जमाअत में सिर्फ़ बदनाम करने के लिए यह मुक़द्दमा दायर किया गया है क्योंकि वह मज़्हबी मुबल्लिग़ है और अच्छी मिक़दार में मुरीदीन रखता है जैसा कि दौराने मुक़दमा में देखा

गया गवाह 7 बर्मा में मुल्ज़िम के ख़िलाफ़ कोई मुक़दमा साबित करने के लिए पेश किया गया जिसकी कोई वक़अत नहीं है।

मैं मुल्ज़िम हशमत अली को ताज़ीराते हिन्द के दफ़ा 500, 153 , 298 से जिनका इल्ज़ाम उसपर लगाया गया है और उस पर मुक़द्दमा चलाया गया है बेकुसूर क़रार देता हूँ और उसको ज़ेरे दफ़ा 258 ज़ाब्ता फ़ौजदारी आज़ाद करता हूँ।

दस्तख़त महावीर प्रसाद अग्रवाल मजिस्ट्रेट दर्जा अव्वल फ़ैज़ाबाद 25 सितम्बर 1948 ई0 सहीह नक़ल (दस्तख़त पढ़ने में न आये) हेड कापेस्ट कलेक्ट्रेट फ़ैज़ाबाद।

वहाबिया दयाबना ऐसे हयादार कि अपने अक़ाइदे बातिला का फ़ैसला चाहने के लिए अज्लासे बाला में उन्होंने निगरानी दायर करदी खुदा का हज़ार हज़ार शुक्र कि अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के तुफ़ैल यहाँ से भी हज़रत शेरबेशहे अहले सुन्नत (रदियल्लाहु तआला अन्हु) को फ़तहे अज़ीम हासिल हुई जिसके फ़ैसले की नक़ल अंग्रेज़ी में है उसका तर्जमा उर्दू में करके शामिले किताब किया जाता है अहले हक़ पढ़ कर खुद ही फ़ैसला फ़र्मा लेंगे।

फ़ैज़ाबाद शिशन जज कोर्ट

28 अप्रैल 1949 ई0 को फ़ैज़ाबाद के शिशन जज श्री याकूब अली रज़वी के दिये हुए फ़ैसले की नक़ल।

सिराजुलहक़ उम्र 30साल वल्द ज़हूर ख़ाँ हबीबुल्ला 44साल वल्द जुम्मन बाशिन्दगाने क़स्बा भदरसा पुलिस स्टेशन थाना पूरा क़लन्दर ज़िला फ़ैज़ाबाद अर्ज़ गुज़ारान बनाम हुकुमते हिन्द मारफ़त हशमत अली ख़ाँ वल्द नवाब अली ख़ाँ मुहल्ला भूरे ख़ाँ।

ज़ेरे दफ़ा 435 ज़ाब्ता फ़ौजदारी। निगरानी फ़ैज़ाबाद 58—1948 ई0

हुक्म

यह निगरानी की दरख़्वास्त ख़िलाफ़े हुक्मे शरई महाबीर प्रसाद अग्रवाल के है जो कि 25 सितम्बर 1948 ई० को सादिर हुआ है जिसमें उन्होंने मुल्ज़िम (मौलाना) हशमत अली को जुर्म दफ़ा 298 , 500 और 153 ताज़ीराते हिन्द से रिहा कर दिया 12 जून 1946 ई० को अर्ज़ गुज़ारान अब्दुलहमीद ख़ाँ व सिराजुलहक़ और हबीबुल्ला साकिनान क़स्बा भदरसा थाना पूरा क़लन्दर जो कि हनफ़ी मुसलमान हैं एक इस्तिग़ासा ज़ेरे दफ़ा 298, 500, 153 ख़िलाफ़ मुल्ज़िम (मौलाना) हशमत अली के जो कि पीलीभीत का है पेश किया जिसमें उन्होंने हलफ़िया शिकायत की कि मुल्ज़िम अपने को आलिम और बरेली के ख़्यालात का बताता है मुसलमानों के दर्मियान में झगड़ा पैदा करने के लिए मुल्जिम उन भदरसा के मुसलमानों को गाली देता है जो कि उसके मुरीद और मुअतक़िद नहीं हैं मुल्ज़िम क़स्बा भदरसा में एक माह से मुक़ीम है और जिसमें मुल्ज़िम ने बहुत सी तक़रीरें की हैं और अपने ख़्यालात की इशाअत की जिनमें उसने मुस्तग़ीसान और ओलमाए मुस्तग़ीसान की बेइज्ज़ती की है जिनको मुस्तग़ीसान मानते हैं और उनकी इज़्ज़त करते हैं। मोर्रख़ा 8 जून 1946 ई० को 9 बजे और 12 बजे रात के दर्मियान मुल्ज़िम ने एक तक़रीर शारए आम पर की जिसमें मुस्तग़ीसान के मज़्हबी जज़्बात को सदमा पहुँचाने के लिए तौहीन आमेज़ और गालियों से भरे हुए कलिमात स्तेमाल करते हुए हस्बे ज़ेल अल्फ़ाज़ कहे।

यह है कि मोलवी अशरफ़ अली, व मोलवी मुहम्मद क़ासिम व मोलवी ख़लील अहमद, मोलवी अब्दुश्शकूर और मोलवी अब्दुर्रशीद काफ़िर व मुर्तद और बेदीन हैं। मुल्ज़िम ने दौराने तक़रीर में यह भी कहा कि मुस्तग़ीसान और मुहम्मद आरिफ़ साकिन भदरसा वहाबी मुर्तद काफ़िर और देव के बन्दे हैं। इनके अलावा मुल्ज़िम यह भी कोशिश कर रहा था कि उसके पीर व

दूसरे मुसलमानों से जो कि उसके ख़्यालात के न थे न मिलें आपस में रिश्तए अज़्दवाजी न क़ाइम करें और उनसे मुक़ातआए कुल्लिया करें। यह है कि मुल्ज़िम की इस तक़रीर से मुस्तग़ीसान और उनके ओलमा की बदनामी और बेइज़्ज़ती हुई और यह है कि मुस्तग़ीस अब्दुलहमीद ख़ाँ ने मुल्ज़िम के ख़िलाफ़ इस अम्र की एक रिपोर्ट थाना पूरा क़लन्दर में की थी।

मुल्ज़िम ने जुर्म से इन्कार किया और यह भी इन्कार किया कि मुल्ज़िम ने 8 जून 46 ई० को ऐसी कोई तक़रीर भदरसा में नहीं दी। मुल्ज़िम ने यह भी इन्कार किया कि उसने वह अल्फ़ाज़ जो कि मुस्तग़ीसान ने बयान किये हैं नहीं स्तेमाल किये। मुल्ज़िम ने बयान किया कि 7 जून 46 ई० के क़ब्ल उसने चन्द तक़रीरें भदरसा में कहीं जिसमें उसने किताबों से चन्द इबारतें पेश कीं और उन इबारतों में ओलमा जोकि इस्तिग़ासा में दर्ज हैं बज़रिए फ़तवा काफ़िर मुर्तद बेदीन देव के बन्दे और वहाबी क़रार दिए गये थे यह मुल्ज़िम ने जो कुछ हाज़िरीने जलसा से कहा वह उसके अल्फ़ाज़ न थे, यह है कि वह मुस्तग़ीसान को पहचानता तक नहीं है और यह है कि मोर्रख़ा 7 जून 46 ई० को मुसलमानों के दोनों फ़िरक़ों में यह समझौता हुआ कि वह लोग क़स्बा भदरसा में 15 दिन तक आपस में मज़्हबी मामलों पर बहस व मुबाहसा न करें बग़ैर डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की इजाज़त हासिल किये हुए 7 जून 46 ई० से क़ब्ल तक़रीरें जो कि मुल्ज़िम ने भदरसा में दी थीं उनका मज़्मून कचहरी में ख़ुद मुल्ज़िम ने पेश किया जिस पर **Ex-D7** पड़ा है।

सुबूत दोनों फ़िरक़ों की तरफ़ से पहुँचने के बाद लायक़ मजिस्ट्रेट ने अव्वलन यह फ़ैसला किया कि मुल्ज़िम ने 8 जून 46 ई० को कोई तक़रीर नहीं की जिसकी मुस्तग़ीसान शिकायत करते हैं और यह सिर्फ़ एक बनाया हुआ क़िस्सा था। दूसरा फ़ैसला मजिस्ट्रेट ने यह किया कि यह अल्फ़ाज़ मुल्ज़िम ने गुज़िश्ता दूसरी

तक़रीरों में स्तेमाल किए थे जिनसे उनके जज़्बात को सद्मा पहुँचा था क्योंकि उन्होंने उन अल्फ़ाज़ का सियाक़ व सबाक़ से ताल्लुक देखे बग़ैर ग़लत मतलब निकाल लिया और यह ग़लत मुक़द्दमा मुल्ज़िम के ख़िलाफ़ दायर किया। इस पर लायक़ मजिस्ट्रेट ने मुक़द्दमा ख़ारिज कर दिया और यह ऐतराज़ किया कि जो मुल्ज़िम मज़्हबी मुबल्लिग़ है और उसके बहुत काफ़ी मुरीद और मुअतक़िद हैं इसलिए उसकी पब्लिक में बेइज़्ज़ती करने को यह मुक़द्दमा दायर किया गया है। मुल्ज़िम इस वजह से बरी कर दिया गया था।

और इसी बरियत के ख़िलाफ़ मुस्तग़ीसान ने निगरानी की दरख़्वास्त दी है और वह इस हुक्म के ख़िलाफ़ हैं। फ़रीक़ैन के लायक़ वोकला की तवील बहसों पर फ़रीक़ैन के पेश करदा ज़बानी और तहरीरी सुबूत को बहुत ग़ौर से पढ़ने और सुनने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि यह दरख़्वास्ते निगरानी कुछ दम नहीं रखती।

वह तक़रीर जिस पर ऐतराज़ हुआ है उसको हस्बे बयान मुस्तग़ीस मुल्ज़िम ने 8जून 1947 ई० को किया था और मुस्तग़ीस अब्दुलहमीद ख़ाँ ने कहा है कि इसकी रिपोर्ट थाना पूरा क़लन्दर में की थी लेकिन ऐसी कोई रिपोर्ट न तो तलब की गयी और न साबित की गई इसके अलावा इस्तिग़ासा मोर्रख़ा 12 जून 1946 ई० को दायर हुआ यानी 4 यौम बाद। लेकिन देर होने की वजह नहीं बतायी गई अगर वह तक़रीर वाक़ई में ऐसी तकलीफ़ देह और इश्तिआल अंगेज़ थी तो इस्तिग़ासा दायर करने में कोई देर नहीं होनी चाहिए थी। हस्बे बयान मुस्तग़ीस सिराजुलहक़ मदरसा में 7 जून 1946 ई० को पुलिस और टाउन एरिया के चैयरमैन आए और उन्होंने यह ऐलान किया कि मदरसा में बिला इजाज़त डिस्ट्रिक मजिस्ट्रेट के कोई मज़्हबी मुक़ालमा न हो और कोई ऐसा आम जलसा भी न किया जाए जिससे अम्नशिकनी का अन्देशा हो।

लाइक़ मजिस्ट्रेट ने यह साबित किया है कि इस ऐलान के बाद मुल्ज़िम के लिए यह नामुम्किन था कि वह 8 जून 46 ई० को जल्साए आम में कोई तक़रीर करे जैसा कि मुस्तग़ीसान बयान करते हैं इसी गवाह सिराजुलहक़ के बयान के मुताबिक़ वह तक़रीर जिसकी शिकायत हुई है इस्तिग़ासा दायर करने के 7 या 8 यौम पहले दी गई थी हालांकि इस्तिग़ासा पर 12 जून 1946 ई० दर्ज है बयान की बिना पर मुल्ज़िम की क़ाबिले ऐतराज़ तक़रीर 4, 5 जून 46 ई० के बाद नहीं हो सकी होगी फिर गवाह 2 मुस्तग़ीस अब्दुलहमीद ख़ाँ ने यह इक़रार किया कि मोर्रख़ा 7 जून 46 ई० को मुनाज़रा होने वाला था मगर पुलिस आ गयी। और उसने यह मुआहिदा करा दिया कि दोनों फ़िरक़ों में ऐसी तक़रीर न होनी चाहिए कि जिससे दूसरों को तक्लीफ़ पहुँचे उस गवाह के बयान के मुताबिक़ 7 जून 1946 की शाम को यह वाक़िआ हुआ और उसी शब को मुल्ज़िम ने क़ाबिले ऐतराज़ वाज़ कहा और उसी गवाह ने हलफ़ी बयान दिया कि दूसरे दिन यानी मोर्रख़ा 8 जून 1947 को रिपोर्ट सुबह को उसी गवाह ने की अगर यह बयान दुरुस्त है तो क़ाबिले ऐतराज़ तक़रीर 7 जून 1946 और 8जून 1946 के दरम्यान वाली रात में हुई होगी अगर हुई हो न कि 8 जून 1946 को दर्मियान 9 –12 बजे रात के इसलिए मैं लायक़ मजिस्ट्रेट से पूरी तरह मुत्तफ़िकुर्राय हूँ कि मुस्तग़ीसान बहुत ही बुरी तरह से साबित करने में नाकामयाब रहे कि 8 जून 1946 को 9 बजे और 12 बजे के दर्मियान मुल्ज़िम ने कोई ऐसी तक़रीर की जिससे उनके ओलमा की और उनकी किस तरह से बेइज़्ज़ती हुई। सिर्फ़ ऐसी एक दलील की बिना पर दरख़्वास्ते निगरानी ख़ारिज कर दिए जाने के क़ाबिल है। लाइक़ मजिस्ट्रेट की तज्वीज़ से मुझे पता चलता है कि लाइक़ मजिस्ट्रेट ने सुबूत ज़बानी व तहरीरी को बग़ौर ध्यान दिया और मुलाहज़ा किया और यह सही फ़ैसला किया कि मुल्ज़िम नेक नीयती के साथ किताबों

की इबारतें पढ़ने में सही रास्ते पर था। लाइक़ मजिस्ट्रेट ने सुबूत को बग़ौर देखने के बाद यह फ़ैसला किया कि इस्तिग़ासा में जो यह शिकायत है कि मुल्ज़िम ने कोशिश की कि फ़िरक़ा वाराना फ़साद हो जाए तो यह फ़साद का एहतिमाल मुल्ज़िम की वजह से न था बल्कि ख़ुद मुस्तग़ीसान ही की वजह से था। क्योंकि मुस्तग़ीस अब्दुलहमीद ख़ाँ गवाह 2 ने ख़ुद कहा कि फ़साद का एहतिमाल मुनाज़रा की वजह से था न कि मुल्ज़िम की तक़रीर की वजह से था। अब्दुलहमीद ख़ाँ ने ख़ुद अपनी तरफ़ से और दूसरों की तरफ़ से एक इश्तिहार छपाया और शायेअ करा दिया जिसमें उन्होंने मज़्हबी बहस व मुबाहसा मुनाज़रा के लिए खुला चैलेन्ज दिया इश्तिहार पर कचहरी का Ex-D1 है।

तमाम पहलुओं पर बहुत ही ग़ौर व ख़ौज़ के साथ नज़र डालने और सुबूत को पढ़ने के बाद इस नतीजे तक पहुँचने पर मजबूर हुआ हूँ कि मैं हस्बे फ़ैसला लाइक़ मजिस्ट्रेट यह फ़ैसला करुं कि 8 जून 1946 को ऐसी तक़रीर नहीं हुई और मुस्तग़ीस अब्दुलहमीद ख़ाँ और उन जैसे मुक़ल्लिदीने मज़्हब की तरफ़ से दाइरा किया हुआ इस्तिग़ासा बिल्कुल मनगढ़त है। लाइक़ मजिस्ट्रेट का फ़ैसला जिसमें उसने मुल्ज़िम को बरी कर दिया फ़रीक़ैन के पेश करदा सुबूतों की बिना पर बिल्कुल सहीह और दुरुस्त है। मुस्तग़ीसान मेरे सामने लाइक़ मजिस्ट्रेट के फ़ैसले में कोई क़ानूनी ग़लती या और कोई ग़लती न बता सके।

दर हक़ीक़त यह निगरानी जिसकी मानिन्द अपील मेरे सामने बहस हुई थी उसमें कोई जान नहीं है और इसको मैं ख़ारिज करता हूँ।

दस्तख़त याक़ूब अली रज़वी सिशन जज मोर्रख़ा 28,अप्रैल 1949ई0

सहीह नक़ल दस्तख़त (पढ़ने में न आये)

हेड कापेस्ट(दस्तख़त पढ़े न गये) डिस्ट्रिक्ट एण्ड सिशन जज फ़ैज़ाबाद नक़ल करने की तारीख़ 5,मई 1949 ई0

पैग़ामे शेरबेशए अहलेसुन्नत

सुन्नियम मन नारए अल्लाहु अकबर मी ज़नम
दम ज़े बू बकरो उमर उस्मानो हैदर मी ज़नम
क़ादिरीयम नारए या ग़ौसे आज़म मी ज़नम
दम ज़े शैख अहमद रज़ा ख़ाँ क़ुतुबे आलम मी ज़नम

ऐ मुसलमानो! उठो दीं की हिमायत के लिए
कोशिशें दिल से करो मज़हबो मिल्लत के लिए
कोशिशे कुफ़्फ़ार है दीं की इहानत के लिए
ग़ौसे आज़म को पुकारो तुम इआनत के लिए
सुन्नियम मन नारए अल्लाहु अकबर मी ज़नम
दम ज़े बू बकरो उमर उस्मानो हैदर मी ज़नम

मुस्तफ़ा की भोली भेड़ो भेड़ियों से तुम बचो
जो करे तौहीन अल्लाहो नबी की दोस्तो
अपने ईमां की हिफ़ाज़त उनके हमलों से करो
ग़ौसे आज़म हैं मदद पर उनका दामन थामलो
सुन्नियम मन नारए अल्लाहु अकबर मी ज़नम
दम ज़े बू बकरो उमर उस्मानो हैदर मी ज़नम

फ़र्ज़ है पहले अक़ाइद की दुरुस्ती मोमिनो
फिर करो कोशिश नमाज़ों के लिए तुम मोमिनो
मुस्तफ़ा के दीन पर साबित क़दम गर तुम रहो
अन्तुमुल्आलौन क़ौले हक़ है ग़ालिब तुम रहो
सुन्नियम मन नारए अल्लाहु अकबर मीज़नम
दम ज़े बू बकरो उमर उस्मानो हैदर मीज़नम

मोमिनो! रब है तुम्हारा ख़ालिक़े अरज़ो समा
सुन्नियो! आक़ा तुम्हारे हैं मुहम्मद मुस्तफ़ा

क़ादिरीयो ! तुमको मुज़्दा सर पे हैं ग़ौसुलवरा
रज़वीयो! खुश हो कि हामी हैं शहे अहमदरज़ा
सुन्नियम मन नारए अल्लाहु अकबर मी ज़नम
दम ज़े बू बकरो उमर उस्मानो हैदर मी ज़नम

महफ़िले मीलादे अक़्दस मुस्तहब है और सवाब
जो मुसलमां इसमें आये बख़्शा जाये बेहिसाब
शिर्क ठहराता है इसको नज्दिए ख़ाना ख़राब
सुन्नियो नज्दी से रखो एहतिराज़ो इज्तिनाब
सुन्नियम मन नारए अल्लाहु अकबर मी ज़नम
दम ज़े बू बकरो उमर उस्मानो हैदर मी ज़नम

ऐ उबैदे क़ादिरी महशर में तुझको ख़ौफ़ क्या
जब शफ़ाअत करने वाले हैं हबीबे किब्रिया
दो जहाँ में सर पे साया है जनाबे ग़ौस का
नज़ाअ व महशर में हिफ़ाज़त करने वाले हैं रज़ा
सुन्नियम मन नारए अल्लाहु अकबर मी ज़नम
दम ज़े बू बकरो उमर उस्मानो हैदर मी ज़नम

क़ादिरीयम नारए या ग़ौसे आज़म मी ज़नम
दम ज़े शैख अहमदरज़ा ख़ाँ कुतुबे आलम मी ज़नम

नोट :-इस किताब की कम्पोजिंग में अगर कोई ग़ल्ती नज़र आये तो बराए मेहरबानी मुन्दरजा ज़ैल मोबाइल पर ज़रुर इत्तिला फ़र्माने की जहमत फ़र्माएं ताकि आइन्दा एडीशन में ग़ल्ती को सहीह़ किया जा सके।

मोबाइल न०- 9412554814,9286631857

मस्लके आला हज़रत ज़िन्दाबाद —— मज़हरे शेरबेशए अहल सुन्नत पाइन्दाबाद

हुज़ूर शेरबेशए अहले सुन्नत मज़हरे आला हज़रत रदि़यल्लाहु तआला अन्हु की यादगार

तालीम व तर्बियत का एक अज़ीम मीनारा

जामिआ अहले सुन्नत दारुलउलूम हशमतुर्रज़ा

मस्लके आला हज़रत का सच्चा नक़ीब है

-:ADDRESS :-

जामिआ अहले सुन्नत
दारुल उलूम हशमतुर्रज़ा

हशमत नगर पीलीभीत शरीफ़ उ.प्र० इण्डिया

मोबाइल न0-9412513482,9997343852 ,9412554814